

نامضر مجلس دعوت محقیق اسلامی علامه محد ایسف بنوری ٹاؤن حراجی-۵-پاکستان نام کتاب اسنت نبوید اورقرآن کریم نام مصنف: - مولانا محرصبیب الشرختار کتابت : - «کولانا سین احرنجیب مطبعہ : - القادر برنطنگ بریس کراچی تعداد : - القادر برنطنگ بریس کراچی تعداد : - ۱۰۰۱ صنطباعت: - ۱۳۰۰ صنطباعت: - ۱۹۸۰ ع

ئاشر محلس دعوت وتحقیق اسلامی علام محروسان بنوری ما ون کراچی ه

سول ایجنط: مکتب نبوری علّامه نبوری ای ون - کراچیه

علامة العصر محدث كبير حضرت مولانام مديوسف فيورى دهم الترتعالى كى مستنت نبويدا ورقرآن كريم "كے بارے ميں رائے گسرامى :
مستنت نبويدا ورقرآن كريم "كے بارے ميں رائے گسرامى :
مستند التراثرين الرحستيم

قد طالعت قبسات من هذه المسالة "السنة النبوية والقرأن الكهيم " فوجدت المؤلف أخانا فى الله ما حبنا الأستاذ محل حبايق المن عدم مختارس الطبيب و فقه الله للخير و قدا ستوفى فيها أيات التزيل العزايز، ولبيان شم حها أحاديث النبى الكهيم عليه معلوات الله و تحيات وسلامه ، ولتنويرها جاء بغرى النقول من مآخذ مؤوقة وأعلام من المخين فى العلم كابن عبد البرواب القيم واب حنم وأمثالهم وإن كان التوسع فى النقل جرة إلى نقل من مثل المماغى فى تفسيرة و الحاجة إلى القول من أمثاله ؟

فعدا أخونا المؤلف و دقة الله للخير و اجتهد فى استقهاء الأبحاث واستيفاء النقول من مطان بعيدة ، وجمعها فى صعيد واحد ، فعويشكر بعد االإستيفاء والاجتهاد ، وبذل وسعه فى تكثير الموار ، ويستحق أن بمنح له فى التخصص فى الحديث ؛ الدي عدة الأولى من " نجاح ماهم ممتاذ "

وأرعوالله سبحانه أن يوفقه لأمثال صدا واكثر وأغنى وأجمع وأجرع ، والله سبحانه المونق والمسهكل تيسير و مده النعمة والفضل الغلار . كتبه

محمد يوسف البنورى عفاالله عند

فرست مضامین "سنت نبوید اورقرآن کریم"

| | SHAZING AND SIN | | KI-B TO WI |
|-------------------|--|--|--|
| مغر | Eig | صغح | موظوع |
| TK. | ايبان بالريول كاتقاضه | ۲ | حضرت مولانا بنورى صرالله كارائ |
| 7 | رسول الله على يرايمان لان كاعكم | 14 | المشركة المستعددة المستعدد |
| | رسول کے فرمان کوچیوڈ کرکسی اورک بات | | ا بِلْ عَرِبِ كَى مالت |
| | 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1. 1 | 18 | فتنذا نكارحديث |
| The second second | وسول اكرم على كات مانا ضرورى م | 10 | فتنها كارحديث كيوسس وباني |
| 71 | مؤمن مونے كا متحان اوراس كا فيصله | The same of the sa | منكرين حديث كاغراض ومقاصد |
| | رسول الشريقي كى اطاعت كالمستم اور | 1 | منكرسنت كاعكم |
| 77 | مخالفت پروعید | • | قديم وحبريد المحدين كاعتراض كى نوعيت |
| 4 | اطاعت ریول کا فرض ہونا رسول کی نافرمانی موجب کفر ہے | | عدم تدوین مدیث کوانکار مدیث کے لئے آر بنانا ۔ |
| 44 | رسول ک اطاعتاس کی سنتیل کائی | | علماركرام كى ان كے خلاف كوششىيں |
| | اطاعت الذكي طرح اطاعت النبي سي مذآي | | وجر تأليف رساله |
| " | متقل اورغيرشروط ب | 71 | دین کااصل مزار دی نبوت برے |
| | امرار کی اطاعت | 412185 | انبياركمام عليم السلام ك تعداد |
| r4 | اطاعت رسول كى استقلالى حيثيت | 77 | اخيا ركرام عليم السلام كى دعوت |
| | رسول كاطاعة انحان فرون كاشيوه بر | 77 | برني كالني اطاعت كى دعوت دينا |
| | اطاعت رسول كاستقلال برحافظ ابن | MATERIAL CONTRACTOR | برني كاماحبِ سنت بو ناخرورى بح |
| ۳. | قيم كي تفصيلي سجت | Acres 1 | سنت پڑل کے بغیردین پڑھل نامکن ہے |
| Y . | blogspot.co | m | The second secon |

| - | | ۵ | |
|------|---|--|--|
| ,šão | وفوع ا | مغر | وضوع |
| 04 | ترك سنت واحاديث حبط اعال كاذيع | 410 | سنت يرعم كحلساي حجاب كرام رضى النعنيم |
| R-i- | رسول اكرم والمستنزك فيصل كوتسليم كرنا | MA | and Jes |
| OA | ضروری ہے | " | حضرت الويجرصديق وضى الشرعنه كاطرزعسل |
| 09 | مضرت ابن عباس دطاؤس كا واقعد | pp | اطاعت رسول كى اصل وج |
| 4. | حضرت سعيدبن المسيبكا واقعد | 1 | نى كريم ميلية معموم ين |
| AT | عصیان رسول سبب عذاب ہے | 40 | انبياركرام عليم السلام كى بعثث كامقصد |
| 76 | موسن دمنافق كافسرق | ELI. | نى كرىم على الله كى اطاعت خلار باكسى |
| AP | رسول کی نافرمانی کھنے | 44 | ک اطاعت ہے |
| 77 | | ٣٤ | خدای محبت کا مداراتباع نی کریم دسید |
| 44 | اطاعت رول ايمان كى علامت براورعصيان كفركى | | علوق مي جارا نضل جاعتون كابيان |
| 79 | Aut La | " | اودان مي شامل بون كاطريقير |
| | اخلاق وميرت بي مي درول اكرم والميكانة | 64 | برات کا مرازاطاعت بی دستند پرب |
| 14 | کی بیروی فرض ہے حضرت ابن عباس رضی النیوند کا آباع نہوی | Sal | رسول کی اطاعت کے بغیراد کان اسلام |
| | حضرت ابن عسمر وضى الشرعت كالك واقعم | " | اداكرنا نامكن ہے |
| | صحابرام رضى الندعنيم المبعين كاتباع نبوى | | ايك نكته از حضرت الشيخ البنورى صالتُ حيات المرى كا دارومداراطاعت رسول |
| 44 | ك أي ميك | | all the |
| | صحابرونى النيعنيم كے باريسي عوده كابيا | | وسفائر پرہے المان والم اللہ واللہ وا |
| 44 | افتدارنی سے پیچے سٹنے پرعتاب | 1000 | عبيت مديث برسلانون كالجماع |
| A- | حضرت جنيد كافرمان | The same of the sa | مخالفت رسول مخالفت خلاب |
| AT | اسوة صنه كيجت بوفيك الك اورشهادت | | مخالفت رسول عذاب اليم كاذربعيب |
| | | 1 | Toobaa-elibra |
| | | | |

| مغر | موضوع | مفح | موضوع ا |
|-----|-----------------------------------|---------|--|
| 1-1 | علامدابن صنرم كاتفصيلى كلام | 1 | سنت بي منزل بن الشرب |
| 1.7 | ذكر صصر ون قرآن كريم بي مرادنهي | AF | منكرسنت كالمينري |
| 1-1 | ذكر صورت كوسى شامل سے | 1 2 4 | رسول الله علي الله كالمائة كم تمام فيصل تسليم في |
| 1.9 | وحى خفى كى مجيت اوراس كا النبات | 10 | بر مؤمن ہونے کا دار دمدارے |
| 11- | امام عنزالى كافرمان | | آية كريمة" فلاوربك لابؤمنون كا |
| 111 | ومى كىقىمىي | AA | The state of the s |
| 111 | حافظ ابن فتيم كافرمان | 700 | نى كريم في المنظري عالى ظرفى و لمبندا خلاقى كا |
| 111 | ترشيب قرآن امراتي سے موتى | -14 | ایک نموند |
| 110 | تحويل قبله كابيان | ta | امام شافعی کا آیت مذکوره بالاسیجیت |
| | يهود ك تخلستان كاشتكامكم اوراس | 4. | سنت براستدلال |
| 114 | Elen & | | حضرت عركارسول اكرم فللتيكم كافيله |
| 114 | نى كريم دينياد كا منصب | 97 | مائے والے کا گردن اڑانا |
| 17- | المريم والمالية مح فراكض الفي | 94 | رسول الشرفيطي اوامرى اتباع كاحكم |
| 171 | تعليم كتاب كامقصلالااسكا فائده | | حضرت عبدالثرن سعود رضى الشرعنه |
| 177 | صحابكرام وضى التعنيم الاتعلم قرآن | 94 | كاآيت سے استدلال |
| | قرآن ك اصطلاح سي سنت كانام | 100 | حضرت عبدالرص بن يزيد كاآيت س |
| 177 | حکمت ہے | 94 | استدلال |
| 144 | امت كى مِايت كے لئے دوجيزي | 99 | حفظ قرآن كى طرح حفظ صديث بعي فرودت |
| 170 | محراي وضلال كاسبب دمنشار | - | ا مام شافعی رجدانشرکاایک واقعہ |
| 144 | نزول قرآن کے وقت کی شدت کا بان | ייונויו | حفرت حن وذوالنون كا فرمان |
| 11. | | | الترتفاني فيحفاطت مديث سبى ذمرليام |
| ry. | blogspot.co | m | I SULANI OF |

| مفح | موضوع | صفحه | موضوع |
|---|---|-------------------|---|
| 177 | سرقدا وداس كاعكم | 177 | حيت حديث كي على دلسل |
| 175 | | 177 | قرآنی مجملات کی تفصیل |
| מדו | حجيت حديث كم ايك دليل | , | تقصيل قرآن كى بعض مثالين |
| IYA | نى كريم الكيار كابيان دوسم كاب | 0.11 | حکت سے سنت درول ہی مراد ہے |
| 179 | سنت قرآن کریم کی تفسیر ہے | - 214 | حدیث کی ضرورت |
| 1 10 10 10 10 10 | حضرت يحيي بن آبي كشر كح قول كامطلب | 127/8/ | سنتجتب |
| Marie | قرآن كريم كے سنت كامحتاج ہونےكا | | سنت برعمل کے بالے میں صحابہ کرام رصی |
| 141 | مطلب م | | الشرعنيم كاحذبه |
| IKM | مبين بوی بطرف الحاق | | حکت کے با سے میں علمار کرام اور مفسرت |
| 141 | تميين نبوی بطريق الحاق کی چندشالیں قرر دنہ سر مارات تراس | 11 11 11 11 11 11 | عظام کے اقوال |
| | | | حکمت سے سنت ہی کیوں مرادیے ؟ نی کریم علی اللہ محشت شاہے کا رایشر |
| 1219 | کیاب اللہ نے سنت نبویے کے لئے تشریح | 101 | بالريم دهيهم جينيت سائ الماليسر مثان قرائ مجيد |
| IAT | کی میگر جیواری ہے ۔ کی میگر جیواری ہے ۔ | | حفرت عبدالترن مسعود دخى الشعند كا |
| IAF | سنت نور كااصل ما خذ قران كري | 108/ | ارشاد معدد المالا |
| IAA | تىكرىم فللسلاكا سى دونادت فرا | 100 | قرآن وسنت كا بابمى تعلق |
| 144 | علامه شاطبی دهدانشر کا بیان | 104 | المحارم على المائة علم التي كي المدى كوتين |
| 191 | ترک سنت کا نتیج گرایی ہے | 100 | مشكلات قرآن كاصبح حل |
| - | قرآن كريم ، سنت كا مأخذ به ١٠٠ | 104 | ظلم الشرتعالى كى مرادكيا ہے ؟ |
| L | ك يا سي إمام العصر مولانا كفي ا | 14. | كنزك تفريح |
| 194 | تَعِيدًا لِنْذِ كَا قِلَ | 144 | Toobaa-elibra |

| منتحر | موصنوع | jan | موضوع | |
|-------|--|---------------|--|--|
| YIL | سنت الله الله | 100 | اس با ريم معابركوام دفني الشعنهم | |
| 119 | سنتِ رُسُل | 191 | اس با سے میں صحابہ کرام دخی الٹرعنہم کا ذوق | |
| 24. | سنت الأولين | The second of | حضرت ابنعباس دضى الشرعذ كاطرزعمل | |
| 177 | سنت كي تحقيق الرروي لغت | | حفرت سعيدبن جبيركامقوله | |
| rra | سنت كى تحقيق ازروي سنرلعيت | 13-63/5 | حضرت عبذالثربن مسعود دحنى التُدعند | |
| 144 | سنت كاصطلاحي معنى | THE PARTY | کا مشرمان | |
| 172 | سنت اصطلاح محدثين مين | | المام شافعي كابرسوال كاجواب قرآن | |
| " | سنت اصطلاح مجتردین میں سنت فقهاری اصطلاح میں | 4 | كريم سے دينے كا علان | |
| 174 | منکرین صدیث کے ادر داور ان کے | 192 | حضرت الويجرين مجا مدكا طرزعمل | |
| 140 | جري فريت عاوله الدان ع جوابات | "" | ابن برحیان کا مسندمان اس سلسد میں علمار کا طرزعمل | |
| | برابات بیان نبوی اگر غیر محفوظ موتواس کے | 4.4 | الى سلىدى مارم مردس | |
| 12 | ALCOHOLOGICAL AND ALCOHOLOGICA AN | | و سام شافعی کااس موضوع برفصیلی کلام | |
| 49 | كتابت مديث كى ممانعت | | حضور والمسالقة نے بركام دى كے مطابق | |
| | تعفى صحابكرام كاصحف صديث كوتخرير | " | L. L. | |
| " | فرما نا اور تعير حلا دينا | F.A | اسام سیوطی کا نسریدان | |
| i c | كتابت صربين كى مما نعت والى احادية | 717 | رسول الترويس في المام اعلى | |
| 41 | ا کے جوابات | | رسول الترقيب المتي بحيثيت شامع | |
| 4 | ماندت کی وجہ | | مَا أنزل التُدى طرف رجوع كاحكم | |
| 2 | کتابت احادیث کی احازت | ric | خاتمير | |
| 5. 6 | صحابرام فعانتهم جين كفط كالكثال | 1 | لفظ سنت قرآن كريم مي | |
| K | ny blogonot com | | | |

| صفر | موضوع | صغر | موضوع |
|-------|---|------------|--|
| ror | عدم تدوین کو عدم جیت کی دلسیل بنانے بروق | The second | |
| 707 | سنگرین صریفسے علامدابن حزم کی زبانی ایک سوال | Yai | حضرت الوسجررفى الشرعنه كے صحیفہ عبلاً كے بارے میں تحقیق |
| 404 | الع ومآفذ والم | ror | اس کے بارسے میں علامہ ذمیبی کی داسے لتا بت اما دمیث کے جواز کے قائل صحابہ |
| 20.20 | | ror | مام رحنی الشرعنیم |

MELLICE CONTROL SERVICE TO BE SERVICE TO BE

JR C MEDICE CONTROL OF THE SERVICE CONTROL O

THE SELECTION OF THE SECOND SECOND

Extended to the second of the

جاني استاعلى الدانول المسترك المراجعة في دواجعة أن كالول عامر

それるというとはることのからからしていているという

الماست كالناكث والكالم الماست المساس

大はないないとうとうないとうとうないというないとうとうと

الرائية المارية المارية

かいてからうというないというというとうとうというというと

المال المالية

الحمد لله وحده ، والصلاة والسلام على من لانبى بعدة ، ومن تبع هدالا وهدديد ، وبعد ؟

داقع الحی فی سند ۱۹۳۳ ه مطابق ۱۹۳۱ وی جامعة علوم اسلامید کراچی سے فارغ ہوا تواسی سال جامعہ کی جا نب سے حضرت مولانا محرادر نسی صاحب میر شمی متنظلہ العالی کی زیر نگر انی شعبہ " تفصی فی المالئی " کا افتتاح علی ہی آیا۔ اللہ رب العزت نے اس ناچیز کو بھی اس در پیخصص میں شرکت کی سعادت نصیب فرماتی اور دوسالہ نصاب کی کھیل کے بعد جب شرکا مور پیخصص کے لئے اخیر سہ ماہی میں مقالات نکھنے کیا مختلف عنوانات مقرد کئے گئے توخوش قسمتی سے بندہ کے لئے "سنت نبو یہ اور قسران کو سے "کا موضوع مقرد کیا گیا، یہ میرے لئے ایک نعمتِ غیر مترقبہ اور نمیک فال تھا ۔ اس موضوع یا عنوان کا مقصد قرآن کریم سے جیت صدیت کو نابت کرنا تھا ۔

چنانچ اس عظیم اور انمول مقصد کے لئے بندہ نے دوم تب قرآن کا اول سے آخر تک خور وخوض اور تدم روامعان کے ساتھ مطالعہ کیا اور موضوع سے متعلق خاص خاص ایس منتخب کر کے ان کی سفرح و تفسیر کے لئے احادیث نبویہ ، اقوال سلف صالحین اور مشروح محققین کو پیجا کرنے کی حتی الوسع کوشش کی جواس رسالی تاریخ کا ام کے ساھنے ہے ۔ مشروح محققین کو پیجا کرنے کی حتی الوسع کوشش کی جواس رسالی تاریخ کا ایک ہے ایک بے بعنا عت اور ناکارہ کی پہلی طالب علما نہ کوشش تھی است الله اس میں مختلف مقامات پر معین اغلاط کی موجودگی یا ہے قاعدگی اور عدم سلاست ایک طبعی امرہے جس کے لئے راقم المحروف اپنے مختلف قارئین کرام سے ملتمس ہے کہ وہ اس

قع کی غلطیوں پر بندہ کو انبی قیمتی رائے اور انمول مشوروں سے ضرور مطلع فرمائیں . ميراءمر لي وسيخ علامة عصرحضرت مولاناسيد عديوسف صاحب بنورى ومتالنظيم كع وسع دى خوابش تمى كرميرامقالدكمة بى شكل مي تصب جائے اور علم دين كے پروانوں کواس سے استفادہ ممکن ہوسکے اس لئے مرحوم کی اس خواہش کو بورا کرنے ك خاطر بنده يه مقاله قارتين كرام كى تدرمت مي بيش كرفى جرآت كرراع ب، ورند

من التم كمن واتم م

اس سلىلى بنده استاذمحترم حفرت مولانامحدعبداله شيدصاصب نعمانی مد ظلمان الی کا نتهائی فلکرگذار بے کہ انہوں نے میرے اس مقالہ کو اپنی محققان ومدققان نظرمحرر كاشرف نجثاء الشرتعالى سيميرى وعارب كدايشررب العزت موصوت ا ورجله ان سبحضرات كوجنبول نے اس مقاله كى اصلاح تصحيح، طباعت اورا شاعت يس جوج حصدلياس كے مطابق ان كوا حرعظيم عطافرمات اورصریت یاک کی بدادنی می خدیمت قبول فرماکرمیرے لئے بدایت اورف لاح دارين كاسبب بنائ . إن مسميع مجيب وصلى الله على خدرخلقه معدي وآلمه وصحبه أجبعين . كته

محرصيك مختار 11/4/1. ×19 A·/ 4/ ٢7

E SOUTH THE STATE OF THE PARTY OF THE PARTY

cyllighty to your man which will will the

الم و و المعالم المحال و المحال المحا

ו ליוועורוב מיבה

بيشم الشرادين الرحسيم

الحمد منه الملك الحنان ، الذى مزل القرة النها المنحة المختاط المختاط المنطقة و المختاط المناه والمناه والمعلاة و السلام على صفيه و نجيه الذى كان خُلقه القران ، وعلى المه و أصحابه و أتباعه المناه بين شيد واالمدين باتباع سينالها المن ونفواعنه تحريف الغالين ، وانتحال المبطلين و تاويل الجاملين و أمّا على ؛

3 June

مسر ودکائنات فخرموجودات خاتم البّیتین رحة للعالمین نبی آخرائیدان صلی النه علیه و الم دنیایس اس دقت تشریف لا مصحب ده خلالت دگرای کی تاریجول می غرق اور کغرو عصیان کے سمندر میں ڈ و بی ہوئی تھی ، لوگ جانورول کی طرح ابنی عمرے قسیتی اوقات کھانے پینے اور حیوانی خوا ہشات بودک کرنے میں گذار رہے تھے ، دنیا ہے دین وایمان ختم ہوجیکا تھا خواپی اور انسانی اخوت و مهدروی کے احساسات نابید ہوجی تھے ، بشرم وحیاکا فور ہوجی تھی ، غیرت ان ہے کوسول دورتھی ، ذرا ذراسی بات پر آئیس میں الیں طویل اورخط فراک حیوائی شروع موسول خیر میں میں الیں طویل اورخط فراک حیات الدار موسول تھیں جو بیاتی تھیں جو بیات کی مست بھلم و مربع بیت عودی پر تھی ، طاقتور کرد دکو اور مالدار غریب شاک کے میٹری مطاقتور کرد دکو اور مالدار غریب شاک کو میں میں الشراعی کی میات کے لئے مبعوث فرم ایا تاکہ آپ اولا دِ ایس کو کو کو روط خیال کی ان تاریجوں سے باہر نکال کردین وا میان کی روخی اور خرابیت کے لئے مبعوث فرم ایا تاکہ آپ اولا دِ مراط مستقیم میر لانے کی کو مشتم حسر میرائیں ۔ جہانی تا دینے شاھ مدہ کہ آپ نے ونیا کی اس مراط مستقیم میر لانے کی کو مشتم حسر میرائیں ۔ جہانی تاریخ شاھ مدہ کہ آپ نے ونیا کی اس مراط مستقیم میر لانے کی کو مشتم حسر میرائیں ۔ جہانی تاریخ شاھ مدہ کہ آپ نے ونیا کی اس مراط مستقیم میر لانے کی کو مشتم حسر میرائیں ۔ جہانی تاریخ شاھ مدہ کہ آپ نے ونیا کی اس

سب سے زیادہ جاصل وسکٹی قوم کو دین واپیان کے سیسے راستہرلانے کی کس عزم و استقلال اورصبرو بتت كے ساتھ كوشش ف بيائى اوركس طرح ان كى تربيت كى اوراصلاح فرمانی ، اورکس محنت دمشقت سے ان کی رسنائی فرماکر کغرو تشرک کی بیتیوں سے شکال کرایمان واسلام کی بلندیوں پرپیونچایا ، توحید ، خدا پرتی ، جذبۃ ایمانی ، اخوت وانسانی بمدردی کو ان کے رگ ورلیتہ میں بیوست کر دیا اور وہ اس مقام مرمبہونی گئے کہ اب اپنے گھر بار، احل وعیال ، مبان دمال ،غرض ہرچیزکوالٹہ تعالیٰ کے بئے قربان کرنے پرتیاد تھے ، اپنے وی بھائیوں کی اعانت و امدادمی ایک دوسرے سے بڑھ ور کر مصر لیتے ، اخلاص کا پیمالکم کہ اپنے ہرقول وفعل میں ان کی کوشش یہ ہوتی کہی طرح خدائے پاک کی خوشنودی حاصل ہو جاسے . يه آب اصلى الله عليه وسلم) كى تعليم وترسيت اور تزكيد كانتيجراور آب كا وامرم عمل اورنواہی سے اختاب کا شمسرہ تھا ۔ ان لوگوں نے آپ کی سنت اور آپ کے اسوہ صنہ كى درشى بى كتاب التُدكوا ينامشعل داه بناليا تعااسى لئة دنيا نے بھى ان كالولم مان ليا، كفر ك تمام طاقتين ان كے سامنے منزگوں بوكئين ، اسلام كابول بالا بوا ، اور وہ يہال تك ترقى كرگياكسنا فقول اور زندنقول كوهي اس كے احكام سے مرتابى كرنے كى جرائت نه ہوسى مجبوراً اپنى آپ کاسلمان کہلانا پڑا تاکہ دنیوی منافع سے بھی خاطرخواہ منتفع ہوتے رہی ہ اسلام کا طھتے ہی القلاب م

كافشرتوانى شند ناجاد مسلمال شو

ائتے ہم کے لوگوں کا دیود بھی اس لئے ضروری ہے کہ نرمان اہی کے مطابق دنیا ہیں دئو گروہ ضرور رہتے ہیں : خدا اور اس کے دسول کی بات ماننے والے مسلمان بھی ،اوراس سے انحواف واعواض کرنے والے منافق اور زندیق بھی ، پہلاگردہ نرکی ہے توں کا ہے ، اور دوسرا پرنجوں کا ، ادرشا دیاری ہے :

فَيْنَاهُمْ شَيْقٌ وَّسَعِيْلُ لَهِ ﴿ مَنِ وَسَمِينَ لَكِ اللَّهِ الْمُونِ لِكِ مِنْ اللَّهِ الْمُونِ لِمُنْ ال

له سورهٔ عود ۱ ۱۰۵

لین اس کے ساتھ تی تعالی شانہ کی پہمی سنت جارہ ہے کہ وہ وقتاً فوقتاً سنا نقین اور زنا دقہ کے اطوار وکر دارکوظا ہر فرما تا رہتا ہے تاکہ المترتعالیٰ اور اس کے رسول صلی التعلیہ وسلم کے مقیمین اور مخالفین میں مسترق واستیا زکیا جاسکے :

لَيْكِيْلُونَالُهُ الْحَبِينَ عَنِ الْطَيِيرِ ﴿ تَاكُوالتُولِينَ كُوبِكِيرِهِ مِعِراكرِمِهِ * فَالْكُوالتُولِينَ كُوبِكِيرِهِ مِعِراكرِمِهِ * فَالْكُوالتُولِينَ كُوبِكِيرِهِ مِعِراكرِمِهِ * فَالْمُوالتُولِينَ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُلِّلْمُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللّلِي مُنْ اللَّهُ مُنْ أَلِي مُنْ اللَّهُ مُنْ ا

وننايعهم وبعهم عمننافضلة وبهندها تتبسين الاشياعيه

ترجیر !" اورجم ان (ذلیل وحیر) لوگوں کی مذمنت وہرائی کرتے ہیں حالا یک ان ہی کے ذریعہ م نے مدوح کے فضل دکھال کو پیچا ناہے ، اور چیز میں اپنی صند کے ذریعیم توپیچائی جائی ہے۔ مشہود مقول ہے :۔

لتے اے اکھاڑ جینکے کاارادہ کیا۔

" مها ہے ہی کہ بجھا کیں السٹرکی دو تی لینے منہ سے اور الشرکو ہوری کرنی ہے اپنی دوشنی اگرچہ نافرمانون گوارا نہ ہو ؟

يُرِيْدُهُ وُنَ لِيُكُفِئِكُ الْوَرَ اللهِ بِاَفْوَاهِمِ مُ وَاللهُ مُعَمَّمُ نُورِهِ وَلَوْكَمِهُ الْكَافِهُ وَاللهُ مُعَمَّمُ نُورِهِ وَلَوْكَمِهُ الْكَافِهُ وَلَا مُعْلَمُ الْعَالِمُ الْعَالِمُ وَلَا مُعْلَمُ

له سورة الفال : ٢٧

ي ديوان ألي العَليّب المتنبّي رص: ٩)-

ته سورهٔ صن ۱۸

انکار حدیث کا یر گراشوب فتنزجو آج کے دور فتن میں خصوصیت کے ساتھ اپنی جڑی مضبوط کرنے لگاہ اور خصوصاً نوتعلیفت اطبقہ اس فتندے متا تر فظر آر باہے ،کوئی نیا فقت مشبوط کرنے لگاہ یہ بہت قدیم فقندہ میں کے اصل بانی کھے زناد قد وملاحدہ اور کچھ فالی شعیہ و رافقی اور کچھ عقلیت پرست معتزلہ تھے ۔

تاہم معسنزلدگی مضلی ایک اصولی فلطی شی ہوان کے دما غول میں ایک فلط نظری بنائر پر قائم ہوگئی تھی ، ان کا مقصد دین سے سبکدوشی حاصل کرنا نہ تھا ، لیکن اس کے برخلاف فالی شیعہ وروانض اور اسی طرح نہ تا و فہ وملاحدہ کا اصل مقصد استعام سے گلوخلاصی کرنا تھا، اوران کا یہ جذبرانکار حدمیت کا سبب بنا ۔ ان لوگوں کی اصل خواہش بڑھی کہی صورت سر اسلام کوختم کرکے اس کی روحانیت اور اصل جوھے رکومشا دیا جاسے تاکہ بنیاد کھوکھلی ہوکئر صرف خلاہری ڈھانچہ رہ جا سے جوخودی رفتہ رفتہ رفتہ مہوجائے گا ۔ علامہ جلال الدین سیوطی التو فی سالا بھری ڈھانچہ می این مقتبل و نشاندی سیوطی التو فی سالا بھر نے اپنے دسالہ سی سیوطی التحق کی سے دیا بچوہ آئی الدین الدین سیوطی کی ہے ۔ چانچ دہ آئی الدین الیف کا سبب ہی ہر تبلاتے ہیں کہ ایک زندیتی دافقی عامل طور سے یہ کہا گرتا تھا کہ سنت نبویہ اور احادیث حجت نہیں ، اصل جنت اور ما حت فرصرف سے سے یہ کہا گرتا تھا کہ سنت نبویہ اور احادیث حجت نہیں ، اصل جنت اور ما حت فرصرف سے سے یہ کہا گرتا تھا کہ سنت نبویہ اور احادیث حجت نہیں ، اصل جنت اور ما حت فرصرف سے سے یہ کہا گرتا تھا کہ سنت نبویہ اور احادیث حجت نہیں ، اصل جنت اور ما حت فرصرف سے سے یہا گرتا تھا کہ سنت نبویہ اور احادیث حجت نہیں ، اصل جنت اور ما حت فرصرف سے سے ایس کری ہے ۔

اس کے بعدامام سیوطی منسرماتے ہیں کہ ،-

" اوراس باطل نظریک بنیادیے کہ زندىقيوں اورغالی دافضيوں کی ایک جماعت نے سنت کوججت ماننے سے اثكا دكمرويا اورصرف قرآن كريم براكتفا كياب ليكن ال كحاغراض ومقاصد صراحدا بي وان مي سيعض كاعقيد یہ ہے کہ نبوت مضربت علی رضی التٰرعنہ کا حق تضا اورجبرُ لي عليال لام نے مسيّد المرسلين صلى التشعليه وسلم برنازل بوكر غلطی کاار تکاب کمیا ، النترتعالی المندو مرتربين كمالول كحال خرافات ولغيأت اوران ميد يعض يرتوت المركمة مِي كم نبوت توآ تحضرت على الشرعليدة علم بى كاحق تفاليكن وه يه كيتي بي كرخالت كالتحضرت على بمكاتها، لهذاجب صحابی سے عدول کر کے حضرت الإيجريض الترعنه كوخليفه بناوياتودجمت حق ودور اسس ملحون گروه نے تمام صحابر كيفركافتوى لكادياكيونكر _انكے دعم كے مطابق _ انہوں نے ظلم كيا تھا اورستى كواس كاحى نبير ديا ،اوراس کے ساتھ ہی ال ملوثوں نے حنصر علی ضافتہ

دأصل هداالمائى الفاس النالمائى الفاس النالمائدة وطائفة من خلاة المائفة من خلاة المائفة والانتقاد على القراك وصم فى ذلا مع من خلاف من خلاف النقامة النبحة العلى وأن جبر أن حبر أن المائلة عليه السلام أخطأ فى نزوله إلى مسيد المسين صلى الله عليه وسلم تعالى الله عالى الل

ومنهم من أقر اللبى ستى
الله عليه وستم بالنبوة ولكن
قال: إن الخلافة كانت حقاً
لعلى ؛ فلاعدل بهاالقحابة
عنه إلى أبى بكر وضى الله عنه
رعنهم أجمعين _ قال غؤلاء
المخذ ولون لعنهم الله -:
كفر واحيت جاروا وعداوا بالله
عن ستحقه، وكفر وا
عن ستحقه، وكفر وا
عن ستحقه، وكفر وا
تعالى عنه أليفاً لعن طلبه حقه
تعالى عنه أليفاً لعن طلبه حقه

نبنواعل ذلك بدَّ الْكُماديث كلّعا لاُنْهاءندهم بنصهم سن دواية قوم كفاد .

پرمیک فرکا فتوی لگا یا اس لئے کہ انہوں ہے سبی اپنے حق کا مطالہ نہیں کیا ہی اسی با کو بنیاد بناکر (کرسا ہے صحابہ العیاذ بالشہ ان کے زعم فامیدس کا فرم کئے تھے) تام

احا دیٹ کور دکرد یاکیونکہ بروا یات ان کے خیال کے مطابق کا فروں کی روایت کردہ تھیں زا ورکا فروں کی روایات قابل قبول نہیں ہوتیں ہے۔

اس کے بعد سکھتے ہیں :۔

وتدكان أصل حذا الهائى موجودين بكتوة فى ذمن الأثنة الأدبعة فسن بعدهم ولفتك الأثنة الأدبعة وأصحابهم فى دروسهم ومناظرا تعم وتعانيف حداللة عليهمة

" اوراس عقیدہ کے لوگ اٹمہ ادلیہ اوران کے بعد سمی ہرزمانہ میں کبڑت موجود تھے ، جنانچرائم ادلیہ اوران کے اصحاب نے بھی اپنے درسوں ، مناظروں اور تعدیقات کے ذرلیہ ان لوگوں کی تردید مرکم سرباندھی ہیں تردید مرکم سرباندھی ہیں

یورپ کے کا مستمستشرقای نے جانکار حدیث کی داغ بیل ڈالی ہے وہ انہیں فلذ پردازد کی فلٹ سامانیوں پرمبنی ہے ، اور ہماری نئی نسل کے پاس اس سلسلی جوشبہات ہیں ان سک مواد مستشرقین ہی کالیں توردہ ہے جس کی پزیرائی کی اصل وجہ نئی نسل کی پیٹوا ہش ہے کہ مبطرح ہیں بن سکے دین کی گرفت کو ڈھیلا کیا جائے اور اسسلام کوائیں صورت میں بیش کیا جائے ۔ جو ہرقالی اور اسسلام کوائیں صورت میں بیش کیا جائے ۔ جو ہرقالی اور اسسلام کوائیں صورت میں بیش کیا جائے ۔ جو ہرقالی اور اسسلام کوائیں صورت میں بیش کیا جائے ۔

تَ اللَّهُ مُ اللَّهُ أَلَّ الْكُونَ بِهِ ﴿ " خلاان كوغارت كرے بكر مرال عام ولي "

ان ما ڈرن منکرین مدیث کاتمام زور اس امریہ ہے کہ نبی کے سی قول یا نعل کی حیثیت

له مفتاح الجنة (ص ١٠) -

له سورهٔ توب ، آیت ۲۰۰۰ ـ

تسلي نهي بي بكاس كا طاعت الك اميراور حاكم كى طرح صرف وقتى طور برلازم ب- يه یات اس قدر غلط ا ورجهالت پرمینی ہے کہ کسی بیلے صفح مسلمان کو بھی اس کے باطل مونے میں شبہ نہیں ہوسکتا ، اس لئے کداس کا مطلب تویہ ہواکہ صرف خداسے پاک پرا بیان لاناکا فی ہے ، رسول پرايان لانے كى ضرورت بى تہيں ۔ جب " اَ كِلْيْحُ الدَّهُ "اور" اَ طِيْعُوا التَّهُ كُلَّ كَي يَاولِ ى جاسكتى ہے توس استُوا يادته و ته اُوليه و كا اولي كيون نہيں كى جاسكتى - اور تاويلات كايمهل لسائشروع بوجائ توجردين كى خيربي -

اس لنے یہ بات بالکل ظاہرہے کہ شکرسنت گھسراہ اور دین کا ڈٹمن ہے ۔ حضرت الوك خديان المتوفى سلطاء في بالكريجاف رمايا ي ك :-

إذاحد تسال المجل بسنة فقال: المحيب تم كس تحض كيساسة كوكسنت دعناس صدة وأجبناعن بيان كرواورده يول كير كراس فيوثروني، القران فاعلم أنه ضال صل ملي توقرآن سيجاب ووتوتم يقين كراد

كرو يشخف تودهسراه بادردوسرول كوهسراه كرف والاب

مندرجه بالاسطورس يحقيقت آخكارا بهوكئ يبهت قديم فتنهب اوريهي مسلوم ہوگیا کہ بے فتنہ کن لوگوں نے کھڑا کیا تھا اور ان کامقصد کیا تھا۔

قديم وجرئيد لحديث كے اعتراض كى نوعيث

ذ ليس م تديم اورجديد منكرين مديث كاعتراض كى نوعيت يسجو فرق ساس كو واضح كرنا جائة مي ، اس زمان مي جيس مرجيز نے ترقی كى ہے ، اس طرح الحاد ولاد في تنے سمى ترقى كى ب، اور اينى مقصدا ورمدعاكو مختلف بسياتي بدل مريش كرني كرف كے لئے نئ نئ تعبیرات ایجاد کی گئیں ، نئ نئ ملح سازیوں سے کام لیا گیا ،اور نئے نئے سانچوں میں اس بطل كوى بناكر دكھانے كى كوشش كى تى ہے ، اگرچ ان كے اغراض ومقاصد آلبى مى مختلف بى مولال وبراهمین جُداجُدابی ، اسلوب بیان ا ورانداز شکارش بدلا بواب سگران سب کا مقصد و سه معرفة علوم الحديث وص- ٢٥٠) ولكفائة في علم الرواية وص-١١٧ .

مدعا أيك بى سے ، اصل الحاد و لادینی نظریات میں سب كارتفاق ہے .

أس زمانه كے محدین اور دشمنان دین اكو یہ اعتراض نہیں تھاكہ ہوئكہ نذوین حدیث بعد یں ہوئی ہے لعذا اتن مدت گذرحانے کے باوجود حافظ مرکسے اعتماد کیا جا سکتاہے ، اسس ا عرّا ف كويّين كرنے كى ہمت اور حراًت أبسي اس لئے نہ ہوئى كہ اس زمان ميں يراعرّاف ائتهائى مفحكة خيراود مشاهدات كے خلاف تھااس لئے كه ان كے سامنے اس قسم كے ما فظر كے مالک بجزت افراد اور بہت میستیال تھیں ، ہاں اِس زمانہ کے صدید محدین اور نئی بود کے کے ساعتراض کن لینا اور اسے اورکرلیٹا بہت آسان ہے کیونکہ نہ ٹو دان کے صافقے ایسے تیزی اور نه اس تسم کے حافظ کے افراداب یا سے حاتے ہی اور نرحا فظریراتنا اعتماداب کیاجاسکتا ے۔ لعذا انہوں نے اب یہ کہنا شروع کردیاہے کہ فرقد پرشنوں ا ودیحکرانوں نے دین کولیے معنقدات الداغراض كے مطابق بنانے كے لئے برادوں احا ديث نودگھ كر ميان كيں ، اسس لية ال ذحيرة حديث براعتاد نهيس كيا حاسكتا -

سے اس کی تائیدی ہوں تقریری جاتی ہے کہ دین کے ساملا میں اگرکتا ب الشرکائی نہ مد بلکه احادیث کی بھی حاجت باتی رہے تو بھیر بھیل دین اور اتمام دین کاکیا مطلب ؟ اور مسرآن كريم كے كامل كتاب بونے كے كيامعنى ج اس لئے كداگرا ماديث كى ضرورت باتى ب توقراك ناقص بدا، حالانكة قرآك كريم مي ارشاد بارى ہے ،-

" مم ف كتاب ي كسي ميد كونهي جوالا

" اوريم في آپ يركناب كونازل كيابر حِيْرِ کے لئے بيان بناكر "

ٱلْيَوْمَ ٱلْمُلْتُ مَكُمُ دِيْنَكُمُ لَهِ اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا اللَّهِ مَا اللَّهُ اللَّهُ اللّ ا در دوسسری جگرفشرما یا ۱۰ مَا فَرُهُ فَا فِي الْكِتَابِ ثِنْ شَيَّ كُ ایک حکربوں ارمشاد ہوتاہے :۔ دَنْ زُّلْنَا عَلَيْكُ الْكِتَابَ تِبْيَانَا بِكُلِّ شيء ت

غرض یہ اور اس تسم کی دوسری آیات کو میرلوگ اپنے دعویٰ کی تائید میں ہیں کہتے ہیں ا على اركوام نے برزمان میں ان شبہات كے دندان شكن جوابات ديے ہيں ، خاص كرائمة ادلعب ا وران کے ارشد تلامذہ نے اپنے درسوں ،سناظروں مجلسوں ، وعظوں ،تصنیفوں اور مقالات میں ان کی محل تردید کی ہے (جیساکہ ابھی ہم علامت وطی کے والہ سے ذکر کر میکے ہیں) المدحقيقت يرب كدائمة متقدمين كرزمان من توآئ كى بنسبت ببت زيادة كري وي موجودتھے جینانچہان کے ان ہی تنبہات واعتراضات کوختم کرنے کے لئے ہی " مختلف الحدیث" كافن مدوّن موا اورائد استلام خاس موضوع برمرى برى عدد تصانيف تياركس ، حيّا تحيد اماً شافعي المتوفي سمن مله مل كركتاب " اختلاف الحديث" اورعلامدابن قتيبيُّ التوفي سمن مس " تاديل يختلف الاماديث " الصلسله كي قابل ذكركتابي بين - اور امام طحادث المتوفئ ماسسيم كي " شرح معانی الاً نار" اور "مشکل الا نار" تواس موضوع برالی میش بها تعانب ای کورے اسلای ذخیرة کتب می ان کی نظیرنہیں ۔ بیسب تصانیعت ان ہی لوگوں کے شہرات کے ازالے کے لئے تھی گئی ہے نیمیں اما دیث می طرح طرح کے اشکال اور تضا دنظر آتے تھے اور ڈان اماکہ كوجمت مان كے لئے تيار نہ تھے۔

ائد نرکورین کے علادہ اور بہت سے علمار نے "کتاب السنة" کے نام سے نمقت ادوا ا میں اس موضوع برکتابی تھی ہی جن سے ان زائعین کی تردید ہوتی ہے میکن ان علما راولا کا بڑا نے اپنی تصانیف میں زیادہ تر احادیث سے استعمال کیا تھاکیو نکساس دور کے سنگرین صدیث کی اکثریت جن میں معتزلہ بیٹی قدم تھے ، اخباد متواترہ دمشہورہ کو تو مائتی تھی البتر اخبار آماد کا جرت سلیم کرنے سے انکاری تھی اور ان ملاحدہ کی تعداد جو سرے سے حدیث بوی کو جت تہ تو ہوت میں بہت ہی کہ تھے برخلاف تھا رہے اس لما حدہ کی تعداد جو سرے سے حدیث کو حجت مانتے ہی کے لئے تیاز مہیں اور ظاہر ہے جس فراق کی فظر میں خودا حادیث ہے کے کہ یہ مسرے سے حدیث کو حجت مانتے ہی کے لئے تیاز مہیں اور ظاہر ہے جس فراق کی فظر میں خودا حادیث ہے کی ہوسکتا جب تک احادیث کا حجت ہونا ہم قرآن کریم سے ثابت نرکر دیں ، اس لئے ہم نے اس مختصرے مقالہ میں احادیث کا حجت ہونا ہم قرآن کریم سے ثابت نرکر دیں ، اس لئے ہم نے اس مختصرے مقالہ میں

، کوشش کی ہے کہ آپ کے سامنے قرآن کریم کی اُن آ بات بینات کومیش کری جوسنت اوراحادیث کے جست ہونے پرصاف طورے دلالت کرنی ہیں ، رسول الشرصلی الشرعلي و لم كى اطاعت كولارى قراردتی ای ، آپ کے اسوہ حسند بھل بیرا ہونے کی ترغیب دی بی ، آپ کے برحکم اور برفیصلہ ك آكے مرتسنيم م كرتے كا محمديق بي ، آب كے مطاع ومفترض الطاعة بونے كوبتا تى بي اور آب كے اقوال وا نعال كے جت بونے كى مريج اور محكم شہادت ديتي ہي . وبالتدالتونيق . محتظما إدراء الامقالي وليف احادث آي كانظر كذري كى وه ضمنا صوف تائيد كے طور بريش كى كئى بى ،اصل مدار استدلال قرآن كريم بيرے ،اسى طرح علائحققين كروا قوال بيش كمة بي وهجى آيات كريدكى توضيح كي سلسلمي بس ـ

دين کا اس دارومداروي بوت پرې

سب جلتے ہیں کہ اللہ تبارک و تعسالی نے دنیاکی ہدایت اور لوگوں کوراہ راست برالانے کے لئے ہرزمان میں انب یارکرام علیج سلام کومبعوث منسرمایا ، ارشاد باری ہے د مَانُ يِنُ أُسَّةِ إِلَّاخَلَا فِيهِا ﴿ ١ وركنَ فرقتْ نِينِ مِن نِينِ بِوجِكَا

انسيارعظام عليمالتلام كى تعدادك بارسى صضرت ابواما م صروى بى كدايك بارحضرت ابوؤنش في كريم ملى الشرعلية ولم كى خدمت بي حاضر بهوكر كمچيه والات كئے جن كے اخير مين انبيارعليم السلام كى تعداد كے بارے ميں سى دريافت كيا توحضور اكرم عليالصلاة والسلام

« ایک لاکے چیس برادانبیا رگذرے ہی جن بی سے تین سویندرہ کی ایچی ف ای تعداد رسولون کی ہے ج

مائةألف وأدبعة وعثهن الفااليهل وداك تلتائة دخسة عشرجاً عَفِيلًا بِهُ

له مناهد ره: ۱۹۵ ر۲۲۲)-

له فاطسر ۲۲۰

حافظ اين جرعسقلاني المتوفى متهديم " فيخ البياري " مِن تفقة بي كرانبيا رعليم السّالم كى تعدادىك بارى مضرت ابوزد والأكى مرفوع مديث من آتاب كدان كى تعداد الكمالكة بيي بزارہے جن میں سے دسول تین سوتیرہ ہیں ، ابن حبان نے اس روایت کی صحیح کی ہے ^{یا}ہ سوچنے کی بات ہے کہ تمام انسبیا جلیم السّلام میں سے جارا نبیا رکرام کوہی اللّٰہ تعالیٰے في مستقل كتابي عطافرمائين بحضرت موى عليه التلام كوتوداة بحضرت عيى عليالت لي كوال حضرت واقدعليالسلام كوزلورا ورخاتم الانبيار حضرت محررسول الشرصلى الشطليه وسلم كو مشرآن مجيد ، اورحضرت ابراسم عليه التلام اورنعض ديگيرانبيارعليم السلام كوكي يخفيجى عنايت ہوے مگران حضرات كے علاوہ اور نبيول پر مكى اور كتاب كے نازل سونے كاذكر ہے اور ندکسی صحیفہ کے اتر نے کا رجس سے معلوم ہواکہ ان انہیا رکرام علیہم الت لام کو النتر حل شانز اپنے احکام وحی فقی کے ہی ذریعہ سے تبلا تے تھے اوران میرکوئی وحی متلونازل مذ ہوئی تھی ،لیکن ہرنبی کی اتست پراپنے نبی کی اطاعت اور اشباع ہرزمانہ میں فرض تھی ہیں سے صاحت واضح ہوگیاکہ دین کا اصل مدار وحی شنلو یاکسی کتاب کے نازل ہونے پڑسہیں بلکہ آگ دحی پرہے جوخدا اپنے کسی نبی پر نازل مسرماتے ہیں اوراس وحی کا نام قرآک کریم کی سطسلل يں حكمت اور صديث كى اصطلاح بي سنت ہے ، يہى دى مصدرتشريع احكام الهيہ ہے اور اسی وی کے ذریعہ نی جوشراییت بتلاے اس کی اطاعت اور اتباع کولازی قرار دیاگیاہے اورفسرمایا ہے ا

اً ورنم نے کوئی دسول نہیں جیجا گراس واسط كراس كاحكم مانس التركي فرمانيي

وتساأنستلكارث تشوليالا لِيُطَاعَ بِإِذْ نِ اللهِ عَه مرنی نے دنسیایں آگرائی قوم کے ساسنے اس شریب کریش کیا جواسے بدریعہ دحی

معلوم ہوئی، ارمشادیے ،۔

فغ السارى (۲: ۲۵۷)-

" تم میں سے برقوم کے لئے ہم نے ایک شریعیت ادرطسرلقہ عطاکیاہے ؟ لِكُلِّ جَعَلْنَاشِكُمْ شِیْمَعَةً دَّ مِنْعَاجِاً بِه

ہرنی نے اپنی اتنت سے ہی کہا کہ تم میری ہی اطاعت کر و بعضرت نوح علیہ السلام ہولیکر مشرت محد دسول الشرصلی الشرعلیہ ولم تک تمام حضرات انبیا کرام علیہم السلام نے اپنی آبی آبی تو ہوں کو سے درجوت اورجا کی فعصیل اس طرح مذکور ہے ،۔
کو یہی دعوت دی ہے ۔ چنا نچ سورہ مشعرار میں دعوت نوش کی فعصیل اس طرح مذکور ہے ،۔

مد جسٹالایا فرح کی قوم نے بینام لانے والوں کو ، حب کہااان کوان کے بھائی فرح نے کیا تم کو ڈ ڈ ڈ بہیں ، میں تمہارے واسطے بینا الانے والا بول معتبر ، موڈر والٹرے الا میرا کہا ما فو ، اور ما تکتا نہیں تی تم سے ال میرا کہا ما فو ، اور ما تکتا نہیں تی تم سے ال میرا کہا ما فو ، اور ما تکتا نہیں تی تم سے ال میرا کہا ما فو ، اور میرا کہا ما فو یہ بر موڈر والٹری اور میرا کہا ما فو یہ

كَذَّبَتُ تَوْمُ لُوْجِ إِلْمُهُمَلِيْنَ إِذَ تَالَ لَهُمُ أَخُوْهُمُ أُنْوَحُ أَلَا تَتَّقُونَ ٥ إِنِّى لَكُمُّ رَسُّوُلِيَّ اَسِيْنُ ٥ زَاتَّقُوا اللهُ وَاَطِيعِين تسّاأ سُتُلْكُمُ عَلَيْهِ مِنْ أَجْيُ إِنْ أَجْرِى إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَلَمِينَ فَالْمُعُولِ اللهِ وَ أَطِيعُونِ مِنْ سورة أوح مي ارشاد ياري سي بر إِنَّا أَمُّ سَلَّنَا لَيْحًا إِلَّى تَوْمِهِ أَنْ آئذِ دُقَوْمَ لِكَ مِنْ تَبْكِ آتُ تُأْتِيَعُهُمْ عَذَاكَ ٱلِيُمُّ قَالَ لقوم إني تكم ني ريس ين أَنِ اعْبُكُ وَاللَّهُ وَالَّهُ وَالَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ كأطيعون بله

" ہم نے بھیجانوے کواس کی قوم کی طرف کہ طرف کہ طرف کہ طرف کہ اسے پہلے کہ بیرہ نجے النہر عذا اسے میں کہ قوم کو اس سے پہلے کہ بیرہ نجے النہر میں تم کو ڈرومنا تا ہوں کھول کو بندگی کرد الشرکی اور اس سے ڈروا درسے مدا کہا مانو ؟

له المائده : ۲۸

س الشعرار : ۱۰۵ تا ۱۱۰

یه نوح : ۱ تا ۳

حضرت نور علیدالستال کے بعد حضرت صود علیدالسلام نے بھی اس طرح اپن توم کوانہی الفاظيں اپنی اطاعت کی دعوت دی ،ارستادر بانی ہے :-

مدحيشلا ياعا دني يغيام لان والوسك تَالَ لَهُ مُ أَخُوهُمُ هُوُدُ الْاِنْتَقَوْبَ الْمَالِمَةُ مُؤَدُّ الْاِنْتَقَوْبَ الْمُ حِدِيكِها ان كوان كريها في عود في كياتم إِنِّي لَكُمْ رَسُولَ أَرِيْنُ فَالْفُولَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللهِ اللهِ معترسول سوالد وخداسا ودسراكها سالوي

كَذَّبَتْ عَادُ إِنْكُنُ سَلِيْنَ إِذْ الله دَاطِيعُونِي الله

اس کے بعد قوم کومزر نصیحت کرنے کے بعد جران محالفاظ کورسرایلے :-" سوالنُّر ب فيرواورميراكها مانو؟ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَآطِيْعُونِ بِهُ

حضرت حودعليه التلام كے بعد حضرت صالح عليه التلام نے بھی اپنی قوم سے بہی فرمایا كم " تم الله تعالى مع ودوا ورميرى اطاعت كرو" ارتادب :-

قَالَ لَعُهُمُ أَخُوصُهُم مَسَالِحٌ جب كما الن كوان كے مبالُ صالح في كيا تم در تنس مي تمارك إس سفا أَمِينُ وَ فَالْقُولُ اللَّهُ وَأَطِيعُونِ اللهِ لا فِي والا بول معتبر ، سوالله سع فيدو اورمىسراكها مانو "

كَذَّبَتْ تُمُودُ إِنَّهُمْ سَلِينَ إِذْ الصح الله المُور في بنام لا في والول كو اَلاَتَتَقُونَ * إِنَّ لَكُمُ رَسُولُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللّ 4 4 4

> اوراس خطاب کے اختام برقوم سے چرم کررمیم منسرمایا :-نَالَّقُوااللَّهُ وَاطِيْعُونَ عَلَمْ

حضرت لوط علیم التلام نے بی می وغوت دی تھی ، ادمثاد باری ہے ،۔

الشعار: ١٢٣ تا ١٢٩

يد الشعراء : ١٣١

الشعراء : الما ما ١٢٨ ۳

الشعراء ١٥٠

كَذَّبَتْ تَوْمُ لَوُطِ إِلْكُرُ سُولِيْنَ إِذُ تَالَ لَعُهُمْ أَخُوْهُمْ مُ لَوَظُ اَلْا تَنَفَّرُونَ * إِنِّ لَكُمْ يَسُولُ اَمِيْنَ نَنَقَرُونَ * إِنِّ لَكُمْ يَسُولُ اَمِيْنَ نَاتَّقُوا اللهَ وَاطِيعُونِ الله

" مُجَعِثْ للایا لوطک قوم نے بیغام لانیوالی کو میں کے بیغام لانیوالی کو ان کے بیغائی لوط نے کمیا تم نہیں ڈو کے کہا تم نہیں ڈور تے ، میں تمہارے لئے بیغام لانے والا ہوں معیّر موڈر والتہ کوالام کرکھا افریک

حضريت شيب عليدالت لام نع يمي ابني قوم كوراه داست بيدلا في كم لتربي فرما ياحقا،

النُدتعالُ لنرماتح بي ١-

كَدَّبَ أَصُحْبُ لَّتَكَيَّكَةِ الْمُثَهِّلِيُنَّ إِذْ تَالَ لَهُ ثَمْ شُعِيَبُ اَلْاَتَقَوْنَ ثَا إِنْ لَكُمُ دَسُولُ آمِينِي فَأَنْ فَالَّقُوا اللّهُ دَ اَطِيعُونِ يَنْ *

" حُبِسُلا یا بَن کے رہنے والوں نے پینام لانے والوں کو جب کہاان کو شعیب نے کیاتم ڈرتے نہیں ہمیتم کومینام بہنجانے والاہون متر سوڈروالٹرے اور سراکھا ماتو"

غورفسرمائے یہ پانچوں کیل العددانسیا علیم التلام اپنی قوم کوکس بیزی دعوت دے سے بیر اپنی قوم کوکس بیزی دعوت دے سے بیر اپنی قوم کوکس بیزی دو با ہیں بیسی ، (۱) اللہ تعالیٰ سے ڈرو (۲) مسیری اطاعت کرو۔ اس سے معلوم ہوا کہ اصل معادل طاعت واتباع دی نبوت برہے جس کا نام سنت ہے ۔ کتاب اوروی متلوکا نازل ہونا ضروری نہیں ۔

من من المربي التالم كى دغوت مي سب سے زياده صريح طوربير " امرني " كى

اطاعت كى تصرى ب. ف يايا ،

وَإِنَّ رَبَّكُمُ النَّحْسَ بَالْبَيْنُ لِيَّ وَأَخِلْتُكُو الْمُيَاثَى يَنِّهُ

" اود تههادارب تودهان سیسومیری داه حاد اودمیری باست مانوی

R-12179

M-L

ای طرح حضرت عین علیه السّلام نے اپن قوم کو اپن بی اطاعت کی دعوت دی ، فرما یا ،۔

له الشعرار : ۱۹۳ تا ۱۹۳

لل التعوار: ١٤١ تا ١٤٩

٣٠ : الله على ١٠

مسودرو الشي إدرسيراكهامانو خَاتَّعُوا الله وَ أَطِيْعُونِ عله

سورة زخرف مي حضرت عيى عليه التلام كااني قوم سے خطاب ال الفاظ ميں مذكور مجرب

ا ورجب آیاعیٹی نشانیاں لے کر اولای لایا بول تمہارے پاس کی باتیں العبّلانے الم بعن ده يرس م المعلاقة

دَلْمَاجَاءَ عِينُى بِالْبَيْنَاتِ قَالَ تَنْجُنُتُكُمُ بِالْحِكْمَةِ وَلِلْآلِبِينَ الكُمُ بَعِفْنَ الَّذِينَ تَخْتَلِقُونَ فِيْهِ فَاتَّقُوا اللَّهُ وَ أَطِيْعُونِ كُو الله الديم الإسالوة

اس آیت کریمی سکمت کامصداق وی سنت رول ہے (ص کی تفصیل تحقیق آئذہ آنگی)

ان تمام نصوص مترانيه سے تابت بواكد بررسول ابن امت اور قوم كے لئے مفترض الط بوتاب بعین قوم پرضروری اور لازی بوتاب که وه اپنے دسول کے تمامستراحکام ، اوامرونوای افعال واعمال اور احتلاق كى تباع اور سيروى كرے اور سي اقوال وا فعال اور اوامرونواى

اس کی سنت ہیں اوران برعمل کم ناضروری ہے اس لئے ارشاد باری ہے :-

مُنَّةَ مَنْ عَدَّ أَدْسَلُنَا قَبُلُكُ ﴿ "رستورِبِلاا تَابِ ان رسولوں كا جَ تَجِيرَ

سِنْ تُسْكِينًا مِنْ مُسْكِينًا مِنْ مُسْكِمِ فَيَ مِسْكِمٍ عَلَيْهِ عِنْ الْمُسْكِمِ فَيَ مِسْكِمٍ عَلَيْهِ عِن

اس آیت سے معلوم ہواکہ ہرنبی صاحب سُنّت ہوتا ہے اور اس کی اطاعت براللہ تعالیٰ ک

اطاعت كامدار وتاب، ارشادر بانى ب

سَنْ يَطِعِ النَّهُ وَلَ نَقَدُ الطَاعَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

عرض برنی کاصاحب کتاب ہوناضرور کی نہیں ،صاحب سنت ہوناضروری ہے،اگر کوئینی صاحب کتاب می ہوتو میراس کی امت کے لئے دومیزی واحب الاتباع ہوں گی ،

آل عمران : ٥٠

الزُّنسرين : ٩٣

النيار : ۸۰

الاسراء : ٢٠

ry.blogspot.com

72 - 27 SIL

ا کیس کتاب اور د وسری اس کی سنت، اورجن بی پر کتاب نازل نه بهو توصرف اس کی سُنت ى قوم كے اعتراه خات اور ملفذا عكام شريعت بوكى ـ

على بىر يەكەرىپ تك كتاب ئازل نېوتورسول كى ئىنىت بى احكام شرىيدىكا ولىن مىلىنىدىنى ئىسىنى ئىلىنى ئازىل نېوتورسول كى ئىنىت بى احكام شرىيدىكا تولىن ماخذ بوگا ، اورسنت اس بات کی محتاج نه بوگی که کتاب البی نازل بوکراس کی تصدیق کرے، عرض مُنت رعمل كئے بغيردين يول سيرامونا نامكن ہے۔

ابيان بالرول كاتقاضا

ذيل بي بم ان آياست كوذكركر بي مرح جن بي التُرتعاليٰ نے اپنے اور اپنے دسول صلی اللہ عليدك لم پرايدان لانے كولازمى وشرار ديا ہے اُ ودريرا يمان اس وقت تكم يحقق نہيں ہوسكته حب مک اللہ اوراس کے رسول کے احکام موجود نہوں بخوا ہ بصورت کتاب وخوا ہ بعورت سنت ، اوران كا عتقادًا وعملًا اتباع منكيا جائد اس كے بعدان آيات بنيات كومين كرس محجن مي الله تعالى نے اپني اطاعت كے ساتھ دسول السُّرصلي السُّرعليه وسلم كى اطاعت کویمی لازمی مشسوار دیاہے۔

رسول التدمن التنادم مرايات لان كالم

السُّرِيّارَك وتعبالي ادمشاد فرماتے ہيں ،

ا _ يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ أَمَنُوْا أُرِنُوْا بالله وتسكوله والكيتاب الَّذِي كُزُّلَ عَلَى دَسُوْلِيهِ وَالْكِتَابِ الَّـٰذِيْ أَنْزُلَ کی تھی میلے یہ مِنْ تَبْنُ مِلْهُ

" اعدى ال والو ؛ لقين لا وَالتُّرير اور اس کے دسول پر اور اس کتاب برجونازل کی اینے دسول پر ۱ وراس کتاب میرج نازل of good of the s

له النِّسًاء : ۱۳۲

74

" اے لوگو ؛ تہا رے یاس تول آخیکا سی بات مے کرتمہارے دب کی تومان لوتاكر عبلا بوتمهارا ع «آپكرديخ كراے لوگو! سيرسول ہوں الٹرکاتم سب کی طروث چس کی حكومت بحرآسانول اورزمين بريمسىكى بندگی نہیں مواسے اس کے دی جلاتا ہ اورمارتا بي رسوايان لا وَالسُّرِيا ور اس كيسيح بوريني أتى يرج كرنتين كحقا مجرالترمياوراس كيسب كالمون براور سى يروى كرو تاكتم داه ياۋ" « موجولوگ اس بر ایمان لامے اودا*س* كىدفاقتىكادراس كىسدى ؟ " (اورلوگ كيتي إسم نے مانا الله كو ادرسول كو اور حكم س آمي " « ایمان والے وہ بی جونقین لا سے اللہ مراوراس کے رسول براورجب ہوتے بي اس كے ساتھ كى بى جونے كے كا

_ يَااَتُهَاالنَّاسُ تَهُجَاءَكُمُ التَّسُولُ بِالْحَقِّ مِن تَّبَيْكُمُ نَامِنُوْ إِخَايُرًا لِكُمْ اله ٧_ قُلُ لِآتُهُ النَّاسُ إِنَّ رَسُولُ اللهِ إِلَيْكُمْ جِمِيعًا ، أَلَّـ فِي كُلُّهُ مُلْكُ التَّمَا وَيَرْتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَٰهُ إِلَّاهُوَ ، كُونِي وَيُسُبُّ فَأَمِنُوا بالله وَ رَسُولِهِ ، النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ اللِّنِي كُونُونَ بِاللَّهِ تَكِيَّاتِهِ وَاتَّبِعُونُ لَعَلَّكُمُ تَهُتَّدُكُونَا f . f . f . f . f . . f م _ فَالَّذِيْنَ اسَّنُوْ اللهِ وَعَنَّدُولُهُ وَنَصَمُّ وَيُهُ مِنَّهُ ۵_استًا بِاللهِ وبِالنَّهُ وَلِ وَأَطَعْنَا ٧_إِنَّمَالْكُونِينُوْنَ الَّذِينَ أَسَنُوا بالله وَ مَصْوُلِهِ وَإِذْا كَانُولْمَعَهُ عَلَىٰ ٱلْمُرْجَامِعِ لَهُ مَيْنُ هَبُواكِمٌ

له النار: ۱۵۰ لا الاعسرات: ۵۸۱ لا سرات: ۱۵۸ لا الاعسرات: ۱۵۷

میں توجیے نہیں جاتے حبب تک اس سے اجازت نہ لے لیں ،جولوگ تجھ محاجازت لیتے ہیں دہی ہی جو مانتے ہیں التہ کو اور اس کے دسول کو " يَسُنَا ذِنْوَهُ مِاتَ الَّـذِيُنَ يَسُنَا ذِنْوَنَكَ أُولَا اللَّهِ فَ الَّذِيْنَ يَشُنَا ذِنْوَنَ بِاللَّهِ وَرَيْسُولِهِ فِي يُوْمِيُونَ بِاللَّهِ وَرَيْسُولِهِ فِي بُو بَوْ بَوْ بَوْ

منظلات بمائے اللہ تعالی نے ایمان بالٹرکے ساتھ ایمان بالرسول کو بھی لازمی قراد دیا ہم اور مفود اگرم صلی اللہ علیہ کا بھی حکم دیا ہے اور مؤمنوں کی شان ہی برستلائی ہے کہ وہ اللہ تعدالی اور ایمان کے لوازمات میں اس بات کو بھی شام اور ایمان کے لوازمات میں اس بات کو بھی شام ل فریما دیا کہ جب وہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ ولم کے پاس موجود ہوں ، اور اکھے دہنے کاکوئی کام ہو تو وہ لغربی کی اجازت کئے ہوئے جاس سے وابس بھی نہ جائیں ، توس طرح آپ کی اجازت کئے ہوئے جاس سے وابس بھی نہ جائیں ، توس طرح آپ کی اجازت کے ہوئے جائیں ہے اور ملے کا اور کے کلام کی اتباع کرنا بھی ورست نہیں ہے اسی لیے محافظا بنتی کا فرمان مدبارک کو چھوڑ کرکسی اور کے کلام کی اتباع کرنا بھی ورست نہیں ۔ اسی لیے محافظا بنتی کی کرنا بھی ورست نہیں ۔ اسی لیے محافظا بنتی کی کہنا ہے اور کی کتاب " اعلام الموقعین ، میں کھھے ہیں ، ۔

فاذ اجعل الله من لوازم الإيمان أنهم لا ينهبون من مباً إذ اكانوا معه إلا باستثنانه فأدك أت باستثنانه فأدك أت يكون سن لولن مدالا ينهبوا إلى قول والأسن هب على إلا بعد استئذانه ، وإذنه يون بدلالة ماجاء به على أندائن فية بدلالة ماجاء به على أندائن فية

> المتور : ۲۲ كم اعلام الموقعين (١:١٥).

" اے ایمان والو ؛ ڈرتے دیجہ الشرسے اور نقين لاكاس كرسول يري « سوايان لاوُ السُّريرانداس كيزول بادراس فرريج بمن آمانا و مكن الشرحيان الشاب اليورولون عي ص كوجاب سوتم إيمان لاؤالتذير اوراس کے دسولوں ہے ؟ " سوسانوالله كواوراس كے رسولوں كوا در زكيو كر خدا تين ين اس بات ك جوز وببتر بوكاتباي لفائية الشمعودي أكيلا واس كح لأكن بي

"シャンひいしひかん

 إِنَّهُ النَّهُ اللَّذِيْنَ امَنُوا اللَّهُ مَا الله وَالمِنْوَالِيَ سُؤلِهِ له ٨ _ نَاٰمِنُوْا مِاللهُ وَتَسُولِهِ وَ النُّوُدالُّ نِي ٱشْزَلْنَا كَ ٩ وَالْكِنَّ اللَّهَ مَجْتَبِي مِنْ تُسلِم سَنُ يَّنَاءُ فَالْمِنْوُ إِللهُ و ئشلە. ت احفامين ابالله و ركسيه و لا تَقُولُوا ثَلَاتُهُ إِنْتُهُوا خَيراً

تَّكُمُ إِنَّمَا اللَّهِ إِلْهُ قَاحِدٌ سُهُ عَانَهُ آنُ يكون لَهُ وَلُكُ

تلك عشي كاملة ، مم نے يرس آتيں بطور نمون (كلے از كلزارے) بيش كرديں جن مي التُرتع الى نے حب طرح اپنے اوپر ايمان لانے كاحكم ديا ہے أى طرح اپنے ومشسول رصلی الشیطیر کسلم ا پریمی ایمان لانے کولازی قرار دیا ہے ، مین صورح الشرقعالی کی بات ماننا وخي اورضرورى ب اى طرح رسول الترصلى الترعليرولم كى بات ماننا مى لازى الدستى بى - امام شافى كى كى ب رضع الله وسوله من دينه

الترتعاني في افي رسول كالفي دينال

الحديد : ٢٨

التنابن : ٨

آلعثان: ١٤٩

سي النِسَاء : الما

وفراضه وكتابه العوضع السذى أبان جل ثناكه أنه جعله علماً لدينه بماافتض طاعته وحرم س معصيته وأباك من نصيلته بماقمان سن الإيسان برسوله مع الإيان به

فرائض اوركماب يرجمقام تجويزكياج اس كوالشرياك في اس طرح ثما يال فوليا ب كرآب كودين كے نئے الك علامت بناديا واس ليحكرآب كاطاعت كو فرض كرديا اورنا فرماني كوحرام قرارديا ا وداکب کی فضیلت کواس طرح ظیاحر

فرما یا کراین رسول میرامیان لانے کو این ا دمیامیان لانے کی طرح لازمی اور خرودی قرار دمیریا ج اس كے بعدامام مدوح ال چندايات كودكركر كےجن بي الله تعالى في م ديا ہے كم

الشداوراس كے دسول پرايمان لاؤ" (جن كوم اسى ذكر كر يكي مي) لكھتے ہيں ا

م التُرتعالى نے ايمان كے ابتدائى مرحلہ كاكال كالدسب (ايانيات) كالع می اس کو بنا یاکدانشداددتیراس کے درول برايان لاياجاس والركول شخص خدا يرتوا يان لا تاب ليكن اس كے درول م ايمان نبعي لما تواس برورے ايان لائے

نجعل كمال استداء الإيماك الذى ماسوالابتع لمالإيمان بالله تم برسوله ؛ نلوأس عبدبه ولم يؤسن برسوله لمهقع اسم كمال الإيمان أبدأ حتى يؤمن برسو لصعه

كا اطلاق نبين بوسكتاجية تك كرده اس كے ساتھاس كے دمول يرمي ايان شاخة سے ؟ میراس کی مزعر تاکیداور توشق کے لئے فرماتے ہیں ،۔

وهكذا سترسول اللهطى الله عليه وسلم فى كل سامتحته للإيمان ، أخير فامالك عن ملالبن أسامةعن عطاءين

" اورسي طرلقة حنوداكرم ملى النترعلي وسلم فيراس فف كمالي اختياد والص مؤن وف كااستحان ليا ،خبردك ب بين مالك ن بالل بن اساس أبول

> له الرال و ۱۷ ال Toobaa-elibra

عطاء بنداس انہوں نے عمران المکم کو فرصا تے ہیں گئی حضود کارم صلی الشرعی تیں گئی حضود کارم صلی الشرعی ہے کی حذمت ہیں ایک باندی نے کرحاضر ہوا اور میں نے کہا : اے التہ کے رسول تھے ایک خلام آزاد کرنا ہے کیا ہیں اسے آزاد کرنا ہے کیا ہیں اسے آزاد کرنا ہے کیا ہیں اسے آزاد کرنا ہے کیا ہی اسے آزاد کرنا ہے کہا والتہ تعلیم الشرعی ہے ہوسی الشرقائی کہاں ہیں ہو اس نے کہا : آسان میں ہجر اس نے ہوسیا : الشرقائی آپ نے ہوسیا : اور میں کون ہوں جاس نے

سارعن عن الحكم قال أتيت رسول الله على الله عليه وسلم بجارية فقلت ، بارسول الله ا على رقبة أفاعتها ؟ فقال لها رسول الله على الله عليه وسلم ، «أين الله ؟» ما " فالماء ؛ فقال ، وين أنا؟» قالت ، أنت رسول الله ؟ قال ، « فأعتقها » . له قال ، « فأعتقها » . له

وسرارديات، سلاحظريو :-

كما : آپ الشرك رسول بي اس برآپ نے صدرمايا : اے آزاد كر دوئ

چونکہ پرلونڈی ایمان بالٹر کے ساتھ ایمان بالرسول سے بھی ستھ منتھی اور اپنے ایمان کا

اظہار کر جی تھی اس لئے رسول الشری الشریلی وسلم نے اسے آزاد کرنے کا حکم دیا۔
ہبر صال ان آیات سے واضح طور پر معلوم ہوگیا کہ ایمان بالشر کے معتبر ہونے کے لئے ایما

بالرسول ہبر صورت ضروری ہے اور حس طرح ایمان بالشریں الشرکے ہر حکم کو تسلیم کرنا اور اس کا ماننا داخل ہے اسی طرح ایمان بالرسول اس وقت تک محقق مذہوگا جب تک آپ کے ہر حکم اور قول وفعل کو جب تک آپ کے ہر حکم اور اسے اعتقاداً وعملاً تسلیم مذکبا جب اگر قرآن کر ہم میں میں آب میں آب میں الشرحیت فائم کرنے کے لئے کا فی تھیں سے ہم ماننا داخل ہے اس کے علاوہ اور اسے اعتقاداً وعملاً تسلیم مذکبا ہے مانکہ کے لئے کا فی تھیں الیات بین آب کی اطاعت کو ہم صریح طور میرالاز کا ایکن الشرقة ای ان کے علاوہ اور مہربت میں آب کی اطاعت کو ہمی صریح طور میرالاز کا ایکن الشرقة الی نے ان کے علاوہ اور مہربت میں آب کی اطاعت کو ہمی صریح طور میرالاز کا

له الرسالة (صده) موطأمالك (ص:۲۲۲) منداهد(ه: ۲۳۷، ۱۳۲۸ و ۱۳۳۸ و ۱۳۳۸ م

رسُولُ التَّدِينَ التَّارِيمُ كَى اطاعَت كَالْحَمُ اورَّ مخالف شيروعيدَ

فسترآن کریم میں دسول النترصلی النترعلیہ وسلم کی اطاعت کا جن آیاتِ مبادکہ میں یکم دیاگیا ہو اس عنوان کے تحت ہم ان آیات کا ایک معتد بہرصر میٹی کرینگے تاکہ صفوداکرم صلی النترعلیہ وسلم کی اظامت کی اہمیت کا اندازہ ہو سکتے ۔

إطاعت يوك كافرض يونا

ادستادباری تعبالی ہے ، ۔ قُلُ اَطِیْهُوْاللّهُ دَالنَّ وُلَ فَالِنَّ وَلَا فَاللّهُ وَلَا فَاللّهُ اللهُ ا

اس آستین مرق طور برالتراور رسول کی اطاعت کامکم ہے اور واضح کر دیاگیاہے کہ سی نے بھی رسول کی اطاعت سے اعراض کیا اور منہ وڑا وہ سلمان نہیں کا فرہے ، اور خواکا فرد اللہ نہیں کرتا ، میر میمی نظری میں مہے کہ دسول کی اطاعت سے منہ موڑ نے برکفر کا حکم لگایاگیا ہے اور کا فروں کا جمع ما تاج نم ہے ، اس لئے نبی کریم علیہ الصلاة والسلام نے فرمایا ،۔

"میری تمام امّت جنت می داخل بوگ او ای اس کے بھانکار کرے بھا یہ نے پوچپاکہ: کون انکار کرے گا ج اسپنے مسترمایا : جس نے میری اطاعت کی دہ

مك أستى يدخلون المجنة الاسن ألب » تالوا : درسن يأب ؟ تال: درسن أطاعنى دخل الجنة، و

العلان ٢٢٠

جنت میں داخل ہوگا اور حس نے میونا فو کی اس نے انکار کیا ؟

سعمانی نقب النی المه م

مذكوره حديث آيت كريم مندرج باللك تغيير به كرسول كى اطاعت سے انكاد كفر بے. حافظ ابن كثير المتوفى ملى يع مجوبر مع جليل القدر محدّت ومفسّر مي، مندرج باللّام

كىتفسيركرتے ہوسے فسرملتے ہيں ،-

" اس آست نے اس بات کوسٹلا دیاکہ دین میرسول کی مخالفت کرناکفریے اورجواس صفت سيمتصف بوالتر تعالى اس معبت بسي كرما الرجدوه خوداس زعمي سبتلا بواوراس امركا مدعى بوكه وه خداس محبت كرتا بحاود ال كاقرب مال كرنا جابتاب رجب تک که وه رسول کریم نی اُتی خاتم الرسل اورالترك اس بغبركا وتمام تقلين فيو اودانسانوں كح طرفت نى بناكر صيجاگيا بر اتباع ندكرے بص كى شان يہ ہے كم تا ا انبار بكرسادي دسول بلكرا واوالعزم يغيره الرائ كونمان يوتة

مندل على أن مخالفته في الطريقة كفه والله لايحت التمت بذلك وإن ادعى وزعم ف نفسهأنه حبىلله وتيقهم إليه حتى يتابع الم سول النبي الأتىخاتم الهسل ودسول الله إلى جسع النقلين المجن الإنس الذى لحكان الأنبياء بل المىسلون بل أولوالعزم منعم فى زمانه ما وسعم إلااشاعه والمنخل في الله وانتباع شملعته بكه

اُن کے لئے بی سوامے آپ کی اتباع کرنے اور آپ کی اطاعت میں واخل ہوئے اور آپ کی شریعیت کی ہیروی کرنے کے اور کوئی میارہ کارنہیں ہوتا "

له صحیح بخاری کتاب الاعتصام ، باب الاقترالیسین دسول النترصلی النترعلی قطم (۲:۱۰۸۱)۔ نے تغسیراین کتیر (۳۵۸:۱) -

٢ _ دَ ٱلْحِيْعُواا مِنْهُ دَالنَّاسُوْل لَعَنْكُمُ حُرُحَمُونَ بِله

﴿ وَمَنْ لَيْلِعِ اللّٰهُ دَدَسُولَهُ يُدُخِلُهُ جَنْبَ ثَعْمِ مِنْ تَحْيَرِهُ الْكُنْهُ أَ خَلْدِهِ ثِنَ نِيْعَا وَذَا لِكَ الْفَوْلَدُ الْعَظِيمُ بِلْهِ الْعَظِيمُ بِلْهِ

اس آیت کریمه کی تفسیرس حافظ این کشیر کھتے ہیں ۔

اَطِيْعُوااللهُ أَى البِعُواكِت ابه وَ اَطِيْعُوااللَّ سُول أَى خُدُول بستته فَإِنْ تَنَادَعُتُمُ فِي شَيْء مَرُدُوهُ إِلَى اللهِ وَالرَّاسُولِ؛ مَا دُود أَلَى اللهِ وَالرَّاسُولِ؛ مَا السلف؛ أَى اللهِ وَ النَّ اللهِ وَ المَانِهُ وَ السلف؛ أَى اللهِ وَ النَّ اللهِ وَ السلف؛ أَى النَّه و السلف؛ أَى النَّ الله و اله و الله و

" ا ورحكم ما نوانشركا ا ورسول كا تأكرتم پ رحم كيا جاشت ؟

" اورجوکوئی عکم بہطے گا انتہ کے اوراس کے دسول کے اس کو داخل کر پیکا انٹہ . جنتوں میں جن کرنیچے سبتی ہیں تہریں ، ہمیشہ رہیں گے وہ ان میں ، اوریہ پر بڑی مرا دسلنی ہے

" اسامیان والواطاعت کروات کی اور اس کے رسول کی اور اپنے ارباب اقتار کی رسی اگر نہاداکسی پیزمی نزاع ہوجائے قواس کو النشر اور اس کے رسول کی طرف لوٹا دو (اور فیصلہ کرالو)

"الشرکی اطاعت کرویین اس کی کتاب کا اتباع کرو اور دسول کی اطاعت کرو بعنی اس کی سنت برجمل کرو م اوراگرتبال داور اد باب اختیان کا کسی چیزی چیگوا بوجامے تواس کے بارے میں النتراور اس کے دسول کی طرف رجوع کم و بحفرت اس کے دسول کی طرف رجوع کم و بحفرت

١٣٢: العسران ١٣٢٠

الناء الناء

له النام ۱۹۵

مجاہدا ودان کے علاوہ اور مہت ہے سلف صالحین نے لمرما یا ہے کہ دجرع کروالٹری کتاب کی طرف اور اس کے دسول کی شت کی طرف ۔ اگرتم الندا ور قیاست کے دن پر ایمان رکھتے ہو بہس اس آیت سے یہ ثابت ہواکہ ہو تحق عمر شدے کے موقع پرکتا ہ وسنت سے فیصلہ نہ کرائے اور ان کی سنة دسوله، إنْ كُنْتُمُ تُؤُمِنُونَ بِاللهِ والْبَوْمِ الْأَخِي : ندل كَلْ أن من لم يتحاكم ف محل النزاع إلى الكتاب والسنة ولم يهجم إليهما فى ذلك فليس مؤمناً بالله ولا باليوم الآخِي بِهِ

طرف اس سلسائی رجوع ذکرے تو وہ خدا اور قباست کے دن پرایمان رکھنے والا ہیں ۔ امام ابومج عبدالنترین عبدالرحمان بن الفضل سمرقندی وارمی المتوفی مصلحه اپنی کت میں آیت مندر درجہ بالا کے بارے میں حضرت عطار سی نبذت صل نقل کرتے ہیں ؛۔

"كرآت كريما الميني المائية وَأَطِيْعُوا اللهُ وَأَطِيْعُوا اللهُ وَأَطِيْعُوا اللهُ وَأَطِيْعُوا اللهُ وَأَولِي الْأَسُومِ يُحكُمُ مِن أُولِي الْأَسُومِ يَسِيمُ الدائِلِ علم وفقهم اود " رسول كي اطاعت " وفقهم به اود " رسول كي اطاعت " كامطلب كتاب اود سنت كي إثباع مي "

أطِيَّعُوااللهُ وَأَطِيُّعُواالنَّسُولَ وَأُولِي الْآمُرِيشِّكُمُ ، قالت أُولوالعلم والفقاء وطباعة المتسول انباع الكتاب و المسنة ينه المسنة ينه

آیت مندرجہ بالایں اللہ تعالیٰ نے جس طرح لوگوں پر انی اطاعت فرض ولاذم وضرورا قرارہ کی ہے ۔ اور قرارہ کی اطاعت کا بھی حکم دیاہے ، اور "أطبعوا " کے صیغہ کوم کرد لاکر میں بتلا دیاہے کہ اللہ تعالیٰ کی اطاعت کی طرح اس کے رسول اطاعت بھی ضروری اور لازی ہے ، رہے " اولی الاَئم " توان کی اطاعت اس شرطے کے سامشروط ہے کہ ان کا حکم اللہ یا اس کے رسول کے حکم کے خلاف نہ و ورندا سے محکوا دیا جائے کہ سے مصن دارمی (۱۱ : ۱۸۵) -

کیونکہ ارتاد نبوی ہے ہ۔

الأطاعة ليخلوق ن معصنة المخالق ك

سحنان كى نامنىريانى يى كى ناوق كى اطاعت بمين "

معلوم ہواکہ" اُدکیالاَم " سے مراد وہ اُکولی الاَم "بی جواللہ تعالیٰ کی کتاب اوراس کے رول کی سنت کے خلاف حکم ندی ، ایسے امراء کی اطاعت رسول الشصل الشرعليه وسلم كے الماء _ _ كمترادف باوران كى افرمائى كويارسول الشرصلى الشرعليه وسلم كى نافريانى ي بى كريم عليه الصلاة والسلام كاارشادعانى ہے :-

وسن يطع الأسير فقد أطاعني

"جن نے امیر کی اطاعت ک اس نے میری وس بيس الأسير فقد عصافي على الماعت كى اورض في اميرك افرانى کاس نے میری بی نافرمانی کی ہے

ایک اور روایت می امیری نسیت ایی طرف فرمانی اور ارست اوفرمایاکه :-نے میری ہی اطاعت کی اورس نے میری

وس أطاع أسيرى فقد أطاعنى المرك المرك الماعت كاس وسنعصى أسايرى نقدى عصافي

امسيرك ناونرماني كى اس نے سپرى ناونسرمانى كى " اور سنطا بربات ہے کہ حوامیررسول الشصلی الشعلیہ وسلم کی بات ماتتا ابواور آپ کے

يلا يه بوعه احكام يمل كمنابوده لقينًا واحب الاتباع بوكاءاس لفي عافظ ابن العشيم

سنره (ه: ۲۲).

-(MO:1) SIE &

مسیح بخاری (۲؛ ۵۰ م) کس امیری اطاعت کی جائے گی اورکس کی تبین اس بالعامی اطاویٹ کے لئے ملاخلفرما شيخ كمندايمد(، ٤٢٠ و١٢٢ و١٢١ و١٢١ و١٢١ و١٢٠ و٢٠٠ و٢٠٠) اور (٢: ١٢ و١٩١) الار (۱ ، ۲۲ و ۲۲ و ۲۲ و ۲۲ و ۲۲) اور (۵: ۲۲ و ۲۷ و ۵۰ و ۱۹۳۹ و ۲۲۹) اور ساحب

ادرما مع ترمزی کی کتاب الجهاد .

Toobaa-elibra

AS

16

المتوفي الصيم مكتة بي :-

مصحیح بات بر ہے کہ حاکوں کی اتباع آل دقت کی جائے ہے۔ کہ حاکوں کی اتباع آل دقت کی جائے ہے۔ کہ وہ علم کے مطابق حکم کریں اس لئے ان کی اطاعت علمار کی اتباع کے تابع ہے اس لئے کہ اطآت امور خیر میں اور ان کا موں میں ہواکر تی جو علم خرع کے مطابق ہوں توجین طرح علمار کی اطاعت رسول (صلی الشرع کے تابع ہے اسی طرح امرار کی اشاع کے تابع ہے اسی طرح امرار کی اطاعت علمار کی اطاعت علمار کی اطاعت کے تابع ہے اسی طرح امرار کی اطاعت علمار کی اطاعت کے تابع ہوگی ۔ المور خوب کے تابع ہوگی ۔ المور خوب کی است علمار کی اطاعت کے تابع ہوگی ۔ المور خوب کی تابع ہوگی ۔ المور خوب کی است علمار کی اطاعت کے تابع ہوگی ۔ اطاعت علمار کی اطاعت کے تابع ہوگی ۔ المور خوب کی تابع ہوگی کی تابع ہوگی ۔ المور خوب کی تابع ہوگی کی تابع ہوگی کی تابع ہوگی ۔ المور خوب کی تابع ہوگی کی ت

دالتحقيق أن الأسراء إنما يطاعون إذ السروابيقتضى العلم نطاعتهم شبع لطاعة العلماء فإن الطاعة إنما تكون في المعروف وسا أنجيه العلم فكما أن طاعة العلماء تبع لطاعة الرسول فطاعة الأسراء تبع لطاعة العلماء ليه العلماء ليه

اسی نبار پروب حضرت عبدالنزین عمرضی الندعنها نے خلیفه عبدالملک بن مرواک سے بیعت کی توبیعت نلمے میں بدالفاظ محسر پر فرمائے ہ

> إلى عبدالله عبدالملك أسير السوسنين إلى أقرّ بالسمع و الطاعة لعبدالله عبدالملك أميرالمؤمنين علي سنة الله وسنة رسوله فيااستطعت وإن بني شراقر واليه

" خداکے بندے امیرالومنین الملک کے نام : پس استرار کرتا ہوں کہ جانتگ محدے بن سے گا یں خدا کے بندے اسمیرالی نی سنونگا اسمیرالی نی سنونگا امریداللک کی سنونگا اور اطاعت کروں گا ابت رطب کے وہ وال کے اسرال کے دسول کے

سنت كيموا فق بو ، اورمسيرے يظيمياس بات كااسترار كرتے بي "

له إعلام الموقعين (۱۰:۱)-ك صحيح نجارى (۱۰:۲)-

اطاعت بسول ك إستقلالي حيثيث

اس آیت کریہ سے بھی تا بت ہواکہ رسول الشر صلی التہ علیہ کے اطاعت ہی تقل بالڈ آ

جسیاکہ ان آیات کریے سے طاعت رسول کے ستقل بالذات ہونے کی تصریح ہوتی ہے جن میں مرح می طاعت ہی کا حکم ہے یا جن جس اطاعت الہی کو بھی رسول کی اطاعت ہی مخصر الماعت دسول ہی اطاعت الہی کو بھی رسول کی اطاعت ہی ہی مخصر لیا گیا ہے۔ جنانچہ آیات کا ذکر آئندہ آئے گا۔

بهرحال رسول اكرم صلى الترعليه وسلم كى اطاعت سے انحرات مسلمانوں كاشيوه نهيں كفار

كاشماري مافظ ابن تيم الكيم بي كان نتاويه صلى الله عليه وسلم جواسم الأحكام وشقلة كخضل الخطاب وحىنى وجوب اتباعها وتحكمها والتحاكم إليها ثانية الكتاب وليس لأثعدين السلمان العددل عنعاما وجدإليماسبيلأوقدأسر الله عباده بالمداليحاحيث يعول ؛ ﴿ ثَانُ ثَنَازَعُثُمُ فِي شَيْحُ مَنُ تُذَكِّ إِلَى اللهِ وَالتَّهُ وَلِينَ لَهُمْ تَرُّمينُوْتَ بِاللهِ وَالْيَوْمُ الْآخِي ڎڸڬڂٙٲؿؙؖڗؖڐٵڞؘؿؙٵٞڍؽڵٳ؞

"حضوراکرم حلی الترطیر دسلم کے تناوی احکام شرعیہ کے جائے فیصلہ کن خطاب میرشتمل ہیں اور ہے وجوب اتباع بیں جہنے کے مان کے ذریعہ فیصلہ کر لیفی میں اور ان کے ذریعہ فیصلہ کر لیفی میں اور خود التہ کا تانی ہیں ، لعب ذرکسی مسالی کی حب انکسان ہوائ کی این جمل کرنا ممکن ہوائ کے حب تک ان پڑج ل کرنا ممکن ہوائ کی سیمند موٹر نے کاحق نہیں اور خود التہ شروف وجوع کرنے کاحق نہیں اور خود التہ طرف رجوع کرنے کاحق مدیا ہے جنانچ میں اور خود التہ التہ الدی ہے جنانچ الشاد ہاری ہے ، اگر کسی چیز میں تما الا انتہاں التہ الدی کے اخترا المنہ الدی کے احترا المنہ الدی کے احترا المنہ الدی کے احترا الدی کے احترا المنہ الدی کی طرف کی طرف کو المان کی کرنا و ڈاؤ کی ترتم الدی الدی الدی المنہ الدی کے دور اسے الشرا الدی کے دور کی طرف کی طرف کو ٹاؤ ڈاؤ کی ترتم الدی الدی الدی الدی الدی الدی کے دور کی کامل و ن کو ٹاؤ ڈاؤ کی ترتم الدی الدی الدی و تعالیات

کے دن پرایان دکتے ہو بہترہ ادد بہت اچاہا سکا انجام ؟

اه اطلم الوقعين (١١١)-

سافظابن قيم في رسول الشصلى الشيعليه والم كى اطاعت كي ستقل بالذات بوني مشرح وبسط کے ساتھ کلام کیاہے ، فسرماتے ہیں ،۔

" الله تعالى في إن اورائي وول كى الماعت كاحكم فرما يا ور" الطبعوا "كم صيفه كا اعاده اس امركوبتلانے كے لئے كياكہ رسول كى اطاعت بجى بنيرا سكك آئے او امركوكا البتر پریش کے دیکھاجات رکداس کے موافق ہیں یانہیں)ستقل طور برواحب بدک آپ جب بھی کوئی حکم دیں تواس کی اطاعت مطلقاً فرض ہے ، خوا ، آپ کا دو حکم کتاب الله یں موجود ہویا نہو کیونکہ آپ کو کتاب جی دی گئے ہے اور ای کے ساتھ ای کی شل الد تعلیمات بی ، اس کے برعکس ہمیں "اُول الاس" کی اطاعت کا استقلالاً حکم نہیں دیا گیا بلک وال ماطیعوا ، نعل کومنروت کرکے ان کی اطاعت کو دسول کی اطاعت کے شمن میں کردیااس بات کو بتلانے کے لئے کہ ان ماکوں کی اطاعت رسول کی اطاعت كاتباع ميں ہوگ ، اصغران يس سے و ماكم رسول ك اطاعت كا حكم دے كا اس ك بیروی واجب بوگی اورج حاکم رسول انترصلی انترعلیه وسلم کے احکامات کے خلاف عم دے گا تو شاس کی بات مانی مائے گ اور نہ اس کی اطاعت کی جائے۔ جضورانورصلی الشرعلیروسلم سے معی عدیث بن مروی ہے کہ آپ نے فرمایا ،-

مغلوق كاطاعت خالق كى نامسرماني

الطاعة لتخلوق في معسية الخالق ـ سنبين ؛

> نيزاك في الرشاد فسندايا ١-إنداالطاعةنى البعروت ادرارباب اقتراركم بارعي فرمايا :

" ان می سے جو کوئی تم کوخداک نافرمالی کا

اطاعت توصرون فرع كے موانق کا مول ميں ہ

حكم در تونداس ك باست سنونداس كاكما مانو "

من أمركم منهم بمعصية فلا سمع ولأطاعة -

معيد ويناسطرول كے لعد لكھتے ہيں :-

" بهرانشرتعالیٰ نے حکم دیاکہ مسلمانوں کا جن جیزیں اختلاف ہوجا سے استراور اس کے دسول کی طرف اوٹا کیں اگروہ مؤسی ہیں اور انہیں بتلا دیا کہ بری ان کے لئے دنیا یں ہی بہترے اور انجام کے اعتبادے آخرت کے اعتبارے و اس کے بعدعلامہ وصوف نے اس آیت کے معض نکات پرمز بدروشنی ڈالی ہے۔

مسرماتے ہیں ار

إِن قوله الا فَإِنَّ تَنَازُعُتُمْ فِي لسن المنكرة في سياق المشرط تعم كل سائتناذع فيه المؤمنون ت سائل الدين دقه وجله جليه وفنيه ، ولولم بيكن ف كتاب الله وسنة دسوله بيان حكم ماتناذعوا فيهو لم يكن كانيًا لم يأم بالماد إليه إذسن الستنع أن يأم الته تعالى بالردعند النزاع إلى من لا بوجدع تدر فضل الهناع

وسنعاأن الناس أتجعواعلي أنال إلى الله سيحانه صو

له اعلام الموقعين (١:١٨)-

" فرمان الَّهِي : فَإِنْ تَنَازُعُتُمْ فِيْ فَتَى عِن " شَكَيْءٍ " نكره بيع جو ماقشرطي آباب اس ايده تمام دىنى مسائل يرحبن مي مسلما نوں كا اختلات ہو چھوطے ہوں یا بڑے جلی سور یاففی اسب کوشامل ہے،اور أكركمتاب الشراورسنت وسول الشملي الترعليه وسلم عي ال جيزول كي حكم كا يورابيان بي نهوتاك جن مي مسلمالون كالختلات بوسكتاب توان كىطرت وجوع كرنے كا حكم مذوباجا ما اس لخاكم يه نامكن بوكم الشرنوال نزاع كروقت ال ک طرف دی کا کا در ہے ہی کے پاک النزاع كاكونى فيصلري نربور ان (ٹکتوں) ہیں سے ایک رہی ہے کہ امّت كاس يراجاع بيك التُدتعاليٰ

کی طرف دیج رخ کرنے کا مطلب کے الٹر کی طرف دیجرع کرنا ہے اور دیول الڈ ملی الشرعلیہ کی کم طرف دیجرع کرنے کا مطلب یہ ہے کہ آہے کی حیات سبادکہ میں آپ سے بذات تو دفیع لے کرائے جائی اور آپکی و فات کے بورا ہے کی سنت کی طرف دیجرع کیا جائے ۔

اوران دیکوں) میں سے مجعی ہے کہ الشُّنْعَالَىٰ نِے اسْ رُجُوعَ كرنے يُكوايكُ كيموجبات اوراوا زمات مس وقرار وباي نبذا اگر حسب فرمان رجوع نه كياجائ كاتوميرا يمان فتم بوجائ كا، اس لنة كدلازم كى نفى سے المزوم كى ہى نغى بوجاتى يحضوصاً ان دونوں امرو^ں سي تو تلازم طرفين سويا ياجا كاب ابذا سرایک کی نفی دوسرے کی نفی کوستلزم ہے، ميرالترتعالى في بثلاياكه ير رحوع ال الي ببترب اوراس كاانجام ببترانجاي بيرالترتبادك وتعالى ني اس بات ويجى آگاه فرایاکه حس نے دسول انترصلی انترعلیہ وسلم كى لائى بونى سنت كوچيود كركسى اوركوا بناجكم بإحاكم بنايا تواس فيشيطا ومنتهاأكه جعل عسذاالهد سن معجبات الإبيدان و لوازمه فإذا انتفى مذااله انتفى الإيمان ضرورة انتفاء الممان وم لانتفاء لأذسه و لاسطالتلام بين مذنين الأمريين فإنهمن الطرفين وكل سنصما ينتفى بانتفاء الأخى، شم أخيرهم أن هذا المادخيرلهم وأنعاقبته احس عاقية الشمأ خب سبحانه أن ستحاكم أو حاكم إلى غيرسا جاءمه الهول فقدحكم الطاغوت

وتحاكم إليه

كوابناحاكم بنايااوراس سابنا فيصلك إيا

صحابة كرام دضى الترتعالى عنهم البعين كا دستودالعسل برابري عبلاآ تاريا كرجب يعى ان كو كوفى معاملة بيش آيا تواولاً است قرآن كريم من تلاش كيااگراس من بربل سكاتوسنت رسول ادريمل الشعليد وسلم كي طرف رجوع كيا اگرسنت بين بي نه بل سكاتو ميرا بل علم كيشود سه سكتاب و سنت سه اس كاحكم استنباط كيا ، حضرت ابو يخزوعم اورتمام صخابه كرام رضى الترعنم السابى

لاكرتے تھے ، اسام داري الحقيين ،-

و حب حضرت الوكون كے پاس كوئى يى آتا توكتاب الشرشي غوركرتي اكراسي الت کوکونی ایساحکم مل جا تاکیجیسی و ه فيعلاكرسكة قراس سے فيعد كرديث ال الكركتاب الشرهي مرموتا اورصور الورصلي الشرعليه وسلم كىسنىت سے اس كا فيعل معلوم ہوجا تا تواس سے اس کا فیصلکر ديتے تھے اور جو مير دقت بيش آتى قباير آكرمسلمانوں سے دریانت فراتے کامیا ايساوا قعيش آياب كي تمبين علوم بر كرحضور اكرم صلى الشرعليه وسلم في اس كے باسے میں كوئى فيل كيا ي ؟ توقيق مرتب تواليساج تأكرستعد وحضرات اس معامله يريضودا نودملى الشرعليروفم كافيصل سناديت اكرحضورا قدس ملى الشرفي فيسكيكا

كان أبويكن إذا وي دعليه الخصم لظرافى كتاب الله فإن دجد فيهما لقضى بنهم تفى بهدان لم ميكن في السكتاب وعلم من دسول الله صلى الله عليه وسلم فى ذلك الأمرسنة تضىبه ؛ فإن أعياء حرج ضأل السلمين وقال: أَمَّانَى كَنَا و كذانعاعلىم أن رسول الثمانته عليه وسلمقضى ف ذلك بقضاء ؟ تربيا اجتمع النفركلهم سيذكرهن وسول الله صلى الله عليه و سلم نيه قضاء فيقول الويكر : الحمديثة

اطلام الوقعين (١١١٩م ٥٠٥).

اس برحضرت الوسجر فرماتے : تعربیت اس خدا کے لیے بین نے بم میں البے او بداكة جنبون نے بارے نى كىسنت كو بادركها ، اوراگراب بمن صنودستی الشرعليروسلم كىسنعت ودبيافت كرنے مي دقت ميش آتي توآب سركمده لوكون اورسيرين افراد كوجع كركے ال وستود

الذى جل فيناس يحفظ على نبينا ، فإن أعياه أن يجد نيه ستنة من رسول الله صلىاللهعليه وسلمجمع رؤوس الناس وخيارهم فاستشارهم ؛ نإذ ااجتمع رأىهمعلى أمى قفى يه. له

كمت اورجب كسى معاطريدان كالتفاق بوجا تاتواس كے مطابق فيصل كرديت "

اطاعت يول ك اصل جير

دسول كے مفترض الطاعة بونے كى اصل وجہ يہ ہے كہ اس كابر قول وفعل عوسيًا وحی الی (وی غیرسلو) کے مطابق ہوتاہے اور اگراس سے اجتہادیس خطاہ وجاتی توفوراً وى كے ذريعه اس كوآگاه كردياجا تاتھا - آسخفريت صلى السُّدعليه وسلم اپنے قول فعل دونوں سی معصوم ہیں ۔ چنانے نطق نبوی کے بارے میں ارتادر تانی ہے :۔

ا - وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْحَوَى إِنْ الْحَوى إِنْ الدوه بهي بولة الإي طرف وركجه عن مُوَ إِلَا وَتَى يُوْسِي مِالَ ہِ عِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ عَلَيْ مِاللَّهِ عِنْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّاللَّاللَّمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الل

اوركردار نبوى كے بايے عي النه حل شانه في كري صلى النه عليه وسلم كى زبان مبارك س

" آپ کہدی کرسے راکام میں کسی اس کوانی طرف سے بدل ڈالوں میں

يراعسلان كرايا ا قُلْ سَاسَكُون لِيُ أَنْ أَيْ يَكِلَهُ مِنْ بَلْقَاءِ نَفْسِيُ إِنَّ أَنْبِحُ

سنن داری (۱:۲۱ و۳۳)-

النحيم : ٣ د١٩

اِلَّا سَايُوعِ اِلْتَ اللهِ الدِي كرتابوں جوميري طون حكم تائے و

اورای برس بین کیا بکدیمان تک فریدا دیا گیاکه ا

"اوداگریردرسول) بنالاتا بم برکوئی بات توبم بیکڑ لیتے اسس کا داب نا ای بھیسر کارٹ ڈ التے اس کی رگب گردن ہے ٣ - وَالرَّنَقُولُّ الْعَلَيْنَا مَعْضَ أَلْأَقَا فِلِ الْمَائِقُ الْمُعْضَ أَلْأَقَا فِلِ الْمَائِقُ الْمَائِقُ الْمَائِقِ الْمَائِقُ الْمَائِلُ الْمَائِقُ الْمَائِلُ الْمَائِقُ الْمَائِقُ الْمَائِقُ الْمَائِقُ الْ

جسے صاحت معلوم ہوگیاکہ آنحضرت صلی التہ علیہ وسلم کا قول و فعل سب دمی اہئی کے مطابق شاء اور مذکورہ بالا تنقیح و تحقیق سے یہ بی قطعی طور پر ثابت ہوگیاکہ رسول الشّر میں الشّر ملی الشّر علیہ و سام کی اطاعت مستقل بالذات غیر مشروط اور وائٹی ہواس لئے کہ آپ کے بعد مذکوئی موسول آپ کے ابد مذکوئی موسول آپ کا ذکتاب و وی اہمی نازل ہوگ ، آپ آخری دین اور شراحیت ہوج قیامت تک بعینہ معمول ہے اور شراحیت اسلام آخری دین اور شراحیت ہوج قیامت تک بعینہ معمول ہے اور واجب الطاعة ہو۔

مندرجہ ذیل آیت کریمین اللہ تعالی نے تمام پنیمبروں کی اطاعت کے ستقل بالنا اور لازی ہونے کی تصریح کی ہے ،۔

"اورہم نے کوئی رسول نہیں ہمیجا گر اس واسطے کراس کاحکم انیں الشرکے مندرا فرسر" ٣- دَسَا اَرْسَلْنَا مِنْ تَسُولِهِ الْالْيُطَاعَ بِاذُنِ اللهِ بِنْهِ الْالْيُطَاعَ بِاذُنِ اللهِ بِنْهِ

ینی تمام انسبیار درشل کی بعثت کامقصدی بر برکدان کے اوامرونواہی ، اقوال و اخدال اوراحذ لاق وسیریت میں ان کی اطاعت و بیروی کی جائے ، اس لئے حضرت

اه ياس : ١٥

له الحالة ، ١١٣ تا ٢٩

کے النار : ۱۲ -

لون علیه السلام سے لیسکر حضر سے بھی علیال سلام تک تمام اندیار علیم السلام نے اپی قوم کو یہ دعوت دی کہ الشہب ڈروا ورمیری اطاعت کر وجیبیا کہ تفصیل سے ہم آپ کے سامنے بیش کر سے ہم آپ کے سامنے بیش کر سے ہم آپ کے سامنے بیش کر سے ہم آپ کے ما مسانوں کی بدایت کے لئے صرف الشرتعالی کا کلام ہرگری کی نہیں بلکاس برعمل کر کے دکھلانے اور ستلانے والاانسان بھی ضروری ہم اور اسی انسان کا مام رسول ہے مسابق سرز دہوتا ہم وانسان کا مام رسول ہے مس کا ہرقول و نعل الشرج باشان کے مجموعہ کا نام سنت ، حکت اور شویت المیہ علیم التلام کے انہی اقوال وافعال واحث لاق کے مجموعہ کا نام سنت ، حکت اور شویت المیہ واضح مسرما یا کہ رسول کی اطاعت دراصل میں بیمی واضح و سرما یا کہ رسول کی اطاعت کے بذیر الشرتعالی ہم کی نہیں نہیں نہیں نہیں میں مسابق کے باوجود الشرتعالی کی اطاعت کے باوجود الشرتعالی کی اطاعت کا مدی ہے وہ سخت ترین جہالت اور خود فری میں مسبقلا ہے ۔ الشرتعالی کی اطاعت کا مدی ہے وہ سخت ترین جہالت اور خود فری میں مسبقلا ہے ۔ ادشاد باری ہے :۔

صحبس نے حکم سانادسسول کا آسس نے حکم سانا دہشہ کا میں مَنْ يُعِلِعُ النَّهُ وَلَى فَقَدُ اَطَاعَ
 الله له

ار الماریاکہ میری محبوبیت اتباع نبوی سے والب تنہے - ادمث ادب ا قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبِّونَ الله ﴿ اللهِ الله

نَاسِّعُونَ أَيْحُيبُكُمُ اللهُ وله على مِرْوسِرى داه علو تاكراليَّرِ ترجيت كرعة اس آیت کریمیس قطعی طور میرواضح صندما دیاکه دسول النته (صلی الشرعلیه ولم) کے

اتباع وبيروى كے بغيران ترتعالى كى محبت بعنى خدائرى كا دعوى مراسرچالت وسفام ولوك اخلاق واعسال مين رسول الشرصلي الشرعليه وسلم كى مخالفت كرتيبي وه عندالشر

"مَعْفُوبُ عَلَيْهِمْ" اور " صَالِيْنَ " كامصداق اورقبرالَبَي مِي كُرفتارِمِي اس كِمقابل آغفرت صلى الترعليدوسلم كى تعليمات كى اطاعت اوراعمال واخلاق كى بيروى كرنے والے

" الْعَنْت عَلَيْهِمْ "كامصداقين ،ادرادور ١-

" اورجوكونى حكم مانے الله كا اوراس كے رسول کا سووہ ان کے ساتھ بی جن پر التُدتّعاني في انعام كياكدوه ني اودصاليّ اوترشببيدا ودنكوكاربي ا وراجعى ہے ان کی رفاقت "

- وَسَنُ تَيْطِعِ اللَّهَ وَالنَّهُ كُولُ نَاوُلِكِكَ مَنْ اللَّهِ مِنْ الْعُنْ الْعُمْ . اللهُ عَلَيْهِ مُ مِنَ النَّبِيِّينَ وَ المِسْدَنْقِيْنَ وَالشَّمَدَاءِ وَ الشَّالِحِيْنَ وَحُسَّنَ أُولَيَّاتَ رَفِيْقُ الْمِسْمِ

ال آيت كريد مي الترحل شائر في ان جارجاعتون كالتركره فرما يلب حن براين الثَّالَيْنِ يَنِيَالِيْحُونَكَ إِنَّمَا يُبَالِيُونَ ﴾ مُحَقِين جولگ آپ عبيت كرتے بي دوبيت الله . (الفتح :١٠) ؛ كرتي الشرس " ا اور فود صفورا كرم على الترعليدوسلم نے اس آيت كى شرح اپنے الفاظ ميں اس طرح كى يو : حرفے ميرى اطاعت كى اس نے الشرتعالیٰ كى اطاعت كى اورس تميرى نافرمانى كى اس تخداكى نافرمانى كى اصبيح بخارى حامتيه فخرزاب ك آلعمران: ٣١ الشاء ١٩

I oobaa-elibra

انعامات کی بارش کی ہے یہ چارجماعتیں بالاتفاق عام لوگوں سے افضسل وارفع حسیں،

ا - انبیاء کرام علیم العدلاة والسلام ، ۲ - صدیقین ، ۳ یشہدار ، ۲ دصالحین ۔ (رضوان النشر علیم اجعین) یہ چاروں جاعتیں سب مخلوق سے افضل ہیں اور سب خلوق ان سے درجہ عیں کم ہے ، لیکن اگر کو کی جا ہے کہ ان کے زمرہ عیں شامل ہوتواس کو چاہئے کہ وہ النشر ۔ اور اس کے رسول کی اطاعت کرے ۔

س اوراگراس ارسول ، کاکہا مانو توراہ یا وَ اور پیعنام لانے والے کے ذمہ نہیں مگر بیونمیا دینا کھول کر ہے

اس آئیت کریمیں رسول انٹرصلی الٹرعلیہ وسلم اور آپ کی اتب کے منصب کو واضح فرما یا گیا ہے کہ آپ کا منصب کی اور توگول کا فرض آپ کی بات میا نا اور آپ کی اطاعت کرنا ہو اگر آپ کی اطاعت کی صورت میں ہوایت سے ہے ہم وہ ہو کرض رعظ ہمیں مبتلا ہو جا کیں گے۔ اطاعت کی صورت میں ہوایت سے ہے ہم وہ ہو کرض رعظ ہمیں مبتلا ہو جا کیں گے۔ علامہ جب لال الدین سیوطی مندرجہ بالا آئیت کی تفسیر من حضرت ابوعثما ان حیری سے

نقل کرتے ہیں کہ اِر

" الشرک معیت صن ادب ، دوام معید معید النی اور مراقبه سے نصیب بی گئ اور مراقبہ سے نصیب بی گئ اور مراقبہ سے نصیب بی گئ کے معید آپ کی سنت اور عسلم کا میری کی میں بینز فرمایا کہ : جوسنت رسول انشر (صلی الشرعلیہ دسلم کوانے اور حاکم بنائے گا حکمت دسلم کوانے اور حاکم بنائے گا حکمت

المعبة مع الله بحسن الأدب ودوام العيبة والماتبة ، والمعجبة مع المهول ملى الله عليه وسلم باتباع سنّته وظاهل مل وقال ، من أتم السنة على نضه قولًا وعملًا نطت

له النود : ۱۹

كى باتين اسك زبان سے تكليل كى اور اودجوابينفس برخوا مبشات كوحاكم تبناك گاوہ بدعت کی ہاتیں سے گا الشرتبارک ىتىالى فرمىلىتەبىي : تىم اگران درسول پىك انتباع كروك توبدايت باجاؤكم " " اورقائم ركھونماز اورزكاة دينے ديو اور محم يرميورسول كے تاكم بردع بو

بالعكمة ومن اشرالعوى علىنسمنطق بالسمعة تال الله تعالى ، وَإِن تَطِيْعُونَا ط نَعْمَدُوْ الله

٩ _ دَ أَتِيْمُوا الصَّلاَةَ وَأَثْنُ الْنَاحُوةَ وَأَطِيْتُوا لَيْسُوُ لَكُنَّكُمُ تُهْمَنُونَ يَهُ

آیت کریے بالایں الشرحبل شانۂ نے تین چیزوں کا بندوں کوحکم دیا ہجردہ نماذقائم کرو، ۱۱ زکار اداکرو ، (۳) رسول کی اطاعت کرو ۔

فورس ويحصاجات توآيت كربيمي مختلف عنوان سے اطاعت رسول مي كاذكري لولد نباز كا قائم كرناا ورزكزة كا داكرنا رسول الترصلي الترعليه وسلم كى سنب وإحاديث ر مسل تع بغیر نامکن ہے جب تک آپ کی بیان کردہ ان تفصیلات کوتسلیم نزکرلیاجاتے ادران پرعمل نرکیا جا سے جہیں آپ نے احادیث مبارکہیں بیان فررمایا ہے نرنساز ی جاستی ہے اور ندند کاۃ اواکی جاسکتی ہے۔ اور نماز اور زکاۃ کاذکر توان کے اہم مادات ہونے کی وجہ سے کیا گیا ور مزظا ہرہے کرسنت وحدمیث کے بغیر دین کے کسی الما المانين بوكتا .

مسامي ينه ملآمة العصرالمي ت الكبيره ضربت مولانا محد يوسعت صاحب بنورى وسروالعزرزن يهال الكين عنه بيان فرماياب ، اوروه يركه درول التُرصلي الله مله وسلم كى اطاعت كوا قامت صلوة اورايتا م زكزة كے ساتھ بيان كرنے بي مصلحت بري كريول الدسل الشوالية والم كاطاعت كادبي وبرب بونمازا ودركاة كاب يبنى جيسے نماز بيرصناا ورزكاة ادا له مفتاح الجنه (ص: ۲۹ و ۵۰)- که النور: ۲۵

كرنافرض ب اليے بى بى اكرم صلى الله عليروسلم كى اطاعت يجى فرض ہے . واللّعمّ ادنقنا متابعة صولك وحبيبك وتوقناعليه وألحقنا بالصالحين، اسين، اللهمة أسين ، وسيحم الله عبداً قال أمينا)

• ا _ قَ أَطِيْعُوا اللهُ وَمَنْ وَلَهُ إِنْ اللهِ وَمَنْ وَلَهُ إِنْ اللهِ وَمَنْ وَلَهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ وَمَنْ مَوْمِن مِو » الطاعت كرواكرتم مؤمن مو » الطاعت كرواكرتم مؤمن مو »

اس آیت کریمیمی ایمان کی شرط بی انترتعالی اوراس کے رسول صلی الترعلیہ دم ک اطاعت کو تبلایا گیاہے ،معلوم ہواکہ مومن کی شان ہی ہے کہ وہ السّداوراس سے رسول ک اطاعت کرتاہے اور اس پراس کی حیات ابری کا دار ومدارہے جنانچہ ارست د بادی تعالی ہے ،-

" اے ایمان والو اِ حکم مانو التُدکا اور رسول كاجس وقت مبلائين تمكواس

السيّااتُهَاالُّذِينَ أَسَنُوا استجيبوا يتودليهول إِذَا دَعَاكُهُ لِمَا يُحْيِيثُكُمُ اللَّهِ كُلُمُ اللَّهِ كَام كُطُونِ صِي تَهَادى ذِيدُ كَيْرِ اللَّهِ

الشرتبارك وتعالى في اس آيت كريميك ورليد أشخضرت صلى الشرعلية ولم كى اطاعت كوفرض قرارديا ساور ستلانيا ب كمتمهارى حيات قيقى كالمخصار رسول الشصل الترعليرو سلم كى اطاعت يرب - اكي مرتب اكي محالى نمازيره رب تمع كه رسول الشصلى الته عليه وم نے انہیں آواز دی وہ چونکہ نماز میں متعول تھے اس لئے جواب ندریا ،جب نماز پڑھ جکے توجار خدمت ہوے۔ آپ نے تاخیری وجردریافت فرمائی توانہوں نے عرض کیاکھیں نماز پڑھ رہا تفااس لے فوراً حاضر نہ ہوسکا ۔ اس پر رسول الٹرصلی انٹرعلیہ وسلم نے فریدا یا کہ التُدتعالی توفرماتے بیں کدرسول کی آواز برفوراً لبیک کبواورتم نے تاخیر کردی بینانی اسام بخاری حضرت الوسعيدين المعلى عنقل كريتي :-

له الافتال : ١

ہے الانعثال : ۲۲

"بی کریم سی الشه علیه وسلم میرے قرب کو

ے گذر ہے میں نمازش مشغول تھا۔ آپ

فی مجھے بلا یا توہی اس وقت نہیں گیا بلکہ

ممازے فارغ ہوکر حاضر خدمت ہوائو

آٹ نے فرما یا ، تہیں آنے می دیرکھوں ہوئی ؟

میں نے وض کیا کہ میں نمازمیں مشغول تھا ؟

آٹ نے فرما یا کہ کیا الشریز ہیں فرملے گا ؟

ایے ایمان والوالشراور اس کے دیول کا حکمانی ؟

ایے ایمان والوالشراور اس کے دیول کا حکمانی ؟

مرّب النبى سلى الله عليه وسلم و أنا أصلى نده عالى ندم اته حتى صليت شم أتيت ؛ نقال ؛ و مّا منعك أن تأتى ؟ » نقلت : كنت أصلى ، نقال ، وألم يقل الله ، و يَا أَيّهُ عَاالً ذِيْنَ الْمَثُولُ اللهِ اللهِ الشّه ، و يَا أَيّهُ عَاالً ذِيْنَ المَثُولُ اللهِ الشّه عِيْدُوا مِنْهِ وَلِلْرَاسُولُ اللهِ

:-"ا ورج کوئی کہنے پر چلے اللہ کے اور اس کے رسول کے اس نے بڑی مرادیاتی ؟

ایک آور آیت کریم میں ارمث ادر بانی ہے:-۱۲ – وَسَنْ تَیْطِعِ ادلاٰتَ وَیَهُ وُلَهُ نَعَدُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ مَنْعَدُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ ال

ا در اگر حكم برجلي كے اللہ كے اور اس كے درول كے تو تم ارسے اعمالوں ميں كو كھي كم نہيں كرے گا، بيشك اللہ مختنے واللا درم راب رك

ا کیب اور مقام پراس طرح حکم دیا ہے۔ سم ا – حَ اَطِیْتُواادِدُّهُ وَرَیَّ مُوکَدُ لَهُ بِیْهِ ﴿ "ادرالحاءت کردائڈی ادراسکے دسول کی ۔ مذکورہ بالا آیات ہیں مُذکر کے صینے استعال کئے گئے تھے بینی مرد مخاطب تھے اگر ج

- الایک (۱۲ ۲۸۲)-

عه الاحسزاب ؛ ١١

الحبرات : ١٢٠

ع الميادله : ١٣

T - - 1 - - - - 1'1-

عام طرز خطاب کے اعتبارے عور تیں بھی اس میں داخل وشامل ہیں مگر مندرجہ دیا گیت کریمیں متونٹ کاصیغہ لاکر عور توں کو بھی خصوصیت کے ساتھ دخطاب کیا گیا ہی ادشاد ہو :۔ است قراط فی ادارت قریم شو کے گئے ہے "اور تم اطاعت میں رہواں شداوراس نو کو کو کو کو کو کو کا سول کی گئے ہے کا سے رسول کی گئے ہے کا سول کی گئے ہے کا سول کی گ

اس آیت میں عور توں کو بھی مردوں کی طرح خدا اور دسول کی اطاعت کا حکم دیا گیا ہے اسی کئے حضوراکرم صلی انڈ علیہ وسلم نے جیسے عور توں سے بیت کی تواس میں بھی بہی شرط لگائی کہ انڈراور اس کے دسول کی اطاعت کرنا ہوگی تے

رسول كى مخالف يرقر آن فيدي

" اورجوکوئی مخالعنت کرمے دیہول کی حب کے کھل جی اس مجسیدی داہ اور چلے سب سلمانون کے داستہ کے خلاف توہم حوالہ کریں گے اس کو وی طرون جو اس نے اختیار کی اورڈ الیس گے ہم اسک دوزخ میں اور جہیت گری جگر مہونجا " ا وَمَن يُتَاتِي الرَّسُولَ مِنْ الْمَسُولَ مِنْ الْمَسُولَ مِنْ الْمَسُولَ مِنْ الْمُسُولَ مِنْ الْمُسُولِ مِن الْمُسُولِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّ

اس آیت کریم میں الٹر تعالیٰ نے ان لوگوں کوجورسول الٹرصلی الٹرعلیہ وسلم کی تھنتا کرتے اور آپ کے احکام وفرامین کوتسلیم ہمیں کرتے ہمی نیز جولوگٹ سلمانوں کی داہ جوڈ کرور کر راہ اختیار کرتے ہیں ان کوجہم کی دعی پر سنائی ہے ، اس لئے علما مرکوام نے اس آبیت کو اجاع کی جمیت کے لئے دلیل میں بیش کیا ہے ، اب بہبی ذہن میں رہے کہ اتریت کا اس

سے الناء : ۱۱۵

له الاحزاب: ٢٣

که منداه (۲: ۱۵۲ و ۲۹۹ و ۲۵۹) وغیره -

امريرا جماع ب كرسول التُصلى التُدعليه وسلم كى اطاعت فرض ب اورآب كى مخالفت الرب ال التي يرايت كرير حيت مديث كي في وونون ويثيت ونهايت واضح وليل كر. ہاری سلومات کی صدیک اس آیت کریم کوچیت اجماع کے سلسلمیں سب يد امام شافعي رحمه الشرفي بيش كيا، واقعديه بواكه الكيشخص امام موصوف كم خدمت ع ماضر بوا اورسلام كرك آب كے ياس ميشه كيا ، اور تيريسوال كياكہ بتلائية : خدا ك دين مي جمت ودليل كياحبيزب ؟ المام شافعي : الشرتسال كي كتاب -ال ؛ اس كے علاوہ اوركياچينز ؟ ا مام شافتى : الشرتعالى كرسول اصلى الشرعلير ولم اك سنت واحاديث . ا کیااس کے علاوہ اور سمی کوئی چیز حجت ہے الم مِنْ الحقيق: أمّت كاكسي جيز مراجماع. ال ؛ كياآب كاب الترسواجاع المت كي حجت بونيك ولي ديل بين كرسكتين؟ امام شافعی ذراس دیر کے ان سوج میں برجاتے ہیں۔ كاك : ين اس وقت توجارا بول آپ فوب سوچ لين تين دن بعد ئين آوَل گا اب اس دقت مجع بتلاد يجع كا ، ورنه ورنه آب اين اس قول ورجع كرليج كا . سأل تويكبه كرجيلاجاتاب ، امام شافي كرجاكر بوري تدبر كے ساتھ قرآن كريم كم ثلادت مي مشغول بوجات بي ، اس طرح جب نومرتبه قراك كريم اول تا آحشوهم كرليا تو معدود بالاآست آب كے ذہن ميں آئى اور آب اپن محلس ميں تشريف لے آسے ،ابتميرا ون شروع بوديكاتها . سأل حسب وعده آن موجود بوا اورائة بي عرض كرف لكا: اميد ے آپ دلیل میں سنرمائیں گے۔

ا ما م شافعی : جی ال خرود ، لیجے ملاحظ فرمایتے التزتعالی مسرماتے ہیں : -وَمَنْ يُشَاوِّقِ النَّهُ مُؤَلِّ مِنْ بَعْدِ " اور جَوَدَ فَى رسول مَى كالعنت كرے جبك

اس پرکھل چی سیدی داه اور سلانول کے داستہ کو چیوڈ کردومراداستہ اختیار کرے تو ہم اس کے حوالہ کردیں گے وی راستہ جو اس نے اختیار کیا اور ہم اس کو ڈال دیگے دونی میں جوہیت بری جگہے یہ

دیجھتے وہ آگ میں اس وجہسے واخل ہوگاکہ اس نے ایک فرض کوچیوڈ و یاا وراج اع اسّت کے حنلات کیا ۔

سائل : بےشک آپ نے بالکل بجاار شاد فرمایا ہشکر ہے ۔۔۔ دسائل رضت ہوجاتا پڑا اسٹا میں اسٹی نے دلائل کے سلسلہ میں اسٹی نص کے ساسنے میں جیزیں ہیاں کیں اسٹی نص کے ساسنے میں جیزیں ہیاں کیں اسٹر میں اسٹر میں اسٹر میں اسٹر میں اسٹر میں اسٹر میں اسٹر کے دلائل کے سلسلہ میں ماور میں تابت کیا گئی تابت ہے کہ جب اجماع ہمیں میں ماب سوچنے کی بات ہے کہ جب اجماع ہمیں اور اجماع اسٹ بوی کیوں جست دسول اسٹر اس کی جینت پر بے شمارا یات قرآند ہمی شا بر میں اور اجماع است میں سنت دسول اسٹر اسٹر میں مداحیہ القبلاة واسلیم میں کے جست ہوئے ہرہے ۔

سورة انف ال مي ارشاد جوتا ہے ا

س دَالِثَ بِانَّهُ مُ شَاكُوا اللهُ وَ مَهُ ولَهُ وَسَنُ لَيْنَا تِقِ اللهُ وَ وَمَهُ وَلَهُ فَإِنَّ اللهُ شَدِيدُ العقاب الله العقاب الله

" یہ اس کئے ہے کہ وہ تخالف ہوئے اللہ
کے اور اس کے رسول کے اور جوکوئی تخا
بوالٹر کا اور اس کے رسول کا توبیشک
اللہ کا عذاب شخت ہیں؟

اس آیت سے معلوم ہوگیا کہ رسول کی مخالفت التُرتعالی کی مخالفت کی طرح ہے اور

له رانار : ۱۱۵

له منتاح الجنة (عدم)-

له الانسال: ١٢٠

والتداور اس كے رسول كى مخالفت كرے اس كوسخت ترين عذاب ديا جاسے كا ۔

ایک اور آیت پی ارشادی ، د س قَاتِلُوا اَلْدِیْنَ اَلَایُویُهُنُوْنَ بِاللهِ دَلَا بِالْدَیْمُ الَّلْرِی وَلَا یُحِیَّوْنَ مَاحَمُّمُ اللهُ وَمَهُولُهُ الآبِلهِ

"جنگ کر وال اوگوں کے ساتھ جوال اُداد قیاست کے دن برا برائ نہیں رکھتے اور حرام نہیں جاتھیں وہ اس کومیں کومرام کیا اسٹرا ود اس کے رسول نے "

مرام خرمین اس طرح ان لوگوں سے بھی قتال واحب ہے جوحضور علیہ الصلاۃ والسلام کے حرام کی ہوتی چیزوں کوحرام ہمجھیں ۔ انگ اور دیگر ارست کا دفرول ترمیں ،

اكِ اور مِگرادستاد فرمِلتے بي بر م راكم تِعْلَمَّ أَنَّهُ مَنْ تَيْحَادِدِ اللهُ وَمُهُ ثُولَهُ فَاكَنَّ لَهُ فَاتَ لَهُ فَالْمَ مَعْمُ مَعَالِداً اللهُ عَاوَدُ لِلثَّ الْمَعْمُ مُعَالِداً اللهُ عَاوَدُ لِلثَّ الْمَعْمُ مُعَالُهُ ظِيْمٌ مُنْهُ الْمَعْمُ مُعَالُهُ ظِيْمٌ مُنْهُ

ایک اورمقام پرونسرماتے ہیں ،۔ فلیت حُلَی الَّذِیْنَ ثُبِخَ الِفُوْنَ

" کیا وہ نہیں جانتے کہ جوکوئی مقابلہ کرے التہ سے اور اس کے رسول سے تواس کے الے دوزن کی آگ ہے جیشہ اس ہیں دہگا میں بڑی رسوائی ہے "

"سوادت رس وه لوگ جوخلات كرتے

١٩ : ٢٩ .

اله ترب : ۲۳

ہیں اس درسول) کے حکم کے اس سے کہ آیرے ان پر کھی خوالی یا سیونے ان کو

غَنْ أَمْ يِهِ أَنْ تَعِيلُهُ مُ مَا يَعُمُ أَنْ تَعَالَى اللَّهِ مِنْ أَنْ قَالِمُ اللَّهُ مُعْلَى أَوْلُهِ لَنَهُ مُ عَذَاتُ ٱلْيُمُّولُهُ

ان دونوں آیتوں میں اللہ تعالی نے لوگوں کورسول کی مخالفت سے بازر سنے کا حکم دیا ہے اور تنبی فرمادی کرسول کی مخالفت در دناک عذاب کا ذریعہ ہے۔ آیت ثانی ہی اللہ تعالى نے لفظ « آشرِ ۽ » استعمال فرمايا ہے جورسول النّصلى النَّر عليه وسلم كے اقوال و افعال اورتقريات سبكوشامل برلهناسب امورس آبكا اتباع لازى ب ال لے امام مالک نے اس شخص کوس نے ان سے صریت بوی کے مقابلہ میں ان کی دائے يوصي توسيم آيت بيره كرسنا أئتهى وجنانجي علامه بغوى التوفى ساك يواور علامه سيوطى آلتو ملافي مفرت عثمان بن عرام سے بسند متعل نقل كريتے ہيں بد

> سأله عناسالة افقالله: قال مهول الله صلى الله عليه وسلم كـ ق اوكـ ذ ا ، نقال المحل أرأيت ومقال مالك: لا فَلْيَحْنَى الَّذِيْنَ يتخالفون عن آشر بات تُصنيَعُ مُدفِتنَةُ أَرْكُوبِينَهُمُ عَذَاكَ ٱلْمُعَالِثُ 5 . 1 . 4 . 4 . 4

قال جاء مجل إلى سالك السين المام مالك كي سالا ان سے ایک سکلے بارے میں دویا کیا۔ امام صاحب نے اس سے فرمایاکہ رسول الشصلى الشرعليروسلم نع احراح فرمایا ہے . تواس باس تخف نے بوصا: آپ کاکیاخیال ہر ؟ امم مالک جواباً بر آیت تلاوت کی که: سودر تے رہی وه لوگ جوخلات كرتے بي اس كے حكم كے اس وك ان يركوني مسيبت يادروناك عذاب أبهونج إ

مفتاح الحنة (ص ٣٣ و٣٣)-

ینی جب اک خص نے امام مالک سے صدیت نبوی ٹی تو دریا فت کرنے لگا کہ کیا اور آپ نے یہ اس کی دائے ہی ای کے موافق ہے ج یہ شن کرا مام صاحب کو عصر آگیا اور آپ نے یہ اس کی دائے ہی اس کو بتلا دیا کہ منت صحیح (صدیث صحیح) کے خلاف تیں کیونکر کرسکتا دو اس کو بتلا دیا کہ منت کر کے اس کو بتلا دیا کہ منت میں کے دووں کے فیصلہ اور ان کے حکم کے دو اس بیکہ جے معلوم ہے کہ جولوگ الشہ اور اس کے دمول کے فیصلہ اور ان کے حکم کے ملاف کرتے ہیں انہیں سی منت قدم کا در دناک عذراب دیا جائے گا ۔

" بے شک جو لوگ بنگر ہو سے اور دوکا انہوں نے الشرک راہ سے اور مخالف ہوگئے رسول سے بعداس کے کہ ظاہر ہو کی ان پر سیھی راہ نہ بگاڑ سکیں گئے ان کی سب اعمال ہے ان کے سب اعمال ہے ان کے سب اعمال ہے ان کے سب اعمال ہے تا کہ ایمان والو! مبند نہ کر دائی آواز ہو کی تا واز سے او پر اور اس سے نہولا تر کی کہ واز سے او پر اور اور اس سے نہولا تر کی کہ واز سے او پر اور اور اس سے نہولا تر کی کہ واز سے اور پر اور ایک دوسر سے تر فرخ کر جیسے تو ختے ہوا کی دوسر سے نہولا کی کہ میں اکا دت نہ جو جائیں تمہار کر کام اور تم کو خبر جی نہویہ کام اور تم کو خبر جی نہویہ

+ ++++++

النَّا الَّذِي اللَّهِ وَسَّالُكُوا اللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهُ وَالْمَا اللَّهُ وَلَا اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللْهُ وَاللَّهُ وَالْمُوالِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَالْمُ وَاللَّهُ وَالْ

ماے فورہ کہ جب بنی کریم صلی النٹرعلیہ وسلم کی آوازے اپنی آواز کا بلندکڑا حبط اسال کا سبب بن سکتاہے تو بھرا حادیث کوچوڈ کراپنی خواہشات کا اتباع کرنا حبط مسال کا ڈردید کیون کر نہ ہوگا۔ چنا نچہ حافظ ابن تشتم کھتے ہیں ہ۔

TY: Fur

لانشعراد ن عم

الخبرات: ٢

" حِب لوگوں کا این آ واز کونی صلی الشہ عليرولم كى آوازے بلندكرنااعال كے صالع ہونے کاسب بن سکتا ہے توات انى رائ اورعقول اورادواق وسي ا وراینعلوم کودسول الشرصلی الشیعلیم وسلم كے لائے ہوئے احكام وسنت معتدم كرناحطاعبال كاسبب 49 84 = 545 " جولوك محالفت كرتي الشرك اور اس کے رسول کی وہ ذلیل ہوسے جیسے كدوه لوگ ذلىل بوسے بوان يربيلے تھے ہ وي تنك و لوك خلاف كرت بي الله کے اور اس کے رسول کے وہ سے سب دليول سي سين " يراس ليحكروه خالف بوسي الشرك اوراس کے رسول کے ادرجو خالف ہو الشركي توالشدكا عذاب بثماسخت سي " ا ودكى يۇسى كردا دىدكى يوسى كور

فإذاكان رفع أصواتهم قوق صوته سبيًا لحبوط أعالهم فكيف تعديم أس أتعم وعقراهم وأدواتهم وسياساتهم ومعارفهم على ساجاءيه ربغعاعليه وأليسمنا أولى أن بيكون محسطساً العمالهم له م النَّالَّذِيْنَ يَحَالَّدُنُ اللهُ وَ ؠٙڛؙۯڶۄؙڰؙؠ۪ؾؙۯٵػؽٲؙڵؠؾؘٳڷٚڹۣؿؘؽ مِنْ قَبُلِهِمْ وَلَهُ ٩_ إِنَّ الَّـٰذِيْنَ يُحَادُّونَ اللَّهُ وَمَهُ وُلَهُ أَوْلَتِكُ فِي الازكنية • إِلَيْكَ بِأَنَّهُمُ شَا تُعُوا اللهُ وَ مَهُ وُلَهُ وَسَنُ يُّشَاقِ اللهُ فَا تَنَا لِللَّهُ شَدِيدُ الَّهِ قَالِي اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ الله الدِدَمَاكَانَ لِيُؤْمِنِ وَلِأَمُولُمِنَةِ

له إعلام الموسين (١:١٥)-

ع الحادله : ۵

سے الحادلہ : ۲۰

الحث الحث ٢

إِذَا تَّفَى اللهُ وَمَهُ وَلَهُ اَشْدًا اللهُ يَنْكُونَ لَعُهُمُ الْجِنْبَرَةُ مِنْ اللهُ يَنْكُونَ لَعُهُمُ الْجِنْبَرَةُ مِنْ الشرعية إله

کا یہ کام نہیں حبکہ مقرد کر دے الشّاور اس کا رسول کوئی کام کران کو دہے اخت یار اپنے کام میں یہ

مندرجہ بالاآیات کر پیر صراحة اس بات پر دلالت کرتی بی کہ الشراوراس کے اللہ کو مان لینا جاہتے (ور ان کی مخالفت سے بچنا چاہتے اللہ اور اس کے اللہ عام ہے خواہ اس کا تعلق عبادات سے ہویا معاملات و بخیرہ سے ،کسی امر مسروطیہ الصلاة والسلام کے فیصلہ سے مذہوڑ نے کا اخت یادکسی فرہیں ۔

ایت کرمیہ "قساکات لِمُونِّ بِنِ وَلاَسُوُّ مِنَة بِهِ "الآیہ ،حضرت زیزیہ اور ان کے اللہ کے باہے میں نازل جوئی ہو جبکہ وہ حضرت زیزیہ بن کا نکل اللہ کے باہے میں نازل جوئی ہو جبکہ وہ حضرت زیزیہ بن کا نکل اللہ کے باہے میں نازل جوئی ہو جبکہ وہ حضرت زیزیہ بن کا نکل اللہ کے باہد جنانچاس آست کریہ کے ساتھ این بہن کی شادی حضرت زیزیہ کے ساتھ کردی ۔

اللہ کے باہد کے بعد انہوں نے اپنی بہن کی شادی حضرت زیریہ کے ساتھ کردی ۔

سن داری میں ہے م بن مجیرے دوامیت ہے کہ ا

س بعلى دكونتين موادئ عصرى نماز كي بعدد وكانبرها معلى دكونتين موادئ عصرى نماز كي بعدد وكانبرها معلى المن في المن في المن في المن المن في المن

رسول الشرصلى الشرعليدوسلم فيعصرك

بدنازير صنات كابحاب مجمعلم

كان طاؤوس بهلى كنتين بدرالعص نقال له ابن مباس ، اتماكهما ، فقال : إندائها عنهما أن تتخذسكا فال ابن عباس ، فإنه تد مع عن صلاة بعدالعمر ؛ فلا أسى أتعيذ بعليهما أم توجى المن الله تباس ك وتعالى قال، و مَمَا كَانَ لِمُؤْسِنِ وَلَامُومِينَةٍ

الاحتاب : ۲۲

4.

نہیں کہ کیاتہ ہیں ان دورکھتوں کے بڑھنے پرعفزاب دیاجا ٹیگا یااجرملے گا کیونکہ الٹٹر تبارک وتعانی کا تو پرارشاد کرکہ سی بھی ڈون مرد اورکسی جی مومن عورت کا یہ کام نہیں کرجب الٹڑا وراس کا رمول کو ٹی کام تجوز إِذَا قَضَى اللهُ وَمَهُولُهُ أَشُرُ أَنْ تَنْكُونَ لَهُمُ الْخِيرَةِ مِثَ أَشْرِصِمُ إِنَّ قَالَ سَفَيان : تَتَخَذَ سَلَمُا يَقُول ؛ يَعِلَى بعدا لعص إلى الليل إله إلى الليل إله

کردیں تواس کے بعد بھی ان کو اس میں اختیار باتی رہے۔ داوی صدیت سفیان بن عید کہتے ہیں کہ نتخذ سلاکا مطلب ہے کہ عصر کے بعد سے دات تک بناز پڑھی جاتی دیج " اس سلسامیں ایک اور واقعہ کو اسام وادمی اس طرح نقل کرتے ہیں ہے۔

م حفرت الورباح جواً ل عرك ايك برك الم برك الم برك الم برك الله برك الله برك الله برك الله برك الله برك الله بي الله ي ال

عن أبى رباح شيخ آل عمقال م أى سعيد بن السيب رجلًا يعلى بعد العص الكعتين يكثر: نقال له : باأ بامحمد : أليد ذبي

اله سنن دادی باب ما بینقی من تفسیر حدیث النبی صلی الله علیه وسلم دقول عنی عندقوله صلی الله علیه وکلم (مالا) مستدرک حاکم (۱۱۰۱۱) (ورسنن بینقی باب النبی عن العملاة بعدد لفیر حتی تقللح النبس (۱۱۰۱۳) اس و ۱ فعد کو علامه البر عمرین عبد البرالمتوفی مستاسی هم نے اپنی کتاب " جاسع بیان العلم " میں (۲۰ ، ۱۸۹) پرنقل کیا ہے اس میں الفاظ اس المرح بین ؛

تال إنسانهى عنده سائن يتخالسنة ، فقال ابن عباس ، قد نعی مصول می الله عنده سائن بين خالسنة ، فقال ابن عباس ، قد نعی مصول صلی الله علیه وسلم عن صلة بعد العص الخ اس واقعه کو اختصار کے ساتھ دو مرے طریق سے محد تت عبد الرذاق المتوفی طلاحه سے اپنی کتاب " المصدّف " میں باب الساعة التی کیره فیب الصلاة (۲۲ ، ۲۳۳) می نقل کیا کر اور اسام الوجه خراحم بن محد العجادی المتوفی طلاحه فی طلاحه آنی کتاب شرح معانی الآتار" کے باب الرکمتین بعد العصر (۱۱ ، ۱۲۹) میں ذکر کیا ہے۔

اے الو محد وصورت سعیدین السیب کی كنيت ب ، ية بتلاية ككيا الثرتعالى الله على الصلاة ؟ نقال: يهذبك الله يغلان السنّة إله

م خاز پڑھے بریمی عذاب دےگا؟ توانبول نے فرما یاکسنت کے خلاف کرنے ہر خدانچه کومسزا دےگا؟

بعن ومتعض عرك مارك بعد فل مرصاكرتا تعااس في وال كياكس تونما زير صتا و ب و تواب كاكام ب كياس يرسي الترتعال مجع عذاب دي ك ؟ اس كايف ل يوسك ت رسول (عليه الصلاة والسلام) كے خلات تعااس لي حضريت سعيد بن المريش اس عفرما ياكر چنك تم سنت كے خلات كردہے ہواس سے استرتعالى تمہيں اس خلاف ست مل برعذاب دیں گے ، اس سے کے حضور اکرم صلی الشرعلیہ وسلم نے فجرا ورعم کے بعد

امل نماز رشصے سے منع فرمان پلیے کے ١٢ - وَمَنْ يَعْمِى اللَّهُ وَيَهُ وَلُهُ وَ يَعْدُ مُنْ فَكُونُ مُنْ فَكُونُ مُنْ فَكُونُونُ مُنْ فَاللَّهُ فَاللَّهُ فَاللَّهُ فَاللَّهُ فَاللَّهُ عَالِدُ انِيْعَادَلُهُ عَذَاتِ معنى والم

"اورجوكونى النزاوراس كيول كافران كرے اور اس كے صدور كر نكل مائے قال كواك ين داع كا وروه النائية رسیگاوداس کے نے ذلت کاعذاب وگا؟

اس آیت کریمیٹیں الٹرتعالی نے یہ واضح فرمیا دیا کدرسول کی نا فرمانی اس طسرح مت مذاب كاسبب بي سرطري الشركي نامندياني -

" اور الشرادراس كي رسول كي نعت الله المستنسَّا على المراني والمركم المرامي من الركمية.

١٢ - دَسَنُ تَعِقْ اللهَ وَيَسَوْلَهُ

ی سن داری دس، ۲۲) علامرسیویلی نے اس واقعہ کوامام دادی سے اس طرح نقل کیا ہی ، عن سعیدہن السيب أنته وأتى دج للايعلى بعد الكهتين ميكثر الخد المحقام ومنتاح الجنة (ص ٢٣ و٢٣)-له تغسيل كے بے كتب مديث الماضغ فرمائي ، بہت ى مرفوع احاد بيت مي عصروفج كے بعدُهل نماز ب خى مانىت آئى ہے . دس شاء التفعیل فلیواجع کتاب نا «لب اللباب فیرا بیقوله المسلمان میں بیقول کی المسلمان المسل Toobaa-elibra "كياتو تي منديكماان لوگوں كومن كوشع ہوئی کا نامیوسی بھریسی وہی کرتے ہیں ہ نع بوحكا وركان يس باتي كرتيل گناه کی اور زیادتی کی اور رسول کی نامشرىمانىك "

" اے ایمان والو احبیتم مرکوشی کرد توكناه كى بات اور زيادتى كى بات اور د ول كى نافرمانى كى سرگوشى ندكرد ا ورنیکی اور بر بیز گاری کی باتوں کی مركوى كرو داسى كوئى فرين بني) م ا ورج كونى حكم ندما في الشكا اوراس رسول کا سواس کے سے آگ بردائج کی وہاں ہیشہ بیشہ رہے گات " اوراطاعت كروالتُركي اوراطاعت کروایس کیسول کی اور داس کی کھاتھ نے ہی ورت رسوة

١٣ ــ أَنَمْ تَرَ إِلَى الكَّذَيْنَ نُعُدُا عَنِ النَّاجُولِ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَانُهُوْ اعَنْهُ دَيَتَنَاجُوْنَ بالانتم والعك والعثومية الرسول لمه ٥ إِنَّا تُعَاالُ نِيْنَ أَمُنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمُ نَلَاتَتَنَاجَوُ إِبِالْأَمْ وَالْعُكُورَانِ وَمَعْمَدَةَ الْمُكُول وَتَسَاجَوا بِالْهِرِ وَالشَّقُولُ الْهُ ١٧ _ وَمَنْ تَعِصُ اللَّهُ وَمَنَّ كُولُهُ فَالَّ لَـهُ نَارِحَهُ أَمْ خَالِيكُ قَعْمَا أَكِنَّ أَلِيْهِ

٤ إ _ رُ أَطِيْعُو اللَّهُ وَ أَطَيْعُ النَّهُ وَلَ دَاحَدُنُوْل بِي

رىقى يواشى عى كذشته الترميذى: وفي الباب نقد جمعنا فيه المفوع والموقوف.

ک الاحزاب: ۳۲

له النار: ١٢

(حواشی خدیدا) له الحیادله : ۸

له الحيادله: P

س الحن : ٢٣

ع المائد : ٢٩

4+

" ا ورحکم ما نو النشرکاا وراس کے دسول کا اگرتم ایمان دکھتے ہو "

١٨ - دّاطِيْعُواالله وَتَهْمُولَه إِنْ
 كَنْ ثُمْمُ مُؤمِنِينَ إِنْ

كويارسول كى اطاعت پرايان موقوت براوردسول كى مخالفت كافرول كاشعار بر .

" اسے ایمان والو! استُدا در اس کے دسول کا حکم مانو اور الن کاکہنا ماننے سے روگردانی اختیا دمت کمدہ حیکہ تمشن ریم ہو؟ 19_يَا أَيُّعَاالَّ ذِيْنَ امْنُوْأَ كِلْتُولَا اللهُ وَمَنْ مُولِلهُ وَلَا تَوَكُّوا منه و النَّمُ تَسْمُعُونَ فِيْهِ

دیاگیا اور اعراض و مخالفت کردوکاگیا ہے۔ س اور الشکی اور اس کے رسول کوڈٹا کیاکر و اور (اس ٹیں)جبگڑا است کردنڈ کم ہمت ہوجا ڈیگے اور تہماری دواکھڑ ما مے گی ؟

اس سے پہلے کہ آیات ہیں التُرتعالیٰ نے یہ بران فرمایا تعاکرجب مقابلہ کا فروں سے ہو توفوب یادکیا کرو جو سے ہو توفوب یادکیا کرو جو سہاری فلاح وکا میابی کا واحد ذریعہ ہے ، ہجراس کے بعد میری کم دیا کہرموقع اور مراسی منازی فلاح وکا میابی کا واحد ذریعہ ہے ، ہجراس کے بعد میری تمہا ہے لئے خیرا ور سالت ترانی اور اس کے رسول کی اطاعت کیا کرواسی میں تمہا ہے لئے خیرا ور سالت آوراس و سالاتی ہے ، اسکین اگرتم نے رسول کی بات ندمانی تو بھیے تاتم میں مسلاتی اور اس و سالاتی ہے ، اسکین اگرتم نے رسول کی بات ندمانی تو بھیے تاتم میں

له الانعثال ؛ ا

له الانتال: ٢٠

له الانتال : ۲۷

آبس بی نزاع اورهبگڑا پیدا ہوگا ، ہرشخض اپنی بات منوا ناجلب گاا ورہریات میں اپنی آگا آڑا سے گاجس سے تمہاری ہمت اور یوم و ثبات کونعصان پہونچے گا ۔

" اورده لوگ کهتی بین که بم نے انشراور اس کے رسول کو بما نا اور حکم بین آگئے ، میران بی سوا کی فرقد اس کے بعد مجر میا با ہے اور وہ لوگ مانے والے نہیں " ٢١ _ وَكَفَّوْلُوْنَ الْمُنْتَا بِاللهِ وَبِالْمَّوْلِ اللهِ وَالْمُولِ اللهِ وَالْمُولِ اللهِ وَالْمُولِ اللهِ وَالْمُولُولِ اللهِ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَمَا الْمُؤْمِنِينَ وَهُ مِنْ تَعْدِدُ لِلصَّا وَمَا الْمُؤْمِنِينَ وَهُ مِنْ لَكُومُ مِنِينَ وَهُ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ وَهُ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ وَهُ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ وَهُ مِنْ الْمُؤْمِنِينَ وَهُ مِنْ اللهُ وَمِنْ اللهِ مَنْ اللهُ وَمِنْ اللهِ مَنْ اللهُ وَمِنْ اللهِ اللهِ اللهُ وَمِنْ اللهُ وَمِنْ اللهُ وَمِنْ اللهُ وَمِنْ اللهُ وَمِنْ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَمِنْ اللهُ وَمِنْ اللهِ اللهِ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَمِنْ اللهِ اللهِ اللهُ وَمُنْ اللهُ وَاللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَمِنْ اللَّهِ وَمُنْ اللَّهُ وَمُنْ اللَّهِ اللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَمُنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ مِنْ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ ا

اس آیرت میں النزخب شانزنے منافقین کا تذکرہ فرمایا ہے کہ برمنافقین مون نہیں ہیں بلکہ مؤمن تو وہ ہوتا ہے جوالٹر اور اس کے دسول کی سی معنوں میں اطاعت کرتاہے قولاً جی عبلا ہیں ، ظاہر اس اور باطنا ہی ، معلوم ہواکہ مؤمن کی شان ہی برہے کہ دہ تول

رصلى الشرعلي وسلم) كى مخالفت نهيس كرتا . ٢٧ — قُلُ أَعِلْيُعُوا اللهُ وَاَطِيْعُوا النَّهُ وَاَطِيْعُوا النَّهُ وَاَطِيْعُوا النَّهُ وَاَطِيْعُوا النَّهُ وَالْعَلَيْهِ مِلَاعُتِلُ فَا مِنْ تَوَكَّوْا فَا مِنْدَا عَلَيْهِ مِلَاعْتِلُ وَعَلَيْكُمْ مَا حُنِيْلُتُمْ وَلِيْهِ

دسول کا بھراگرتہد کھیے دیے فوت ول کونے ہے جو بوجہ تم پر دکھا کراور تہاں کو نہ ہے جو بوجہ تم پر دکھا ؟ " اے انہان والو! اللہ کے حکم برجی والد دسول کے حکم برجیوا ور اپنے کئے ہوئے کا حوں کو ضائع مت کر د !

"آب كبرديجة كرحكم ما أوالشركا ا ورحكم انو

٢٧ _ يَااَيُّهَا الَّذِيْنَ اَسَّوُّا اَ طَيْعُوا اللَّهَ داَطِيْعُواالنَّهُ وَلَا شُغِيلُوُ الْعُهَالنَّهُ عَه شُغِيلُوُ الْعُهَالنَّهُ عَه

اس آیت می الله تعالی نے بیتلادیاکداعمال اس وقت قبول ہونگے جب رسول قبول مسلی اللہ علیہ وسلم کی اتباع کی حبائے آپ کے اقوال دا نعال ، ادامر ونواہی اصراخلاق داعال

له النور: ۲۷

النود: ۲۵

ی سونه محد: ۱۳

و الله المراح المراح و المراح على الشرعليه وسلم كى نخالفت كريب گا وه اپنے سامے ابترال سائے اور بے كادكر وسے گا ۔

المنظم المنظم المنظمة وَكَنَّ وَلَهُ اللَّهُ وَكَنَّ وَلَهُ اللَّهُ وَكَنَّ وَلَهُ اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللْلِمُ وَاللَّهُ وَلِمُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّ

"ا ورحكم سانوالت كااور حكم مانورس كالمحراكرةم منه موثردك توجار مدمول كانوبي كام بربيوني ديناكهول كرئ

رول ک نافرمان کفریخ

الْمَانْسَلْنَا الْكَكُمْ تَهُولُلُا الْمُسُلُنَا الْكَكُمْ تَهُولُلُا الْمُسُلُنَا الْمُسُلُنَا الْمُسُلُنَا الْمَسْلُنَا الْمَسْلُنَا الْمَسْلُنَا الْمَسْلُنَا الْمَسْلُلُ الْمُسْلُنَا الْمَسْلُلُ الْمُسْلُلُ الْمُسْلَكُمْ تَعْمَلُ الْمُسْلُلُ الْمُسْلِكُمْ الْمُسْلُلُ الْمُسْلِكُمْ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ

مہم نے بھیجا تہاری طرف دیول بنالہ والا تہاری باتوں کا جیسے بیجا فرخون کے باس دیول بھیرکہا نہ مانا فرخون نے دسول کا بھر پچڑی ہم نے اس کی وبال کی پڑڑ بھر کو نک بچوگر ڈ الے گا افراق

14: 5 41

التناب، ١٢

الْوِلْدَانَ شِيْرًا الآية له | كوبوارها " اس آیت کریمیمی ایک طرون فرعوان کے کفریاموجب دسول کی نافرسانی کوقرار دیا ہے ، دوسری طرف رسول الله صلی الله علیہ وسلم کی نا فرمانی کو " اِنْ گَفَرُاْتُمْ " کے تحت گفر قراردیا اور اس سے درایا ہے اس لئے قطعی طور می ثابت ہوگیا کہ در دل کی نافرمالی فرح مذكوره بالاآيات مي الرحيه مذكر كے صينے استعمال كئے كئے بي اورعورتي اس خطا

میں شامل ہیں تاہم ایک مقام پرجع مؤنث کاصیغہ تھی آیا ہے ، ارشاد ہم ،۔ ٢٠ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِي مُعَمُّ كُونِ عُمْ اللهِ المِلمُ المِلْمُ اللهِ اللهِ اللهِ المِلمُ المِلمُّ ع ج ج ج ج

یہ الفاظ عور توں کی بیت کے تذکرے میں وار دسوے میں کمان عورتوں سے یہ عبد سی لے لیں کدوہ نیک کاموں میں آپ کی نافرمانی نہیں کریں گی۔

مخالف يركول كالنجام

مندرجه بالاآیات اس بات برصریج دلیل بی کدانشد تعالی اوراس کے رسول کی اطاعت نہایت صروری ہے اس لئے اگر کوئی شخص اس سے اعراض کرے اور خدا اوراس کے رسول کی نا فرمانی کا ارتکاب کرے تواسے بحنت عذاب دیا جائے گ ا وراس وقت نا فرمانی اور مخالفت کرنے والے تمنّا کری گے کہ کاش ہم نے نافرمانی: کی ہوتی ا وررسول کے متبع و بیرو ہوتے توکتنا اچھا ہوتا ،لیکن اس وقت صربت و تہ كالجدفائده نه بوكا . التدحل حبلال وسرماتي .-

٢٨ وَلَيْوَمَ تَعِضُ الظَّالِمُ عَلَى اسْ اورض دن كا شكام عَلَى اللَّهُ كار يَدَيْهِ نَقُولُ لِلنَّيْتِينَ الْخِلْصُون كواوركم كاككامش

المسترتبل ؛ ١٥ و١١ و١٠

المُّذَنْتُ مَعُ الْمَهُولِ سَبِيلًا ﴿ مِن فِرُول كَسَاتِهُ وَاسْتَحِرُا إِوالاً اللهِ اله اس آیت سے جہاں یا معلوم ہواکہ دسول کی مخالفت اور نا فرمانی کرنے والوں کو ت عذاب دياجا عدكا ، ولال يهي علوم بواكرسول الترصلي الشرعليه وسلم كى اطاعت ی کے بئے ضروری اور فرض ہے اسی لئے عذاب کے وقت وہ یہ تمناکریں گے کھاشیم ول کے متبع ہوتے۔

ا کے اور آیت ہی الترتعالی آگ کی حالت اس طرح بیان فسیمائی ہے :-"جى دن ؛ ونده عسر كے يُل وه أگ یں ڈالے جائی گے تو وہ کہیں گے کہ کیا بى اجِعابوتا جوم نے النّٰر کا کہاما ناہوتا اور دسول ک اطاعت کرلی بوت ی

نَوْمَ ثُمَّلَكُ وَجُوْهُهُمُ فِي النَّادِ يَقُولُونَ سُلَيْتَنَا أَطَعُنَا اللَّهُ وَ أطفئاالت سوكا يكه

الشرتعالى نے اس آیت سے قبل كا فروں كا تذكرہ فرمایا ہے كہ الشرنے كا فروں كے المرجم تياركى بوئى بي جب بي أبهين جميشه رسما بوگا ان كا نه تو و بال كوئى عنوار دوست بوگا اور نے لوئی یارومددگاں ال کوسخت عذاب دیاجا سے گا جب عذاب کی شدت سے وہ مون بومائيں گے توتمتاكري كے كداے كاش بم فے اللہ اوراس كے دسول كى اطاعت كى 🔻 لَ تَرْبِي بِدون مُدرِيحِمثا يَرِّتْ ، إن كى اس حسرت وافسوك كى حالت كوالتُرتعالي في مندرَة الا ایات میں بیان فرمایا ہے اور اس صرت اور ندامت کاذکراک اور آبیت میں اسطرے آیا ہ

عَصَوُ النَّهُ وَلَ لَوْتُسَوِّى إِيهِمُ كَاكِيادُ مَانَا بِوَكَايِرِ مِنَاكُرِي مُحَكِمُ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِن مُحَكِمُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِي كي يوزوم أي اورالترتعا وكي الوالمات .

العُمَتُ فَي وَكُولَ اللَّهُ فِي كُفُولُولَ إِن اللَّهُ وَاوَ اللَّهُ الدرالا الأوْن دَلَاثَكُمُّوْنَ وَاللَّهُ مَنْ وَكُونُ وَلَا لَكُونُ وَلَا لَكُونُ وَلَا لَكُونُ وَلَا لَكُونُ

الفصال ، ۲۷

ان آ یات ہے معلوم ہوگیاکہ دول کی مخالفت کرنے والوں کاکیا انجام ہوگاا وران کو كس جگر بينيك وياجائے كا جبنم كى ديجتى بونى ألك بوگى اور ايسا در دناك عذاب بوگاجس كا تعتورتك فيهي كياجاسكتا جنم مي حيث عض كوسب كم درجهكا عذاب دياجائ كا وه في الم ہےآگ کی دوجوتیاں پہناتی جاتی گیجن کی شترہ حرارت کی بنار پراس کا دماغ کانڈی ک طرح كموك كأحير جائت كم يخت اور در دناك عذاب مو (أعاذ ناالله منه)

أطار ول ايمان كي علا براورعصيان كفركي

٣١_ انْسَاكَانَ قَوْلُ ٱلْمُؤْمِنِيْنَ إِذَا دُعُوا إِنَّ اللهِ وَتَهُ ولِهِ لِيَحْكُمُ سَيَعْتُمُ أَنْ يَقَوْلُوْا سَيِعَنَا وَ اَطَعَنَا وَأُولَظُافِكُمُ الْمُقْلِعُونَ الْمُعْلِعُونَ

٣٢ - وَمَنْ يَعْمِ اللَّهَ وَمَهُ وَلَهُ وَ يَخُشُ اللهُ وَيَتَّقُهُ فَأُولَيْكِ مُنَّ الْمَنَا تُؤُونَ اللهُ

بلاس محاكي الشداوراس كرسول كى طرف فيعلد كرنے كوان بس تووه كہيں م في شن ليا اور حكم مان سيا اورسي و الماريخ و المراجع ال م اورجوكونى اطاعت كرے الشركى النداك رسول كى اور الشراع دُرتا ايس اوراس ک (نا فرمانی) سرمجیکر مطے تو دی توگی کاسیا

" ا بان و الول كى بات ميى تعى كرجب

الن آیات سے معلوم ہواکہ کامیا بی اور فلاح استرتعالی اور اس کے دسول کی لطاعت ہی میں محصرے۔ ایک دوسری آیت میں اللہ تعالی نے مومنوں کی صفت بریتانی ہے ،-

کے منداعر (۱: ۲۹۰ و د ۲۹) و (۲: ۲۲۲ و ۲۲۹) سنن داری (ص:۲۸۲) سی بخاری (١: ١١١) محيم (١: ١١٥) وغيره .

سے النور : ۲۵

" اور ده اطاعت کرتے ہیں الٹرکی اوراس کرسول کی "

اس آیت کی ابتداری الله تعالی نے مؤسنول کے اوصاف شمار کراسے بی کروہ لوگول کو الاسكركية بن ، مُرى بالول سے روكتے ميں ، نماز قائم كرتے ميں ، زكاة ديتے ميں ، اورائلہ الله اوراس کے دسول کے حکم بر جلتے ہیں ، آگے فرمایاک سبی وہ لوگ ہیں جن برخدارم کرتا ہے ، تو / اوس ااصل وصعت خدا اور زول کی اطاعت کرتاہے ، اور خدا کی اطاعت قرآن کریم کے الماس مل كرنا ب تورسول كى اطاعت آپ كىستىت برعمل بىرا بونا ب د چانچۇدرول المسلمات مليدوسلم كى حيات طيبه مي كاكثر فيصلے سنست نبوى ہى سے ہوتے تھے ،اسلام يسيلنا المست وسوف المدّ (صنى الشرعليه وسلم) سيني فيصل صادر كرتے تھے ، اب بلاح الله سال كى الما عت كے لئے قرآن ياك كامحفوظ رستا ضرورى باسى طرح وسول الشملى الله الإم الماعث كافض س رسول باكسى الترعليه وسلم كي قول وفعل كالمحفوظ رسنام عي خرور منت يرعمل كيونكر بوسع كا عبد الوجيز موجودي نه بواس كى اتباع كس طرح كى المن عد المذا اطاعت درول كى آئيس باس بائ المروت مي كرسول الشرصلى الله والم كاسنت اليني أبي كم اقوال وافعال سي مفوظ مي اورمحفوظ ديمي مح تلك آب ل الما مت كى جاسكے

این می معلوم بواکه اصل مصادر تشریع (احکام شرعیه کے مافذ) دوہی ہیں،ایک است الله و دوہ ہیں،ایک الله و دوہ ہیں،ایک الله و دوسرے منت رسول الله (صلی الله علیه وسلم) اور سی طرح الله تعالی الله والله و الله و ا

" جي نےکسی ایستخص کوشے لوگ عالم کہتے ہوں یا وہ فود اپنے آپ کوعالم مجسًا

الم أسع أحدًا نسيه الناس أد نسب نشه إلى علم يخالف

411 721 1

ہواس بات کی مخالعنت کرتے ہوسے نبين شناكه الشرتعال فيحضور أكرم طالشه عليه وتم ك اطاعت اور اتباع كو فرض كيابر اوراً پ کے احکام مانے کو ضروری قرار دیا بر اوربعد کے لوگوں برآپ کی اتباع الر كردى براوبرطال مي بغيركتاب الله يا سننت دسول الترصلى النترعليه وسلم كے كسى قول كاماتنا ضرورى نهيس اوران کے سواج کی میں ہے وہ ان دونوں کے تابع ہے، اور الشرتعالیٰ کا حکم ہارے لئے الد لبدوالول كم غير صفورسلى الترملي وكلم ک سنت (احادیث) کے تبول کرنے می اكبى باسىس كى كاختلات نبيس ب كرحفوداكرم ملى الشرعليدوم ك سنت واحاديث كاقبول كرنافض وواجبے ؟

فى أن فهن الله عنّ وجلّ البّاع أسويهول اللهصلى اللهعليه وسلم والتسليم لحكمه بأك اللهعن وحل لع يجعل لسن بعده إلااتباعه وأنه لاللن قول بكل حال إلا يكتاب الله أوسنة بهول صلالته عليه وسلم وأن ما سواهما تبع لعما ، وأن فض الله تعالى علينا وعلى سن بعدنا في تبول الخبرعن رسول الله ملى الله عليه وسلم وإحد لا يختلف في أن انفض والواحب تبول الخبرعن دسول الله صلى الله عليه و al plu

اَحنلاق ا ورسیرت میری دسول اکرم صلی النه علیه وسلم کی بیروی فرض بو

الترتبادك وتعالى في بى اكرم ملى الترعليدوسلم كى التباع كى عموى حيثيت كوواض

له کتابالاً (۱،۱۵۰)-

ل کے لئے "اطاعت" و" اتباع " کے علاوہ لفظ" اُسوہ " سجی استعمال فرمایا ہوس کے من روش المعتل الورطرز كم بي الداس بات برتنبيه بكرة تحضرت على الشعليه و الكيروى سرف آب كے اقوال داحكام بى مى محدود نہيں ہے بلك آپ كے سرطرز و

وف کواپنانا ضروری بی، ارتفادی ب لَقَدُ كَانَ تَكُمُ فِي مُسُولِ اللَّهِ السُويَّةُ حَسَنَةُ لِسَنَ كَانَ يَرْجُولُ الله وَالْيَوْمَ الْآخِرَ لِهِ

مياشك تهادے لئے مفيد كرسكينى ر ول کی حال ، اس کے نئے جواسید مكتابوالتُدكا وريطي ون كي

اس آیت کریدی الترتعالی نے اپنے رسول دصلی الترعلیہ وسلم ، کومسلانوں کا پیٹوا ا إ ب اورآپ كى الباع كاحكم ديا ب، آپ كى زندگى كو قابل تقليد نمونزاوراسو ، وسند ا ا ا ا ا ورسا من الفظول مي اعلان فرما يا ب كه اكرتم برطراقيه اختيار بذكرو كم تومجه المانيك لوقع ندر كهنا اس كے بغیرتم میرى رضاحاصل بهی كرسكتے اور فرما ياكداس سے

م الفرع - حافظابن كثيره لكهة بن :-مدوالأمية أصل كبير في التأسى مدحضور اكرم صلى الشرعليه والم كحاقوال وافغال اوراموال كالوكول كرواسط سوسول الله صلى الله عليه و المفاتوله وأنعاله و نونہونے کے لئے یہ آیت بڑی بیادی أحواله ولعذاأسرالله تبادث وتعالىالتاسيلتأس بالنبى ملى الله عليه وسلم لم

وليل بياس لئ كم الترتبارك و تعالى نے لوگوں كومكم ديا ب كرودنى كريم صلى الترعليه وسلم كى افتدار كري أكي أسوه كواينامشعل راه بنائي

مشہوراصولی امل ابوالحسن آمدی اس آیت سے استدلال کی توضیح ان العناظ

تعیران کشیر (۲: ۲۷)-

میں کرتے ہیں ا۔

" ادراک آیت سے استدلال اک اور اللہ معلیہ کراس آیت ہے۔ استدلال اک اور اللہ معلیہ کرام کا اقتدار کو النہ سے اور اللہ کے دن سے امید والبتہ کردنے کا ذریعہ قراد دیا ہے اور آب کی پیروی نہ کرنے کا مردم مینی النظرا ورادم آخرسے امید رکھنے کی فی لازم آتی ہے اور یہ کفریم اور یہ کفریم اور فیعل عیس آب کی افتدار اور استاع کی مورت میں آب کی افتدار اور استاع کی مورت میں ایان کرھے ہیں ہی کہ مقدمہ میں بیان کرھے ہیں ہی کہ مقدمہ میں بیان کرھے ہیں ہی کہ کہ کہا جا سے بیاری مورت کہا جا ہے جو آب نے کہا اور اس الرح کہا جا ہے جو آب نے کہا اور اس الرح کہا جا ہے جو آب نے کہا اور اس الرح کہا جا ہے بیاری مورت کہا جا ہے جو آب نے کہا اور اس الرح کہا جا ہے بیاری مورت کہا جا ہے بیاری موری النہ صلی النہ علی النہ علی ہے۔

ورجه الاحتجاج به أنه جعل التأسى بالنبى عليه المعلاة و المسلام من لوانم رجاء الله تعالى و الميوم الأخر وسيلام من عدم المائة من عدم المائة من عدم المائة وهو الرجاء ولله والميوم الأخ و وهو الرجاء ولله والميوم الأخ و وهو الرجاء ولله والمتابعة والكاى و والنبي على ما بيناء في النعل على ما بيناء في المقتة مو أن يفعل على ما فعل على الوجه المذى فعل ما فعل على المؤهل المه أنه فعل المه أنه فعل المه

نے کیا ہے اور اسی لئے کیا جائے کہ حضور علیال تسلاۃ والسیل نے کیا ہے ہے۔
مذکورہ بالا آیت کریم ہیں رسول الشرصلی الشرعلیہ وسلم کی حیات طبیہ کو اسوہ حسنہ
دسہ بڑنمونہ) قرار و یا ہے تاکہ آپ کی زندگی کو اپنا یا جا سے ، ہربات ہیں آپ کی اتباع اور
اطاعت اور فرما نبر داری کی جائے جنانچے صحابہ کرام رضی الشرعنم اجعین نے اس بوایت ہر
نہایت ثابت قدی اور اخلاص و محبّت کے ساتھ عمل کرکے دکھلادیا ، انہیں جب بھی اپی ذرگ
بی کوئی معاملہ پیش آیا خود بھی آپ کی اتباع کی اور دوسروں کو بھی آپ کے اسوہ حسنہ ک
افترار کاحکم دیا ، ایک می تربی حضرت عبدالشرین عباس رضی الشرتعا کی عنہ انے کوگوں کے سننے
یہ سسا کہ بیان کیا کہ اگر کوئی شخص اپنی بیوی کو اپنے اور پرحرام کرلے اور اس پرقسم کھا بیٹھے تو وہ
یہ سسا کہ بیان کیا کہ اگر کوئی شخص اپنی بیوی کو اپنے اور پرحرام کرلے اور اس پرقسم کھا بیٹھے تو وہ
عور ست اس شخص پر ہیں ہے۔

یه الاحکام فی اصول الاحکام (ص:۲۲۱) - ry.blogspot.com

24

س آپ نے آیت بالاکوتلاوت کرکے حضور اکرم صلی النہ علیہ وسلم کے فعل کو پیش کیا چنا ہے۔ اس انقل کرتے ہیں ہ۔

" حضرت علیشن عباس نے بیری کواپنے گر ترام کرنے والے کے بارے میں فرمایا کہ وہ کفارہ دیدے اور استدالال میں یہ آیت میش کی " تہا رہے سے دمول الشر

الدامن عباس تال فى الحمام موقال ابن عباس لقد العلم فى ته توكي الله المسوع العلم المسوع

ا المال الله وسلم) کی ذات گرامی میں بہترین نمون عمل ہے ؟ المال میں بہترین نمون عمل ہے ؟ المال الفاظ میں مروی ہے ا

"اگرکوئی شخص اپنے او براپنی بیوی کوتراً) کہے تو یہ کھیے ہیں دینی بیرمست عارضی بردائی ہیں کفارہ دینے برختم ہوجائگی)

دخامندی این عور تول کی »

۱۱ مهاسراً تنه نسي بني ر ۱۱ مهاسراً تنه مهول الله اسرة حسنة بنه

الدول المان المنسر المائد و "تهمارے لئے اللہ کے دمول بہترین نموزی ہے ۔

ابن عباس نے اس موقع پراس آست کو بیش کرکے ایک واقعہ کی طرون المانا اللہ الدو وہ حضرت ماریر قبطیہ کی تخریم کاہے ، بعض وجوات کی بنا مربح صوراقد کل اللہ اللہ اللہ فالم فیصل کے ایک میں اللہ کی تخریم کا اللہ اللہ اللہ فیصل میں میں اللہ فیصل کے ایک میں میں اللہ فیصل کے اس میں اللہ فیصل میں میں تنہ فرمایا :۔

السی اللہ تا اللہ تا تی تو میں میں اللہ تعلیہ وسلم کو ان الفاظ میں میں تب فرمایا :۔

السی اللہ تا اللہ تا تی تو میں اس کیا بحالت نے تجویر ، جامعت ہے تو است اسے تو است اسے تو

-(497: Y) - .

ال واجلاً والله

چنانچ آپ نے فوراً قرآن کے حکم کے مطابق قسم کا کفارہ دیا اور صفرت مار ٹیٹر ہوتو ،
کولیا ، حضرت ابن عباس نی نی اکرم صلی النہ علیہ وسلم کے اسی نعل کی طرف اشارہ کرکے تبا
ہیں کہ اب جی اگرکوئی شخص اپنے ہے اپنی ہوی کوحرام کرنے تو وہ ہمیشہ کے ہے حمام نرہوگی ا کفادہ دینے کے بعد حلال ہوجائے گی جیسے کہ دسول النہ صلی النہ علیہ وسلم نے کیاہے ۔
اسی طرح «سنن ابن ماجہ » میں حفص بن عاصم بن عمرین الخطاب کی زبانی نقول ہا

" ہم ایک رتبہ حضرت ابن عرف کے سامقہ سغريس تص انبوس فيهي تمازير سائل ميرتم ال كے ساتھ على دمے وہ بعى على يشب اب انبول في سنر موادكم دىكما تولوگ ئازىيرىدىدى تھى،آپ تعب والحض لك ، يالاك كياكرري س فعون كيا إنفل مرهديس فرمايا: اگر مجيفنل پرهنا بوت توس (فازقصر خرتا) بوری برصتان میرے برا در زاہے ! میں دسول انشہ صلىالشعليه وسلم كعساته را انبول سفرس دوركعت سے زیادہ نمازنہ يرهى ببال تك كدوملت فرسا كنة بير مي حضرت الويجرة كے ساتھ را أبيون نے بھی دورکعت وزائد ناز نردهی، يريه فري فرع والمحددة المولية بعى دوركعت كذائد فاذ فرهى بيرتي

كنامع ابن عمى في سفى فصلى بناشم انص مناسعه والعيف قال، فالتفت في أي ناسسًا لصلوب، فقال: مايمنع مولام؟ تلت السجون، قال قلت، لوكنت مسبحًا لأتمست ملاتي، يا إن أخي الآ محبب سهول اللهصليالله عليه وسلم فلم ين رعلى كعتين في السفر حتى تيفه الله ، ثم محبت أيابك فلم ين دعلى كوتتين ، تم معوبت عس منامين وعلى ركعتين بتم محست عثمان فلمين دعلى ركستين حتى قبضهم الله والله يقول ؛ لا لَعَلْمُ كَاتَ تَكُمُّ فِي تَهُولِ اللَّهِ أُسُوَةً

ا مست شرات وفات یا گئے ، اور التر تعالی فرما ماہی: تہارے لئے الشرکے دسول میں بہترین مست و الین ان کی اقت دار کرو) ؟

الما المراحية كروسول الترصلي الترعليه وسلم كفعل كوحضرت ابن عرض في كسط المسين المراحية المسلم كالمسترين المراحية المرفود المرتبين المراح والمراس بيرعمل كيا الادوم وحضرات كففل بيرهن برفوداً أيت بيش المسالم ملى الترعيب المراح على الترعيب في البياري المراحية المراحة المراحية المراحة المراحة

من الأم رضى التعنهم اجعين حضور اقدس صلى الشرعليد ولم كى برادا برجان ديت المستم من التعنيم المبعنين حضور اقدس صلى الشرعلير والول التراسط كرتے صحابة بھى دہى كرنے تكفا ورس حيز والول التر الله الله الله التراض فرماتے تھے صحابة بھى اس سے دوگر دانى اختياد كر ليتے تھے ، الله علي والله الله الله الله عمريض الترعنها سے ايک دوايت آئى ہے كدا-

"رسول الشرصلى الشرعليه وسلم في وشم في وشكر كا يك انگوشى بنوانى اوراستعال كى دقت اس كانگيند اندر د كھتے تھے صحاب كرام في في مين انگوشيال بنواليس بجرآب منبر مرتشرلف الاكے اور انگوشى آگاد كر منبر مرتشرلف الاكے اور انگوشى آگاد كر منایا : میں اس انگوشى كواستعال كياكوا منعا اور نگيند اندر كی طرف د كھتا تھا ، اول د فرمایا : میں اس كوسينك د يا اور فرمايا : منواكي قسم المبحري ميں اس كواستعال بي مناقبيل منواكي قسم المبحري ميں اس كواستعال بي مناقبيل

ال مولى الله ماليشهاي المعالق المعالق

or un un algalia

ال دن اجداس ۱۵ - که سیم بخاری (۱۲:۲۸ ۹) کتاب اللباس (۲:۲۱۸) م

کرد لگا رہے شناخاکہ) لوگوں نے بھی اپنی انگوشیاں اٹاردی ؟ اسی طرح کتب حدمیث میں حضرت ابوسعید خدری دخی الشرتعالی عنہ کی روایت سے ایک اور واقعہ مذکور ہے :-

"ایک مرتب دسول النترسلی النترعلی دسلم
اینے اصحاب کے ساتھ نماز پڑھ دیجے
کرآب نے اپنی تعلین مبادک اتا دکرانی
بائیں جانب دکھ دیں ، لوگوں نے جب ت
دیچھا تو انہوں نے بھی اپنے بچر تے باآپ نماز
اتباع میں) اتا دو رہے ، بھر جب آپ نماز
بوسے تے تو و رایا دیرے ، معی بڑانے و من بوسے کو اتا دو رہے ، معی بڑانے و من بوسے کو اتا دو رہے ، معی بڑانے و من کیا ، ہم نے آپ کو جوتے اتا دیے دیچھا تو و د بينا ١٣ ول الله ملى الله عليه
وسلم يصلى بأصحابه إذ خلع
نعليه ثومنعها عن يساله فلما
مرأى القوم ذلك القوانعالهم
تلما قضى ملاته قال ورسا
حملكم على إلقا محكم نعالكم»؟
قالوارأ يذاك خلعت فخلعنا،
قال و لإن جبر أن أن في هما أذك أد
أق فأخبر في أن في هما أذك أد

کی ہے)آپ نے فرمایا کہ جمجے توجبر تیل علیہ السلام نے آکر خبردی تھی کہ ال ایل گندگ

اسقم کے واقعات حدیث کی کتابوں میں آپ کوبہت سے لیں گئے بعضرت عبدالہ عمروضی النونہ ما کے واقعات حدیث کی کتابوں میں آپ کوبہت سے لیں گئے وہ مرحیز میں آپ کی اقتا کیا کرتے تھے ، اس کی اصل وجرحضورا کرم صلی النہ علیہ وسلم سے ان کا وہ بے مثال تعلق اور لا والہا نوعشق اور حیرت انگیز محبت تھی جو ان کوحضور اقدی صلی النہ علیہ وسلم کی اتباع برجبورک تھی ، اور ایک حضرت عبدالٹرین عرض بی بہیں بلکہ سارے صحابہ کرام رضی النہ عنہم اجعین کا حال تعاکد حضور اکرم صلی النہ علیہ وسلم برانی جان کہ قربان کرتے کو ہروقت تیاد دہتے۔

له سنن دادی (ص ۱۶۲۱) مسنداحد (۳: ۲۰ ر ۹۲) -

صحابرکرام رسی النیخیم البعین کے اس شغف اور والہا برعشق کو ووہ نے (جوکفار کی طرف ہو سلمانوں کے اندرونی حالات کا جائزہ لینے آئے تھے) اپنی قوم کے سامنے جاکر بڑے تعجب اور سلمانوں کے اندرونی حالات کا جائزہ لینے آئے تھے) اپنی قوم کے سامنے جاکر بڑے تعجب اور سیرت سے بیان کیا تھا اور کہا تھا کہ جس قوم کی مالت یہ ہوا ور جو اپنے مقتدا ہم پراس قدر فدا مدود کہا ہے سامنے تاری کے الفاظ ہیں ا

" بيرعروه ني كريم سلى المنزعليدوسلم كے اصحاب كوغورس ديجيف لكا ،عرده كا بيان بى كى خداكى قىم دسول ائترسالى ئى علیہ وسلم کے دس سادک سی جواحاب سبى كلتاتفاتوده داس سقبل كدنين يركب اكسى فركس كي التهدي آجا الدر وه اسے اپنے چیروں اورسم بر رتبرکا)مل ليتا، اورحب آب الهبي كوني حكم يق تووه تعيل ارشادي ايك دوسرے سبقت ہے جانے کی کوشش کرتے ،اور حب آپ وضورفرماتے تو وضور کے مستعل یانی کو لینے کے لئے اسطرے چیلتے كركو اعتقرب وه الشرنے لكيں كے اورب آب کوئی بات فرماتے تولوگ اپنی آوازی وهيى كميلت اورتعظيم كى وجركنظر عمركم آب كو مر د كيت بيرحب عروره الرسائي كے ياس والي بو انوان كما: لية خلاک تسمیں با دشا ہوں مے در باروں

شم إن عربة جعل يمين أمنا البح ملى الله عليه وسلم بعينة قال ، فراللهما تنخم مارل المنصلى الله عليه وسلم نخا إلا وقعت فى كف محل منهم ندلك بعاوجعه وجلدة وإذاأ مرعمابتدى وأأماه إذا تويناً كادوا يقتتلون على وضوئه ، وإذ اتكلم خفضوا أسواتهم عنده ، ولايحدد إليه النظر تعظيماً له ، فرجع عردة إلى أصحابه فقال: أى قوم ؛ والله لقدونات على المهوك ووفلين على تيمس كسى والنجاشىء والله إن لأيت ملكا قبط يظمه أصحابهما يعظم المحاب محديا له

إن مجلاتبل اسرأته وهر مائم فوجده نذلك وجلًا من دلك ؛ ن خلت على أميلة أم المؤمنين فأخبرتها، نقالت أم المؤمنين فأخبرتها، نقالت أم سلة ، إن رسول اللهمل الله عليه وسلم يقبل وهر مائم ، في جس المرأة إلى فروجها فأخبرته فت الده ذلك المديجل الله لمسول المديجل الله لمسول فحب المرأة إلى أم سلمة فحب المرأة إلى أم سلمة

فوجدت وسول المثم عندها نقال ۱۳ ول الله : « سايال حده المرأة ؟ » فكُعبرته أمَّاله؛ نعال: لا أخبرتيها أنى أفعل ذلك، نقالت أثم سلمة ، ق أخبرتها فن ميت إلى دوجها فأخبرته فزاده دلك شأو عال ؛ لسناشل بهول الله الله للوله ماشاء ؟ سنب محل الله مقال: لا والله إنى لأتقاكم ولأعلكم بددده به

ڈال الشائعی نی ذکر فتول الني ملى الله عليه وسلم: لاألأأخبرتيهاأني أفعل لكا ولالةعلى أن خبر أم سلمة مسايجون تبولة لأنه لأيأمها بأن تخارين النبي ملى الله عليه وسلم إلأونى خبرحاماتكون المعبة لس أخبرته له

بی الشرتعالی ایندرسول کے لئے جوبیابتا ب حلال فرماتا بي ١١٠ يروه عورت بير حضرت ام سلية كى خدست مي عارون تو ولال دسول النُّرصلي النُّرعليرولم كوهي موجودیا یا ،آٹ نے دریافت فرایا ہے عورت كياكهتي بحرج حضرت ام سايشنا في ور واقعرض كى تواكث نے فرسا ياكيام نے اس كوير تبلاد يا تصاكر مي يمي الساكرابول ا حفرت امسالي فيون كيا (ي لون) يل اسے بتلادیا مقاء اوراس نے جاکرا پوشور كوي يربتلاد باخفا كريش كراس ك كم اسطيس زيدامنافي وكيا الداسية يركمباكه بم دسول استركيطرت كمبال بميلأت کے لئے توانشرتعالی جس چرکو جا ہناہے حلال كرديّا بح- اس يرحضوداكرم صلى الشُّرعليه وسلم نا دافس بوگيخا در فرمايا : ضائقم مي تمسي زياده فلا و دريالا اوراس كى دسنهيات) كى صرود كرواقع ميوب امام شافعی فرماتے ہیں کم حضور صلى الترعليروسلم في يرج فرما ياكدكياتم في ال كويرند تبلا با تفاكه مي بي اليساكرتا بيون والسي الن بات يرولالت بالى جاتى بوكه

> - (M.7, M.0:00) 16-11 Toobaa-elib

ام سلیہ کی بات کو قبول کرنا جا ہے تھا اس نے کہ حضور اقد س سلی الشرعلیروسلم اپنیستعلق ان کواسی بات کے بتلانے کاحکم دیں گے جس کے بتلانے سے اسٹی فس برجیت قائم ہوتی ہوجیں کے حضرت ام سلمتر نے بتلایا تھا ہے

صلح حدید کے موقع پرجی قراش مکہ نے سلمانوں کو ترم پرہ اخل ہونے نہ پرجا گا تخفرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کو احرام کھولئے ہیں صلی اللہ علیہ وسلم نے ان کو احرام کھولئے ہیں تردد پیش آیا ، یہ بات آ مخفرت ملی اللہ علیہ والم کو گراں گذری آپ حضرت ام سلم کے بالی تشریف کے اور ان سے واقعہ ذکر کیا ، وہ چو بحرص ایر کے ذوق اور جذبہ اتباع رسول کو واقعہ تھیں انہوں نے عض کیا انٹروئ کو افاقہ تھیں انہوں نے عض کیا انٹروئ کو اور اسرے سے سیفت سے جانے کی کوشش کیا ادھر سیے حضرات نے آپ کی افتدار میں ایک دوسرے سیسیفت سے جانے کی کوشش کیا ادھر سیے حضرات نے آپ کی افتدار میں ایک دوسرے سیسیفت سے جانے کی کوشش مشروع کردی ، حتی کہ حالت یہ ہوگئی کہ لوگوں کو حاق کے لئے نائی نہیں ملتا تھا ہے ۔

محدّت نصرمقدى حضرت جنيد مغيدادى كاقول نقل كهتة بي كه آب فرمايا ،

" دخواپرتی کے) تمام داستے النگر کالی پرسندی سوائے النادگوں کے جوربول النٹرسلی النٹرعلیہ وسلم کی احادیث کا تباع اور آپ کے آٹا دکی اقتدار کرتے ہیں ، النٹر تعمال نے فرمایا ہم : تمہارے لئے النٹر کے رسول میں بہترین نمور نہیں ہے ۔ النٹر کے رسول میں بہترین نمور نہیں ہے

الطرق كلهاسدودة على خلق الله إلاعلى المتبعين أكبار مهول الله صلى الله علية الما المقتدين بآثا كا قال الله تعا: «لَقَدُكَانَ لَكُمُ فِيُ مِسول الله أسوة حسنة» كه

صاحب رسالة شيريد نے حضرت جنيد الله مي نقل كيا ہے برا من لم يحفظ القراآن وليم مرضخ فن نے قرآن كريم يا دنكيا ور يكتب الحد ميث لايقتلى به العاديث مباركه ناكھيں قرب آہم كے

ا منداهد (۱:۲۲ و۱۲۱).

ته سناح الحنة رص: ٢٠ ١٩٠١-

ف مذا الأسرلان علىناهذا معيد بالكتاب والسنة ، وقال ، أيفًا ، سد هبناهذا سنيد بحد سن رسول الله مكى الله عليه وسلم له عليه وسلم له

وأخرج البيعتى عن أسية بن عبدالله بن خالد أنه قال لعبدالله بن عس إنا نجد ملاة الحض وملاة الغوت ملاة الحض وملاة الغوت السفى فى القي أن ؟ فقال بن عساء يا ابن أخى إن الله قد بعث إلينا محمدًا صلى الله قليه رسلم ولا نعلم شيئاً نإن ما الله عليه وسلم يفعل عم الله عليه وسلم يفعل عم

معامله میں اس کی اقتدار بہیں کی جاسکتی
کیونکہ ہمالا ایم علم توکتاب الشرا ورسنت
دسول الشرکے ساتھ مقید ہی، اور اُہوں نے
بیعی فرمایا کہ ہما را بد مذہب رتصوب
تورسول الشرصلی الشرعلیہ وکم کی احاد میث
پرمینی ہے یہ

"امام بیتی امیری عبدانته بن خالد
عبدانته بن عرض که آبون محضر
عبدانته بن عرض سوال کیا که م حضر
اورخون کی نماز کا تذکره توقرآن کریم
میں باتے ہیں لیکن سفر کی نماز کا ذکرقرآن
کریم میں نہیں باتے ،اس پرحضرت
ابن عرض فرمایا کہ اے میرے بعقیجالت
تعالی نے ہمارے باس محرصلی الته علیہ
اسلم کو بھیجا جب کہ کہ فیہیں جائے تھے ،
اس لئے ہم تواسی طرح کرتے دہیں گےجس
طرح ہم نے محرصلی التہ علیہ والم کو کرتے
طرح ہم نے محرصلی التہ علیہ والم کو کرتے
طرح ہم نے محرصلی التہ علیہ والم کو کرتے

مفرت ابن عمروضی النّدعنها نے صا ف طود میرواضح فرمادیا کہ امّت کے لئے سوائے اس کے لوٹی چارہ کا زہیں کہ شرایدیت کے تمام امور کوامی طرح مجا لاسے جس طرح آنحضرت کی النّہ علیہ کم

سنتاح الحينة (ص١٩٧١) -

-(۲4:00)

کوکرتے دیکھا ہے اس لئے کہ آپ بی ہما سے پیٹیوا ہیں اور آپ ہی مقتدار ، آپ بی رہریں ، او

حضورا کرم صلی الشّه علیه وسلم کی ذات گرامی کو قرآن کریم میں کہیں «نور» اور کہیں «سرارا

منیر" ہے بھی تعبیر کیا گیا ہے ، ارٹادہے ا تَدْحَاءًكُمْ مِنَ اللهِ نَوْدُوَّ

كتائ بين الم

ایک اورمقام برونسرمایا:-يَاأَيُّهَا النِّيُّ إِنَّا أَنْسَلْنَاكَ شَامِدًا تَّكُنِشِيَّا تَّنَانِكُلُكُ دَاعِيًّا إِلَى اللهِ بِإِذُنْهِ وَسِلْجًا

شُنينًا لِمُ

« اے بی ہم نے تم کو بتا نے والاا دونو تخبری متانع والااور ورانع والااور الشرك حكم سے السُّدُ كی طرف بلا نے والما اور حيك تا مواجراغ بناكر صحاب

"بے شک تمہارے پاس النّدی طرفے

دوشى اورظا بركرنے والىكتاب آئى ہے ؟

ان آیات پیرحضورا قدس صلی الشرعلیہ وسلم کوسراج منیراور نور سےاس لتے تعبیرکیایگ ہے کہ آپ کے اقوال وافعال اورتقر برات است کے بے بہترین شعل راہیں۔ . آھ کے اسوہ خشنہ سے حجت ہونے کی قرآن مجید میں ایک اور واضح شہادت

آیت کریمیہ سے ا

فَلَمَّا قَضَىٰ ذَكِيكُ مِّنُهُمَّا وَطَرًّا زَدَّحْنَاكُهَالِكُنُ لَانْكُوْنَ عَلَى الْتُولِمِينِ أَنْ حَسرَجُ إِنْ أَذُواج اَدْعِيَانُهِمُ إِنَا تَفَوْلِمِنْهُنَّ وَطَنَّا لَمْ

« پیرجب زیراس عورت کاپی غض اور كري الويم خال كواك كي كالعين دیا تاکرمسلما نواسیرایتے ہے یا لکوں کی ہوایاں ونكاع كرفيس حبكروه ان سعايي عرض

المائره: ١٥

ועל ענושו מח נדיק

الاحساب ٢٧

پورى كرىس كون كناه تېيى رے يه

اس آیت کری سے صاف معلوم ہوگیا کہ دخول الشرصلی الشہ علیہ دسلم سے جوعمل ہی صادر السا ایان کواس پڑمل ہیں اور ایس این دل میں تنگی محسوس نگرنی جاہتے ، بلکه ایمان السال الله ایمان کواس پڑمل ہیں اور ایس کے اسورہ مخت نہ کی ہیں دری کی جائے ، جنانچہ علامہ اللہ اللہ میں ایس علی بن اُبی علی الا مدی المتوفی ماساندہ اس آیت سی استدلال کرتے ہوئے فرماتے ہیں بر

" اگرحضود اکرم صلی الشهطیر و سلم ایزافعال واعمال میں لوگوں کے مقتدا دنون عمل ت بوستے تواس آیت کا کوئی مطلب ہی نہوتا، اورجن اولہ سے پہاں استدالال کیاجا تا ہجان میں ایک نہا بیت قدی دسیل بہجی ہے ہے وبولاأندستأسىبه فى نعله وستبعثالها كان للآية سنى و شذاسن أتوى مايستدل مدمعنا له

برصورت یہ تمام آیات رسول النرصلی النرعلی دلم کی اطاعت اور اقتدار کے وجوب است کرتی ہیں اور آپ کی اطاعت اسی وقت ہوگی جیب ہم آپ کی اتباع اقوال وا فعال معلوج سندت برائی کی اتباع اقوال وا فعال معلوم سندت برائی کا اتباع ہم کریں معلوم ہواکہ جس طرح قرآن کا اتباع ضروری ہے اسی طرح سندت برائی کا اتباع ہمی لازمی ہے ، جوسنت رسول کی اتباع سے ایکارکرے وہ کا فرے ، جینا نج

ال الدارى ب

" اور جس نے ما انزل الشرکے مطابق صمم مذکیا وی لوگ کا فریس ایس رَسُّ لَمُ يَحْكُمُ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ مُا دَلَقِكَ مُ أَنْكَافِهُ وَلَا مَا مُنْ وَنَ اللهُ

الاحكام فاصول الاحكام (من ٢٧٢) .

له المائده ۱۳۲۰ - اوراس كے بعروالي آيت بي بِرْ فَأَوْلَائِكُ مُّمُ الظَّالِيَّوْنَ اور اَسْ بِجِي الكِ آيت بعد ما اولائك هم الفاسقون .

بوجاسے گا ،جنیاکہم بیان کرچکے ہیں ،اس نے حافظ ابن حزم سکھتے ہیں :-

" الركوني شخص بركبردے كرم صرف اس كولس كيج قرآن كريمين وتوده تخف بإجاع اتست كافريوكا اوداس عقيده كے دكھنے والے مر (مجائے یا نج فازوں کے)صرف ایک دکعت مودن ڈھلنے کے لعدس دات تك اورد ومرى فجرك وقت الذم بوگ ، اس لے کریے کم اذکم وه درجر وس ير نماز كااطلاق بوتاب ا ورزياده كى اس سلسلىس كوتى حدَّين اورالساعقيده ركهن والاكافرومشرك حيس كى جالن ومال كي محفوظ نهيس البتر بعض غالى وانضى جن كے كافرىونے ير لدرى است متفق كري عقيده كت بي "

ولوأن إسرأُقال، لأنأخذ إلاما وجدناف القرأب لكانكا نرأ بإجاع الأسة و لكان لأسلفه إلادكعة سيا بين دلوك الشس إلى غسى الليل وأنهى عندالفج، لأن ذلك موأتل مايقع عليه اسمامالة ولاحداللكثرف دالك، و قائل صداكانى مشرا وطلال المروالمال وإنماذهب إلى مذابعض غالية الأفضة سن اجتمعت الأسق كفهم له

يې وه غالى دوافض بي حن كاتذكره علامه يولمى في اينى كتاب مفتاح الجريم كيا بر خيا سي بم سابق بي اس كاذكر كر حكي بي - اور حضرت امام شافعي فرمات مي :-

«الشرنعانى في رسول الشرسلى الشعلية كم كى تمام سنتول كى المبلع بم إلاثم كردك ب الداك كا البالع بي بى الجي الماعت كم مخصر ركها بي الارآب كى المبلع وإنكارك وكل ساست نقد النشا الباعه وجعل فى البياعه طاعته وفى العنورعن البياعها معصيته التى لم بعذى بصاخلة الولم يبعل

الدحكام في اصول الاحكام (٢:٠٨).

^{- (} r (o) 2

AD

له سااند علیه وسلم مخرب الله الله علیه وسلم مخرب الله الله علیه وسلم مخرب الله الله علیه وسلم مخرب الله علیه وسلم مخرب الله علیه وسلم که انتاع سے بینے کے لئے کسی کے لئے کوئی واست نہیں جھوٹھا "

ایساورمقام پر ایکھتے ہیں و-سین الله أنده فرض فیه طاعته

سى الله أنه فراى فيه طاعة رسوله ولم يجبل لأحدهن علقه علمًا بخلاف أسر

مندس أموردسول الله مل الله عليه ترخ وأن ت

معلاستان المعم الحلجة

البدة في دين هم ك

"الشرتعالى في بيان فرسا ياكداس في بي ورول اصلى الشرعليدي للم كالطاعت كو فرض كرد بابر اور مخلوق كي سي عفر دكو الساهر كي خلاف بي معفودا كرم صلى الشرع عليه وسلم سع ملابو قبول نذكيا واوالشر تعالى في مما م وكون كودين كي معا لمرس الشري الموالة من كامتاح بنايا ہے ؟

رسول الترسلي الشرعلية ولم مع فيصلة تسليم كرين بروس بون كا داروملار تم الميسليم كرين بروس بون كا داروملار

" قسم بِرَانِجُ دِبَ کی وہ اس وقت تکخیس نہ ہوں گے جب تک کہ وہ آپ کو' اپنے ان حبگروں میں جوان میں آگیں پہنی آئیں منصصت وکم نرجانیں اور پھراپنے ولٹیں ادخاد دِرَابِ المَّادَة وَتَابِ الْمُنْ مُنِوْنَ تَحَقَّى مُلَّادُمُ مِنْ فَكَ الْمُنْ مُنِوْنَ تَحَقَّى مُجَلِّمُ كُونُ فَيْمَا شَعَرَ الْمُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ لا يَحِدُونُ إِنْ آنَتُ مِنْ مِنْ مَنْ مَنْ المُنْ وَالْمَا مُنْ الْمَنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمَنْ الْمَنْ الْمَنْ الْمَنْ الْمَنْ الْمَنْ الْمُنْ الْمَنْ الْمَنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمَنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمَنْ الْمُنْ اللَّهِ مِنْ الْمُنْ اللَّهِ مِنْ الْمُنْ الْمُنْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ مِنْ الْمُنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالِمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّ

الرالة والانماء

الرسالةللثافعي وصيموا) -

آپ کے نیعلے نے بنگی و تادانسگی دیحسوس ا كري الدخوش سے اسے تبول كري الدخوش سے اسے تبول كريس ؟

بخططا فرماية اس أكيت مي رسول الشرصلى الشعلير وسلم كى اطاعت كوكس شأ ندارانداز مين توگون پرفرض كياب اوركس قدر واضح الفاظيس الله تعالى في تصريح فرمادي ب.ك وسول اكرم صلى الشرعليه وسلم كے تمام فيصل صيح اور مينى بي اور ان كاتسليم كرنا برانسان بر مسرض والازم بيء

عدلامه ابن صرم ظاهري اس آيت محضورا قدس صلى الشرعليه وسلم كى اتباع و

اطاعت کو ثابت کرتے ہوے سکھتے ہیں :-

وم خدی کا کرانشرتعالی میں اینے بی صلى الشرتعالى عليه وسلم كحكلام كماطوت رج ع كرنے كا حكم دے دي يں جيساك ہم نے آبی بیان کیا ، اس سے کسی ایسے سلمان کے لئے ہو توحید کا اقراد کرتا ہو اس باستك كني أنش نهي كدوه نزاع اور جيكات كروقت قرآن كريم اورحفود اكرم صلى الشرعليه وسلم كى احاديث كے علاوه كسى العطوت لذع ع كرے ، اور نہ يدورست بع كران يل و موجود واس ے انکارکیے ،اگراس نے دلیل وجیت قاتم بدنے کے بعدایماکیاتو وہ فاس وگا، اور وصلال جان كرانساكر سي تأكمال دولو

فوجه ناالته تعالى يردناإلى كلام نبيه صلى الله عليه وسلم على مَا قدمناه أنقاً فلم يسع مسلكا يقتا بالتوحيد أن يراجع عندالتنائع إلى غيرالقال بالغبرعن بهول الله صلى الله تعالى عليه وسلم والأأت يأتىءما محدنيحا؛ فارت فعل ذلك بعدة قيام الحجة عليه فصوفاسى ، وأسا من تعله ستحل للخروج عن أسرها وسوييًا لطاعة أحددونهمافعوكات

كح حكول سے كل جائے اوران دونوں كو چود کرکسی ا درکی اطاعت کولازی محفق کا نزديك اس مل كوئ شكنيس كرده كافرى ادر محدبن نصوروزی نے ذکرکیا مرکائی ابن راہوئ فرماتے تھے: جسے صنوراکرم علی الترتعال عليدوسلم كالسى حديث ببني سبك صحت کا اے اقرار معی ہے اور تھراس فینیر مسحتاويل وتوجير كالاكوندكردياتوق كافريد ، اورج اس بادر مي اسحاق ك قول كودليل نبيس بناري بكدان كاقول توج في الله لي ذكركرديا تأكدكول ما بل يدخيال خكرے كرہم اپني اس داتے لي سفردي ، بلكه الشخص ك كافريونيك باد ريمي بوحضوراكرم صلى التُدتعالُ عليه وسلم كے قول ك مخالفت كوملال سمحه، جاری دلیل استرتبارک دتعالی اوه فرمان برحس مي التُرتعالىٰ اين بي ماليتُر تعالى على والم عضطاب فرمات بي كم: تیرے درب کی قسم وہ اس وقت تک وائن نہ بونظ جب تك كرتج كوي منصف خباش الخ جار دای اور عراف داول س ترے

لاشت عندناني ذلك. وقد ذكر سعدين أحرا المروزى أن اسعاق بن لاصوبه كان يقول: س ملغه عن سول الله مل الله تعالى عليه وسلمخبر اقت بهنده شم دره بغيرتقية وموكافي ولم تحتيج في هذا اسحاق وإنماأو ودناه لثلا يلن جاهل أنتاسقم دوي مداالقول، وإنسالمتجم في تكنير زاس استحل خلان اسع عنده عن وسول الله الله تعالى عليه رسلم، والثهتعال مخاطياًلنبيه الله تعالى عليه وسلم: « خالاَدَ رَبِّكَ لَانِيْنِ يُوْنَ نَ حَتَّى المستنفرات فيماشتي بكنفه فيتم لايعدُول فِي ٱلْفُسِيعِيمُ مَن جُالِيَّنَا مُنْبِتَ وَلُسَلِّمُوالتَسْلِيمُ اللهُ

الإسكام في أصول الأحكام (١٩١١) وفي طبعة أخرى (١٠٩١) ـ

فيسلد يتنگى محسوس فكرس اورخشى سے اسے قبول كراس ؟

مندرجه بالاآیت ایک خاص موقع میر نازل بوتی ہے جس کا ذکر امام بخاری نے اپنی کتاب « الصیح بیس پانچ جگہ کیا ہے ، بین جگہ کتاب الشرب میں اور ایک جگہ کتاب الصلح میں اور ایک جگہ کتاب الصلح میں اور ایک جگہ کتاب التفسیر کے الفاظ حسب فریل ہیں :۔

> عن عروة قال بخاصم النير بهجلأس الأنمارفي شريج سنالحرة ؛ نقال النبي سلى الله عليه رسلم : راست يانهيشم أسهل الماءإلى جادك» نقال الأنصارى: يادسول الله إن كان اب عمتك نتلون رجمه نقال: واسق يازبيرتهم احسالاء حتى يرجع إلى المجدى تم ألال الماء إلى جادك » واستوعى النبى صلى الله عليه وسلم للنمار مقه في الحكم مين أحفظ الأنصاري ، كان أشارعلهما بأسلعانيه سعة ، قال الزبير: فعالمس مذء الآيات إلانزلت في ذلك ، « خَلَاوَرَيَّلِكَ لَانُوْتِيْو

"حضرت عروه فرماتي بي كحضرت ذراع کا کیدانساری سے حرہ کے منگستانی علا كے ايک برساتی نالركے بارے مي جيگوا ٻوا' حضورانور على الشرعليرة الم نے فرماياكه: اے زمیرتم اپنے کھیتوں کو یانی سے میراب كرك يانى اينے يُروس كى جانب جي لادو-اس براس انسادی نے کہاکہ اے النزکے رسول زمراك كيوسي كي يطين ا. (مینی انصادی نے اس کواحسان تجھنے کے بجامے غلطی سے طرف دادی پرمحمول کیا) يسنكرآب كاجرة الوراغصه كادجترا شغير بوگيا - دانصاري سے توکيد : فرساياگر حفرت ڈبیرے مخاطب ہوکرفرسایا) اے ذبرتم الي كميت كوميراب كمركم بإنى اتناروكوكه كعيت كى منذيرون تكريخ جائے دلین ابابوراحق وصول کرلو)ال اس كىبىدايغ يروى كى عانب يانى جيوڙ دو ، اورحضوراكزم صلى التُرعليكم

حَتَّى مَيَحَكِّوْكَ فَيْ الْنَجَرَّ بَلِيَهُمُ الْآيَهُ الْنَهُ الْنَهُ الْنَهُ الْنَهُ الْنَهُ الْنَهُ الْنَ ان كا پوداحق و لاديا ،كيونكراس انسارى نے صنودا قدس صلى انتزعلير و لم كوبريم كرديا تفا ور خمشروع بن تورسول الشّرسلى الدّرعلير وسلم نے انہيں الساطريق ببلايا تفاحس بي دولا كے لئے سمبولت بقى ۔

حضرت البرَّ فرملت مي كم مجه جهان تك خيال برير آيات اس معامله ي كه بارك من الال بولى بي : " تيرك رب كاقهم ده اس وقت تك مومن نه بور گروب تك كه تجهد مى مضعف نه جانيس اين حبكر ون بيس - الن ؟

- (44: Y) USBE -1

المعلم المعلم المعلم المعلم المعلم المول بود الأقرب فالأقراب الموري الماق المعلم الموري الأقراب الموري المؤلف المعلم الموري المؤلف المعلم الموري الم

اس صدیث میں نا وانوں کی اذبیت برصبر کرتے ہوئے ان کی تربیت کرنے اور ان سے عفوا ورگذر كرنے كا سى بہترين نمون على ب، اورگوففورعليدالصلاة والسلام نے اپنى زبان سارك سے اس انصاری کو کھے نہ فرمایا کرمسلمان تھا اور عقد میں نادانی کی وجہ سے اس کے سنہ سے اہیں بات نکل گئی تھی مگر الٹرحل ٔ جلالۂ کی غیرت نے اپنے معصوم نبی پرطرف دادی کے اس الزام كويرداشت مذكياا ودفورًا آيت كريم " خلاور تبك لا يومنون " الآية نازل فرمادة

حافظ این قیم تکھتے ہیں ہے

" الشِّدتعالى في اپنى ذات كى تسم كھاكر بندوں سے اس وقت تک کے لئے ایمان کی نفى كردى جب تكك وه ايخ تمام تنازعا میں بخواہ جھوٹے ہوں یا بھے ،الٹدر کھول صلى التَّدعليه وَسلم كوحَّكُم نه بناتَيْنِ ،الدَّان کے مؤمن ہونے کے بارے میں عرف آس حَكُم بنانے يرى مدارتهيں ركھا بلكريعي فرسایاکہ بھران کے داوں میں آئے فیصلہ کے خلاف کوئی تنگی اور ناگواری بھی باقی ندربها جابت ، اور ميراس بريس اكتفانس كيا بكه يول فرما ياكدا سے وه دل رجان ح

أتسم الله سيخانة بنفسه على نفى الإرسان عن العبادحتى يعكموا بهوله فى كل ساشيك بينهم من الدقيق والجليل ولم يكتف فى ايمانعم بعثل التحكيم بمجن ريحتى ينتفى عن صدريعم الحج والفيق عن تضائه وحكمه ولم يكتف سعم أيفنا بذلك متى سلمواتسلياً دينقادوا القاداً له

مجى تسليم كرلس اوراس كي يورے تاب دارى بن جائيں ؟ امام شافعی نے اس واقعہ سے سنت کی جیت پر ٹراہی عمدہ استدلال کیا ہو فرماتے ہی ما ورحفنور الورصلي الشدعليه وسلم كاس وحذاالقفاء سنةس رسول فيلمآب ك سنت ب مسرآن كا الله وللمالله عليه وسلم الاحكم

له إعلام الموتعين (١١١٥)-

معسوص فی القران ۔ اسموس کم نہیں ہے ؟ مرانے اس دعویٰ کؤکر یے کم قرآن میں سفوص نہیں ہے ، اس طرح مدلل فرماتے ہیں ،۔

"اور قرآن اس پر د لالت کرتا برجویی بیان کیا د د النشا علم اس لئے کہ اگر یہ فیصل قرآن سے ہوتا تو یہ گویاک بالنشر کا منصوص حکم ہوتا اور اس و قت حبکہ یہ کتاب النشر کے منصوص حکم کوتسلیم نیک تواس گئے ایمان سے خادج ہوجا تے کہ انہوں نے قرآن کریم کے حکم کوتسلیم نہ کہ ایمان سے خادج ہوجا تے کہ انہوں نے قرآن کریم کے حکم کوتسلیم نہ کہ ایمان سے دکھر دیا ہے۔

ملامہ بدر الدین عینی المتوفی مصفحہ جم نے اس آیت کا ایک اور شاانِ نزول انکھا ہوجس مسام ما ابوا سماق نے اپنی تفسیر میں بسند تیصل اس طرح نقل کیا ہے :۔

بوا تفااس نے کہا ، حبگڑے کا فیسا *کرانے* بم حضور اكرم صلى الترعليد وسلم كى فديست س مافریوے تعے آیٹ نےمیرے می مين فيصله فرماديا واسب يرحضرت الوكر رضى التُرعندن فرماياكرفيصله ويى يرجُكًا جونبى كريم صلحا لتشطيه وسلم نے كيابي اس ساتھی نے اسے تسلیم کرنے سے میں انکادکویا اودكهاك حضرت عرب الخطاب كح ياس جاد وال كم جس كرى مي فيصله واحما، اس نے کہا: ہم نے مقدمہ حضور اکرم صلی الشرعليه وسلم كرسا من بيش كيا تعاآم نے اس کے خلاف میرے تی میں فیصلہ دیدیا ،اس نے استسلیم کرنے سے ایکار کردیا ،میریم حضرت ابو بخرکے یاس گئے أنبول نے فرما یا کرحضور الورصلی الشیعلیہ وسلم نے وفیصل کیا ہے دی فصلہ دی گا۔ ليكن يه اس يرسي واضى نه جوا ، اس ير حضرت عمر نے اس شخص سے پوچھا اس

فقفى لى ، نقال أبويكر : نأنمًا على ساقضى بدالنبى صلى الله تعالى عليه وسلم ؛ فأني صاحبه أَن يرض*ى ،* قال ، نَاكَى عسرين الخطاب نأتياه ؛ فقال المقض له: تداخته ناإلى الني صلى الله عليه وسلم فقضى لى عليه فأبي أن يرضى شمأتينا أيابك فقال: أنمّا على ساقضى بدالنبي صلى الله عليه وسلم فأبي أن يرضى ؛ فسأله عس فقال كذاك ون المعمام المالية وخوج والسيت فى بده متدسله فض ب به ماأس المذى أبي أن يرضى فقتله فأنزل الله تعالى : ﴿ ضَلَاوَمَ مَنْكُ لَاكُومُ مِنْكَ حَتَّى يُحَكِّمُونِ فَيُمَا شَعَبَ الْمُنْفَعِيمُ

نے کہا ہاں آی طرح ہواہے ۔ یہ من کوحضرت عمرہ گھرکے اندرگئے اور برہے تلوار ہے کر باہر سکے اور اس شخص ک گردن اڑا دی جس فیصد تسلیم نے سے انکاد کردیا تھا ۔ اس بیران تھسالی نے یہ آیت نازل فرمائی کہ : " قسم ہے تیرے دیس کی وہ اس وقت تک مسلمان منہوں گے

له عدة القارى (١٠:١١) يواقعات تفسيران كثير م بي ي علا عظهو (١: ١١٥) -

-14 40

وجنم مجاهدی وانشعبی بأن الآیة إنسانن لت نمین نزلت مه الآیة التی تبله اوجی قوله تعالی ر-

سال، -« آنم ترانی آنگیش انعیم اسکولی تاکنول ایک در اکنول مین تشلیق پیشک در اکنول مین تشلیق پیشک ان تیت اکتوالی الطاعوسی

فرى إسحاق بن راهويه النسي قال بكان بين رجل ساليهودورجل سالنافقين مسومة فدعا ليعود كالنا السالني على الله لأنه علم أنه المقبل المتقوة ، ودعا النافق المعردي إلى حكامهم لأنه علم المعمدي إلى حكامهم لأنه علم الله مدى الآيات إلى قوله الله والمقالم

" حضرت مجا بروشی یین وفرداتی بین که بدا کرت استخص کے بار سے بین نازل موں ہے ہیں اس وقبل کی ارسے میں اس وقبل کی است میں اس وقبل کی آیت نازل ہوئی ہے اور وہ آیت بری و۔
"کیا تو نے نہ دیکھا ان کوجود عوی کرتے ہیں کہ ایس پرجوا تراتیری طرف اور جوا تراتیری کے طرف اور جوا تراتیری میں میں کہ بیات ہیں کہ وقائیں شیطان کی طرف "۔

چنانچداسحاق بن را ہو بیابی تفسیری میں میں سندے اما اشعبی سے قال کرتے ہیں کہ ایک بیرودی اور ایک منافق مسلمان کا ایس بیرودی نے منافق مسلمان کا سے کہا کہ نی صلی انٹر علیہ سے فیصلہ کوائیں گے اس لئے کہ بیرودی سے کہا کہ تی ہودی جا نتا مقا کہ آئیں منافق نے بیرودی سے کہا کہ تم تمہارے ماکم سے فیصلہ کوائیں گے ، اس لئے کہ وہ حاکم سے فیصلہ کوائیں گے ، اس لئے کہ وہ حاکم سے فیصلہ کوائیں گے ، اس لئے کہ وہ حاکم رشوت لیتے ہیں اس

پرانٹرنغال نے یہ کات نازل فراتی، « ودیدلہوا تسلیما " تک یہ

معير مانظ صاحب دين رسطرول كے بعد لكھتے ہيں ،۔

"اورکلی این تفسیر سی ادمالی سے ادار دورت کرتے میں کہ انہوں نے فرمایا کہ یہ آیت اس ان کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا کہ یہ آیت اس ان کے بارے میں نازل ہو گئی ہے اور کس کا ایک یہ جودی سے حبی الہو گئی ہے انہوں کا ایک کہا تھا کہ آؤ محد (صلی اللہ علیہ وسلم) کے باس جلیس ، اور دنیا فق نے کہا کہ نہیں بلکا کو میں اور دنیا فق نے کہا کہ نہیں بلک کور افضہ بیان کیا (حبس کا ذکر احبی گذر میں اور ایک کے آخر میں یہ مذکور ہو کہ جبا ہی) اور اس کے آخر میں یہ مذکور ہو کہ حضرت عرف نے اس مینا فق کو قبل کردیا حضرت عرف نے اس مینا فق کو قبل کردیا حضرت عرف نے اس مینا فق کو قبل کردیا حضرت عرف نے اس مینا فق کو قبل کردیا

وروى الكبى ف تندروعن أي مالح عن ابن عباس قال: نزلت هذه الآية في مجلين المنافقين كان بينه وسين يعودى خصومة ؛ نعالليود الطلق بنا إلى محد، وقال المنافق بل نأتى كعب الأغنى! وذكرالقصة ونيه أن عس نزول هذه الآيات وتعية نزول هذه الآيات وتعية عما المناروق له

اوریبی واقعدان آیات کے نزول کا سبب بنا اور اسی بنا ریزهفرت عرکالفت فاروق ایا "
اب بربات کتنی و اضع بروگئ کدرسول النه صلی النه علیه وسلم کی اطاعت ساری اتنت
پرفرض ہے اور دیوشخص آپ کی بات ندمانے با آپ کی سنت کوتسلیم نزکرے وہ قابل گرون نول ہے، جیانی امام شافعی اپ ایک سنا ظرے کے دیل میں ایکھتے ہیں ،۔

مسمى نے کہا کہ اللہ تعالیٰ نے اپنی بی کویم صلی اللہ علیہ دسلم کی اتباع کو فرض قرارد یا ہر فریق مخالف نے کہا : اس کا ٹبوت کہاں ؟؟

قلت: افترض الله التباع نبيه صلى الله عليه وسلم . قال: وأين ؟ قلت: تال

له منع البارى (۵: ۱۲، ۲۹)-

مِن نے کہا الشّرَّ وَجُلّ فرماتے ہِن کہ:

قم ہے آپ کے رب کی وہ اس وقت

تک تو من نہ ہوں گے جب تک کہ آکے لینے

ان چھ کڑھوں میں جوان کے آبیس بیٹ بیٹ

آئیں ا بنا حکم نہ بنا تیں اور پھرا ہے والی آئیں ا بنا حکم نہ بنا تیں اور پھرا ہے والی آئی فیصلہ سے تکی نہ جسوں کریں اوراس فیصلہ کو ہورا ہورات ہے نہ کرلیں ہے اور السّ الله عهد وجل الا فنكا وَتَدِينَ الله عَلَا وَتَدِينَ الله عَلَى وَ الله و الله

و وطل في فرمايا م ك الم حسن فف في رسول كى اطاعت كى اس في الشكافيا كى ا

ایک اور آیت میں ارستاد باری ہے ال

وَّسَااخَتَلُفُتُمُ نِيُهِ مِنْ شَيْعُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللهُ الله

" اورس بات می تم لوگ جبر اکرتے سو کوئی چیز مواس کا فیصلہ السر کے حوالم ہو؟

مینی ہوتھ عندالنڈ ہوتاہے اورجوفیصلہ خدا سے پاک کومنظود ہوتا ہے اسے النہ نقائی اپنے دسول دصلی النہ علیہ وسلم) کی زبائی جاری کراتے ہیں اسی لئے اس کا ما ننا بعینہ خدا کی است ملنے کے مراد وندہے ، اول مسامان صروف اس وقت ہوسکتا ہے جب کہ النہ کہ مطابق اس کے دسول اور اس کی سنت کے مطابق فیصل کرنے ۔

ا كم الدمقام برادت ديد برادت برادت ديد برادت

المذامعلوم بواكمتون بونيكادا روملار وول اكرم لى الترعلية ولم كيتما فيضا تسليم في برب .

ماب الأم للشافعي (١١:١٥) ـ

الشورى : ١٠

رسول الشرسلى الشعليدولم كاوامركى اتباع كاحكم

" اور رسول تم کوجودی اس کو نے اور اور استر جسے منے کریں اس کوچھوٹر دواور النٹر سے ڈریتے رم و بے شک النٹر کا عذا ب سخت ہے ہے ارت ادر بانى ہے ، و وَمَا اَ تَاكُمُ الْاَسُولُ فَخُذُوُّ وَمَا نَعَالُمُ عَنْهُ فَانْتَهَوُ اَ وَ وَمَا نَعَالُمُ عَنْهُ فَانْتَهُولُ وَ الْعَقَالِ مِلْهِ الْعِقَالِ مِلْهِ الْعِقَالِ مِلْهِ

یدایک جامع ترین آیت ہے جس میں دسول انٹر صلی انٹر علیہ وسلم کے منصب تشریع بیان کیا گیا ہے جضور انور صلی اللہ علیہ وسلم کے تمام اوامر و نواہی کی اتباع اور ان پرعمل کا حکم دیا گیاہے ۔ کا حکم دیا گیاہے ۔

له الحشر : ٤

ا المالے کے لئے بغیر شرعی زمینت کی حرمت پراسی آبیت سے استدلال کیاہے جسجے بخاری ہیں۔ اسے دوامیت ہے کہ ا۔

« حفرت عبدالنُّدين مسعود نے فرما يا: التُدتِّعَالَىٰ نے لعنت کی ہے گودنے والیق اودگودوانے والیوں پر ا ودموجینے سی بال نوجے والیوں براورٹونمبورٹ کے سے دانت*وں کور*ست کران میں کمٹنا دگی میردا كرنے واليوں يريوالٹركى فلقت كوبرلتى بي (علقه كابيان بيك) اس كى اطلاع بن اسدكى اكي يحورت ام بعقوب كولى تووة حفرت عبدالنزن مسعود كم ياس آئ اوراس نے کہاکہ: مجے یہ اطلاع ملی ہے کہآپ نے الیی الیی عورتوں لیونت بجيجي بوءاس يحضرت عبدالتربن مسعودة ففرما باكرس اس يرلعنت كو مرسيجول جس بررسول الشرسلي الشاعلية سلم في لعنت يجيي براور مزيد بيكروه كتاب النُّدُس بيم موجدت ، اس عورت كما: میں نے تواول سے اخر تک قرآن کو م رُحا ب اس مي تويوودنيس بيجاب فرماتين واس يرحضرت الاسعودة نے فرما یا کہ اگرتم نے اسے (سمجد کر) بڑھا

منانعا بالله قال العن الله الراشات والموتثمات و المتممات والمتفلجات المس المغيرات الله؛ مع دلك اسرأة س سي أسد رال لعاد أم يبقوب نجام مالت، إنه بلغتى أنك مسكيت وكيت فقال وسأ الاالعن سنامن رسول الله و معرفى كناب الله؛ فعيًّا: المد قرأنت ساميين اللوحين سارحين تنهماتقول؛ سال الثنكنت تمأثيه لقد و مدتيه أسا متواست. « وسَااتَاكُمُ النَّهُ وَلَا نَعُولُ فَعُلُّكُ والمعَاكُمُ عَنْهُ فَانْتَكُمُ عَنْهُ وَانْتَكُمُوا) مالت وسلى، قال فإنه ريان : تالت : خالى أرى أصلك لفعلونه، قال:

ہوتا توضرور بالیس، کیاتم نے پہیں ير ساكر جميس رسول دي اسے لے لو اورس سے روکیں اس سے ڈک جا ؟ " اس نے کہاہی اس برقویر صابے واس پر حضرت ابن مستود فن فرمایا، توس مول فاذهبى فالظهى؛ فذحبت فنظرت فلم ترون حاحتها شيئًا، فقال؛ لوكانتكناك ماجامعتنا له

الشمعلى الشرعليه كم نے ال چيزول کے کرنے سے شع فرمایا ہج ، اس عورت نے کہا : میرالگان ہج آئے گھرد الے بھی اس سلسلم سے کھے کہتے ہوں گے . آنے فرمایا : کہ بھر اندر جاکرد کھ لو، و ہ ا ندر گئ اورد یکھا تو وہاں ان منہیات میں سے کوئی چیز نہ پاکروا ہیں آگئی ، ترج خرت عالمتہ ابن مسعود الفرما ياكداكرميري الميرالساكرتي تؤمير عساتعدن وتتي ي

حافظ الوعمر يوسف بن عبد البرالقرطبي المتوفى سلاكته هف عاضع بيان العلم ميس مي

حضرت عبدالرحن بن يزير الشاسي قسم كاوا قع نقل كياب كه :-

س انہوں نے ایک شخص کو سجالت احرام سلے بوي كرف بيني دكيما واس تحرم كواس منع كيا تووه كين لكاكرتم ميري كيري اتعا سر توكتاب الشرى كونى آسيت مشي كرو، كَيْ الْكُلِيِّ الْمُراتِدِينَ الْمُؤْكِي كُر الْمُؤْكِينِ و کول دیں اس کو لے لیا کر وا و وص سے

أنه لأى معماماً عليه شاب فنعى المتحام نقال. آنيني بآية من كتاب الله تنزع شيابي، قال: فقن أعليه: «فَسَالْنَاكُمُ النَّهُ وَلُ نَخُلُدُهُ وَمَانَعَاكُمُ عَنَّهُ فَأَنْتَهُوا لا كُ

تبين من كري اس عدك الكسروي

حافظ خطیب بغدادی اسماعیل بن عبیدالترا سيد متصل نقل كرتے مي كرد

له معیاری (۱: ۲۵) در ۱۸ د ۱۸ د ۱۸ د ۱۸ د ۱۵ استاهد (۱: ۲۲ ر ۱۲ و ۱۹ ۲) اوداس كے علادہ الم خطر فرمائتے الوداؤد برمذى ، نسانى مدارى ، طسيالسى وغيره -

ك مباح بيان العلم (١٠٩:٢) -

سِيْمِ فَى لِنَا أَن نَعَفَظ حَدِيثُ رَسُولِ الله صلى الله كما نَعِفظ القَّى أَن الله الله تعالى يقول: وَعَا أَيَّاكُمُ الرَّ الله تعالى يقول: وَعَا أَيَّاكُمُ الرَّ الله تعالى يقول: وَعَا أَيَّاكُمُ

" بین جائے کہ بم رسول النّدسی الشرعایہ کم کی حدیث کی سبی بالنکل اسی طرح حفاظت کریے بس طرح قرآن کریم کی حفاظت کرتے بی اس لئے کہ النّہ تعسالی فرماتے بیں :

و تنبین رسول دین ای کو لے لیا کرد " اخ

یاد رہے کہ مناطرے مشرآن کریم کی حفاظت اس کو زبانی یاد کرنے اور اس پرعمل کرنے دواو معرب ہوئی اسی طرح حدیث کی حفاظ میں بھی عہد نبوت سے نسیکر آج تک بالکل اسی طسرح معرب کی ہے کہ حفاظ حدیث نے اسے اپنے سنیوں میں جی محفوظ رکھا اور سفینیوں میں جی اور معرب کے ساتھ ساتھ اس پرعمل بھی کرکے دکھلایا ۔

مالم سيرطى ف" الإتقال "مين اما شافعي كالك واقعد لكهاب كه :-

المعناية في علم الرواية (ص: ١٢) -

(10:00)

"اكيسر تبرامام موصون نے كومي اعلا كياكر مجه سے جس چيز كے ستعلق چا بودريا كرومي تم كواس كا جواب كتاب الشرے دوں كا ، اس بران سے سوال كياگياكراپ اس محرم كے بار بے ميں كيا فرماتے بي ج زنبور كوفتل كردے ، آپ نے فرمايا ، ابسم الشرائر من الرحم" اور ج تم بي تول

قال الشافى سرة بسكة بسلولى عماشكم أخابركم عنه فى كتاب الله ؛ فقيل لمه ، ما تقول فى المحم يقتل الن نبوي ؟ فقال : بسم الله المحمل المحمل

دے اس کونے لواور حس سے دو کے اس سے بازر ہو ہے

عصلاسیوطی بہتی کے حوالہ مے ، خالدین یزیدسے روایت کرتے ہیں کہ آبہوں نے فرا حماستہ اُسادیت دسول الله میں میں اللہ علیہ وہم کی احادث مسلی اللہ علیہ وہم کی احادث مسلی اللہ علیہ وہم کی احادث مسلی اللہ علیہ وہم کی میں گئا تھا۔

اللہ ، قال المبیعتی : وإنسا اُراد امام بہتی شرماتے ہیں کہ احترام کا مطلب

يركداس كحت كويهيانا جاعدادداس

ك عظمت ول يس ركنى جا عداوراس ك

الماع كوفرض سمحاجات "

حراسة أحاديث رسول الله ملى الله عليه وسلم كحر منه كتا الله عليه وسلم كحر منه كتا الله مقال الله مقال الله مقال الله مقال الله مقال الله مقال الله وفيض التباعدا عمد وفيض التباعدا والتباعدا والتب

یادر ہے۔ سنت بوی کی اتباع ہی پرانٹر تعالیٰ کی محبت کے مصول کا دارمدار ہوجیا آ حضرت صن سے منقول ہے :۔

" لالکال حضرت شن الله تعالی کے اس قول کے بارے میں روایت کرتے ہیں "آپ کہدریتے کہ اگرتم اللہ تعالی وجبت

وأخرج (اللالكافى) عن العسن فى قوله ، وتُكن إِن كُنْتُمُ تُحِبَّوْنَ الله فَاشِّعُونِ يُحْدِبَكُمُ اللهُ

الاتقال (۱:۲۲) سيتي (۵:۱۱۱) -

معتاح الجنة رص وص) -

قال ، فكان علامة حبهم إيّاه التباع سنة الله على الله على مرسلم له و ي ي ي ي ي

کرتے ہوتو میری اتباع کروالٹرتم کومیت کرنے لگے گا " حضرت صن فرماتے ہیں کمالٹر تعالیٰ کی حجبت کی علاست رسول الٹرمسل الٹرعلیہ وسلم کی سنست کی اتباع کم ناہر "

اود حضرت ذوالنون مصرى فرماتے ہيں ،-

من علمة المعب لله مثالعة حبيب الله مل الله عليه والمعلقة المعلمة الله عليه والمعلقة المعلمة والمعلمة والمعلمة

"جوالله تعالی سے مجت رکھاس کی نشانی یہ ہے کہ وہ اللہ کے جبیب سلی اللہ علیہ کم کی انتباع کرے گا آپ کے اضلاق وافعال میں بھی اور آپ کے اوامروسنن میں ہی ج

رسول الشرصلى الشرعليه وسلم كى اتباع كرنا الشرقعائل مع عبت كرنے كا واحد ذريعة بجر الرسول الشرصلى الشرعليه وسلم كى اتباع آب كے بتلا سے بوئے حكول كو مان كرا كئے اقوال وافعال برعمل كركے ، منہيات سے اجتناب كركے بى حاصل ہوگى ، آپ كى اتباع آپ اعمال وافعال برعمل كركے ، منہيات سے اجتناب كركے بى حاصل ہوگى ، آپ كى اتباع آپ اعمال وافعال كى بيروى كئے بغيرنام مكن ہے ، اور بيروى اسى وقت ہوسكتى ہے جبكہ آپ اعمال وافعال تعقوظ ہوں - لهذا الشرقع الى المارونوا بى محفوظ ہوں - لهذا ہم بقين سے كہتے ہي كہول السل ہے كہ دسول كى تعليمات اور اولم ونوا بى محفوظ ہوں - لهذا ہم بقين سے كہتے ہي كہول الشرقع الى نے خود اللہ اور اطلاق قطعًا محفوظ ہي كيونكہ الشرقع الى نے خود اللہ من اللہ تعلیمات و حدیث كى حفاظت كا وعدہ فرما يا ہے -

التدتعالى نعطاظت مديث كابمى ذمراير

چنانجارتادباری ہے ا

مفتاح الجنة رص ٢٥٠).

إِنَّانَعُنُ نَـٰزَّلُنَاالِيَّكُمَ وَإِنَّا لَهُ لَحَانِيُّلُونَ لِمُ

دکی، میں جس طرح قرآن کریم شامل ہے اس طرح احادیث ہی شامل ہے اس طرح احادیث ہی شامل ہیں ،

اور جس طرح قرآن کریم محفوظ ہے اور اس کی حفاظت کا ذمہ اللہ تعالیٰ نے لیا ہے اس طرح حدیث ہی محفوظ ہے اور اس کی حفاظت کی ذمہ داری ہی اللہ تعالیٰ نے لی ہے ۔ اس لئے کہ اگر متن محفوظ ہو اور مترح محفوظ نہو تو لوگ تن سے مصبح استفادہ ہمیں کرسکتے ، جس طرح اللہ اللہ اللہ اللہ نامی اللہ ترجی طرح دفاظ صریب کے حفاظ قرآن کے ذریع قرآن شراعی کی حفاظت فرما ان اس طرح حفاظ صریب کے بیرا فرما کر ذخصیرہ محدیث ہوی میں اپنی بیرا فرما کر ذخصیرہ محدیث ہوی میں اپنی باتوں کو ملانا حیال اور محدیث ہوی میں اپنی باتوں کو ملانا حیال اور مورک کرام نے اس کے اس دخل و فرمی کو بے نقاب کر سے حوام کے سامنے اس کو ذلیل ورسواکر دیا ، جینا نچراس موضوع پرستقل کتا بریا تھی گئیں جواسلامی کتابال

علامدابن حزم في حفاظت حديث كح ثبوت مي اس آيت كوييش كياب فراتيمي ا

"الشرتعالى فرماتے بي "بے شک بم نے ذکر کو ناڈل کیاا در سم بی اس کی مفاطت کرنے والے بی " اور الشرتعالی نے الشا فرمایا : "آپ کہدد کیئے (بی کوخطا ہے) کوسی تم کو وی کے ذر دید سے ڈر ا آبوں " کوسی کا در دی ہے ڈر ا آبوں کا کہ کی بیان کو دی کے ذر دید ہے ڈر ا آبوں کا کو دی کے ذر دید ہے ڈر ا آبوں کا کو دی کے ذر دید ہے ڈر ا آبوں کا کو دی کے ذر دید ہے ڈر ا آبوں کا کو دی کے ذر دید ہے در دوی بیان کو دی کی کام سرکی سب دحی ہے اور دوی بالا تفاق ذکر ہے اور ذکر بھی قرآن محفوظ پر اس کے نے کا در دی بالا تفاق د

له سورة الحبد- ٩

بربات بالمكل درست بي كرحفوداكرم بل الشّعلية وسلم كاكلام تمام كاتمام الشّرتعالى كى حفاظت كى وجرئ عفوظ بي ،الشّرتعا في اس بات كى خانت دى بوكراس كا كون مصرصا كع نه بوگااس ليخ كرمس بيزكي الشّر تبارك و تعالى حفاظت فراتي ده ليقيناً

بسنظالله عن رجل ، مفسون لنا اند لايضيع مندش إنداحفظه الله تعالى محفوظ باليقين لا سبيل إلى أن يضع مندشي ؟ معرمنقول إليناكله ، نلتد الحجة علينا اكب اله

منوط رہے گی اور اس میں سے کسی چیز کا ضائع ہونے کا کوئی اسکان نہیں ہیں کلام ہوئی ہم معد سیک سیف قول ہودیکا ہجا ور اس بنا برالٹر تعالیٰ کی تجت ہم پر یہ پیشہ کے لئے قائم ہو کئی ہے ؟ اس صف کی تند مد

اورای مفحد پر ایمنتے ہیں ہ۔

والقنان والخبر المعيم بعضها منان إلى بعض، وجاشي عدف أنهاس عندالله واحدف أنهاس عندالله مناك وحكم علم واحدف مناك وحوب الطاعة لحماء الماء الم

" قرآن کریم ادر صدیث سی دونوں میں کر بعض بعض سے دالبت ہیں الداس اعتبا سے کدوہ دونوں خواتعالیٰ کی طرف سے ہیں وہ ایک ہی جیزیمی اور تعبیل کم کے اعاظ سے دونوں کا حکم ایک ہی ہے دکرونوں کی اتباع کیساں طور ہر فرض ہے) "

منا بخیجن آیات میں اللہ تعالیٰ نے اپنی اور اپنے تول کی اطاعت کا ایک ساتھ حکم وہ ہم پہلے ہی ڈکرکر چکے ہیں ، اور میر آگے میل کر کھیدا وراق کے بعد فرماتے ہیں :۔

" الشّرَتَعَالَىٰ نے اپنے نبی علیہ الصلاة وَاللّٰمَا کوعکم دیتے ہوئے فرمایاکہ وہ کہدوی کہ ہی تواسی کی اتباع کرتا ہوں حس کی میری اون وحی کی حالی ہے ؟ اور الشّرْتَعَالَیٰ فے فرایا ہو الإسكام في المحل الأحكام (١٩٩١)-

مي شك بم نے ذكركو نازل كياہ اورم ك اس کی حفاظت کرنے والے میں" اوراللہ تعالى نے فرمايا ؛ تاكدآب بيان كردي كا کے سامنے اس چیز کوجوان کی طرف نازل ك كن "اس لئے يہ بات بالكل يح وكد دین کے پارسے میں دسول الندصلی النہ عليه في وكي على فرمايا برده سكيسب الشرتعالى كا وحى كرده بي سي كولي نبيي بي اورابل افت ادرابل شروي میں سے سی کاس امری اختلات میں ے کجوجی بی خداکی طرف سے اترتی ہ وہ " ذكرمنزل " ب ابداوجى سبك سب الترتبارك وتعالى حفاظت ى وجه سيقنى طور برفيفوظ تعيرى اور حب كى حفاظت كى دسدارى خودالله نے ہے تی توبعراس بات کی ضمانت میں بوكى كرنه توكسى اس كاكوتى حصرضائع يو الدنهي الناسي كونى السي تحريب وسك گیس کے باطل ہونے کو سال زکردیا حامے ، اس ہے کاگرالیسا نہوتو پھیوالٹر تعانى كافرانا غلط بوجائكا اوراسك ضمانت ناکام رہے گی اور پیخیال تو

الـ يَكُنُ وَإِنَّالَهُ لَحَافِظُونَ » وقال تعالى، ولِتُبكيّنَ لِلنَّاسِ مَا نُكِيِّلُ إِنْيُعِيمُ » فعيع أَن كالم سول الله الله عليه والم مندن حى سعند الله من وحل لاشك فى ذلك ولأخلان بين أحدس أصلاللغة والشايعةفحأت كل وحى نزلس عندالله تعالى فصوذكى منزل فالوحى كله محفوظ بحفظ الله تعالى لمسقين، وكل ساتكفاليله بجفظه تمضمون ألايضيع سنه وأن المين نسنه شيئ أبدئاتح يفألابأتى البيات سطلانه إذلوجان عيردلك لكان كلام المتَّه تعالىٰ كذيًا و ضانه خائساً وهذا لأبخل سال ذى مسكة عقل ؛ فرح أن المتن الذى أنانابه محدصلى الله عليه وسلمعنظ بتولى الله وحفظه ، مسلغكا

مسى ذراى عقل ركف والے كے دل يكى نہیں گذرسکتاہے ،اس سے یضروری ب كص دين كوحضريت محدصلي النشعليا سلم بارے باس مے كرائے بي وہ اللہ تعالئ كى سريتى ادداس كى حفاظت يُر محفوظ رہے ، اور رستی د نیا تک جھی طاز حق معی تی اس کراین الل حالت ميں سينج جائے كيونكه الشدتعالي فرماتے بي دنى كريم صلى التدعليدوسلم كوحكم ب كرآب كبددي كرمين أل لية سيجالكيا مون) كم " ين تم كوادر براستُعنى كواس دى كے ذرابعے دراور اس کے یاس وحی بيرنج" ادرجب تنافي كى يصورت تميرى تولاذمى طوربريم يرجانة بي كرسوالة صلی النٹرعلیہ وسلم نے دین کے با سے میں بو کی میں فرمایا ہے اس کے ضائع ہونے

حولى كل من طلبه يحقى يأتى أبدأالى انقضاء الدنيا، قال ثعالى الالأنذيكم بهوس بلغ الإندلك كذلك فبالفرونة ندمى أنه لأ سبيل ألبتة إلى ضياع شيئ قاله عرال الله ملى الله عليه رسلم فى الدىن ولاسبيالة إلىأن يختلط به باطل مضع اختلاطأ لايتميزعن أحدمن الناس بيقين وإذ لوجاز ذلك لكان الذكر غير يستفوظ ولكان قول الله تعالى : لا إِنَّا نَحْثُ مُثَرِّلُنَا الدَّيِّكُمُ وَإِثَّالَهُ لَعَانِقُونَ اللَّهِ لَعَانِقُونَ اللهِ كمذيًا ووعداً مخلفًا ، وهذل لايقوله سلم له

گاکول صورت نہیں اور نہ اس کا ہرگز کوئی امکان ہے کہ کلام نبوی کے ساتھ کوئی غلط اور گھٹری ہوئی بات اس طرح گھٹ سل جاسے کہ کوئی شخص بقینی طور براس کوالگ ہی نہر سے گھٹری ہوئی بات اس طرح گھٹ سل جاسے کہ کوئی شخص بقینی طور براس کوالگ ہی نہر ہے ۔ اس لیے کہ اگر ایسیا ممکن ہو تو تھیر ذکر محفوظ نہیں رہے گا اور النہ تعالیٰ کا یہ فرا اگر اللہ ہم نے ذکر مال کیا اور ہم ہی اس کی حفاظ ہ کہ نے والے ہیں یہ محض جھوٹ اور غلط و مدرہ بن کر رہ مائے گا اور کوئی مسلمان تو اسسی بات زبان سے جی نہیں نکال سکتا ہے۔

ك الإمكام في آسول الأحكام وا : ا كا و ١٠١٢) وفي طبعة (ا : ١٠٩) -

یہاں پرکسی کویشہ ہوسکتا تھا کہ اس آئیت ہیں " السفائی " سے مراد صرف قرآن کریما ہے حدیث نیوی اس میں داخل نہیں ، اس شبر کی تر دید بھی علامہ ابن حزم ہی کی زبانی سنے مسرملتے ہیں ؛۔

" الركون شخفى يراعتراس كرم كدامتر تعالى نے تو " الذكر سے صرف قرآن كرة مراد لیاب اوراس کی حفاظت کی ضما دى بى نكرىنىدوى كى جقر آن كريم ينس ہے توم توفیق البی اس کو پرجوال سے کہ: بیجبوٹادعوی ہےدلیل سے خالی کہ " الذكر "كو بغير دليل كحقر آن كے ساتھ كروياء اورجوبات بلادلىل كي يوده التر تعالی کے اس فرسان کی بنار پر باطل ہو كه "أب كه دين تمسيح موتودليل لاؤء" اس سے بیات تابت ہولی کرص کے یاس النے دعویٰ کی دلیل نہو وہ جوٹا ہے اور " ذكر" ال تمام چيزوں كانام پرجي كو الشرتعالى نے اپنے رسول صلی الشعلیہ عليه ولم برنازل كيا قرآن كريم مواليا وه سنت جس کی وجی آب کی طرف اس فرض ك كئ تاكدآب اس كه ذريد قرآن كريم كي تفسيل سان كرس. نيزان تنالي يعيى فرساتا بوكه: يم

منان قال قائل: إنماعتي تعالى يذلك القرأن وعدة فعوالذى ضمن تعالى حفظه لاسائوالومي الذي لسي تىأنًا، تلناله دبالله التونيق هذه دعوى كاذبة مجرادةعن البريمان، وتخميس للذكر بلادليل وماكان خكذانهو باطل لقوله تعالى ويشكل مَا تُؤُبِرُهَا نَكُمُ إِنْ كُنْتُمُ مَادِقِيْنَ » فصح أن سن لا سرهان له على رعواء فليس بعادت فيما، والذكراسم واقع على كلها أنن ل الله على نبيه صلى المتمتعال عليه و سلم من القرأن أوسنة وحى بدين بعاالقران. وأيضًا فإن الله تعالى ىقول: ﴿ وَ أَنْزُلْنَا إِلَيْكِ ا

ن آب برفراك كريم الل كيا ماكداب لوكون کے سامنے کھول کھول کربیان کردیں جو ان ير ازل كياكيا " اس سے ابت بواك حضور العلاة والتلام لوكون كيسة قرآن مكيم كابيان كرفيرما موديي، اورقرآن شرنف بسبت سے احکام مجل مِي مثلاً نماز ، زياة ادرج دغروجن بارعين وعلى نبين كداك الفظ کے دریے الشرتعالی نے ہم پرکیا فرض کیا ہے رہو کچیدعلوم ہوا دہ منور اکرم سل اللہ تعالی عایہ وسلم کے بیان ہی سے علوم ہوا، احب أكرمنسور انورصلى النشيعليروسلم كابيا ان محیل احتام کے بارے سی غرمحفوظ ہو اور مغرك ملاوث ساس كى حفات كى دىردارى بوتو كير قراك پاكھىمى احكام بى منفع الملا ناخم بوجك كا كيونك دين كے وہ اكثراحكام جوم يوفرف

الكُلُّهُ لِتَبَيِّقَ لِلتَّاسِ مَا لَمُنْ لِل العمم ، نمح أنه عليه الصلاُّ والتلام ساحرى ببيان القران الساس، وفي القرأان يبعيل البركالصلاة والنكاة والعيج ر البر ذلك سما لانعلم سا الناشا الله تعالى تيه بلفظه المن بييان دسول اللهلى الله تعالى عليه وسلم ؛ فإذا ال بيانه عليه الصلاة والسلا ا والدالمجمل غاير يعفوظ والمفعون سلامتهمانيس المساريطل الأشفاعينيس المران فبطلت أكثر الشرائع المفترمنة علينانيه؛ فإذَّأ المندي معيح مرادالله ما لعندنال

کے گئے ہیں دان کی حقیقت نہ معلوم ہونے کے سبب بے کا دہوکر دہ مبائیں گئے ہاں واللہ تعالیٰ کہ ان احکام سے مراد کیائے اسے ہم معلوم ہی نیکرسکس گے یہ اور علامہ محسد بن اسماعیل صنعانی المتوفی سلاکا اچرود توضیح الاف کار" میں

اللسراذين در

الإنجام في أصول الأحكام (١٤٣٢).
Toobaa-elibra

" ہمیں منرت عبدالرائن بن مہدی روایت پینی ےکان سے پوجیاگیا: ان گھڑی ہوئی احاد سٹ کاکیا ہوگا ؟ انہوں نے فرمایا: ان کے پر کھنے کے لئے برے بڑے حاذق علمار زندہ رس کے الشرتعالى فرماتي بي كه "بم خيى ذكر كونازل كياب اورجم بياس كى حفاظت كرنے والے بي" اسام ابن مہدی احادة نويكولفظ " ذكر "كي تحت داخل فرمادیا اور مصنف ووزیریمانی نے يركبكراسكى تاتيد ككين كمثابون كرمعن عني كام فرايكه: احاقة رسول المرمل الشّرعليبرولم البي الذكر "مين واخل يَ كَيْ طَلَّ كا ذمه النرتعالى نے ليا ہے اور اس بي دليل الشرتعالى كايرقول وكشم اسك مرافظ إن

ودويثاعن عبدائهمئن ين معنىأنه قيل له: منه الأحاديث المصنوعة ع قال: بعيش فعاالجهابذة دراتًا نَحُنُ نَزُلْنَا اللَّهُ كُنَّ وَاتَّالُهُ لَحَافِظُونَ ﴾ نجعل الأحاد النبوية واخلة تبحت لفظ "الذكى" وأكده المعنف بقوله: قلت قداحتج بعض أصل العديث النوى بأن المند النبوى داخل فيماضن الله مترحل بحفظه من المسائل الدالعليه « وَإِنَّالَهُ لَحَا يْظُونَ »

رف شرح النخبة لعلى
القائ أراد أن س جسة
حفظ لفظ القرأن حفظ عنا،
حفظ لفظ القرأن حفظ عنا،
وس جملة سانيه الأحاديث
النبوية الدالة على توضيح
معانيه كما قال تعالى،
وليُّبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُورِلَ

استمال بحفظ الكتاب السنة

المالا عداده من عجلة المرينعم في أران له

كلات اللكياكيلي ? اس لي حقيقت يرب كرانترتعالى في كماب وسنت وأو ا ساخت کی فعہ داری اس طرح لی ہے کہ وہ اپنے بندوں میں سے ایسے لوگ بیدا کرتا دیجگا

مر المائين ال كرين كل صافلت اور تحريد كرتے رہي كے يا

ا بال نے ابن مہدی کی زبانی جو کھے نقل کیا ہے دبی بات امام سیوطی نے ان کے ال سادك سيجي نقل كى ب، فرماتي ب

> الابن البارك: هان المرضوعة وفقال التِّاءة مُنامِعا العال وَلُنَا الدِّيكُونَ وَاتَّالُهُ مد لا دونا خاندا ا

" حفرت عبدالترين سارك عيها گياكمان مومنوع احاديث كاكيلين گا؟ آپ نے فرمایاکہ : الن کے جانچنے کے لئے برت يختركار البرومحقق علمار زنده وإي الشنقالي قرماتاب كم مم في اس ذكرك

تاكرآب بيان كري اوكون ساس كووان

المالاب اورم بى ال حفاظت كرنے والے بي "

وى خفى كى بحيث أوراك كالثاث

المالى كا آنحضرت صلى الشرعليه وسلم كے باسيس ارست اوس ،-

الماسى كري كے كم الحدين اور زناد قدنے دين مي ج تحريف اور غلط بيانى كى ہوگى اسىكى الکون کوسان اور واضح کر کے میش کردیں گے ۔ چنانچہ ادمشاد نبوی ہے ،۔ والعلم سكل خلت عدوله ، فيفون عنه تحريب الغالين ، اسمال السطلين، و تأويل الجاهلين»

- ולובט ניטואאו)-

11 .

" ووانی خواہش سے (مطلق میں بولیا، وورجو بولیا ہے ، تو وہ وی ہولی بوقی بی الکر

ا قىمائىلىڭ غىزاللىقى لىان ھۇراللارخى توحى يە

اس آیت سے معاف علوم ہواکہ جس طرح آب پر قرآن کریم کی دی نازل ہوتی تھی آسی طرح وی خفی کا بھی آئی سے معاف علوم ہواکہ جس طرح وی خفی کا بھی آب پر نزول ہوتا تھا ، فرق صرف اتناہے کہ ایک وی متلوہ ، جسے قرآن کہتے ہیں اور دوسری وی غیرتنلو ، جے سنت و صدیث کہاجا تا ہے اور دین ہیں جست ہونے کے اعاظ سے دونوں برابر ہیں ۔ چنانچہ امام غزال المتونی ہے۔ وی کھتے ہیں ،۔

وى كى تلادت كى جاتى بى جى كوكتاب دقراك ، كىتى مى اورىعض كى تلادت نېسى كى جاتى

جے سنت وصربیت کہتے ہیں "

له الخبم: ٣٠٧

له المتصفى (١ : ١٨) علامونق بن احد لكه مي ب

وقول مهول الله على مدق الله عليه وسلم حجة لد لألة المعجنة على صدقه و أسرانته سبعانه بطاعته و تحذير عن سخالفة أسوة الخرار وفية الناظر وفية المناظرة المناطرة المناطرة

اورعلامه ابن حسزم ابنی کتاب می تکھتے ہیں ا

" جناني م يرسان كريك كرقرآن كريم " شرعى اعكام كااصل أخدومرجع اس بِنظروا لتے ہی توسیر جلتاہے کہ قرآن باكسي حضورعليه العسلاة فالكا جوعبى عكم دي اس كى اطاعت كوواجب قرارد يأكيا ب اورالتُرتعال كواين يبول دسلى الشهايروسلم ،كى صفت بيا كرتے بوع ياتے بي كه ؛ قده اي فوائل ے نہیں بولتے (جو لو لتے بی) وہ ان کی واف سیجی بوئی وجی ہے " اس سے بنابت بوا كدرسول الشرصلى الشرعليدوسلم كى طريت الشرتعالى كى جودى نازل بوتى تقى ال ک دومیں بنی: ایک وه دی صب کی تلاد ك عباتى ب اورجب كا اسلوب بان اعلى كاحاسل ہے اور یہ قرآن كريم براوندور وه وی جومروی نقول بے مگر ناس کا اسلوب بيان اعجاز كاحامل يواورن اس کی تلادت ہوتی ہوائبتہ وہ پڑھی بره هانی جاتی ہے اور یہ وہ خرمے ورول التدصلى الشرعليه وسلمت واردمول اورسی خبرالٹر تعالی کا مرا دکوجوالٹر تعا ہم سے چاہتے ہیں سیال کرتی ہے اللہ

لعابيذاأن القرأن حوالأصل الميجوع إليدى الشرائع نظنا خيه فوجد نافيه إسجاباعة ساأسرنابه كالول اللهصلى الله عليه وسلم ووحب ناه عها وجل يقول فيه واصفًا للالم الله عليه وسلم: لا وَمَا يَنُطِيُّ عَنِ الْعَوِيلِ اِنْ هُوَ اِلْادَحْيُّ تَيُوحِيْ» نعتع لنابذالك أن الوحي اللي تعمّن التممين وسولمه صلى الله عليه وسلم على قىين: أحدهادى متلو و كلف تاليفاً معجن النظام و موالقماك ، والثاني وحي سروى منقول غيرسؤلين ولأمجز النظام والمتلوو الشه مقروع وهوالعبرالوارد س رسول الله صلى الله عليه وسلم وموالميان عن الله الم وجل سراده منا، قال

تعالی فرماتے ہیں : متاکہ آپ لوگوں کے سے اس کوبیان کریں جوان کی طرف^{نا}زل كياليا" اوريم ديجية بيكرالترتعال ن وحى كى استقسم نانى دسنت ومعديث اك اطاعت كولجينهاس طرح لاذم قرادديا جن طرح كدوى كماس مادل كاطأت کوچکہ قرآن کریم ہے اور ان دونوں کی اطاعت مي كول فرق نهي كما ي حناني الشرتعالي فرمات مي " اور اطاعت كرد الشرك اوراطاعت كرودسول كى " ليس براحاديث جن كا تذكره كما ان تمن إصواول یں سے ایک میں کی اطاعت کو اللہ تعالیٰ في اس آيت مي الاذم قرار ديا برجوادل سآخرتك تمام احكام شرعيدك جائ ہے اوروہ النزتعالی کا بیفرمان ہے کہ " اے ایمان والواطاعت کروائٹرک) ہ تواكي الس بوئى جوقرآن ير " اوراً ما كرورسولكى " يدوسرى اصل بوأ جوحضوراكرم صلى الشعليه وسلم كخنرو مدین استنال سے عقد " اوراطاعت كروا ني أولي الأمركى " يتسيرى اصل

تعالى، ويتبيّن للنّاس مَانْنَ ل النعيم ، ووحدناه تعالى تدأوجب طاعة مذاالقسم الثانى عساأدج سطاعة القسم الأقلالذىموالقمان ولافى ق فقال تعالى الوفاطيعوا الله وَأَطِيْعُواالتَّامُولَ إِنْكُمَّا الأخبارالتى ذكس ناأحلالأصو الثلاثة التى ألن مناطاعتها فالآية الجاسعة لجسع الشائع أتلعاعن آخمها، رَحِي قُولِه تِعَالَىٰ : لايَا أَبُّهَا الَّذِينَ ﴿مَنُولًا أَطِيْعُوا اللَّهُ نهذاأمل وهوالقران « دَ أَطِيْعُوا الْمَ مُولَالَ مَا نَصْلَ ثان وهو الخبرعن رسول التهامل الله تعالى عليه والم روأولي الْأَمْرِينْكُمُ الْمُعَالَّا مُعَالًا ثالث وهوالإجماع السقول إلى سول الله صلى الله تعالى علىله وسلم وحكمه له

كه بس ص طرح الشرتمالي كي الحا (بقيم الر

له الإحكام (۱: ۹۹ ر) ٩

ب اور یہ وہ اجماع ہے جو رہم سے سیکر) رسول الشرطل الشرتعالی علیہ وسلم (کے عہد) الك انقول بيواي

اورعلامه ابن تيم "كتاب الروح " ين رقط مرازي به

إتالتمسيحانه وتعالىأنهل مل ن وله دصل الله عليه وسلم وسين وأفجيه لمى عبادة الإيما ما والعل بما فيعاوها الكتاب

و العكمة.

" الشُّرْتعالْ سِجائزُ في إيض رسول رصلى الشُّر علیروسلم) پردوقتم ک دمی نازل کے اور دو نوں وحیوں پرایات لانا اوران کے بموجب عل كرنااي بدول برواحب قرار دیاہے اور یہ دولوں رجیس قرآن کریم اورحكت (سنت)ين

المسافظات قيم في ال دعوى كے نبوت كے لئے مندرج ذيل آيات سي ميش كى بي ا

" اسی نے آن پڑھوں میں ایک درول انہی میں سے جیچاکہ لاوت کرناہے ان براس كى آيسى اوران كوياك كرتا براوركتاب وحكمت ك ان كوتعليم دييّابٍ " "اور لائي كى بيوليا بادكرواس كوص کی تلاوت ہوتی ہے تبارے گرو ن یا بینی التركي اليس اورحكت

ومُحَوَالَّـذِي بَنُتَ فَى أَلُوْمِيِّتِينَ عُوْلا يَنْ هُمْ يَتُلُوْعَلَيْهِمْ أياته وسُ كِيْهِمْ وَتُعَيِّدُهُمُ الْكِتَاب

و وُاؤْكُ رُن سَا مُثَلِّىٰ يِن عِثْدَا يَاتِ اللَّهِ والْجِلْمَةِ "

اللكلعد لكيقي :-

والكتاب موالقران والعكمة ا كتاب وقرآن كريم ب اور حكمت سے

المنتقة) يرب كرقرآن كريم يرعل كياجات اسى طرح وسول الترصلي الترعليه وسلم ك اطاعت يه والسب كم سنت برعسل كيا مباشت اوريرا طاعت جروث آپ كى صيات تك محدود فهم با بكرسنت كى اطاعت

العا كارم الازم عص طرح قرآن كرم كاطاعت؟

l oobaa-elibra

باجاع سلنسنت بی مرادی اور رسول الشرمل الشرعلی وسلم جرکیدالشرتالی کی طرف سے بیان کریں اس کی تصدیق کوا اور اس برایان الاناسمی اسی طرح واجهیم حسطرت اس کوش تعالی نے اپنے دسول کی ذبان سے بیان کیا ہو، یدائی استوام کا مشقق علیہ عقیدہ ہر حس کا انکار وی کرسکا ہے جوائی اسلام سے خادرج ہوا و دخود نی کرم علیہ الصلاہ والتلام نے وسے میا درج ہوا و دخود نی کرم علیہ الصلاہ والتلام نے وسے میا دراسی کے ماتھ کر یہ مجھے کتا ہے جی درگئی ہما و دراسی کے ماتھ کہ یہ مجھے کتا ہے جی درگئی ہما و دراسی کے ماتھ کہ یہ میں کے ماتھ کی دراسی کے ماتھ اس کے متل اور بھی (بعینی سندی) یہ اس کے متل اور بھی (بعینی سندی) یہ اس کے متل اور بھی (بعینی سندی) یہ واس کے متل اور بھی (بعینی سندی) یہ اس کے متل اور بھی (بعینی سندی) یہ اس کے متل اور بھی (بعینی سندی) یہ واس کے متل اور بھی (بعینی سندی) یہ وی اس کے متل اور بھی دی کھی سندی یہ وی اس کے متل اور بھی دی کھی سندی ہیں۔

مى السنة باتفاق السلف، وسأ تغير المهول عن الله وجوف وجوب تصديقه والإيبان به كما أخبريه المرت تعالى على لسان رسوله، هذا أصل متقق عليه بين أهل الإسلام لائيك والامن ليس منهم وقد قال النبى صلى الله عليه وسلم : « إنى أو تيت الكتاب ومقله معله » له معله » له

اسام ابن حزم ؓ ،امام غزال ؓ ،حافظ ابن قیم اورعلامہ وفق بن احسیر ان سیجفرات کی تصریحات سے علوم ہوا کہ سندے وحی کی ہی ایک قسم ہے اور ظاہرہے کہ دحی کے حجست

بونے میں کس نامراد کوسٹ بروسکتا ہے۔

٢ _ إِنَّ عَلَيْنَا حِنْعَهُ دَقُّىٰ أَنَهُ وَإِذَا قَرَأُنَاهُ كَاتِّمِ خُرُانَهُ ، ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ مِنْهُ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ مِنْهُ

سے نشک ہا رے دوسے اس کا جع کھنا تیرے سینہ میں اور بڑھانا تیری زبان سوئیر حب ہم بڑھانے لگیں (فرشتے کی زبانی) تو

ساتھ رہ اس کے بڑھانے کے بھرمقررہے ہمارے ذمہ اس کو کھول کر بٹلانا ؟ التُرتبارک وتعالیٰ نے ان آیات ہی یہ فرمایا ہے کہ قرآن کریم کی جمع وترشیب کا کام ہمار ذمہ ہے اور سب میانتے ہیں کہ ص ترتیب سے قرآن کریم نازل ہوا تھا موجودہ ترتبیب وہ تہیں ہے

ک کتاب الروح (ص:۲۹) -

له القيامه: ١١ و١١ د ١٩

الما مضرت صلی انشرعلیہ وسلم کی برایات کے مطابق اس کوترشیب دیا گیاہے ،اب آپ خود سوج المارقرآن كريم كى موجوده ترسيب ونبى كريم عليه الصلاة والسلام في حضرت جبرتيل عليه السلام المانے کے مطابق کی وہ وی خفی کے ذرایع ہوئی یانہیں بھراس آیت میں جوت تعالی شانہ الناكريم كے بيان كا وعده فرما ياہے وہ بيان اپني اصلى شكل ميں اصاد ميش كے علاوہ اوركہا و در بالران كريم بي رياكي حرمت ، زكاة كى فرضيت كاحكم بي سكن اس كى تفصيلات كا ال مدیث وسنت کےعلاوہ اور کہال ہے میں مہیں بلکھبلدا حکام شرعب کی فصیل احادث ا طاوه اورکهال کمتی به لبذا جولوگ حدیث کوجیت ماننے سے انکادکرتے بیں وہ در حقیقت ا ما شراديث كومتهدم كرنا جاستيني . ا سب جانتے بی کرحضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم جب مدینہ منورہ تشریف ہے تو آپنے المارينى التعنيم اجعين كوسيت المقدس كى طرف أرخ كركے نماز برصے كاحكم دياسيكن الكريم يساس حكم كاكبي ذكرته يسب البترآب ك عادت شريفي الشرتعال في تبلاك بركه: الْ أَسِعِ إِلَّا مَا يُوْحِنُ إِنَّ لَهُ الْمُ الْمُحْدُ إِنَّ لَهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ ال ا برىطرندىكى جاتى ي برآ خضرت صلى الترعليه وسلم اورآب كصحابكرام رضى الترتعالى عنهم البعين فيتقريباً سروميني بيت القدس كى طرف در كرك نمازاداكي حضرت براربن عازب رضى الله " آپ نے بیت المقدس کی طرف ڈخ المصلى تيل بيت المقدلات كمك سوله ياستره مبيني فازيرهى ب سنة عش شعى الكرسيعة عشق هما اك كے بعریضوں اقدیں صلی الشرعلیہ وسلم نے صحابۃ کرام کوبیت النڈ کی طروت رُخ کرتے کا الانعام ، ١٥ واه ، احقات : ٩ مع بناری کی بالایان (۱:۱۱) محی سلم (۱:۰۰) سنداحد(۱:۰۵ و ۳۲۵) و (۲ ، ۲۸۳ و۳۰۳) وغيره -

حکم دیاا در صحابر دخی النه عنم نے بیت النه کی طرف دُرخ کرکے نماز پڑھنا شروع کردی اس پرمنا فقین ویپود نے اعتراضا ت کرنا شروع کردے کہ پرسلمان کسی ملت کے پابنہیں کہی ادھرمنہ کمتے ہیں کہی اُدھر ، اپنے عقیدہ میں متر قدداود متحیر ہیں ، کسی نے یوں کہا کہ بیجود کی علام اور صدی بنا میرالیا کیا گیا ہے اس پرالٹر تعالی نے مندوج ذیل آیت کریمہ نازل فرمانی ،۔

"اب کیس کے بوقوف لوگ کرکس بیزنے پھیردیا سسلمانوں کوان کے قبلہ سے جس پروہ تھے "قوکہہ کہ النٹری کا پڑشرق الد مغرب ، چلا سے جس کوچاہے سیدھی سَنَقُرُلُ الشَّفَهَ اعُرِنَ النَّاسِ مَا رَتُهُمُ عَنْ قِبْلَتِهِمُ النَّيْ كَانُوْ اعْلَيْهَا ، قُلُ بِنِهِ النَّشِي ثُلُو كَانُوْ اعْلَيْهَا ، قُلُ بِنِهِ النَّشِي ثُلُو الْمُغُرِّبُ يَعْدِي مَنْ تَيْمَامِ الْمُعْرِبُ الْمِي الْمِي الْمَيْمَ الْمَيْمَ الْمَيْمَ الْمَيْمَ الْمَيْمَ الْمَيْمَ الْمَيْمَ الْمَيْمِ الْمَيْمَ الْمَيْمِ الْمَيْمِ الْمَيْمِ الْمُؤْمِمِ الْمَيْمِ الْمَيْمِ الْمَيْمِ الْمُيْمِ الْمُيْمِ الْمُيْمِ الْمُؤْمِمِ الْمُيْمِ الْمُيْمِ الْمُيْمِ الْمُؤْمِمِ الْمُيْمِ الْمُؤْمِمِ الْمُيْمِ الْمُؤْمِمِ الْمُؤْمِمِمُ الْمُؤْمِمِ الْمُؤْمِمِمِ الْمُؤْمِمِمِ الْمُؤْمِمِمُ الْمُؤْمِمِمُ الْمُؤْمِمِمِمُ الْمُؤْمِمُ الْ

ا در بربتلا دیا که معقول قبله سند آوکسی تردد کی بنار بربونی بے اور برکسی سے عداوت
یا کنجف و حسد کی بنار براور ندیہ تبدیلی ابنی دائے سے بلکہ سرکے پچھن خدا سے پاک کے حکم کی
اشباع مراکیا گیلہ مار باور فرمائے اس آئیت کریم بی الٹرتعالی نے بہت المقدس کو قبلہ
فرمایا ہے حالا بحراس کا قرآن شراعی بی تذکر نہیں جس سے تقینی طور برمعلوم ہوا کہ جیکم آپ کو
وحی ختی (سنت) بی کے ذریع دریا گیا تھا ، اس کے بعد والی آئیت میں اس سے زیادہ واضح

الفاظي مشرمايا :-

" اور ہمنے وہ قبلہ میں برآب بیلے تحویر اس اس استان کے مقرد کیا تصالکہ بیعلوم کریں گالات میں اسلام کریں گالات کا اور کون الٹے پاؤں تعرب کا دسول کا اور کون الٹے پاؤں تعرب کا دسول کا اور کون الٹے پاؤں تعرب ما مرکا "

وَمَا جَعَلُنَ اللَّهِ بُلِهُ التَّبِيُ الْمُعَلِّدِهُ التَّبِيُ النَّهُولَ عَلَيْهُ الرَّالِيَ عَلَمُ مَنْ يَئِيَّعُ التَّهُولَ مِثَنْ تَنْفَلِب عَلَى عَقِيدُهُ لِهُ مِثَنْ تَنْفَلِب عَلَى عَقِيدُهُ لِهُ

يهال بيت المقدّ كوقبل بناني كنسيت الشُّرَيُّ جلالُهُ في المُعالِي طرف كي وفرما يا

له البعتره : ۱۲۲

له البيسره : ١٢١١

العدان المريم في قبل صرف آزمائش كے لئے مقرركيا مقاء اصل قبلة توكعبري تها ، م وان ياك ك كى آيت سي سيت المقدى كى طرف دُرْخ كرف كا حكم موجود بين يح لقداً ار دی فغی کے ذریعہ دیا گیا تھا اور اس وی فی ک اتباع کو التُرجل شانئے اس طبح والمن كرديا تفاكه اسى كے ذريعه لوگوں كى آنها كش كى اور استحان ليا عظام سے اگر واستان بوتى تو بيراس كے درايد أندائش واستحان كيوں لياجا آا وراس سے سلم المعنى فرق كيول كرموتا ؟

و معرداكرم صلى الشرعلير لم في غزوة بنى نضير كے موقعه بيج ديوں كے باغات و المائد الكار من تعان كالمن كالمائع كالمحدياتواس بدانهول في والديلاشروع كرديا كي العادر خول كى كالنفاور فساد سيبلان كاحكم ديتي اس برالته تعالى في وَأَنْ لَعْنِ فازل فرمائي حس م صنور الورصلى الشيطيه وسلم كاس فعل كى تصديق و تاتيد

المالك يوكيهم وابار إذن ادر اجازت بواب ارتفادب ا ا قَطَعُمْ مِنْ لِينَةٍ أَذْ مَنْ الْمُعْوْمَ الصَّالِ الْمِحْجِور كَ ورخت تم في كالثادُ إلى إ

ان واني مَعْلَى أَصُولِهَا فَبِإِذْبِ ان واني واني وجرون ركار ارج ديايب

الشُكِ حكم سي بوا"

المات يتى كريبود بى نضيراينى مضبوط كمراهيول بس قلعه بند سوگئة تنصا وران وبابر الماده مذتها ورحضورا قدس صلى الشرعليه وسلم يرجا بيت تمع كديدميدان بين كليس تاككل ا به مقصد سیتماکداس ترکیب سان کوقلعول سے باہر تکالا جاسے ، اس مصلحت موراكرم صلى الشعليه وسلم في ال ك با غات اور درختول كوكات كاحكم ديا تاكران كو المن بيوني اوروه بابرنكل كرارش في مجبور بوجاتي ، ايك صلحت يريمي تعيى كم المعت ووختول كي آر اورد كاوث باتى مزر ہے - ان مصالح كى بناد يرآت في المن كاسكم دياتوال يربيود في العن طعن كى بوجها وشروع كردى كه فودى توفسادس

منع كرتي إور ميرخودى فساديهيلاتي مي اوردرخت كاط رسيمي ، تب التُرتع الى نے یہ آیت نازل فرمانی کرمسلمانوں نے جو کھی کیا التُدجل شائد کے حکم سے کیا اور حکم الہی کت عمیل ا فسادنہیں کہسکتے کیونکہ کم البی مے شار صافتوں اور حکمتوں برشتمل ہوتاہے ،۔ حكتون بي بورك الماركيكام و حكتون كوكي يوني عقل منام یہاں قابل غور بات یہ ہے کہ حضور انورصلی الشرعلي ولم نے جوان ورختوں كے كائے حسكم دياتها يحكم قرآن كريمي موجوذ بهي مكرالله تعالى ني اس كواني طرف نسوب كيابراوا فرساياب كديتم فالشركح كم اوراس كى اجازت سى كياب يحكم اور اجازت يقينًا وَيُحْمَ می کے ذریعہ دی گئی تھی اور اسی کوسنت وحدیث کہتے ہیں ۔ نی کریم علیدالصلاة والتلام نے اپنی ازواج مطہرات رضی الشرعنین میں سے کسی _____ ا کیس مازکی بات فرمانی ا ورانهیس بیتاکید کردی کهسی اورکوست نبلانا ، اتفا قاً وه باست انہوں نے کسی اورسے ذکر کردی ۔ الٹر تیارک وتعالی نے بی کریم صلی الٹرعلیہ وسلم کو وہی تی فراجداس كى اطلاع دے دى توانبول نے تعجب سے بوجياكدا كيكس نے اطلاع دى ؟ آپ نے فرمایا کہ مجھے کیم وخبیرنے اطلاع دی ہے ، الشّدتُوالی ابن واقعہ کاؤکران الفاظیر

" اور دب چیپاکری بی نے این کسی بوی
سے ایک بات م بھر حب اس نے خبر دی ان
کی ، اور النٹر نے جبالادی بی کووہ بات ،
توحبال نی بی نے اس اس سے کچھ اور گلادی
کچھ مجھر حب وہ حبالا کی میوی کو ، بولی آپ
کوکس نے شلادی ہے ، کہا مجد کو تبایا اسس خبر
ولے واقع ندنے ہے

وَإِذَا أُسَّ البَّنَّ البَّنَّ اللَّهِ الْكَبُنِ الْفَلِيمِ عَدِيثًا فَكَا بَنَاتُ بِهِ وَالْمُهَا هُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَنَ تَعَنِفَهُ وَأَعْمَنَ عَنُ الْبُهُ عَلَيْهِ عَنَ الْمَا الْمُعَلِيمِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ مَا الْتَ مَنُ الْبُهُ الْخَيْمُ الْخَيْمُ وَلَهُ الْعَلِيمُ الْخَيْمُ وَلِيهِ والْعَلِيمُ الْخَيْمُ واللهِ

له التحديم: ٣

"الشركومعلوم ہے كہتم خیانت كرتے مودائن جانوں سے " مَلِمَ اللّٰهُ أَنَّكُمْ كُمْ مُكُمْ مُكُمْ مُكُمْ مُكُمْ مُكُمْ مُكُمْ مُكُمْ مُكُمْ مُكُمْ مِنْهُ مَكُمْ مِن

اس آیت سے علوم ہواکہ دم صنان کی داست میں اپنی ہو یوں سے صحبت کرنااس کر ہے۔
اور بین مفرات اپنے اوپر قالونہ پاکراس کم کی خلاف ورزی کرلیا کرتے تھے ہیں کا اسٹر تعالی اس آیت کرئیریں فرما دہ ہیں ۔ سوال یہ ہے کہ وہ آیت کونسی ہے ہیں یہ السالی ایک کونسی ہے ہیں ہوال یہ ہے کہ وہ آیت کونسی ہے ہیں ہوال کہ ایک کونسی ہے ہیں ہوالت کونسی اپنی ہوی سے صحبت درست نہیں ہواس کہ المارک ہیں داست کونسی اپنی ہوی سے صحبت درست نہیں ہواس کا کہ رہے کم صربیت یعنی وی ضفی کے ذریعہ بی دیا گیا تھا ۔

نبى كريم على الشيطيه ولم كامنصسي

مینی الشرفی ایمان دالون پراصا کیا جمان می انبی می کارسول میجا، وه ان پراس کی آیتیں بڑھتا ہے اوران کو مالک کرتا ہے دیعنی شرک وغیرہ ہے) او سکھلانا ہے ان کو کما ہے اور حکمت ایم ا بَدَتُ اللهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ا بَدَتَ فِيهُ مِهُ مَهُ وَلَا يَرِثُ السَّحِمُ يَثُلُوعَ لَيْهِمُ ايَاتِهِ وَ السَّحِمُ مَثِيكِلِمُعُمُ الْكِتَابِ وَلَيْهِمُ مَثِيكِلِمُعُمُ الْكِتَابِ

البعتره : ۱۸۷

" الشروم ہے جس نے اُن پڑھوں میں ان بی میں کا ایک رسول بھیجا جوان کوآل کی آئیس کا ایک دسول بھیجا جوان کوآل کی آئیس پڑھ کررسنا تاہے اور ان کو کاب سنوار تا ہو اور اس سے پہلے وہ صریح محول میں بڑھے ہوئے ہے ہے ۔

" اے ہا سے ہروردگا ران میں ان بی میں کا ایک رسول بھیج جوان پرتیری آئیس پڑھے اور ان کو کتاب اور کتت سکھلافے اور ان کو پاک کر دے ، بے شک توہی زبر دست ٹری کتوں والاہے"

مر جیے کو بہنے تم میں تم بی میں کارسوائی جا حور پڑھتاہے شہارے سامنے بھاری آتیں اور تم کو باک کرتا ہے اور تم کو سکھلاتا ہو کتاب اور حکمت اور تم کو سکھلاتا ہوجو تم نہ جائے تھے یہ اورسرمایا اسمورایا اسمورایا اسمورایا اسمورایا این الگیتین الگیتین می الگیتین می الگیتین می الگیتان الگیتان می المورای المورای می المورای می المورای می المورای می المورای می ال

س- رَبَّنَاقَ الْبَتُ نِيْهِمُ ارْسُولُلِيْهُمُ اللهُ اللهُ

يرچارولآييس «منصب نبي كوواضح كررى بي ميلي آيت مي الله تعالى الخاص

له الجديد ٢

٣ البعشره: ١٢٩

ته البقرو اما

الوتباديم بي كرم في مومنون پريدا حدان كياكدان بي ان بي بي سايك دسول ميجاد اس رسول کے میار فرائفن منصبی اور میار اوصاف ذکر کئے :-ا يَسْلُوعَكَيْعِيمُ أَيَاتِهِ - الأوت آيات قرآن كريم كاتبي يره مرسانا الدال في المعالم و ويُركُّ يُحرِّم . تزكيه كمرنا ويني ال كوعقا مُرحَقَّه ،عمده اخلاق الحاعل صالح كي مسلم وتعليقهم أليكتاب بعليمكاب كتاب التركى مراد سلانا اس كم قعد الدي مجعانا -م ذا لْحَكِلَةً بَعليه عَكمت يحكمت ك دقيق اوركبرى ما تيس معلانا اورقراك كريم ك ماسرار ولطائف اورشراعيت كمد وقيق وعميق علل يرطلع كرنا . ول اكرم صلى الشرعليه وسلم نے بياروں فرائض بطريق احسن بورسے كئے جيناني روكو ل وقرآن كريم كي آيني بي يره كرست نايس اوران كاخلاق كي بعي اصلاح كي الح سلاح کی کہ وہ اہل عرب جوعلمہے ناآستنا ، تہذیب وتمدّن سے بنگیا شا وراخلاق حُسنہ ال ماری تنصے وہ آپ کی اس تنعلیم و تزکیہ کی بدولت علم کے علم دار ، اخلاق حسن ای متبذیب و تعرف میں یکا مزین کرمری خلائق بن گئے کسی نے فوے کہا ہے ۔ رنشانی نے تری قطروں کو دریاکو ، دلکورون کردیاآ جھوں کو بناکردیا و تع و درايرادروك ادى بن ك ي كابن مي كابن مي كابن مي كابن ا ونیاحیران تھی کہ وہ قوم جوہیشہ سے فردمائیگی اور بحبت کا شکارتھی آج اس میں بیات ریدا ہوگئ کہ دنیا اس کے ساسے گھٹے ٹیک دے ! آخروہ کیا چیزیعی ؟ برسب آپ والركيه اورتعليم كتاب وتعليم حكمت كانتيجه تمعا به ل ان کی مادری زبان بھی اس لئے ہونا توبی جا سے تفاکہ حبب قرآن کریم ان کے سامنے ساماتا وه خوداس كمعنى ومطلب كوسمير ليتي رسكن الشرتعالي نے الن كے سمجھنے كوكافى بيمجھا

بلك اين مطلب ومرادكوواضح كرنے كے نے مصور انورصلى الشات الى عليدوسلم كومعلم سا سبوث فرما ياا وركتاب وحكت كي تعليم آب كے فرائف ميى يى داخل كى ـ اس لے برحقیقت فوے اچی طرح ڈس نشین کرلینا جائے کے صرف عربی زبال قرآن كريم كوسمجين كے لئے كافئ نہيں بلكاس كے بعد سي تعليم كي ضرورت باقى رہى ہے اكد كاجال كى تفصيل مجدي آسا وراس كے دقائق وغوامن يرجوعام مجمع سے بالاترى میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی تعلیم کی مدولت رسائی ہوسکے میں وجہتی کر صحاب رضى التدعنهم اجعين قرآن كى تعليم برميت زور ديتے اور اس كے خصرے حصر كى تع يرطوبل وقت خرج كرتے تھے ۔ جنانج علام خطيب بغدادى اپنى كتاب رواة مالك اورامام بهيقى " شعب الايمان مي صرت ابن عرض سنقل كمرتيم كما إ تعسمالبقاة فى أنترعشرة ا محضرت عرض في سورة بقره باره سال من سنة فلملخته هانح جن ورَّالِه السَّمِي اورجب مَمْ مَعِ تَو رَوْتَى بِي) أَرْ ك قربان ك اورامام مالك " مؤطأ " ين روايت كرتے بي كر ،

إن عبد الله بن عمل مكت المحضورة عبد الشريع والمقال المعرف المقال على سورة البقرة بنان المعالم المعلمة المعلمة

غورفرمائي كهياليس دكوع كى سورة لقره حين كوآج كل عام طور سے چند مفتول فتم كرلياجا تاب اورغيرع بهجاس كويرصة اورياد كريسة بي نسكن ابل لسان اور ا حليل القددصحاب كرام دضى الترتعالئ عنهماس برباره سال ا ورآطه سيال جيئ طول ما خرج كرتے ہي ، آخر بيسب كھے كيوں ؟ اس كے كتعليم قرآن صرف الفاظ قرآن كي تك محدود نررم كيكراس كے معانی ومطالب ء اوامرونواهی ، احكامات و اخبار

> له درمنتور (۱:۱۱)-له موطأمالك (صدا)-

لا تبسيرت اور مجتبدا فنظر سوطاتي صحابكرام دضى التدعنيم الجعين ك يرعام عادت فيريد المحضرت عثمان بن عفان ، حضرت عبدالنزين سعود دفى النترعنهما كے بالدے ميں بى آتا بى كرىم صلى الشرعليدوسلم سى دس آئيس سيحقة تواس سائل الشرعة كان يس جو كي علم دعمل كى بأنيس بين ان سب كوسيكه فريس كيه وض بڑے سے بڑے اہل نسان بھی فہم قرآن کے لئے حضور اکرم صلی الندعليدوسلم ک الدر آوضى كے محتاج تھے ، اسى لئے وہ قرآن كى تعلىم برمحنت كرتے اور زيادہ سے زيادہ ب كرتے تھے بہت سے مقامات برقرآن كريم ميں لفظ سے اس كاظا برى مفہوم مراد الي مقامات پر الم لغت اس كے ظاہرى مفہوم سے اشكال ميں بڑھاتے ہم اور تھے والشرصلى الشرعليه وسلم سعرا معت برحب مقيقت حال واضح بوتى م توان كريش ولى بروناني بعض مكر خود صحابر كرام رضى الشرعنم نے بھى آيت كاظاہرى مطلب ليا، و دا برالشريسالي كي وه مسراد نتهي وأبول في مجي عيد كآيت كريم وأله و الشِّمَانَهُمْ يِظُلُّم "مِن ظلم عان حضرات نه عام ظلم محمدليا حالا تحريبال مظلم " واد عام ظلم نه تما لمكر " خاص ظلم " لعني شرك مراد تفاحس كي تفسير حضورا قدس صلى التّديليم لم ففرمانی عرض اس طرح کے تعین شبہات جیصی برکمام رضی الشعنیم کوییش آتے تو سين دور فرما ديتے تھے ۔ يتھی تعليم كتاب ص كوم آيت لا قَائْدَ لْنَا الْهُكَ السَّذِيكُمَ السَّنَاسِ مَا نُنِدِ لَ إِلْيَهِمْ ﴿ كَمَّ تَعْسِيلَ عَمِيانَ كُرِي كُم مَ تعلیم کتاب کے ساتھ ساتھ آپ نے لوگوں کو حکمت بعنی بحی باتوں کی جی تعلیم دی بہا سایہ ہے کہ حکمت سے کیام او ہے .اگر قرآن کریم ہی مراد لیاجا سے توبیعبارت کے فسن اور ان شراب كنظم كے خلاف ہے۔ اس لتے كربهاں " والحكمة "كودا قر كے ساتھ جو حرف المن ب ذكركياكياب اور قاعده ب كرمعطوت اور معطو ف عليدس مغايرت بوني ما سيرال متريك ماكم (1: 200)-. مع الزوائد المعني (ا : ١٦٥) السنة قبل التدوين (ص م a) -

141

لے جب کتاب سے مراد قرآن کریم ہے تو حکت سے کوئی اور ٹیز مراد ہوئی جا جے اور وہ س وسنت رسول الشرصلى الشرطيه وسلم بعص ك ذريعه آيات قرآنيه كاشان نرول ، ال كأ ا ورقراً ن كريم كے احكام كى تشريح اور معنى مقصودى كى تعيين ا ور اس كے مجلات كى تعميل ا کے عموم کی تخصیص اورمیجات کی تعیین کی جاتی ہے ۔ آبی احادیث بینی حکمت وسنت کے ذ رسول الترصلى التشعليه وسلم كاتوال وافعال واعمال وتقرميات وسيرت طيته واخلاقا وعادات مباركه اوراحكام شرعيه تمام فرائض وسنن ومستحيات بم تك ببوني بسي اسي ابتداراسلام سے آج تکے برطرح لوگوں نے قرآن کریم کو یا در کھا اور حفظ کیا اس طرح اماد كوسى اين سيندس عكردى اوروه سيندلسينه اورسفينه درسفينه منتقل بوتي على آئي -حقیقت سے کرانٹر تبارک و تعالی نے لوگوں کی ہدایت کے لئے دوھیے زیں جیجیں (۱) متراك عظيم (۱) نبى كريم عليه الصلاة والسلام واورات كودنيات تشرلعي محواني بعد سی میں دونوں چیزی امّت کی مواست کے لئے کافی میں دا، کلام الشردی اورسنت رسول صلی النرعلیہ وسلم ۔ اس کے آنخفریت صلی النٹرعلیہ وسلم نے حجۃ الوداع کے موقع برصاف اعلان فرماد یاکه " اے لوگو! میں نے تم میں دوجیزی الی چوٹری میں کا گرتم ان بیج ل کرتے توکیجی شمسراہ نہوگے (۱) النہ تعالیٰ کی کتاب (۲) میری سنت ، چنانچہ علامہ سیولی نے آن كى متعدد احاديث افيرسال مي جع كى بي ، فشرماتي بر

آمام بیقی ابی سندسے حفرت ابوم برای است کرتے ہیں کہ وسول النوعلی انتظامی کے دسول النوعلی النظامی کے دروا برت کرتے ہیں کہ وسول النوعلی النظامی نے فرما یا : میں نے تم میں دو جوئی گراہ میں نے تم ان کے ایک کھی گراہ میں میری سنت اور یہ دونوں اس وقت میری سنت اور یہ دونوں اس وقت شک کا توضیر

أوردالبيعتى بنده عن أب عميرة قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم راني وتدخلفت و مشيئين لن تضلوا بعدها أجد أكماب الله وسنتى ، ولن يفترقاحتى يرداعلى الهوض ، أخر جرالحا

فالمستدين

دأدردبنده عن اين عباس أن مهول الله على الله عليه قسام خلب الناس في مجة الود اع فقال ، هيا أيعا الناس إن قد تركت فيكم ماإن اعتصم به فنن تضلوا أب أكتاب الله و سنتى الخرجة العالم أيفاً له

ندآ جاتیں ۔ حاکم نے مستدرک میں اسکنگریکا کی ہے .

الالدامام بينتي البن سندس مفرت ابن عباس سے دوارت كرتے مي كرولوں الشرملى الترعليه وسلم في جمد الوداع ميں لوگوں سے خطاب كيا اور فرمايا: اسے لوگو؛ ميں فيتم ميں ايسي چيز حجوثرى ہے كداگر تم اسے مضبوط بجرائے سے وكمبی برگز تم اسے مضبوط بجرائے سے وكمبی برگز

گراہ نہو گے ۔ اور وہ الشرکی کتاب اور میری سنت ہے ۔ اس مدمیت کو بھی حاکم نے دوا

ما فظ لالكائي ترجان القرآن صرب ابن عباس رضى الترعنها عدوايت كرتي ب

" (آیش شرانفی) یوم تبینی دجه برص ا مبعل چرس فیدردشن بود گری کفیش انبول نے فرمایا کریہ تواہل سنت مجرے بو ماده الدين مربع مربع مربع مربع مربع المربع المربع المربع المربع المربع المربع المربع المربع المولد المربع المول المدع المولد المول المدع المول المول

اله ستريك حاكم (۱۱ م ۱) الإيجرشافعي في الغيلانيات كما في في القدير (۲ م ۲۰۷۲) اس مفرن كي اوريمي مبت محاحاديث موجودين طاحنظ بومفيّاح الجنروس به دم) . كمه مفيّاح الجنر (ص نص ۲) -

اور وتسود وجوہ " (اور معض جرے سیا ہیں گے) کے متعلق فرمایاکہ یہ اہل بوسے جے چرے ہوں گے ؟

جب بھی کسی جاعت یا فرقہ نے صریت کو قرآن کریم سے الگ کیا کہ قرآن ٹریعین کو ما ناصریت کو شما ناد گھسراہ ہوگیا ۔ چٹا نچہ حضرت قتا وہ حفرما تے ہیں ہ۔

مع خدائی قیم حس نے سنت دسول الشخیلی الشرطیہ وسلم سے بے دخیتی کی وہ بلاک ہوگیا اس لئے تم سنت کو مضبوط بچرائے ریچ اور بدعت سے بچتے دسجوا ور تفقیحال کمدا و پڑمہا مت سے بچتے دیج و بیج والله مادغب أحدى سنة نبيه على الله عليه وسلم إلاهاك فعليكم بالسنة وإياكم والبركة وعليكم بالفقه وإياكم والشبعة وعليكم بالفقه وإياكم والشبعة

تاریخاس پرشاہدہ کہ جتنے ہی گراہ فرتے پیدا ہوئے وہ قرآن کریم اور صدیف شرلف ہی لفریق کی وجہ سے وجود میں آئے ۔ خوادی ، معتزلہ ہشیعہ وروافق وغیرہ سب اسی ذیغ کی بناہ پر گھسراہ ہوئے ۔ یہ دراصل وی لوگ تھے جن کا مقصدا بن خواہشات لف انی کا اتباع کرنا تھا ہج یہ کہا کرتے تھے کہ '' حسب ناکتاب احدہ کہ خواک کتاب ہما دے لئے کا فی ہے جواس میں حلال ہم ہم اسے حرام جا ہیں گے ۔ نبطا ہر یہ طرے اچھے ہم اسے حرام جا ہیں گے ۔ نبطا ہر یہ طرے اچھے الفاظ معلوم ہوتے ہیں لیکن ان الفاظ کے ذریعہ اسسام کی پا بندیوں سے بیخے کی داہ ڈھوٹٹری حادی ہے ۔

سوچے ؛ اگریج بات ہوتی کہ کتاب الشرکانی تھی تو بھر دسول اکرم صلی الشرعلیہ وسلم کے مصحفے کا مقصد اور فائدہ کیا ہے ، اور الشرتعالی نے آیت " لَقَدُّ اَنْدُهُ عَلَی الْمُدُّ مِنِیْدَی " میں اپنے ہی اصال کا تذکرہ کیا ہے اس کا حاصل کیا ہے ۔ ان چارول آیا ت بینا ت ہی "العکہ " کا جولفظ واردہ ہاں کا ذکر فود حضور انور صلی الشرطیہ وسلم ان الفاظ میں فرماتے ہیں کہ :۔ کا جولفظ وارد ہے اس کا ذکر فود حضور انور صلی الشرطیہ وسلم ان الفاظ میں فرماتے ہیں کہ :۔ اُلْ إِلْ اُو تیب القرائ ا

له مفتاح الحية (عندم و ١٦)-

اوراس کے ساتھ اس کے سنل اور مجی "

ومقلهمعهله

یہاں دسٹلہ کالفظ قابل غورہے ، تمام محققین اس پرمتفق ہیں کہ دسٹلہ سے مراد ملم محققین اس پرمتفق ہیں کہ دسٹلہ سے مراد ملم خورہے مقام محکت کہتے ہیں اور جیسے قرآن کریم واجب اللہ تباع اسلاح میں حکمت کہتے ہیں اور جیسے قرآن کریم واجب اللہ تباع اور جیت ہے ۔ اور جی طرح قرآن مجید مصدر مسدر بے سے اسی طرح حدیث ہی مصدر تشریع ہے اور آٹ کی ذات گرامی کواس تشریع کا اختیاد مسلم کے ہے اسی طرح حدیث ہی مصدر تشریع ہے اور آٹ کی ذات گرامی کواس تشریع کا اختیاد

مال ہے ۔ ادشادباری ہے ؛-يُعلَّلُعُمُ الطَّيبَاتِ دَتُحَيِّمُ يُعلَيْهُمُ الْخَبَائِثَ لَهِ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ لَهِ

موده مرول) ان کے لئے عمدہ چیزوں کو مطال کرتے ہیں اور خبیث دگندی چیزوں کوحرام کرتے ہیں :

مندرجه ذيل مديث شراعين مين خودحضورا قدس صلى الترعليه وسلم كى زبان مبارك س

موسن لو المجھ كتاب بھى دى گئى ہے الد اس كتاب كى شل اور بھى ، خبردار سى كوالا مجھ قرآن دياكيلہ اور اس كى شل اور كئى سن لو اور زمان قرسية بوجب كرايك بيط محرائ خص اپنج بير كھ ت بر بير موٹر سيك محرائ خص اپنج بير كھ ت بير بير موٹر سيك باكر تم صرف قرآن كود مجھ وجواس بي حلال باكر اسے حلال قرار دو اور جواس بي حلال باكر اسے حلال قرار دو اور جواس بي حلال باكر اسے حرام خبردا ديكان كھول كر بن لا باكر اسے حرام خبردا ديكان كھول كر بن لا

كه اس أيت كي تشريح اور آ عيد يحق تشريع كي تعلق

اله مسنداحد (۱۳:۱۳۱) وغره-

مستقل عنوان قائم كرك اس كے تحت م زيد كھياور بيان كري گے - ان شار الشرتعالٰ -

ألادلالقطةس معاصدالا أن يستغنى عنصاصلعبصا » الحديث .

ادر نہ کھیلوں سے برحیر نے بھا ٹرنے والدزود کا ، اور اسی طرح ان لوگوں کا لقط راگری مول چیز اجن سے معاہدہ بوطال نہیں،

مگریکر ده الیی مولیزم که اس کامالک اس سستنی بو (اس کواس کی ضرورت نه) اور دوسری روایت می صاف الفاظ می واردے :-

"خردادش لوبے شکے درسول الشرصال لئر علیہ وسلم نے حرام کیا ہے وہ اسی طرح حرام ہے جس طرح کرانٹ رتعانی کا حرام کیا ہوا؟ دألا دران احم دسول الله مل ملى الله على ملى الله عليه وسلم مثل ما حم الله عمر دحل العديث

المام ابومحد سين بن مسعود الفرار البغوى المتوفئ ملاهد اس مديث كي ترح كرت بوشد

المصين ١-

وأزاد به أنه أوتى من الوحى غير المتابو والسنن التى لم غير المتابو والسنن التى لم ينطق القران بنصعامت ل ما أوتى سن المتلوء متال الله سبحانه و تعالى، « وَيُعَلِمُ عُمُ الْكِتَابُ وَ الْحِكَمَةُ) فالكتاب وَ الْحِكَمَةُ) فالكتاب موالحتم أن ، والحكة تيل جى السنة ، أو أوتى مثله من بيانه فإن بيان الكتاب إلى الهول فإن بيان الكتاب إلى الهول فارتى مثله من الله عليه وسلم يه ملى الله عليه وسلم يه

له مسنداحد (۱۲ ۱۳۱ د ۱۳۲) سنن دادی (ص ۲ د ۲ ۲ ۲ ۲ ۲ ۲ ۳ ۳ سنن ترخی وسنن ابن اجه وسترد کسطهم معنی و مین ابن اجه وسترد کسطهم وغیره می الفاظ کے حولی سے تغیر کی اتھ سے دولیات منقول میں . سلم شرح السند (۱: ۲۰۱ و ۲۰۲) -

ل حث ير سے کہ خود قرآن کر تم کی تص صربے سے بریات ثابت ہو کہ حضورا قدی صلی اللہ لم كالوال وافعال ولقريرات محت شرعين ، فرق صرف اتنابح كم قرآن كرم إولاً لذات معدد تشريات اور صربت بوي الوي صفيت من واس لي كرسنت قرآن كرم ا ا کو بیان کرتی ہے اور ان خیروں کو جارے سامنے لاتی ہے جو قرآن شراید ما له بي ليكن بفطام رسين ان كاعلم بهي بوتا-بادرے کا الترتعالی نے اپنے بندول برمض فوالف توالسفائد کئے بس جن کوکتاب الشراف ر اے اور افعل رائص الے علی بی جو قرآن کریم می کی بیان ہو سے می اور اس کی مصل ادر صلى الترعليه وسلم عراية قول ياعل سى ي ب العضرت صلى الشرعليه وسلم مرجب قرآن كرم نازل بوتاتوات نزول وى كيساته ساته ادر نے کا کوشش فرماتے بھی کی بنار برخت دقت بین آئی حضرت ابن عباس وی الت وسلم إذانن ل عبوس ل بالوى عليروسلم كے پاس وحی لے كر نازل ہوتے توآب داس كويادر كلف كى غرض كان كالممام كالعبدلانة زبان دلسدمادك كوى ساته ساته ساته اللة منه استدعليه وكانه جاتے لیکن ابساکرنے میں آپ کوٹری ڈواک المن فأخزل الله الآية التي يوتى وكرسنى ما يادكرس) اورآب كى يات ل" لأأتب سيدم القيمة"، ولا معروف تحى وال لقالة تعالى في يأت نازل فرمائي جورة قياري سيكر" اين انَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقِّنَ انْهُ اللهِ قَالِ: زبان كوتركت ندد يجية تأكدا ب جلدى كملية عليناأن نحمعه ف صنعك といいけんといいとうとかん مَّ أنه ؛ فإذا قرأناه ؛ فإذا أَنْ لللَّا

يرصانات سيى الانكات كيسيدس فوظ كمدينااورآب مصحيح يرمعوانا بماي فاستمع المسانعليناب انه عليناأن نبينه بلسانك له

ذبب الل الخرب، والعلى الني وى اللكري قاب أعصنة دي " عيرامام ذمه ہے اس کابیان کرنا بھی " بینی آپ کی زبان سے ہم اس کوبیان کرائمی گے "

اس آیت سے معلوم ہواکہ قرآن شراعیٹ کا بیان بینی سنست بھی من جانب الشریء جنائج

" ادرالشرف آب بركتاب اور حكمت الل فرمانى اورآب كوو كيستحلايا جآب كومعلوم ننتفاءا ورالشركاآب بربهبت المانفل ے ؟ مورة نسامك آيت ذيل اس يرشابدب به دَ أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ أَلْكِتَابَ وَالْحِيْلَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنُّ تَعْلَمُ ، وَكَانَ فَضُّلُ اللهِ عَلَيْكَ عَظِيماً ولم

اس آیت بی صاف طور پرتصریج ہے کہ حکمت دینی سننت) جی مُنظِّ لَ مِنَ السّٰہ ہے ، اور"علسك سالم تكن تعلم " كي تحت وه تمام علم بوى أكيا جوآت كي شايان شالتها عرض الشرتعال نے اپنے رسول مقبول صلی الشرعلیہ وسلم کوتعلیم دی الداکپ نے اسم کا مست کو ۔ اسام اوزاعي اسسليلي حضرت حسان بن عطيه عنقل كرتي :-

" حضرت جبريل ني كريم صلى التُدعليه و سلم کے یاس سنت دصریت اسکواس طرح آتے تع جی طرح قرآن کرے سیر كانجبريل ينزل على النبى صلى الله عليه وسلم بالسنة ميتن لقال عيله ماين لمك

أتخضرت صلى الشرعليه وسلم كى بربات اود مرفعل خدائد ياك كى مرضى كعين

- (۲۲۲:۲) حادی

سنن دادى و باب السنة قاضية على الكتاب دصى ،) -

طابق بداكرتاشا - اودعبادات بول يامعاملات ،ا وامرسول يانوابي برجيزي آب تهان ع . ايك مرتب في كريم عليه الصلاة والسلام مال عنيست تقسيم فريدارب تنه كريع فل الوكول لوں میں مجدخام خیالات گردش کرنے لگے آپ نے ان کی خام خیالی و محسوس کیا توفورای کیہ را س کا تدارک فرمایا ،-

« میں زخودسے تمہیں دیتا ہوں اور زخود سے تم سے کھے روکنا ہوں ، میں توتقسیم

ساأعطيكم وكا أمنعكم إنما أناقاسم أضع حيث أمات

كرنے والا يوں (برجيز) وہي ركھتا بول جہاں د كھنے كا مجھ حكم دياجا تاہے "

اس صريت شريف مي حضورا قدى صلى الترعلي ولم نے آيت شريفي " ان اتبع الأسا الت على الناظير تشريح كردى اور ان كوسمهاد باكدميرا بركام اس طرح بوتاب،

ع مجے خدا کا حکم ماتا ہے ۔ لہذا معلوم ہواکہ صریث وسنت حجة مستقلہے۔

ابى بم نے يہ ذكركيا تھاكدى بيض فرائض الشرتعالے نے مجل ذكر كئے ہي اور صفور صلى الله

الم قاس كى تشريح كى ب مشلاً نماز كم تعلق حكم نازل فرمايا ، ـ

ا معشك نبازسلانون يراين معترد وتوں پرونسرض ہے ہے

افَ الصَّلْوَقِ كَانَتُ كَالْمُؤَمِّينِينَ كتَّامًّا سُوْتُوتُا لِمِ

ا كما ورعكدارت دفرمايا :-

وَ اَقِيمُولِ الصَّالَ عَالَى اللَّهِ

روزه د کھنے کا حکماس طسرت دیا :۔ يَاأَيُّهُالُّذِينَ أَسُوُ ٱلنَّبِعُلُّمُ القنيام كمَاكُسَتَ كَلُ الَّذَيْنِ

أورنساذكووتائم كروم

" اے ایمان والو! تم پرروزه فرض کیالی ہے جیسے کرتم سے سے کے لوگوں پرفرف

-(749 11) Wite

البعشده : ۲۳

I oobaa-elibra

مِنْ تَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَلَقُّونَ مَا كياكيا تقاتاكرتم برميزها دبن جادًا " ماري تاريخ الدري الدوليان التاريخ الدرية الماريخ الد المتعلق المستعلقة طرف راه جلنے كي في الله دكاة كاحكم ال الفاظين ديا .-و اودراد و در المال الما राद्या हो है है يه سادى احكام وفرانص من سين قرآن فراف مي ان كالذكره احمالالياليا برے سے اعرار دان اور عالم موق اور عن النظمات و محال وقت المان مح حالك كراس كي شرع ده دات عالى دار ب صحيح مت عطال مي عي اور جامع الما ہے نوازاگیا تھا ۔ صلی التد نعبالی علیہ و しないとういっているい ہے اس کی تشریح کرتا ہے الد سامعین اس کو مجدر اس رحمل سرا ہو جی در الرمعلم می دی يره وكرسنا در حواصل كتاب من معالية تواس علم كي تعليم كالوتي فا يده تروا ، إلى تفعظ مجى اس بات كى مقصى بى كدرسول اكرم صلى الشرعليه وسلم قراف كرم كى مسكلات والسالفا فا می محماتی اور لوگ اس کو آسانی سے ملی اور اس برعمل کرتے مکیں ، حیا تجے دسول الله صلی الته علیہ وسلم نے قرآن کے مجل احکام کی اپنے قول وعل سے اس طرح مشرف کی جس طرح الترتعالي في أف كردل من القارقرما باتها أو المتاوي إلى القارقرما باتها أو المتاوي إلى さかい マングラウン ेन्ड्येट (१११७) أل ال ١٠٠٠

"بن تواس كات عكرتا يون ص ك الله المناول مع من المناور المارية نمان کے مکم کے متن می آگ نے تماز کے تما فرانس وواجات الدواقات وغراوا فق سامت كواكاه كياء إن الراس طرح عان فرجى ما سير طري والرم صلى الشرعليرو للم نمانها واكراكر تصريحها ومزال السليمي منزت يوعلى صاحبها القلاقا الم كونظرانداز كرويا جا يره توقر آن كريم على كرنا صرف مسكل ي بين بكتا ايكن اور فحال ماے کا ، اس لئے کرفراک شراعی میں صرف اتنا حکم دیے کرفائم کرمانی کا اس کے کھٹے ہیں ج نماز الذكياب ؟ أكراس كوخورا قدس صلى الترعليدة لم المنتقول وفعل وعبل سي تركها ترق المستاجرون فرضيت بماذ كالخرافك بالتريي وكيابك فالكروقات كالمتافق ال تعداد كيسين ، قرارة قرآن كي مقدان إلى كي نواقض وغيره كي تفريح بين يورك مادت موسري المتعايد بني كريم على الصلاة والسلام في صرف فيافي عليم التفاوي الشرعلية فروي كك وكواز عاط ليهم عالته الرعاري ميلع في أنه على المعالمة على إلى صلواكرار تمون أصلى عميه المرسم المراج المنازي على المرسم وعلو يحق DESCRIPTION OF STREET STREET ار؟ أث يزرا كالم المعروب الناركي والقلوح وستاما ليات والويث أو اى طرح أكاة كامكم قرآك محبوبي اجالًا وبالديد التي فرضيت أن قرآك كرام الأواكيات المن ذكاة كي كيتنب واوركس مال ركتني زكاة واحسار في الما والكين الماجب وفي رتهام تفصيلات آساكوسنت واحادث بوير بيعلوم بوب كى بن بس اكنے يہ تلاديا Wie de alte

الدى (١١١ ١٨) و (٢٠ ٨٨٨ د ١١) والمام وي المام المام والمام المام والمام والمام

كرنكاة اس وقت تك واجب بهي بوتى جب تك كرمال ناى نصاب تك نديجوني جائع براسي مبى ولان ول شرط بينى سال گذرنے كے بعد ذكوة واجب بوكى .

ای طرح قرآن کریم میں صلم ہے ،۔

وَالْتُوْاحَقَّ مُ يَوْمَ حِصَادِ ﴾ ﴿ وَكُلِيْنَ كَالْقُ الْ كُلُنْ كُونُ اداكرو؟

اب اس اس المحتى كاحق كيابيم منكرين مديث سوال كرتيمي كربتلائي آخر مين كاكياحق

اداكياجاك كا ـ زمين كافتلف قسمول مركعين كاحق كس صاب ساد اكياجا سے گاان كے پاس اس كوني جاب نهي ہے ۔ اس كي تفصيل لسان نبوت سے جي ہوئے جوا عربار دل كوفتول كئے بغير علونيس

موسكتى من وراقدى ملى التُرعليه ولم في تمام تفاصيل بثلاثين كه الرزين نهرى بي تواس كے لئے

یکم سے ادر اگر بارانی ہے تواس کے لئے بی کم ہے۔

اسىطرح قرآن كريم ميں ج كاحكم اجاللہ چنانچرىم نے اسى ذكركيا ہے ،اس كي قفيل ك مج كن ارتحول بي بوگا ، في كے وجوب كے لئے كيا شرائط بي ؟ اور في مي كياكر نائر تا ہے ؟ اور ج كن چيزول سے فاسد موجاتا ہے ؟ يه تمام تفاصيل آپ كوا حاديث بي سے علوم بول كى ا اورحضورا أورصلى الشرعليدوسلم كفعل وعملى سيرج كاطريق معلوم بوكا جناني حضوراكرم صلى الشرعليرولم في خود الح كدك وكعلايا اور ميرا علان فرماياكم ا

خذراعنی مناسککم کے اسلام کے احکام سیمالی ہ

الك صحابى نے ج كے با مرح ميں آئے سے سوال كياكہ ج عمرس الك مرتب فرض سے يامتعدد بار ج آت نے فرمایا کہ ایک مرتب والانکر قرآن کریم میں پروجود مہیں ہے ۔ جنانچ علامہ و آرمی المتوفى وهي المراني كتاب مي ليسند تصل حضرت ابن عباس رضى الشرعنها سروايت كرتي الم

ہے کہ رسول الشرصلی الشہ علیہ وسلم نے فرایا

عن ابن عباس قال قال دول المستحضرت ابن عباس دفى الترعنها ورقاة الله ملى الله عليه وسلم .

له الانعام : الها

مسندا" ۱۱ ساس ۱۲۲ نسکانی (۲: ۲۲۹) وغیره.

وكتب عليكم المحيج الانتيال، المحيول المثان المحيد المثان المحيد المعيد المحيد المحيد

کہ : تم بری فرض کیا گیا ہے ، حاضر میں میں سے کسی نے پوچھا کہ یا دسول انٹر کیا ہر سال دی گرنا ہوں انٹر کی انہیں اور گرنا ہوں انٹر کی کرنا ہر سال فرف اور اگر میں ہاں کید دیٹا تو چھ کرنا ہر سال فرف

غرض حضورا قدس صلی الشرعلیہ وسلم کے فرامین سبار کہ اور اقوال وا فعال کومانے بجسیر ایک اسٹر ملائے کا میں سے جب تک دسول الشرصلی الشرعلیہ وسلم کی اسٹر علیہ وسلم کی اسٹر علیہ وسلم کی اور وسلاح نامیکن ہے ہے

منالات بمیسرکت ردگسندید که مرکز بسنزل نخواهدد سید دسول الشیمسلی الشیملی در میم اثنیت کے لئے کامل نموندا ورمقتدار ومطاع بی جس کی الشروع میں گذریکی ہے۔

ا ى طرح قرآن كريم بن الله تعالى في شراب كوحرام قرارديا ،فرمايا ،

" اے ایمان والہ ؛ پرجو ہے کشراب اور جما اور بت اور پائے ہسب گنے کام ہمیں شیط ان کے رسوان سے بچتے دمجو ٹاکہ بحبات پا ڈ " النَّهُ اللَّهُ اللَّهِ الْمُنْ اللَّهُ اللَّذِي اللَّهُ اللْلِمُ الللْمُ اللللْمُ اللللْمُ الللْمُ ا

منددادی (ص ۲۲۲) منداحد (۲: ۵۵۵ و ۲۹۱) اس کے علادہ اور جی بہت ی جگر، ای طرح یہ مرت علی اس کے علادہ اور جی بہت ی جگر، ای طرح یہ مرت علی اس کے مقول ہے ملاحظ ہوم نداحد (۱:۳۱۱) ترمذی (۲: ۱۰۰۱) وغیرہ -

البائزه: ٩٠

رے تطالعرضرف شرابی حرام معلوم ہوتی ہے يزونك كربوان كااستعال الى طرع المناع المعام على المناه المنه والداور الت وف اور د ظامرات من المام اللم كي فون اورس ون خلال تے كي س مردادي مركا الما المحلى كوالدون سي حكوالد في كو " والمال مدائن فالعالم المرا المعنى المادية مارك دراك عراس مارك كياب يقراك بالمجى الرميرازاول الأخر صكبت معروب الكن وتكويت والاالا مي ترون عطف واو * كے ساتھ وكركياكيا ہے اور فاعدہ سے وجھے كہ بح وكوكر علم بي كرد عطف حسلات بالوه عطوف اور عطوف عليمي سفايرت كالقاضاكر اس الني القيما مرحكت سے تقتنا فران كرم كے علاوہ درسرى حيرمراد مے حسنت رول ي سے كو كوران كرم كے بعدائ كے والورس فركوا حكمت واردے سكتے من والم شامع اللے اللہ من اللہ كل ماس رسول الله على الله " تام وهروسس رسول المسالة علية وسلم معاليس فيهكتاب عليوسلم نيمشروع فرمايا اورده كماك الم سيح بحاري كما المخارى والادب والأدب والأدب والأحكام (١٠٦٢٠١) ويح الم كما اللسرم (١٠١١) دالوداؤد وترمدى ولسائى واب ماجروسدا مروجود في سرة النفره - ١٤٣ ع مناحد(١٤٤٢) ابن ماجرال ٢٢٨)

وفياكتينا فىكتابناهانا ذكسماس المتصبه عى العباد س تعلم الكتاب والحمكة وليل على أن الحكة سنة دسول الله مل الله عليه وسلم يه

س خلوز بین داور یو کچه این اس کتاب می يرجث كرحكي كالترق بدول بيركماب ادريحت كيمينين كياحسان فرايا ی بسباس بات برمان دلیل میں کہ مكت سعرا ودسول الشصلى الترعليركم

كاسنت بى بے ؛

سالقة ذکر کروه جاراً بیول کے علاوہ بھی اورکئ آیات ہیں حکمت کالفظ سنست رسول الشمسلی مرام ي كے التاستعال مواہد معلاحظ فرمايت ، ادشادر بانى سے ،-

"اورالشف آب يراتارى كآبادد حكمت ادرآب كوسكهاتين وه بآني بي ذجائة تصاورآب مالشكافضليب

وَأَنْزُلُ اللَّهُ عَلَيْكَ أَلِكِتَابَ دَ وَالْحِكُمَةُ وعِلا مَالَمُ تَكُنُّ لَّعُلَّمُ وَكَانَ فَضَلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظَمًا وَكُ

" اودست شمراؤ الشرك احكام كوسنى (دل ملى) اور ياد كروالته كااحسان وتم يرب اوراس كوجوا تارى تم يركماب الد مكت كرم كونفوت كرا والك ماتمة" اورادشاد تسرمایا به

ولاتتعفاد أيات الله عناما وَّاذُكُمُ ثُوْلِيْعُةُ اللَّهِ عَلَيْكُمُ وَسَا ٱلْزُلَ مَلَيْكُمُ مِنَ أَلِيكَابٍ وَ الحِيَّةِ تَعِظُلُمْ بِهِ وَلَهُ

اورسنريمايا به وَاذْكُنْ نَ مَا أُسْتِلْ فِي بُيُوتِيكُنَّ

ادرياد كردجويرهى جاتى بي تماسكود

الرسالة للشأحي (ص:۲۲) -

الناء: ١١٣

البقسرة: ١٣٢١

مِنْ أَيَاتِ اللهِ وَالْحِلْمَةِ اللهِ اللهِ وَالْحِلْمَةِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ وَالْحِلْمَةِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ وَالْحِلْمَةِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ ال

الكتاب والحكمة القرأات و السنة أفردها بالذكر إظهارًا لشرفها عمه

"کتاب ا در حکمت سے مراد قرآن دسنت بیں ان دونوں کو الگ الگ ذکر کمیا تاکہ ان کے مرتب وشریٹ کا اظہار موجاسے "

" بم في برتوجان لياكه الكتاب سي كماب الشرادسي لين بينها بيني كري كمان الشرادسي لين بينها بيني كري كمان كما كرد المام شافعي فرما تيمي مي في كها كرد رمول الشرصلي الشرطلير والم كل صنت مرادي اس في كهاكيا بيا حال جو يحكمت بيني كماكيا بيا حال اور يحكمت بيني الكاكم الشركي اجهالي اور يحكمت بيني الكاكم كن صوبي طور بريتعليم ديتريون و كي خصوبي طور بريتعليم ديتريون و

میں نے جواب دیا : تمہا را مقصد برے کہ آپ لوگوں کے ساسنے النہ جل شائڈ کی جا سے اسی طرح کھول کر مثلا تمین جس طسوح آپ نے ان کے ساسنے فراتھی کا ذرکاۃ اور چے دغیرہ کو اجالًا بیان کیا ہے تواں نقدى على الكتاب كتاب تتاب المثله فى الله فى الكتاب كتاب الله ها الكتاب كتاب كتاب كتاب الله ها الله على الله على الكتاب جلة والحكة على الكتاب جلة والحكة خلصة وهى أحكامه ؟ عن الله عن المثلة والزكارة والخرائض من الممالة والزكارة والخرة والخرة والمنكون الله والمنكون المنكون المنكون الله والمنكون المنكون ال

له الأحزاب ٢٣٠

ک تغیرمنیادی (ص:۱۵۲).

فى اكف سن فى التقه بكتابه ريان لحم كين محل لسان سيه صلى الله عليه وسلم قال وإنه ليحمل ذلك. للت : فإك ذهبت هــذا المد مس ذهى في معنى الأول تبلمالنى لأتمل إليه إلأ بخيرعن دسول المتمصلى الله ship comby. ذال وفال ذهبت مذهب عريرالكلام ؟ الت: وأجم أولى بداذاذك الكتاب والحكمة أن سيكنا فيصين أوشتًا واحدًا. نال، يحتمل أن يكوناكما وصفت كتابا وسنة فسيكونيا شيئين ويعتمل أن ميكون شناداحداً . تلت ؛ فأظهم حا أولاحاوف القرأان ولألقطى ماتلنا و خلات ما ذهبت إليه . تال: وأين ؟

صورت میں اللہ تعالیٰ لے اپنیعف اُرا کو اپنی کماب کے ذر ہے کھم نبا یا اور اس کی کیفیت کوئی کریم صلی اللہ علیہ دسلم کی تبانی بیان کرایا ۔

اس نے کہا دہ لی اس کا احتمال توہے۔ میں نے کہا داگرتم اس بات کو انتے ہوتو یہ تو وی سابقہ بہلی بات ہوئی جس کے تغیر دسمال التُدُسلی اللہ علیہ ولم کے خبر دسے کسی طمیح تمہاری رسائی نہیں ہوسکتی ۔ اس نے کہا : اگر میں عطف کو تاکید کے لئے

میں نے کہا : حب کتاب اور حکت دونوں کو علیحدہ علیحدہ ذکر کیا جائے تو : تہم ایے خیال میں کیا چیز زیادہ سناسب ہوگی آیا خیال میں کیا چیز زیادہ سناسب ہوگی آیا پرکہ ان سے دوستقل چیز میں مراد لی جاتیں یا یہ ایک ہی چیز ہو ہ

مانوں تو ہ

اس نے کہا : جیساآپ نے فرمایا وہ بھی ہے سکتا ہے کہ کتا البسنت دونوں مرادہوں تواس وقت ڈووتھ لینیزی جائیں گل اور بھی احتال ہے کہ وہ دونوں ایک ہی ہوں۔ میں نے کہا : ان دونوں احتالات بی جوندا ڈ ظاہر ہے اس کا ما نتا اولی مجزر قرآن کو ہم

تلت، قرل الله عن وجل : لا وَاذْكُرُن مَا يَتَلَىٰ فِي مُيُوْتِكُن مِنَ اياتِ الله وَ الْحِكُمة وَالْحَالَة وَالْحَالَة وَالْحِكُمة وَاتَّ الله عَ كان لطيفًا خَيِ أُيلًا فأخبر انه ميملى في سيوتهن شيئان. قال ، فعد االقران شيئان. تتلى الحكمة ؟

قلت : إنماستى التلادة أن ينطق بالقران والسنة كما ينطق بها .

قال؛ فعذاه أبين فى أن الحكمة غير القران .

یں تہا ہے۔ موجود ہے۔

موج دہے۔ اس نےکہا ؛ وہ کہاں ہے ؟ میں نے کہا کہ النہ تعالیٰ (ازواج عطرات کوخطا ب کرتے ہوسے) فرماتے ہیں ؟ اوراد کرواس دقرآن) کوج تمہارے گھروں ہی بڑھاجا کہ ہے اور حکمت کو ، بے شک النہ تعالیٰ بڑا ہی مبر بان باخبرہے " اس آیت میں مثلاد یا کہان کے گھر ہی دوجیز وں کی تلا وت کی جاتی تھی ۔ تلا وت کی جاتی تھی ۔

اس نے کہا : یہ قرآن تو تلا وت کیا ہی جا تا ہے ایہ جلا شے کہ ایسکست کی تلاوت کیؤکر ہوتی ہے ؟

یں نے کہا : کا وت کے معنی یہ بین کہ قرآن اور سنت کوائی طرح پڑھا جا سے جراحی ال کوپڑھا جا آ ہے۔

اس نے کہا کہ پھرتو یہ اس بات کی واضح دلیل ہے کہ حکمت فرآن کے علاوہ ہی ہے ؟ اور تھے پرجیند سطروں کے بعد فرماتے ہیں :-

قال: مَامِن شَيُّ أُولُى بِنَا أَن تَقُولُه فِى الْحِكْمَة مِنَ أَنْ هِا سِنَةَ رِسُولِ اللهُ مسلى الله عليه وسلم له

" آخروه اس بات کا قائل ہوگیا کھنے " کی تفسیر میں ہما رسے سے اس سفیادہ ہم ر کوئی بات نہیں کہ ہم اسے دسول الشاصلی النّد علیہ وسلم کی سنت کہیں "

له كتاب الأم (١:١٥١).

اسى طرح امام شافعيٌّ اپنى ايك اوركتاب مين أن آيتون كوجن مين لفظ معكمت "مذكوري،

الرفي كي بعد الكفت بي كمان بي ب ف ف كما الله الكتاب وحوالقال ن و فكما لحكمة فسمعت ك أرضى من أهل العلم بالقرائب يقول: الحكمة سنة وسول المده مل الله عليه وسلم.

"الشرتعالى في كماب كاذكر فرمايا جر فرآن كريم ب اور" الحكة "كاذكركيا حس كي باريي بس في قرآن كريم كي ان علمار سي بي بي پندكر الهول اب فرماتي مناكر يحكمت سي مرادرسول الشملى الشرعليد وسلم كى سنت بسي "

اس کے بعداس کی دلیل بیش کرتے تھے تکھتے ہیں :-

لأن القرآن ذكر واتبعته الحكة وذكر الله منه على خلقه الحكمة وذكر الله منه على خلقه الحكمة والمكتاب والحكمة وشلم يجبز _ والله أعلم . أن يقال الحكمة هما إلا سنة دسول الله معلى الله عليه وسلم .

"اس لئے کہ قرآن کریم کے بعداس کے ساتھ ہی شعب حکمت کو ذکر کیا ہے اور النہ تعالیٰ نے لوگوں پر اپنے احسان کا تذکر واللہ کہ انہیں کہ اور احتمال کی تعلیم دی ہی کہ ایم اور حکمت کی تعلیم دی ہی کہ یہ اور النہ الم میں اور النہ اللہ علیہ وقلم ہی مراد ہے "

بعدائی اس کی دلیل بیش کرتے ہیں کرسنت رسول می کیوں مراد ہے ،۔

" اوربراس کے کہ حکمت کتاب الشرکے ساتھ متصل مذکور ہجرادر الشرتعالیٰ نے اپنے رسول کی اطاعت کو فرض قرار دیا ہج اور لوگوں بران کے حکموں کی اشباع کو وا حب کیا ہے لہذا بغیر کتاب المثر اور

بدرادي المادين بي مرح بي وفالت أنعامة ونة حكتاب الله وأن الله افتض طاعة وسوليه وحتم على الناس اتباع أسره نبلا يجون أن يقال لقول فهض إلا لكتاب الله

"اوران میں سے دبھن نے پرکہا کرتسام چیزی جوآپ نے بیان کی ہمیں ان کا القا انٹرنغالیٰ کی جانب سے آپ کے قلب مبادک یں کردیاگیا تھا اور آپ کی سنت ہی وہ حکت ہے حوالٹ تعالیٰ کی طرف سی مهروندصفات بعد تکھتے ہیں ار وسنعم من قال اگلتی فی دوعه کل ماسنَّ وسنته الحکمة التی اُکھی فی دوعه عن الله نکان ما اُکھی فی دوعه سندته

آپ کے قلب سبادک میں القامی گئی تھی ، لہندا جوجیز بھی آپ کے قلب سبادک میں القار کی گئی وہ آپ کی سنت تھیری ؟

ميراس" القارد بانى "كے شوت مي امام مروح نے حسب ذيل صربيت بسيروايت

کی سے 1-

" رسول النترصلى الشرعليدة ولم نے فرا ياكہ رُوح الآمين نے مير ہے دل جي برالقام كيا بحركہ كوئى ذى نفس اس وقت تكنبي مربے گا جب تك وہ ا پنا رزق پورا نركمے اس لئے درزق كے) طلب كرنے ميں خوبی سے كام لو "

اس كے بعدامام شافعی لکھتے ہيں ،-

له الرسالة (صدر)-

کہ الرسالۃ (ص:۹۳) کٹاب الرسالۃ کے شارح علامہ احد محد شاکر نے اس صریت کے طروق وُتون کے متحد شاکر نے اس صدیت کے طروق وُتون کے متحصیل کے ساتھ وکوکر ویا ہی ۔ ملاحظ ہو (ص:۹۳ تا ۹۵) ۔

اوركتاب" الأم "مين يقط إزبي كه :-

"اور بیشک بیکهاگیا ہے کہ جس تیزی قرآن کی حیثیت سے تلادت نہیں کی گئی اوراس کو حضرت جرشی علیہ السلام نے اللہ تعالیٰ حضرت جرشی علیہ السلام نے اللہ تعالیٰ کے حکم سے آپ کے قلب مبادک میں القار فرمایا تواس چیز کی جی آپ کی طرف دی موتی ، اور بیجی کہاگیا کہ چیز نکہ اللہ تعالیٰ نے آپ کے لئے بیٹم اورت وی محرکہ آپ مسیدھے داستہ کی طرف ہی رہنائی کرتے ہی اس لئے آگی بیچی ویا ہو کہ آپ دکھی چیزی) مسیدھے داستہ کی طرف ہی رہنائی کرتے ہی اس سنت قرار دیں ، اور دونوں مورتوں میں سنت قرار دیں ، اور دونوں مورتوں میں سنت قرار دیں ، اور دونوں مورتوں میں سے چیجی صورت ہوال ٹرقیا لی نے مخلوق

وقدة بل مالم يتل قراناً وإنها القالم بر بيل فى روعه بأن الله المعلى المعلى المعلى المعلى المعلى المعلى الله المعلى الله المعلى الله المعلى ال

پردونوں صور توں کی اتباع کولازم کردیا ہے اور نبی کریم صلی النہ علیہ وسلم جو حکم دیں یا جوسنت قرار دیں اس کے بعد کسی کوکوئی اختیاد باتی نہیں دیتنا اور النہ تعالیے نے بدوں برآی کی سنت کی اثباع صنرض کردی ہے ہے

ئیزسا بفترصفیات مین وی خفی کیجیت اوراس کا اثبات سے عنوان کے تحت ہم حافظ المسلم اللہ مناف کے تحت ہم حافظ میں المسلم اللہ مناف کے وی نازل ماللہ مناف کے اللہ تعالیٰ نے اپنے دسول صلی اللہ علیہ وسلم میردوقسم کی دی نازل

الوالة (م ١٠٣١)-

فرمانی اور ان دونوں کی اطاعت کو لازم کردی جنہیں کتاب اور حکمت کہا جاتا ہے اور حکمت سے باتھاق سلف سنت واحادیث ہی مراد ہیں جن ہرایمان لانا اور تصدیق کرنا تمام اہل کا ا کے یہاں متفقہ مستلہ ہے کے

اس فصیلی بحث سے یہ بات اچی طرح واضح ہوگئ کدان آیات میں حکمت کے لفظ سے سنت نبویہ برائد کا برعلمار متعدد ہیں کے اقدال سنت نبویہ براد ہے ۔ اب سنت کی اہمیت کے متعلق حیند اکا برعلمار متعدد ہیں کے اقدال ملاحظ ہوں ۔

علامہ خطیب بندادی المتوفی میں ہے کہ اسے چوڈ وہیں تو قرآن سے بنا وَ آو اسے جوڈ وہیں تو قرآن سے بنا وَ آو اُم می تمکی خص کے سا منے سنت بیان کروا ور وہ یہ کہے کہ اسے چوڈ وہیں تو قرآن سے بنا وَ آو اُم جان لوکہ وہ تو دہمی گھراہ ہے اور دوسروں کو بھی گھراہ کرنے والا ہے ہے اس کی وجریہ ہے کہ قرآن کریم میں ہے اور حدیث اس کی تغسیر وشرح ابذا جب تک قرآن کریم کے ساتھ حریث کو نہ ملایا جائے گا قرآن مجد سمجھ ہمین ہمیں آسکتا ، ظاہرہے کہ میں بلا شرح کے کیون کر سمجھ آل سکتا ہے ۔ جنانچ عبدالرجن بن مہدئ فرماتے ہمیں ،۔

د اَدَی کھانے پینے سے زیادہ صدیث کا مختارج ہے ، اور فرمایا کہ ؛ صدیث قرآن کریم کی تعسیرہے یہ

الرجل إلى الحديث أحوج منه إلى الأكل والشهب و المنافقة الأكل والشهب و المنافقة المنا

م سنت وترآن کی آئی محقاج نہیں جٹنا خودقرآن سنت کا محقاج ہے ہے صرت معول شائ ك محرم القرأات أحيج إلى السنة من السنة إلى القرأات كه

له كتاب الروح والع: ١٩٢١)-

يه سرقة علوم الحديث للحاكم وحميه ١) الكفاير وص: ١١) -

ي الكفاير في علم الرواية (ص ١٢١) -

اللقاير (ص:١١).

اكرقرآن كريم سنت نبوى اورحضورا فذس صلى الشرعليه وسلم كى تشريح كامحناج ندم وبليك ولا في اورستغنى بوتويم آيت لا رَائْزُلْنَا إِلَيْكَ الدَّيْكُ الدِّيْكِ لِلنَّاسِ مَانُوَّ اللَّهِمُ الب بولاء اس لتے ہمارا حدیث وسنت سے استدلال کرنا اور اس برعمل کرنا بعین الله (قرآن مجید) برعمل کرنے کے مرادف ہے ، اسی لتے جب طرف بن عبداللہ سوکہا ال سامغ صرف قرآن كريم بي بيان كيجة توابول نے صندمايا ، ر

والمنه سانسوي بالقن ألت المن فداك قسم م قراك كم علاوه كوتى اورجيز ولأولكن منويدس هو نهي جابة إلى بم توان كوجاتي بي ج أعلم بالقرأن مناك

. (اوروه دسول الشصلى الشرعليه وسلم كى ذات گرامي تحى) اور فود اكرم صلى الترعليه وسلم في حجة الوداع كيمو قعد مرجب سوالا كه صحابرام ك فطاب فرماياءان كونصيحتين كيس اوراحكام بيان فرمام توساته يمان كوبرايت

« خردارس لوکروتم میں سے پہال حارثیں وه ان نوگوں کو یہ باتیں بینچا دیں تومیاں خار نہیں ہیں اس لئے کہ مبیت سے (بعدثی)

الافليبلغ الشاهدمنكم العائب مرب سلغ أقص

لنے والے ہوسکتا ہے کہ اس وقت کے سننے والوں سے زیادہ مفاظت کرنے والے ہوں " بانحدامام بيهي فنرماتي ب

ولولأثبوت الحجة بالسنة اماتال صلى الله عليه وسلم

م اگرمنت سے جت ثابت مرح تی توحفوا اكرم صلى الشرعليه وسلم البض خطبه مي حافرن

الوافقات للشافعي (٧: ٢٧).

راحد (۱۱:۳۲ د۲۲) و (۵: ۲۲ و۵ و ۳۷ و ۲۹ و ۲۱) وغیره ، و (۲: ۴۸۹ و ۴۵۹) مستن دادی ۱۱ ۱۱ من بخاری لا ۱۲ و ۲۳ از ۱۳ و ۲۳ از ۱۰ و ۲۲ ها ۱۰ و ۲۳ ۸ و ۱۰ ۲۸ (۱۰ من سلم ۱۲ : ۱۰ و ۱۱) جائ تریزی لا ۱۰۰ از وج

كورى احكام ع آكاه كرنے كے بعديد فرماتے کہ تم میں سے جوحاضرے وہ غاً۔ كويراحكام بيونيا في كيونكربهت س وه نوگ چنهی صریت بینجانی کئی اس

فخطبته بعاتميم سشعان منأمر دينهم ، وألافليباغ الشاهدمنكم الغائب فركت سلخ أوعىمن ساح

سننے والے سے زیارہ یادر کھنے والے ہوتے ہیں ؟

سراس كے بعداما إستى نے يه مدست ميش كركے كر:

م النزتعا لي خوستس وخسرم ر كھامس شخص كوجوسم سيكولى بات منفا ويعراس كواى طرح بيونيا ورجس طرح اس نے نض الله ام أسمع مناحد الثيا فأداكا كماسبعه فهاب مبلغ أوعى سن سامع ليه

سنا مقاکیونکربیت سے وہ لوگ جن تک حدیث پہڑی اس وقت کے سننے والے وزیادہ

اس کی مفاظت کرنے والے ہوتے ہیں "

اس کے بادے میں تیصری بھی ک ہے کہ بیتواتر مینے ، اور بھراس کی شرح امام شافی کا

ان الفاظ میں نقل کی ہے :-

معجب حضور اكرم صلى الشرعليدوسلم نے لوگوں کوائی بات سنے اسے یادر کھنے اورودسرول تك اسير تحلفى ترغيب دى تومعلوم بواكداك ي کے دوسروں تک بہوسجانے کا حکم دیتے بر جس سے ان لوگوں پر جنہیں ہات ببہونچے حجت قاتم ہواس لئے کہائٹ کا فلاندب كالول الله صلاليثه عليه وسلم إلى استاع مقالته وحفظها وأدائها دلطىأنه لايؤسر أن يؤدى عنه إلاسا تقرم بهالعجة على س يؤدى إليه، لأنه إنمايرُدى عنه حلال يؤتى والمعيتب

المستداجر (۱: ۲۲م) و (۲: ۲۲۵) و (۲ : ۸۰ و ۲۸) و راه : ۱۸۱) نن داری د صابح د ۲۶) ن الداو و (۱۱۵۱۹) له ياديس مدينه متواتر شوت كاعتبار وقرآن باك كاطرح قطعي بوتى بوتى بوتان كريم كاثبوت مبى تواتر بي سابر

پیغام بود دمرون تک بہونی یا جائے گاوہ یا توکسی علال کے کرنے کا ہوگا ، یاکسی آرا کا سے بچنے کا ، یاکسی حد کے قائم کرنے کے بارے

وحدیقام ، دسال بیژخد در بعطی ، دنسیحة فی دمین د دنیا یله

ی ہوگا۔ یاکس مال کے بینے وینے کے تعلق بیادین ودنیا کے عاملات میں کوئی نصیحت ہوگی ہے۔ اک لیے صحائب کرام رہنی الٹرعنم احجعین ہراک وم لمحرمین کوشش کرتے تھے کہ قراکن وسنت مرکز دھیے عمل کرتے رہیں اور ان کو دوسروں تک بھی میہونچاتیں ، بس میں فکران کوہروقت

کر دہی مس در مے رہی اور ان و دومر وں مدی پہریا یں ، ن بہ سران و بردس کر رہتی تھی ، ذراسی فرصت کو میں وہ اس بار مے میں غلیمت جانتے تھے ، حضرت الوذر

ارى رضى الشرتعالى عندفرملتيميكد:

لورضعتم الصمصامة على هذكا وأشار إلى تفاة شم ظننت أف أنفذ كلمة سمعتها من النبى صلى الله عليه وسلم قبل أن ترجيز وإعلى الأنفاذ

" اگرتم اس برتلواریمی دکه دو (این گری کی طرف ان ار ه کریکے بتایا) اور پیم مجھے یہ توقع موکہ تہاں میرافیعیا کرنے سے پہلے میں حضور اکرم صلی النز علیہ وسلم سے شنی ہوتی کوئی بات اپنی زبان سے ادا

كوسكة بول توني ضروداس كوا داكر كے دموں كا "

اب ہم اپنے اس وعویٰ کے ٹبوت ہیں کہ حکمت سے مرادسنت ہے ، حدیدو قدیم فسرن ا اسا سرسے چند حوالہ جات ہرئے ناظرین کرتے ہیں ار

امام الوصعفر محدين جريط سرى المتوفى مناسم الكيت بي ب

معمکت کے بارے میں چیج قول ہما ہے نزد کی یہ ہے کہ حکمت الشریفا لیا کے ان احکام کے جانے کانام ہے جن کاعلم والموابين التول عندنا ف الحكمة أنها العلم بأحكام الله التي لابيرين ك علمها

مغتاج الجنة رصاف

- (د۳: من دادی است دادی (عن ۲۲:۱)

صرت رمول الشرعليه وكلم كے بيان كرنے اور بتلاف سيوتاب يااى تسمى دليل ے (جس سے ان کے المان انحفرت صلى الشعليدوسكم كاسنشار معلوم يوسكے "

الأبييان المصول صلى الله عليه وسلم والمعرنة بعساد مادل عليه ذلك من نظائرة إه \$ \$ \$ \$

ادر رورت تا بعی سے حکمت کی یفسیر قل فرماتے ہیں ،-

" اور حكمت مصنت الدين كاسم الرادب ؟ وبينى بالحكة السنن والفقه فالدين ته

اورسورة آلعسمران كى تفسيرس كصفي الم

وحكمت معرادوه سنت نوى وحركا اجرامالتُدتعالى نے سلمانوں کے لئے دیول الشصلى الشرعليدى لمكرز بانى كوايا اور آب نے اس کوان عبیان فرمایا ؟

ديينى بالحكة السنة النبوية التى سنحاالتهجل تناءه للثونين على لسان دسول التصلى الله عليه وسلم وبيانهلهم كه

علام محود بن عمير زمخشرى المتوفى مساهم لكفتي مد

المحكمة الش يعة وبيان الركعكا المستحمت شريعيت اوراحكام ومرعيما ع ع ا کیان کرنے کا نام ہے ہ

احكام شرعيه كابيان كرنانبى كريم عليه الصلاة والسلام كامنصب ب حبياكة يت كرمير" لتبين المناس مانن ل إليهم "كضن من اتنده آراب لبذا علام وختر کی مراد سی سنت بویری ہے ۔ چنانچ سورہ آل عمران کی تفسیریں مکھتے ہیں ،۔

- - تضیطیری (۲: ۲۲)-
 - تفیرطمبری (۱۰۸:۲)-
 - تفسيركثان (١،٩٠١)-

وبعلمهم الكتاب والعكمة "الدانبي تعليم دية بي كالصحمت أمى القرائن ودسنت كي ي المساخة المستندى المستندى المستندى المستندى المستوفى هذاته م مكتفع بي إر

" حکست نام اس تمام شریعت مودانت مونے کا حبی کی تفصیل پرقرآن مسکیم مشتمل ہے اوراسی لئے اسام شافعی دھدانشہ نے فرما یا کہ حکمت دسول الشہر صسلی الشرعلیہ وسلم کی منست کا نام پڑ" دس رہ دہ ل وأما الحكمة نعى العلم بسائر الشريعة التى يشتمل القران على تفصيلها ول ذلات قال الشا فعى رحمه المثه تعالى المحكمة هى سنة المهول على الشه عليه وسلم ك

علامه البحسيان محدبن يوسف عنرناطى المتوفى سيصح حضرت قتاده سي

سل کرتے ہیں :۔

الحكمة السنة وبيان المنبى | الشرائع ته اكم اودمقام پر مكيمتے بي د

وفى توله، والعكمة أى

السنة تبين ساف الكتاب من المجمل وتوضح ما

أبعم سالمشكل يقفع

عن مقادس وعن أعلاد

" حکمت سنت ا در نی کوی الشرعلیه ولم کے شریعیت کوبیان کرنے کا نام ہے ؟

" قرآن حکیم می "انحکة" جودارد مجایر (که آبایکو حکت سکھاتے میں) اس کے سخی ریمی که قرآن کویم میں جو مجل ہے سنت ہی کو میان کرتی برا درج سنگل ڈیمیم براس کی د مناحت کرتی ہے ا درجس مقداروشار

له تغییرکشات (۱: ۳۲۹) سورهٔ جعری تغییری (۲: ۵۳) پریمی بیجا الفاظ مخرم فرما ععمی ر

له تغیرکمبیر (۱:۱۰)-

له تفليرمبرالحيط (١:٣٩٣).

کاکٹا بادشی بیان نہیں ہوان کو بھاتی اور جو اُحکام قرآن میں مذکور نہیں ہیں ان کوٹابت کرتی ہے یہ

لم يتعرض الكتاب إليه و يثبت أحكامًا لم يتضمنها الكتاب له

حافظ اسماعيل بن كثيردشقي المتوفى المحيد ، كصفي إ-

" اور "محکمت کی تعلیم دیتے ہیں " تعینی سینی مسئت کی ہیمی حضرت حسن اور درقتا دہ اور مقاتل میں مقاتل میں حیان اور ابو کا وغیرہ کرنتھول ہے "

والحكمة لينى السنة متاله العس وتتادة ومقاتل بن حيان وأبومالك وغيرهم يم

حکت کی صبح تفسیرسنت ہی کیوں ہے ؟ اس پر اس دور کے شہور عالم شیخ احد صطفی راغی و ماں بشنی طالی سے م

نے حسب ذیل روشن ڈالی ہے ،۔

د حکمت سے مراد وہ علم ہے جواحکام کے ان امراد و منافع کے ساتھ ہو اجاس کے کہ استھ ہو ایس کے کہ استھ ہو ایس کے کہ انترکے دسول صلی الشرعلیہ دسلم کی سنت علی النہ کا در بیداس کے کہ انترکے دسول صلی الشرعلیہ دسلم کی سنت علی الدان کی وہ سیرت جو اپنے گھرس اور اپنے اصحابی کے ساتھ جنگ میں اور امن میں ، مسفر میں اور حضر میں ، تعداد کے کہ ہونے میں اور زیادہ ہونے میں پیسب کی سب قرآن کریم کے مجالات کی تفصیل کی سے قرآن کریم کے مجالات کی تفصیل کی ساتھ جات کو بیان کھنے مال کے لئے اور اس کے مبہات کو بیان کھنے کے لئے اور اس کے مبہات کو بیان کھنے کے لئے اور اس کے احتکام میں جو حکمتیں

"الحكمة " وهى العلم المقترك بأس اد الأحكام ومنا فعها الباعث على العمل بها و الباعث على العمل بها و ذاك أن سنة الهول العلية وسيرت ملى الله عليه وسلم في بيته ومع أمحابه ف السلم والحمب والسفر و الإقامة فى القلة والكثرة الإقامة فى القلة والكثرة جاءت مفعلة لمجمل الفرا مبينة لمسهمه كاشفة لما فى أحكامه من الأسرار و فى أحكامه من الأسرار و

له تغسيرالجسوالحيط (١: ٢٩٣)-

ع تغیرابن کثیر (۱:۱۹۸۱) الدرالنتور (۱:۱۹۱۱) تفسیر قرطبی (۲:۱۲۱) و (۱۸:۱۹) -

الدمنا فع بي ال كے ظاہر كرنے كے لتے ،اور اگريعلى رسمانى زموتى توحرون بيان كوديا ابل عرب كومختلف جاعتول اودفرقوق رمیں بلنے) اور جبل وعداوت سے الفت واتحا وا وراخوت كى طرف منتقل كرنے ا ورعلم اورسياست امم كيمتعلق تعليم وینے کے لئے کافی نرمونا ،اس لئے بی کریم صلى الشرعليه وسلم نے عمل كركے وكعاكر ايناصحاف كودين كاسمجين والابناديا اوراس كے اسراران كو شلائے اس وج سے وہ حکیم ، عالم ، عادل اور محصدار شخصیات بن گئے شنے کدان میں کا ایک فرد بڑی سے بڑی ملکت کا حاکم ہوتے بوسهاسس عدل وانصاف كوقاتم كرنيياتهاا ورامورداخله كوسنبحالثااد درست كرتاتها حالانكهاس فيقرآن كرم

المنافع ولولاهذاالإسشاد العملى لم اكان البيان كا فيرًا فانتقال الأمة العابية طورأشتات والفاتة والعداء والجعل إلى الأئتلاف الأعمر والتآخى وإلعلم وسياسة الأسم ؛ قالنبى صلى الله عليه وسلم وقف أصحابه علم فقه الدين ونفذاجم إلى سراء فكالواحكماء علماء عددلا أذكياء وت إن أحدهم كان وحكم المسككة العظيمة ولقيم فيصاالعدل ويجس الستة وصوله محفظات القابات الأسم ملكنه فقعه وعن indicted in

كالمجية وراسا معدي ياوكيا بونا تفاسكن دراسل وه قرآن كريم مجية بوسع مونا تعااوراس كم احكام

كح اسرارس واقعت مح تاتعا ؛

نکوره بالاتمام مفسرین کی تصریحات به بات روز روش کی طرح تابت بوگئی که حکمت سیسنت اولم اما بیف رسول الند (صلی الله علیه ولم) بی مراد بی ، اورلوگون پراسکی اشباع لازم وخرد ری براونظا کرکوکه اسال ای وقت به کمتا برحیکه سنت بهجی محفوظ برورنه دورنه برخفوظ بی بروالنه تعالی کا تا کا کا کو کروتیا .

له نشيرای (۱۲ ۱۹).

نبى كريم الملتين كيثيب التالي

التُدتبارك وتنعالیٰ ارشاد مسرماتے ہیں ہ

'' اورا تاری ہم نے تحدیر یا دداشت کہ تو کھول سے توگوں کے ساسنے وہ چیزجا تری ان کے واسطے تاکہ وہ غود کریں '' وَٱنۡوَلۡنَا اللّهِ السَدِّ عُرَ
 التُبَيِّن النَّاسِ مَا ثُنِّ لَ اللّهِمُ
 وَلَعَلَّمُ مُ يَتَفَكَّرُ مُونَ الْحُونِ الْحَالِيَةِ مَا يَتَفَكَّرُ مُونِ الْحَالَةِ مُ اللّهِ مَا يَتَفَكَّرُ مُونِ الْحَالَةِ مَا يَتَفَكَّرُ مُونِ الْحَالَةِ مَا يَتَفَكَّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَتَفَكَرُ مُونِ اللّهِ مَا يَتَفَكَّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَتَفَكَّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَتَفَكَّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَتَفَكّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَتَفَكّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَتَفَكّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَتَفَكّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَعْمَلُ مُنْ اللّهُ مَن اللّهُ مَا يَتَفَكّرُ مُونِ اللّهِ مَا يَعْمَلُ مُن اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلْمُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ اللّهُ عَلْمُ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ عَلَيْ اللّهُ عَلَيْ عَلْمُ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلَيْ عَلْمُ عَلَيْ عَلِي عَلَيْ عَل

اس آبیت کریم ہیں النہ جلالہ رسول اکرم صلی النہ علیہ دسلم سے خطاب فرم ارہے ہیں کہ ہم نے آب برقر آن کریم اس لئے نازل کیاہے تاکہ آب ان کے لئے اسے کھول کھول کربیان کر دیں ۔ مندرجہ بالا آبیت کریمہ میں ''الٹ ذکس ''سے قرآن شریعیٹ مراد ہے جیسے کہ آبیت :۔

" اوریہ دایک) سبادک ذکریے جیے ہم نے ادل کیا " وَهُذَاذِكُمْ مُنْكِالِكُ أَنْزَلْنَاكُ الْأَكْ

میں وفکر "عمراد قرآن کریم ہیں۔

شان وی سران کریم ده کامل وجاع ترین آسانی کتاب ہے جو تمام آسمانی سان وی سران سانی کتاب ہے جو تمام آسمانی سان وی سان میں تمام سابق انبیار کرام علیم السلام کے اساسی علوم کوجے کر دیا گیا ہے اور سادی دنیا کے انسانوں کوخواب غفلت علیم السلام کے اساسی علوم کوجے کر دیا گیا ہے اور سادی دنیا کے انسانوں کوخواب غفلت

حضرت على رضى الشرعندس مروى ب-

" فرماتے ہیں میں نے دسول اللہ صلی اللہ ما علیہ وسلم کو برفرماتے ہوئے سناکہ عنقریب

قال : أما إلى سعت رسول الله ملى الله عليه وسلم يقول إستكون

له الخل ، ۱۲

له الانسياد: ٥٠

ببت سے فتے ہوں کے بین نے عرض کیا: اس سے یخے اور شکنے کاکیاد است ہے ؟ أت في ارشاد فرمايا والشرك كتاب بص مي تم من يل كذر يوس الدرآ سنده آنے والوں کی خرب ہیں ، اور وجودہ کے لئے احکامات وفیصلے ، وہ حق وباطل عيى فيصلكرنے والا بر مذاق نهيں بيب له جزر کر حس کسی جیار وسرکش نے اسے جھوڑا توخدانے اسے بلاک وبرباد کردیا ۔اور جی ف اس کے علاقہ کہیں اور بدایت تلاش کرسے خدا استگراه كرفت كا رسي الشركي مضبعط ذى ب سی دار حکیم ب سی سیدهاداستی يب بي كوس كاور عافوابشات بي كي دا تى نىس بوتى . اورزمانون مى كارىنى بوتی ، اوراس سے علمار کادل نہیں بعراالد باربار پڑھنے ویانانہیں ہوتا ،اوراس کے عجائبات ختمنهي بوت رميى اياكلام بر كرحب ينون نے اسے شناتو يركي بغيرہ مره معكر "بي شك بم زعجيبة فرأن شناج " بى بے كرجواس كا قائل بوكا اس في كيك ا درس نے اس کے ذریعہ سے فیصل کمیا

فتن اقلت، وما المخرج منعا وقال وكتاب الله ، فيه نبأما قبلكم وخبر يبالعنكم رسكم ما بنيكم , هو الفصل لس بالعنال، حوالذي س تركه س جارقهه الله ، وسن ابتقى العدى ل عبرة أضله الله ، فعو حبل الله الممتين، وحو المكر الحكيم. وهوالعالط الستقيم، وهوالذي الاتنايخ به الأهواء ، والاتلتس به الألسنة، ولالشبع منه العلاة ولأيخلق عن كثرة المهدءو التنقض عجائبه ، وحوالذ لمستهالجن إذسعتهأن مَالِول الآلَسَمُعُنَاقُنُ أَنَّاعَجُمًّا مرالنى سقال بهمدق رس حکم به عدل، وسی بهأجى وسندعا إليه هك إلى من المستقيم له

ان داری دص ۲۵ ما مع است ترخی (۱:۲۱) ونحوه روی شن ابن مسعود کما فی المصنف لعبلیم دات (۱۲:۵ ۱۲ و ۲۷)-

اس نے عدل وانصاف کیا ،اور جس نے اس پڑھل کیا اسے احبردیاگیا ،اور جس نے اس کی طرف بلایا اسے سیدھے داستہ کی طرف ہوایت دی گئی ہے علامہ جسبلال الدین سے الاتھان فی علوم القرآک " میں اکھتے ہیں ،۔

معدين منصور محضرت عبدالدن المرتبي كم رضى الترتفائي عند سے روايت كرتے بي كم انبوں في فرايك و على كاكرنا جا براسي جي كرتمان كريم سيكھ لے اس ليے كماس سي اولين اور آخرين كى خبري بي الم ميقي فرملتے بي بينى احكام كے اصول اس بي موجود بي ۔ اور الم ميقي حضرت حسن موجود بي ۔ اور الم ميقي حضرت حسن رصالت سے روايت كرتے بي كمانيوں نے فرما يك الته تعالى نے ايك سوميارك بي وصالت كال الته تعالى نے ايك سوميارك بي رصيفوں بر بي كتاب كالملاق كيا كيا بي وأخرج سيدبن منصورعن الس مسعود قال: من أرار العلم نعليه بالقرأت فإن فيه خدر الأركيين والأخرين، منال المنهمة بعنى أصول الأحكام، المبيعة في بعنى أصول الأحكام، وأخرج المبيعة في عن الحسن قال: أنزل الله مائة وأربعة منها التوراة والإنجيل والزابورو النابورو النا

ذَبُوَّر ا ورفرقان حمید ان جاروں کتا ہوں میں جع کردئے بھیران میوں کہ ابوں کے عوم ہی مشرق صحیم ہی میں جع کر دئے "

عنون الیریکامل اورجاع صفات کتاب کوانشر تعالی نے رسول ادشرصلی انشرعلیہ وس پرنازل فرمایا بھرائپ کواس کی بمین (کھول کربیان کرنے ہکا سکم دیا کہ اس کے مقاتق و دقائق اسرار دھیم اورمشکلات ومجملات کی تشریح کریں اور انشرتعالی کی منشا و مراد کو اپنے اقوال وا نعا اور بیان کے ذریعے لوگوں کے سامنے ظاہر فرؤ دیں تاکہ لوگ اس پرغور و فکر کر کے اس کو مجمیں اس کے اوامر مرعمل کریں منہیات سے بیں اور را و نجات برجیج طور سے عمل بیرا ہوں ۔

له الاتقان (۲: ۱۲۵) علامه ابن ابي الغضل مرسى جي ابي تفسير اس طرح لكيتي مناحظ بوالاتقان (۲: ۲۱

ان وسنت كاليس من علق ميكيانسبت وتعلق ب عسوخوب عبد العيد كم كريم اور احاديث نبوير رعلى صاحبهاالصلاة والشليم اليس آليس مي وي تعلق سيجومتن ع میں ہوتا ہے ، قراک کریم متن ہے اور احادیث اس کی شرح ، قرآن شریف اجال ہو ا مادیث اس کی تفصیل ۔ یادر ہے کہ قرآن حکیم نہایت ورجہ فسیح و ملیغ ہونے کے باوج دخقر بھی ہے اس سے اس کے الوسمينا برخف كے بس كى مات بيس ہے ، بى كريم عليه الصلاة والسلام كوالترتعالى نے الدی تفصیل وتفسیر بیان کرنے کے لئے ہی مسبوت فرمایا ہے اور آپ نے دنسیامیں ب لاكراني قول وفعل دورتقرىر دبيان سكوتى) كے ذريد اس كي تيشريح كى اى تشريح السيف إورسنت ب حضرت عروض الترتعالى عندفرماتي ب معنقرب السيادك أني كي وتم موقران سيأتىناس يجادلون بشبقا كريم كے شنابات كے بارے من حكومي القران فخدرهم بالسنن يحقيم سنت كرزيدان كى گرونت كرزا فإن أصحاب السنن أعلم كيونكرسنت كي عالم مي كتاب التركوفوب بكتاب الله إله " 0" 25

یہات بھی یادر کھنا جا ہے کہ حضور علیہ الصلاۃ والسلام کا بربیان اور تشریح سب بن بی بی بیات ہے یا۔

ہر حسیبا کرہم سابق میں ہی بیان کریکے ہیں) اوشاد باری تعالیٰ ہے :
وَ مَمَا أَشَعْلَ عَنِ الْعَوَى اِنْ اِللَّهِ مِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ مِنْ اللَّهُ مِنْ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللّه

اورسورة قيامي ارتفادم

له مندواري (ص ۲۸) شرح السنه للبغوى (۲۰۲۱) اصول التشريع الاسلاى (ص ۳۵) -

النجيم : ٣

اس نے دسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کا بیان اللہ تعالیٰ ہی کا بیان ہے ۔ ایک اورآ ہے ۔ ایک ایک اورآ ہے ۔ ایک اورآ ہ

ا كي اورآيت بن رسول الشرطى الترعليه وسلم كيفعل كواين فعل سي تعبير فسنرمايا : وَمَنَا دَمَيْتَ إِذْ دَمَيْتَ وَلْكِنَّ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ الله الدَّنَّةُ مَنْ عَلَيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلِيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلِيْ اللهِ عَلَيْ اللهُ عَلِيْ اللهُ عَلِي اللهِ عَلَيْ اللهُ عَلِيْ اللهُ عَلَيْ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْ اللهُ الل

اوردسول الترصلي الترعليه وسلم كي زباني سي كبلواويا ،-

الم المنافرة المنافر

إِن أُشِّعُ إِلَّا مَا يُوْعِى إِلَى آلِكَ الْخَاتُ إِنْ عَمَيْتُ مَنِي عَلَانِهِ عَلَاكُم بَرُم عَظِيمُ فَمَنْ أَعْلَمُ مِثَنَّ نِهِ الْفَرِي عَلَى اللهِ كَذِبًا وَتُكَنَّ بَعِيدًا يَا يَدِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجُمِ مُوْرِت إِلَى اللهِ اللهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجُمِ مُورِت إِلَى اللهِ

اس اکیت کرمیری مضورا قدس صلی الشرعلی وسکم کی ترجانی گی تی ہے آپ فرماتے ہما میں اسی چیز کی اتباع کرتا ہوں جس کا مجھے سم ملتاہے کوئی کام میں اپنی طرون سے نہیں کرتا ہا

له القيام : ١٩

العنق العنة

له الانعنال : ١١

الله يونس : ١٥ تا ١١

المن الترتعالی کے حکم کی اتباع کو ملی فا رکھتا ہوں فواہ وہ حکم وحی بلی کے ذریعہ دیاجا ہے۔

اسٹی نے بہا سے کے بعد آنجنا ب علی الشرعلیہ وسلم نے اسے ایک اور عظی دلیل سے مجھایا کہ

الرقی ہے ، اس کے بعد آنجنا ب علی الشرعلیہ وسکرا الالیکن کمبھی کسی فرولشر مرچھوٹ ہولوں جو میرا

الرقی ہے اس بات کا کس طرح اسکان ہو سکتا ہے کہ میں اس ذات برحق برجھوٹ بولوں جو میرا

ارتیام خلوق کا پیدا کرنے والا ہے حالانک میں یہ بھی جانتا ہوں کہ جو شخص بھی النتر تعالی کی طون

اس مارے نہیں بات کو منسوب کر ہے گا جو اس نے نہی ہو تو و وسسب سے شرا ظالم اور مجرم ہے جو میں فاح نہیں باسکتا ہوں ۔

مارے منسوب کر سکتا ہوں۔

مارے منسوب کر سکتا ہوں۔

سورة احقات مين فرماتي بي ١-إِنْ آلِيَّ الْكُمَّ الْتُوَى إِنَّ فَرَمَ اللَّهِ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللِي اللَّهُ مِنْ اللِيلُونِ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ الللِّلُونُ اللَّهُ مِنْ الللِّلُونُ اللَّهُ مِنْ الللِّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ الللْلِيلُونُ اللَّهُ مِنْ اللْلِيلُولُ اللَّهُ مِنْ الللِّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ الللِّلِيلُولُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللْمُنْ اللَّهُ مِنْ اللْمُنْ اللْمُنْ اللِمُنْ اللْمُنْ اللِمُنْ اللَّهُ مِنْ اللْمُنْ اللَّهُ مِنْ اللْمُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مِنْ اللْمُنْ اللْمُنْ اللْمُنْ اللْمُنْ اللِمُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُ

اَنَا إِلَّانَ نِيْنَ مَّيْمِ مِنْ وَ اَلَّا الرَّمِيرَاتِهَامِ بِي جِهُول كُرُوْرَ مُنادِيَّا ؟ ايك اور آيت كريمين اس بات كى كه آپ وحى البَى بى كوييان كرتے بي اس كے خلاف يس كرتے ان الفاظ كے ذرائع توثيق كى تى ہے ، اور شادہے :-

رَكُوْتَقُرَّ لَى عَلَيْنَا بَنِضَ الْأَقَاوِيْلِ لَاْ خَذُنَ المِنْهُ بِالْمَيْنِينِ تُسَمَّةً لَاْ خَذُنَ المِنْهُ الْوَتِيثِينِ تُسَمَّةً لَمْ طَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيثِينَ وَ *

" اوراگریه بنالاتیم پرکولی بات تویم کچڑ بیتے ان کا دا سنا استامیم کا شد ڈالتے ان کی رگب گردن "

علامه ذمخشرى المتوفى مستعهم اس آيت كي ذيل من لكھتے ميں ا-

" مطلب یہ ہے کہ اگردہ ہماری طرفت کسی اسی چیز کو منسوب کرویتے جو ہم نے نہ کبی ہوتی توجم انہیں با محارفتل کر دیتے والمعنى لوادعى عليناشيئًا لم نقله لقتلناه صبرًّا كما يفعل الملوك بمن يتكذب عليهم

الاحتات: ٩

الحاقر ١٣٠ تا٢٦

جے کہ ادشاہ ان لوگوں کے ساتھ کرتے ہیں جوان برجوتاالزام فكاتيب تأكر فوراً ان ك ابنے عصر کا انتقام لے س، تو" متل صر" ر بچڑ کرفتل کرنے کا نقشہ اس لئے بیٹی کیا

معلجلة بالسخط والانتقام: نعودتتل المعريم ورته ليكان أهول رحوأن يؤخذسه وتضب تبته له

كيا تاكهاس منظرى بولناكى كاأطبار بوسكے اور اس قتل كى صورت يہ بوتى ہے كرم كالح تحد يحوكراس كى كردن اڑا دى جاتى بيے ؟ ایک اور حگرارت در

"آپ کبرد کیے کوی تودی کے دراجے

اس لے نتیجہ یہ نکلا کہ حدمیث بھی خدائ کا حکم ،اس کی وحی اورمصدرتشریع ہی حقیقت یہ ک كمآنحفرت صلى الته عليدوسلم كاتشريج وتوضيح كوسامن ركع بغيرقرآن كريم كوسمجه فااوراس كم مراد کوسپنجنانامکن ہے ، اہل عرب میں مادری زبان عربی میں اور نہایت فصیح وہلیج تھے وہ بھی قرآن كحاصل مطلب كوسمجينه سي بساا وقات قاصِررت تق اورانهين اس كيسمجيزاوراس برعل كرنے كے لئے حضور اقدى صلى الله عليه وسلم كى طرف مراحبت كى ضرورت باقى تھى اس كة حضور اكرم صلى الترعليه وسلم كوتشريح كاحكم التدتعالى نع آيت كريمة لتبين للناس ساننول المهم "كي وربيرواتها -

مدیث کی کتابوں میں آپ کو بہت سی البین ایس لمين في كرصحابكرام رضى الشعنيم اصعين في

ایک آیت کاظاہری مطلب محااور اصل حن تک ان کے ذہن کی رساتی نہوسکی ہے آ تحضرت صلی الشعلیہ وسلم کے بتلانے سے اس کا صحیح مطلب ان پرواضح ہوا ، نمونہ کے طور بہاں ہم اس

ا تقیرکشان (۳:۲۳)-

له الانسبيار : ٢٥

للدلى دېدر شالين ذكرك د ين به ارشاد بارى تعب الله يد و ارشاد بارى تعب الله يد و ارشاد بارى تعب الله يد و ارشاد بارى آمنوا وَكَمْ يَدْسُوْ النِينَّةُ وَاللَّهُ مَا الْأَمْنُ وَ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللِّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللِهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللْلِمُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مُلِمُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُولُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللَّهُ مُنْ اللِلْمُ اللَّهُ مُنْ اللْمُنْ اللِي اللَّهُ

'' جولوگ بنتین نے آئے اور نہیں سلایا آبر نے اپنے مقین س کوئی معتصان انہی کے وا بچول جی اور وہی ہیں سسیطی داہ ہر ؟ بچول جی اور وہی ہیں سسیطی داہ ہر ؟

حب آیت کریم مندرجه بالانازل مونی توصحابه رضی الشعنیم جنین می سخت اضطراب بیدا ال ورحضور انورصلی الشرعلیه وسلم کی خدمت میں حاضر موکر عرض کیا:

بارسول الله أين الأيطلم نفسة " يارسول الترم مي كون مي في الم

حضورعليدا لصلاة والسلام فانكا اضطراب ديكه كرانهي تسلى دى اورفرمايا ١-

" رمطلب برسی وتم بیان کرتے ہوا بلکہ مطلب برسے کہ اوہ ٹوکٹ جنیوں نے اپنے ایران میں شرک کی آمیزش بہیں کی مکیا تم نے لقمان کا قول نہیں سے ناحیکہ وہ آنے بیٹے کونصیحت کرتے ہوئے کہ درہوتھے لين كما تقولون لم يلبسوا إيمانهم بظلم بش ث أركم تسمعوا إلى قول لقان لأمنه رهو يعظه ورايتي كَالْتُشُوكُ بالله إنّ البَّرُكَ كَالُكُمُ عَظِيمٌ المُ

" اے میرے بیارے بیٹے تم خواکے ساتھ کی گوٹر کے مستھیموانا بے ٹنک ٹرک بڑا فلم ہے؟
عود کیجیئے ان حضرات نے "فلم "سے اس کا ظام بری مطلب ہمجھا اس لئے بریشان ہوگئے پو خدرت صلی انڈ علیہ وسلم کے بیان فرمانے سے جوٹی آیا کہ پہماں فلم سے برطرح کا ظلم مراد نہیں اسپ بڑا ظلم مراد ہے جوشرک ہے ۔

الانعام : ٢٨

- (TAL , MEN: 1) USIGE

· مصح بخارى دا : ١٠ ٢٠٨ م ١٠ ٢٠ ١١ معنى مي صحيح بخارى شراعي مي ايك الدوايت بي آتى بولا حظ بو (ا: ١٠) -

حضورا قدس صلی الشرعلیہ وسلم نے فرمایا کہ قرآن کریم کی اس آست ہیں حساب سے مرادع ض ب یعنی استخص کے سامنے صرف اثنا بتلادیا جاسے گاکہ یہ مہارے اعمال تصے ور مذہب سے حساب یوجید کھیے میوگئی وہ ملاک ہوجا سے گائے ہے

سم _ اسی طرح جب یہ آیت نازل ہوئی ص میں اللہ تعالی نے جاندی اور سونے کوجے کرنے او اس کو خررج نذکر نے دالوں کو یہ کہ کرسخت عذا ب سے ڈدرایا کہ :-

مرد در بولوگ گارگردگھتے ہیں سو اا در جانوی ادر اس کوخرج نہیں کرتے الشرک داہ می سوان کوخ شخبری شنادے درد ناکٹ اب کی جس دن کہ آگ دہ کا دیں گے اس ال میردورن نے کی بیمردا فیس گے اس سے ان کے میردورن کی بیمردا فیس گے اس سے ان کے ما تھے اور سپلو اور پیلیم اور کھا مقا اپنے یہ ہے جوتم نے گارڈ کرد کھا مقا اپنے داسطے یہ

توصحابكرام رضى الترعنهم اجعين سخت فكرمند مركئة اورمانهول في حضور اقد

له الانتقاق ١٠١١ ما

ته صحیح بخاری (۱: ۲۱) ان دونوں واقعوں کی جانب علامہ بردالدین ذرکشی المتوفی سیست جھاپی کیا "البرهان فی علوم القرآن " (۱: ۱۲ و ۱۵) میں اجا لاً است اره کیا ہے۔

م التوب المحروم

المال عليه وسلم كى غدمت على حاضر بهوكراس برليبانى كااظهاركيا ،آپ نے ان كواسى
الى سے نجات ولائ اور فرماياكر جب تم اس كى ذكوة برسال كال دو گے تو بچروه كرنهيں
الى الله بالكل پاك صاف بوجائے گا جنانچ اسام بخارئ المتوفى لا على هذا بي سيح عي الله بالكل پاك صاف بوجائے گا جنانچ اسام خارئ المتوفى لا على هذا بي سيح عي الله بالك باب قائم كيا ہے " باب ساأ دى دكات فليس سكنز "اور بچراس كے الله مناسلة بالله بياله بياله بياله بي الله بياله بي الله بي الله

مضرت ابن عمر شنے فرمایا کہ جس نے اسے خزا نہ بناکر دکھا اور اس کی زکاۃ نہ دی تو مطرت ابن عمر شنے فرمایا کہ جس نے اسے خزا نہ بناکر دکھا اور اس کی زکاۃ نہ دی تو مال اس کے لئے بلاکت کا سبب ہنے گا۔ یہ اس وقت کا حکم ہے جب زکوۃ کا حکم نازل سے مالے اسٹر تعالیٰ نے زکاۃ کا حکم دے دیا تو النٹر حل شانۂ نے زکوۃ کومال کے مالے کے اسٹر تعالیٰ نے زکاۃ کومال کے

الف كاذربعد بناديا يه

امام الردا ورخستانى المتوفى هئلة صحفرت ام سلترضى الترتعالى عنها مع نقل

كنت ألبس أرضاحاس زهب قلت بارسول الله أكنزهو؟ فقال: ما بينغ أن تؤدى ذكاشه فن كى فليس بكنز بيم

" بیں سونے کے پاذیب بینا کرتی تھی اس نے دسول الشولی اللہ علیہ وسلم) سے پوھیا کا کیا پہنے کنزیں داخل ہے ، آپ نے فرمایا کہ جرمال زکوۃ کے نصاب تک پہنچ گیا اور تھیر

اسى دُوْة اداكردى كى توده مىكىنى بنهين داي

التوب : ۲۳

ع بخاری (۱۱۸۱) و (۲: ۲۲۲) ابن ماجر (ص : ۱۲۸) -

سنن الي دافد (۲۱۸:۱۱) ـ

" ادر توری کرنے ولے مردادر چوری کرنے دال عورت کے اہم کاٹ ڈالو ؟ ا — وَالْسَّادِثُ وَالْسَّارِعَةُ فَاتُطَعُوْا السَّارِعَةُ فَاتُطَعُوْا السَّارِعَةُ فَاتُطَعُوْا السَّارِعَة

لیکن اس کی کوئی تفعیل نہیں کہ کس مال کے اور کتنے مال کے چوری پر ہاتھ کا طابعا گا ۱۰ ور پھر کا ٹاجا سے گا توکہاں سے کا ٹاجا سے گا ۶ ان سب امور کی تفصیل احادیث کا ذریعہ حضور اکرم صلی افتہ علیہ وسلم نے بیان کی ہے ۔ علامہ خطیب بغدادی المتوفی مثلاث ہم مکھتے ہیں ،۔

المنظامراس آیت سے پیعلوم ہوتا تھاکہر چورکا کا تھرچوری کی بنار پرکاٹنا ضروری ہو خواہ کم مال چڑا ہو یا زیادہ کین سنت بوی نے اس کی وضاحت کردی کہ اس سیعف چورمراد ہیں اور وہ وہ ہم چنبوں نے آتا ال چوری کی قیمت ڈیج دینا دیا اس توزیادہ ہو اور جس نے اس سے کم کی چوری کی ہو تو اس کا کا چھر نہیں کا چا جا سے کم کی چوری کی ہو تو تكان ظاهر حذا القول إدب القطع على كسارت بسرا قته كثرت أو تلت حق دلت السأوت أن المراد بد بعض السأوت وهوس بلغت سرقته في القيمة دينا و فعاء كاد أماس لم تبلغ تية سرقته حذا القلم في المرتبط فيه من قته حذا القلم في المرتبط فيه من المده القلم في المرتبط فيه منه المده ال

TA: ofth d

له الكفاية في علم الرواي (ص ١٢) -

مدحكم كرتا بيتم كوانش تبارى اولادك ى يىكداك مردكا مصر بي بالردويورون کے معراگرم دن عور تمی ہی ہوں دوی زیادہ توان کے لئے ہے دو تنہائی اسال سے جوجیو درا ،اوراگراک بی بوتواس کے لئے آدھا ہے وا ورمیت کے مال باج كوبراك كے التادونوں مي سے چھا صر ہے اس مال سے جوجیو وامرا اگرمیت اولادی اوداگراس كى اولادنىيى ا دروارىن يى ا ك كاباب تواسك الكاتبان حصبي بظا ہراس آیت سے معلوم ہوتا ہے كه بروالداينے بيٹے كا وارث بوگاا وربر بٹیا اینے بار کا ،لیکن سنت نبویہ نے اس كى تشريح كى اور بتلايا كداس سے دہ بات يظ مراد مي جي كادين ايك موسكن اكردين الك الك بوتويه وراشت سے محروى كا سبب بن جاسے کا ۔ الادسی سنت ہی کے مطابق علی ہو تاجلا آرا ہے "

توميتكم الله ن ولادكم للتنكي المُنتَّةِ الْأَنشَيْنِ وَإِنْ كُنَّ المَّارِّفُونَ الْمُتَيِّنِ مُلَّفُنَّ الْمُثَا حَاثَمَ كَ وَإِنْ كَانَتُ وَاحِدَةً مَلْعَاالنَّقِيْنُ، وَلِأَبِوَيُهُ لِكُلِّ داجه تِنْهُ التُّنُى مت الكُ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَكُ فَإِلَى لَمْ يَكُنُ لَّهُ وَلَدُّ وَقَدِيثَهُ ابْوَاءُ مَلِأُمِّهِ النَّلُثِ لَهُ الكانظاهم الآية بدلأن الدالدي شولده وكل مولودين خوالدياحتي حاءت السنة بأن الماد دلك مع الناف الدين بن الوالدين والمولودين، وأماإذاختلف الدينان فإنهمانع سالتواري ، واستقر العمل على سا وردت به ألمينة نى ذالك كيه

11 : - | - |

الكفاية (ص ١٢ و١٢).

مديث من آنام المؤمن و من المؤمن كا وارت المؤمن كا وارت المؤمن المؤمن المؤمن المؤمن كا وارت المؤمن كا وارت المؤمن المؤمن المؤمن كا واركا ي

اس صدیث نبوی نے ایک عام قاعدہ بتلادیا کہ اختلاف ادبان در ابنت سے محرومی کا سبب ہے ۔ یہ بات اسان نبوت کے ذریعہ بواسطہ دی خفی ہم کو معلوم ہوئی در نہ کہ البت سبب ہے ۔ یہ بات اسان نبوت کے ذریعہ بواسطہ دی خفی ہم کو معلوم ہوئی در نہ کہ البت میں بنظا ہر یہ قیدنہ بی تھی ،اھل فہم المصاف فرمائیں کہ کیا اس تفصیل کے بغیر قرآن باک کی منشار کے مطابق عمل ہوسکتا تھا ۔
ان آیات پر خدا تعالیٰ کی منشار کے مطابق عمل ہوسکتا تھا ۔

اسی طرح آپ نے ارشاد فرمایاکہ " قاتل کو دراشت ہیں مے گی ج حالانکہ آبیت میراٹ میں اس کاذکر مہیں ہے۔

٣ -- اسى طرح وضور كاحكم ان الفاظيس نازل بوا :-

رُ المَّدِيمُ المُّونَازُوَوَ وَ مَدِيمُ الْعُونَازُووَ وَ مَدِيمُ الْعُونَازُووَ وَ مَدِيمُ الْعُونَازُووَ وَ وَمِدِيمُ الْعُونَازُووَ وَمِدِيمُ الْعُونَارُووَ وَمِدِيمُ الْعُونَانُونَ كَالِاللَّهِ مِنْ الْمُلْفِيمُ الْمُلْفِيمُ الْمُلْفِيمُ الْمُلْفِيمُ اللَّهِ الْمُلْفِيمُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ

اب نبی کریم علیرالصلاة والسلام نے یہ بتلایاکہ منہ دھوتے میں کلی کرنا اور ناک میں پانی ڈالنا بھی شامل ہے اور فرمایا ،۔ پانی ڈالنا بھی شامل ہے اور فرمایا ،۔ الڈ ذنان من الس اس بھی سے میں سرمیں داخل ہیں رہنوا سرکی طرح

لے منداحد (۵: ۲۰۱ و ۲۰۲ و ۲۰۱ و گاب البعض دوایاتی " مؤمن " کے بجائے سلم " کالفظ وارد ہے۔ کے منداحد (۱: ۲۹) منن دارمی (ص ۲۰۳) سنن ابی داور (۲: ۲۲۸) ۔ کے "المائزہ :۲

کے سنت ایی طور (۱۸۱۱) جا تع ترمذی (۱۱۱۱) منت این ساج (ص ۲۵) -

اور بیمی بتلایا کہ اگر موزے بہنے ہوں تو یا وَں پر سے کیاجا سکتا ہے ور نہان کو دھویا ماسے گا ، اسی طرح جن چیزوں سے وضو گوٹ جاتا ہے اور جن سے نہیں کوٹستاان کی تمام تفصیلاً ما گاه وشبرما یا ۔

الشرتعالى فيردول كودودو ، تين تين ، جارجارعور توى سے شادى كرنے كى

ا مازت دی ، وشرمایا در

" قائل كراوي ادر عور تس تساسند آئين دو دوغين مين حار يا

نَادُكِكُوْا مَا لَمَاتَ كُمُّ مِينَ الِنْسَاءِ مَثْنَىٰ وَثُلَافَ دَرُبَاعُهُ

اس سے یہ تو معلوم ہوگیا کہ جارہ بیاں دکھنا جائز ہے دیکن اگر اس سے ذیادہ ہوں تو کے متعلق نبی کریم ملی انٹر علیہ وسلم نے وضا حت فرمانی کہ جس کے پاس چارہے زائد ال بول ده مارے زائر کوط الاق ریدے ہے

نبی کریم علیہ الصلاۃ والسلام کی اس تشریع و تبیین کے بارے میں علام سیوطی حضرت عمان

يت صريف كى ايك دليل

ل مین کادرج ذیل وا قعدنقل کرتے ہیں ،۔

أخرج البيصقى بسنده عن شبب بن أبي نصالة السكي أنعما إن بن معين وفوالله تعالى عنه ذكر الشفاعة وفقال وجل من القوم يا أبانجيد إنكم تحدافونا بأحاديث لم نجد لما أُملاً في القال

م امام سِنْقُ ابْح مسندے شبیب بن ال نضائه ے نقل کمتے ہیں کہ حضریت عمال ابن حصين دخى النُّرتعالیٰ عنه نے ایک مرتبه شفاعت كاتذكره كياتوحا فريني سرا كم يتحفى في كماكداس الإنجيد (مفق عران كاكنت عاآب حفرات ببت سى ايى موشى بيان كرية بي جن ك المل

اه انسار: ۳ که مسنداحد (۲:۲۲) سنن الی داقد (۱:۲۰۲) وغیره

قرأن كريم لي ملي نهين التي اس يرفوت عمران كوعف أكيا اورآب ني الشحف سے فرسا یاکہ کیا تم نے قرآن کر بم بڑھا ہ ال خيرالي الشي ني فرماليكي ت اسى ير والصاع كرعتاء كى نمازس عاد ركعتى بي اورمغرب كي تين اور فحبر كى دوا ورظررعمركى مارجاد ركتيني التعنف جماب وياكرجي نهيس بحضرت عراث نے فرمایا کہ پھرتم نے یہ تمام تفصیل کس ک ماصل کی جکیایہ تم نے ہم سے نہیں سکھی اوربم في وسول الشرصلي الشرعلي والمس عامل کی مکیاتم فے قرآن کریم میں پڑھا سے کہ ہرجالیں عری پر ایک بحری داجب بوكى اورات او تولى يرة أيها اور اتنے در محول س باد اکرنا بوگا ؟ استغض نے جواب میاکہ نہیں ،حضرت عراق في ميرفرما ياكمتم في يعلكس عالكياء كياتم في يعلم بم سے صاصل بين كيا اور بم نے اس کورسول الشرصلى الشرعليروكم سكسا بي نيزآب في فرماياككياتم في وَلَأَن كريم من أيت كرير" وليلوفوا بالبيت المتيق " يعنى فانكس كاطوات كرنيكا

فغمسهم أن وقال للمجل ا ترأت القرأن ؟ قال العم ، قال فعل وجدت فيهملاة العشاءأ دنعاً ووجدت المغرب ثلاثأ والغداة كعتين والظهر أُدُبِعًا والعص أُربِعاً ؟ مثال: لا، قال، نعن س أخذتهم ذلك وألستم عناأخانتسء و أخذنا كاعن رسول المتمصل الله عليه وسلم ، أوجرتم نيه س كل أربعين شاةً شاة، وفى كاكذاف وأكذاف كاكنادرماكذا ؟ قال الأ قال، فعن من أخذتم ذلك ألستمءنا أخذتموه وأخذناه عن النعب ملى الله عليه والم وقال: أوجدة م فى القأن: « وَلُيَظُونُولُ بِالْبِيْتِ الْعَيْتِيْنِ» أوجدتهم فيه فطوفولسبعيًا واركعوا ركعتين خلف المقام، أصعداتهم ف القرال الاجلب ولاحت ولأشغار

فالإسلام، أماسىتمائله تعالى قال فى كتبه الكفا أ تَاكُمُ النَّسُولُ نَخُلُونُهُ وَمَانَهَاكُمُ عَنْهُ فَالْتَعَفُولُ) قال عمان: فقد أخذنا عن رسول الله مى الله عليه وسلم أشياء ليس مكم بها عدم عم

ملم پا یا ہے بھرکیا اس میں یہ بھی پا یا کہ سا مرتبہ طواف کرنا ہوگا اور مقام (مقام ابھی) کے بھیے دوگا نہ بھی پڑھنا ہوگا کیا تم نے قرآن کریم میں یہ کم بھی پا یا ہے کہ سلاجلت و لاجنت ولاشفار نی الرسلام " کیا تم نے انڈر تعالیٰ کواپی کما ب میں یہ فراتے نہیں میں اکا کہ جو تہیں رسول دے اس کو

اے لو اور حس سے بازر سنے کو کہے اس سے باز آجا و " اس کے بدیر فرت عمران نے فرمایا کہم نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے بہت می الیسی چیزی حاصل کی میں جن کاتم کوعلم تک بہیں ؟

* مشراحد(۲: ۱۱۲ و ۱۲: ۱۲ و ۱۹) ابودا در (۱: ۲۲) ترمزی (۱: ۱۳۴) واللفظال ر

ا۔ جلب ۔ ذکاۃ میں طب کی حودت ہے ہے کہ ساعی (ذکوۃ وحول کرنے والا) جب ذکاۃ لینے آتے تواہک حجّہ ڈیرے ال ہے اور لوگوں سے اپنے پاس اسوال ذکوۃ مشکا سے اوداسی حبگروحول کرے ۔ اس کی مالعت کی گئی اود سے دیاگیا کہ ذکاۃ لوگوں کے پاس جاکر وحول کرنی جاسعتے ۔

گھڑد وڈ میں جلب کی شکل یہ ہوتی ہے کہ انسان اپنے گھوٹے کے بیچھ بیلے اور اسپھیھے سے جینے جلاکما ور ڈانٹ کرتیز جھاگئے پرچہود کرے اس کی بھی ممانعت ہے ۔

که ذکارة می اس کی صورت بر ہے کہ مالک، اپنے سال مولیٹی کو اپنے مقام مرکبی دور جگیجا سے تاکہ ساعی کوزگڑة وحول لے کے لئے بیج نیخے میں شقت ہو اس کی مانعت کی گئے ہے۔

اودگھڑد وڑ میں اس کی صورت ہے ہے کہ اپنے گھوڑے کے ساتھ دوسرا گھوٹا ادکھنا تا کہ جب دہ گھوٹرا تھک میں ہے۔ اس کے ساتھ دائے گھوٹرا تھک ۔ اس کی البحار : حل ۲۰۰ و ۲۱۲) ۔

اس شخار ۔ زیاز ہم المیت میں ایک ہم کا نکاح ہوتا تھا جس کی شکل پر ہوتی تھی کہ ایک خض دو مرشے خض سے ایک آئے ہم کے ساتھ اپنی بھی میں ایک ہوتا تھا جس کی شکل پر ہوتی تھی کہ ایک خض دو مرشے خض ساتھ اپنی بھی میں ہوتا تھا ہے گھوٹر کے اور کرشتہ داد کا نکاح بلائم کر کرد و میں گھوٹا کی کانکاح بلائم کر کرد و میں تھا رہے ساتھ اپنی بہن یا زیر کے خالت الرکی یا کسی وشتہ داد کا نکاح بلائم کر کرد و دی گا ، گویا ایک اوکی (بقیجوانٹی ہوئے آئن و)

علام قطبی اپنی تفسیرس فصطرازیس،

ووحضور اكرم صلى الشرعليد وسلمكا بيات دو قسم كاب كماب الترمي كسى جيز كالذكره ا جالاً ہو آت اس کو تفصیلاً بنائر صے کہ یا نیخ نمازوں کی تفصیل کدان کے اوقات وكوع دسجمه اورد عكرتمام احكام كنفعيل سے آب نے آگاہ فرمایا ، اور جیسے کہ آئے ذكوة كى مقدادكوبيان كيااس كے وقت كو بتلاياا وربيكس مال مي سے ذكوۃ ليك كى واورآب في ع كالحكام ومناسك كي تفعيل بتلائي حيناني آنحضرت صلى التر عليه وسلم في الا فرمايا تواعلان فرايا كر" تجم عرفح كم مناسك اوراحكام كم و" الدادشادفرما ياكة نمازاس طرح يرها كروص طرحتم فيجع نازراعة د کھا ہو "د بخاری نے سکی تخریج کی ہی) امام اوزاعي محضرت حسان بن عطيرى

شم البيان منه صلى أمله عليه و سلم على ض بين بيان لمحمل فى الكتاب كبيان م الصلوات الخمس نى سرا تستهار سجودها ودكوعها وساته أحكامها وكسانه لمقدارالث كؤة ووتتعا وماأل فاى تؤنون منه سنالأموال وسانه لمناسك الحج قال النبي صلى الله عليه وسلم إذعج بالناس: «خذواعني سناسككم أه وقال: ررصلوا كسارانيتمونى أصلى أوأخجه المتخاري) كم وردى الأوذأعى عن حسان

(حواشی صفح گذشتہ) دوسری نوکی کے بدلے میں بلام ہر ہوگئسی - اسلام نے اس کو منوع قرار دیاہے ۔ (مجع انجہاد: ص: ۱۹۹) معلید البغوادی معتاج الجنۃ (ص: ۵ و۲) انکفایۃ للغطید البغوادی

(ص۵) به حدیث منددک حاکم میں اضفار کے ساتھ مذکور ہے طاحظہ دوا: ۱۰۹ و ۱۱) -وضح بنول کے منداحد (۳: ۱۲ سر ۱۲۳۳) شن نسائی (۲: ۲۹). کے صبح بخادی (۱: ۱۸۸) (۲: ۱۸۸۸ و۲۰) سن دادی (سما، ۱۲۸۱) مسنداحد (۵: ۵۳) - کے تفسیر قرطبی (۱: ۲۸ و ۳۹)۔

ان عطية قال اكان الوحى مازل على رسول الله ملى الله مايد رسلم ويحض المجرشيل المنة التى تفسى ذلك يه مورد عوم عوم عوم عوم

نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے فرمایا کررسول الشرصی الشیطیہ وہم پر دحی تا زل ہوتی تھی اور حضرت جبر تیل آپ کے سامنے سنت (صدیث) بیش کرتے تھے جواس قرآن کی تفسیر کرتی تھی ہے

علامسيوطى اس عقبل بقى كے حواله سالك اور اتر نقل كرتے ہيں ،

مصرت طاوری کے پاس مقول دیا ہے کے بارے میں ایک کھی ہوئی گنا بھی ہوتی کے ذریعہ نازل ہوئی تھی ،اور رسول الشر مسلی الشرعلیہ دسلم نے صدقات اور مقول دریا ہے بارے میں جوکھیے فرض کیا وہ دی منزل کے ذریعہ ہی تھا ہے ن طاؤوس أن عنده كتابًا من الد تول نزل به الوجى و ما فراض رسول الله صلى الله مليه وسلم سن صد تقو وعقول فإنمانن ل به الوجي و مرائع من عد الرائع

یہ وی وی خفی ہے جے سنت وحدمیث کہاجاتا ہے ۔ امام شافعی * الام ، میں دایت کونقل کرنے کے بعد لکھتے ہیں ہ

" حفوداکرم صلی الشه علیه وسلم نے کوئی چر بغیر دی کے فرض نہیں کی البتہ فرق صرف یہ میں کہ البتہ فرق صرف یہ ہے کہ بعض وحی مسلوم و تی ہے کہ بعض وحی مسلوم و تی ہے اور بعض وحی ورسول الشرصلی الشرعليه وسلم کی جانب کی جانب

ع بيان العلم (١٩١١) حسان بن عطيه كا يمقوله سنن وادى بي اس طرح سنقول ب ، -كان جبرول ميزل على النبى صلى الله المست العالمة المي المست العالمة المست المست العالمة المست المست المست العالمة المست العالمة المست العالمة المست المست

عَاجَاءِ (ص ١٠٠٠)-الأم (١٠١١)-

الآم (۲۷۱؛ ۷) -

چونکر صدیث قرآن کی شرح کی حیثیت رکھتی ہے اور شن شکل ہوتا ہے اور شرح آسا؟ اسی لئے حضرت مکول سے مروی ہے کہ وہ فرماتے ہیں کہ قرآن کریم سنت کازیادہ محتاج ہو سنت قرآن کریم کی اتن محتاج نہیں ہے

علامسيوطى امام بيرة عي نقل كرتي بي كم حضرت يياب الى كثير الى خرمايا :-

" سنت قرآن (کے معنی و مراد اکا نیعلہ کرتی ہے ،کتاب سنت دکے معنی و مراد اکا فیصلہ نہیں کرتی ،اس کو داری ا ورسعیدین منعود نے بیان کیا ہے یہ السنة قاضية على الكتاب و ليس الكتاب و ليس الكتاب قاضيًا على السنة أخرجه السدادي وسيد بن منصوص .

امام بيقي أن مضرت يحيى بن كتير كاس قول ك تشريح ان الفاظمي كي بيد

دواس کے معنی یہ بین کرسنت دراصل الشرتعالیٰ کی جانب سے کتاب کا بیان ہے جیسے کہ تحدار شاد باری ہے کہ : "اور ہم نے نازل کیا آپ کی طرف ڈکر ٹاکد آپ اور کی کے سامنے کھول کر میان کر دیں اسے جو کچھ ان کی طرف ٹازل ہوا ہی ہے مطلب نہیں ہوکہ رمعنى ذلك أن السنة مع الكتاب أقيمت مقام البيان عن الله كما قال الله الدرائن أن أن الكك المؤكرة الميكن يلكاس ما أنول المفيرة الأكن شيئًا من السنن مي المن الكتاب.

سنت یاس کا کوئی حصر کتاب الشرک خلا من بوگائی علامدا بو بجر بوسف بن عبرالراندسی المتوفی سیاسی به کمقے بین :-یس مید آنها تفضی علیه و تداری است کرفیداکن بر زیماریا

"سنت کے فیصلکن ہونے کا مطلب یہ کوک وہ کتاب الشکی اصل مراد کو واضح کرتی ہے" یرمیدانهاتفی علیه وتدبین المرارمنه ته

له يدا قوال علام خطيب بقدادي كيكناب الكفايين وص ١٢ تا ١٢) ديجهم عكمين -

يه سنن دارى بابالت قاضية على الكتاب (ص ١٠) -

ته جائع بيان العلم (٢: ١٩١)-

اورخودعلامه سينالي اس كى مزير توضيح كمت بوي مكت بي ال

والعاصل أن معى احتياج القرأت إلى السنة أنعاميينة له ومفصلة لمجملاته لأن فيه لوجازته كنوزأ بيعتاج إلى أمان بعر مت خفايل تماراها فيرزها وذلك موالنزل علىه صلى الله عليه وسلم وهو معنى كون السنة قاضية عليه وليى القن أن سيناللسنة و لاقاضيأعلى الأنعاستة بنفسها إذلم تمل إلى حد القرأن فالإعجاز و الاسازلانعاشى وشأتن الشرح أن يكون أدفع و وأنبين وأسطس المشرح، والله أعلم له

"خلاصريب كرقر آن كے سنت كا محتاج ہونے کے معنی برمیں کرسنت قرآن کریم کا بان ب اوراس كجلات كي تفسيل، اس سے کر قرآن کریم میں اختصاد کی بنار یرا ہے خزانے ہی جن کے اظہار کے لئے كسى ايسےاسي شخص كى خرود تقى ج اس كے گوشوں مي تفى داندوں كوجا تا ہو تكان كوكعول دراور يح فيرحفود اكرم صلى الشرعليدوسلم بين ازل بوتى اوري معنى بن سنت ككماب الشريفيل و كے اور قرآن كريم سنت كے لئے بيان ب اور نهی اس رفیصل کرنے والا اس كرمنت تؤخودي واضح ا دربيان بوكيزنك سنت قرآن كى طرح حدا عجازوا يجاذكو نہیں بیونی ہے مکاست توشرے بولنات كاورشرح كى شان ير تدب كر كولا عنياده وافع الاولى بور والشاعم.

مضرت امام احدر صرالترتعالى نے اى بات كوان الفاظ ميں اداكيا ہے :إن المسنة تنس المكتاب د "باشك سنت كتاب د قرآن بك تغيير سنت كتاب د قرآن بك تغییر سنت كتاب د قرآن بك تغییر سنت كتاب د قرآن بك تغییر سنت كتاب د اور تبیین د تشریح بك تغییر سنت كتاب د اور تبیین د تشریح بك تغییر سنت كتاب د تغییر سنت كتاب د

كه ما ح بيان العلم (١٩١١)-

- (r. 0) = 12 = 2

علآمدالالكائي امام احمر كالتفل كرتي بيكسنت دسول الشصلي الشعليه وسلم آتار کانام ہے اور قرآن کریم کی تفسیراوراس کی راسما ہے به گذشته صفحات بس بم حضرت عبدار حن بن مهدی کا قول نقل کرچکے ہیں کہ انسان کھا ینے سے زیادہ صدیث کا مختاج ہے اس لئے کہ صدیث قرآن مجید کی تفسیرے بله مندرجربالاوا قعات كوعلامه شاطبي في اين كتاب "الموافقات " مي بيان كم موت ایک واقعدلکھا ہے کہ:-

وحفرمت مطرون بن عبدالتذين شخير كباكياكدآب بمايدسا منحصرت قرآن كريم كے مضاعين بى بيان كياكرين اس پرحضرت مطرف نے فرمایا : خداکی تسم بم قرآن ميدكي براودكوني مزنيس مم تواس ذات كے كلام اور فرامين كوبيا

وتيل لمطرت بن عيدالله ابين التعنير: لاتحدثونا إلا بالقرأان، فقال لهمطرف، وانثممانرييدبائقمأن بدلاولكن نهيدس هو أعلم بالقران مناسية

كرناميا عقيمي جوقرآن شرلف كويم سازياده سمين واليهي حضرت مطرف کے بیان سے حقیقت اور کھرکرسامنے آگئ کرحفور اکرم صلی اللہ وسلم كى ذات كراى قرآن مجيدكوسب نرياد صحيف واليتى كيو يحفود الترتعالى في آب بتلاياً ادر بجاياتها الله لي آب في جن چيزوں كوشكل يا مجل يا يان كى تشريح فرادى ال آب كى احاديث مباركة قرآن كريم كابيان مي اوراى لتة مم احاديث بيان كرتيم. علامه يوطي " الاتقان " مي لكيتي بي

قال ابن تيمية بجب أن يعلم المسافظ وبن تينية فرماتي كريب اليا

مقاعالية (١٠١٠).

الموافقات (۲:۲۲)-

أن الني صلى الله عليه وسلم بين لأعمابه معانى القرآت كما بين لعم الفاظه فقوله تعالى و دلتبين للناس سام فن ل إليهم » يتناول هذا وهذاً

ضرودی ہے کہ نج کریم صلی الشرطید وہلم نے اپنے اصحاب کے لئے قرآن کریم کے معانی و مطالب کو اسی طرح بیان کیا جس طرح کہ ان کے سامنے اس کے الفاظ اوا کئے چنانچ الشدندی کی افرمان مد تاکہ آپ لوگوں کے

ساے اس جز کو بیان کریں جوان کی طرف نازل کی گئی "الفاظ ومعانی دونوں کو شال ہو؟ اورعلامہ ابن حزم گا پہ قول پہلے ذکر ہوجیکا کہ وحی کی دونسیں ہیں ایک وجی مشلوا ور دوسری وحی غیرمتلوموکٹا ہے الشرکی تفسیر ہے جس کے ذریعہ سے آپ نے الٹرکی مراد کو بہا ہے۔ سائے کھول کر سان فرمایا ہے۔

یادیے بی کریم صلی النترعلیہ وسلم نے قرآن محبید کی جُوتبیین کی ہے اس کی دومورتیں ہیں ۔ کمبھی طراق الحاق اور کمجی بطراتی قیاس ، ذیل میں دونوں کی لبض مثالیں ذکسر کے جاتی ہیں ہے۔

پیرکے حرام ہونے کالیکن ایک چیزاید ، بھی ہوتی ہے کہ اس کے بارے ہی قرآن پاک میں کوئی منصوص حم نہیں ہوتا اور وہ الی ہوتی ہے کہ اس مطال اشیار کے ساتھ ہی ملایا جا سکتا ہے اور حرام کے ساتھ ہی ، بھر صفور اقدس ملی الشرعلیہ وسلم اسے سی ایک کے ساتھ میں میں موجاتا ہے کہ اس شنے کا تعلق کس سے تھا ، مثلاً :
ملادیتے ہیں جس سے یہ علوم ہوجاتا ہے کہ اس شنے کا تعلق کس سے تھا ، مثلاً :
الشرتبادک و تعالی نے پاک چیزوں کو حلال مسترمایا اور ضبیت جیسینروں کو مطال مسرمایا اور ضبیت جیسینروں کو مطام قراد دیا ، اب چند چیزیں ایسی مائیں جن کو طبیات (پاک چیزوں) کے ساتھ بھی ملا

الإِنْقَالُ (۲: ۱۲۹)-

- (الإخلام (١١ عه)-

سکتے ہیں اور خبائث (گندی اشیار) کے ساتھ بھی ، آنحضرت ملی الترعلیہ والم کا منصب قرآن الا میں اس طرح بیان فرمایا گیاہے :۔ میں اس طرح بیان فرمایا گیاہے :۔

يُحِلُّ لَهُ مُّ الطَّيِبَاتِ وَهُجَيِّمُ " اوروه طال كرتي ان كرائيس عَلَيهِ مُّ الْخَبَارِيَّ لِهُ الْحَبَارِيِّ الْعَبَارِينِ الْعَبَارِينِ الْعَبَالِ الْعَبَالِ الْعَبَالِينِ ال

اس نے آپ نے کہوں والے درند سے اور شہری گدھے کے کھانے سے نئے فرما کرالا کو طیبات کی معن سے خالیج کردیا ، اس طرح جوجا نور گندگی اور شجاست کھانے والا ہو اس کا گوشت کھانے اورد دھ بینے سے نئے فرما کراس کو خباشت ہیں داخل فرما دیا جہوں گندگی کھانے سے اس کے گوشت اورد ودھ ہیں اس گندگی کا اثر آجا تا ہے ، بعنی یہ تام جانو گندگی کھانے سے اس کے گوشت اورد ودھ ہیں اس گندگی کا اثر آجا تا ہے ، بعنی یہ تام جانو گندگی اورد ام چیزوں کے ساتھ کھی ہیں لہذا یہی انہی کے بھم میں ہیں ، اس طرح صفورا کو مسلی اللہ علیہ وسلم نے بعض چیزوں کو طبیبات میں شامل فرما دیا جیسے کر خرکوش کو صلال فرما تیا ہے ۔ الشر تعالی نے سدھا سے ہوئے شکاری جانور کے اس شکار کو جو اس نے مالک کے یہ پکڑا ہو صلال فرمایا ، اس سے معلوم ہواکہ جانور علم (سدھایا ہوا) ، نہوا س کا خود کیا ہوا نیک جو اس جو کا میں نے کہ اس نے کہ اس نے دہ جانور اپنے لئے شکار کیا ہو گئی ایک صورت نے کلتی ہے حوام ہوگا اس لئے کہ اس نے وہ جانور اپنے لئے شکار کیا ہو گئی ایک میں ورت نے کلتی ہے حوام ہوگا اس لئے کہ اس نے وہ جانور اپنے لئے شکار کیا ہوگا سیک کے اس کے کہ اس نے کہ اس نے وہ جانور اپنے لئے شکار کیا ہوگا سیک کے کہ کور تا ہوگا اس لئے کہ اس نے وہ جانور اپنے لئے شکار کیا ہوگا سیک کے دور جانور اپنے لئے شکار کیا ہوگا سیک کے اس کے کہ اس نے کہ اس نے وہ جانور اپنے لئے شکار کیا ہوگا سیک کے کہ کی کا کھور ت نے کلتی ہوگا سیک کے کہ کا میں نے کہ اس نے وہ جانور اپنے لئے شکار کیا ہوگا سیک کے کہ کا کھور ت نے کلتی ہوگا سیک کے کہ کہ کہ کور کیا ہوگا سیک کے کہ کور کی کور کے کہ کور کے کہ کی کی کور کی کور کی کور کی کی کھور کی کھور کے کہ کور کے کہ کور کی کور کے کہ کور کے کر کور کیا ہو کی کھور کے کہ کیا ہوگا کی کور کی کور کی کور کے کہ کور کے کہ کور کے کہ کور کے کہ کور کی کور کے کور کی کور کے کہ کور کی کے کہ کور کے کور کی کور کی کور کی کھور کے کر کور کے کور کی کھور کے کور کی کور کی کور کی کی کور کی کور کے کور کور کے کور کی کور کور کی کور کی کور کی کور کے کور کی کور کے کور کور کی کور کے کور کور کی کور کی کور کی کور کی کور کی کور کور کی کور کور کی کور کور کور کی کور کی کور کی کور کی کور کی کور کی کور کور کور کور

له الاعرات: ١٥٤

ک صحیح بخاری (۲: ۸۳۰) میخ سنم (۲: ۱۳۷) موطأ مالک (ص:۱۸۱ د ۱۸۵) مسنداحد (۱۱ ۱۲۲۷ و ۲۸۹) دغیره بسنن ماری (ص:۲۵۲ و۲۵۲) وغیره -

کے صبح بخاری (۲: ۸۳۰) میخ کم (۲: ۱۲۹) سنن داری (ص:۲۵۲) دغیرہ -

ی سنن داری (ص:۲۵۲) منداحد (۲:۹۱۲) وغیره -

ه صحیح بخاری (۲:۲۰۰۱ و ۸۳۱) صحیح کم (۱:۲۱) شی دادی (صنع ۲۵) مسنداحو (۱:۱۱) و (۲:۲۲۲ و ۲۲۲) دغیره -

ی مشرطیاسی (۲: ۱۲۱ و۱۲۸) یخ نجاری (۱: ۲۰۲۱) و (۲: ۲۲۸ و ۲۲۸) مشراهدا: ۱۲۱) و د د ۱۲۰ و ۲۲، ۲۵ و ۲۲ و ۲۸ و ۲۲ و ۲۸ و ۲۲ و ۲۸ و ۲۲ و ۲۸ و

ا ایک سدھائے ہو سے جانور نے شکار کوٹ الیکن اس کے با وجوداس نے کچی حصراس ہیں ہو لیا اس کیا اس کا شکار لیا ہوا جانوں ہے تو کھراس کی ظامر اس کا شکار سال ہونا چاہیے کہ اس نے اپنے مالک کے لئے اسے شکار کیا ہے لیکن اگر دوسری خاب مالک کے لئے اسے شکار کیا ہے لیکن اگر دوسری خاب حیاں کہ اس نے شکار میں سے کچھ حصر کھا بھی لیا ہے تواس سے بیا ندازہ ہوتا ہے کہ اس کے لئے ، اب پہال پر تر قدد پیدا ہوا کہ آیا پر شکار اپنے لئے کیا ہے ذکہ مالک کے لئے ، اب پہال پر تر قدد پیدا ہوا کہ آیا پر شکار اللہ ہوگا یا حرام اور دونوں طرف کا احتمال موجود ہے ، ابندا سنت ہوی نے وضاحت الدی کہ :۔

" اگرشکاری جانور اینے شکارس برکھے توپیراس شکارکونہ کھاڈ "

فان اُکل مثلاتاً کل بله م م م م م م م م

ا الشرا مبلال في طيبات من صيدالجركا ذكركيا بها ورخباتث من ميتدكا ،ابسوال المراب الشراس كي ميته كا ،ابسوال المرابوكي ياحرام ،اگراس كي ميته مو في كوي المراس كي ميته موفي كي المراس كوجرام مونا جائبة اور اگر صيدالبحرم و في كود ي كي والل محضورا قدس صلى

عليروسلم في الني السادس كريد الماسكر الماسكر الماسكر الماسكر الماسكرة الماسكة الماسكة

"سندركا يانى پاك برادراس كامردار المجيلى) حدال ب

بلی کی طلت کو واضح مشرمادیا .

_الشُّرِ جِلْ شَانَ كَالدِشَاوِ ہِے وَ۔ غَانَ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتُ ثِنِ فَلَهُ ثَنَّ ثُلُثَا مَا ثَمَ كَ وَإِثُ فَلَهُ ثَنَّ ثُلُثَا مَا ثَمَ كَ وَإِثْ

" اگر دو سے زیادہ الاکیاں ہوں توان کو ترکر میں سے دو تکلٹ طے گا در اگرا کی

ه شیح بخاری (۱:۳۲۸) منداحد (۱:۱۳۱) و (۴: ۲۵۲ و ۲۵۷ و ۲۵۸ و ۴۴۹ و ۴۳۰)-ه موطأ مالک (ص ۸ و ۱۸۲) مسنداحد (۲: ۱۳۳ و ۲۳۱ و ۳۹۳ و ۳۹۳) و ۳۲۳) و ۳۲۳) و ۳۲۳) و ۳۲۳) و ۳۲۳) د ۳۲۳) د ۳۲۳) د ۳۲۳) د ۳۲۳) و ۳۳۰) و ۳۳۰) و ۳۲۳) و ۳۲۳) و ۳۲۳) و ۳۳۳) و ۳۳۰) و ۳۳

كَانَتُ وَلَحِدَةٌ نَلَعَا النِّصَانُ لِهِ ١ جوتواس كونسف لح كا " اس آیت کریمیں ووسے زیادہ اور ایک کاحکم توبیان کردیاگیاںین پنہیں بیان کیاگیا كداكر دون وكيال مول توان كوكياط كا . يرجي موسكتا بي كدو تلت مي وه شامل مول اوريهي ہوسکتا ہے کہ دوکو بھی نصف بی طے ،اس اجمال کوحضور اکرم صلی التٰدعلیہ ولم نے یہ سنرماکر واضح كردياكه :-ا ان کوجی دو ثلث دے دو ؟ اُعطِه ما الشلتین بن بن اس ان کوجی دو ثلث دے دو ؟ بینی اگرد و نظر کمیاں ہوں تو وہ بھی دوسے زیادہ کے حکم میں ہوں گی اور ان کو دو ثلث وسلم نے ارشاد فرمایا :-وكاة الجنين ذكاة أسم به ا منينكاذ كارتاسكماك ذع كراب اس لے کروہ اس کے مال کے ایک جزر کے حکم میں تھا۔ تعلیم و مندرج بالامستلامی اتمد کا اختلات ہے:-امام الوصيفة ، امام زفراً ورامام حن بن زياد كالمرسة بكراكروه بين مرده بوتو اس كوكها يانهي حائكا ـ

امام الويوسف ،امام محدد اورامام شافعي كاسلك يبركد اكروه تام الخلقت

له الناء ال

تع سنن أبي داود (٢: ٢٠ روبم) منداحد (٣: ٢٥٢) متدك ماكم (٢ ٢٣٣) وغيره-

ك اس كوقاضى اساعيل في بيان كياب العظم الموافقات المتاطبي (٣٩: ٣٩)-

منداحد (۱: ۳۱ ، ۳۹ ، ۵۳ و ۲۵) مندواری (ص ۲۵۳) سنن ابی داود (۱: ۱۹۱) دغیره -

و توکھانا درست ہے اور استدلال میں مندرجہ بالا صدیث بیش کرتے ہیں ۔
امام ابوصنیق کی طرف سے اس کا جواب یہ دیا جا تاہے کہ بید میتہ ہیں شامل ہے اور سے قرآنی سے تابت ہے کہ میتہ کا کھانا حرام ہے ، صدیث بالا کا مطلب وہ یہ لیتے ہیں کہ ورزندہ سے تواس کو اسی طرح وہ کی کیا جا ہے گا جس طرح اس کی مال کو ذیج کیا جا ہے ۔
میس قصاص کے بادیے ہیں الشر تعالی نے فرمایا ہے ، د

س اور ہم نے لکھ دیا اس کتاب میں کہ جان کے برلہ جان اور آئٹھ کے برلد آئٹھ اور نا کے بدلہ ناک اور کان کے بدلہ کان اور دات کے بدلہ دانت اور زخوں کا بدلہ ان کے برابر س

دُّكَتَبُنَ عَلَيْهِ مُ فِيْعَاأَتُ الْنَّقُسُ بِالنَّفُسِ وَالْعَيْنَ بِالْعُيْنِ وَالْأَنْتِ بِالْأَلْفِ وَ الْأُدُنَ بِالْأَرْنِ وَالْبِّنَ الْأُدُن بِالْأَرْنِ وَالْبِّنَ بِالْسِّنِ وَالْجُرُاثِ وَالْبِّنَ

اس آیت سے معلوم ہواکہ اگرکوئی شخص کسی کوجان سے مارڈ الے تواس کے بدلہ اس میں جان سے مارڈ الے تواس کے بدلہ اس می جان سے مارا جائے گاا وراگر کوئی کسی کی آنکھ میں جان سے مارا جائے گاا وراگر کوئی کسی کی آنکھ میں جائے تھا کہ جائے گیا ہوا وراگر قتل خطاً ہوڑی جائے گئے ہوئے اس صورت میں ہے جب کہ قتل عمداً کیا ہوا وراگر قتل خطاً

مین از در ایک مسلمان اورخون بها به در نیا سے معتول کے گھر دا نوں کو " وتواس كاهم يرب :-مُعْمِيْرُ دَقَبَ مِ مَنْ مِنَةٍ دَدِيةً مُعْمِيْرُ دَقَبَ مِ مَنْ مِنَةٍ دَدِيةً مُلَدَّةً إلى أَمْدِهِ مِنْهِ

سین اگرکوئی شخف کسی کے ہاتھ یا وَں یا دوسرے اعضار کو نقصان بہونیاسے قال کا حکم قرآن کریم بی مذکور نہیں ہے ، اس کوحضور اقدس سلی الشّدعلیہ وسلم بی نے النّدنسائی کی منشار کے مطابق واضح فرمایا ہے تیے

که النار : ۹۲

له الماتره ؛ ٢٥

ت مسنداحد (۱۱ ۲۸۹) و (۲: ۱۸۲ دی۲۱) سنن نسانی (۲: ۲۳۲ و۲۳۳ و۲۳۳ و ۲۵۰) سنن اُلِی داود (۲: ۲۲۲ و ۲۲۲) سنن ابن ماج دص:۱۹۰ و (۱۹) -

اسى طرح اگركسى حاطر عورت كاحمل كسى كي خرب سے ساقط ہو گيا اور بيت كا بيم تواب اس صورت میں کیا کرنا ہوگا ؟ ینفس انسانی کے مشابر عبی ہے اور اطراف داعد کے ما تذریجی اس کا حکم دونوں برلگ سکتاہے ،حضور اقدر صلی اللہ علیہ وسلم نے بیمالنا إن ديته الفرة به اسك ديت غرة ري لام ب ؟ اس ابهام كودود كرديا - يرچندمثاليس وه بي كدان بي ني كريم صلى الترعليدوسلم كي اب دوسری قسم کی تبیین جونظریق قیاس سے سلاحظ ہو ،۔ منسان نبوى بطراق قياس البعن مرتبة قرآن كريم كسى چيزك ليخ ايك علما الشرعليه وسلما چزیراکی اورجیزکو قیاس کر کے اس کے حکم میں شامل کر دیتے ہیں اس لئے کا ان دا میں علت شرکہ یائی جاتی ہے اس لئے حقیقت میں آپ کا برقیاس قرآن کریم کی دالا كے عین مطابق ہوتا ہے كيونكه قرآن مجيد نے اگرجيداس جي كيصورة الك جيز كے ساتھ ا كياب ليكن معنى كے لحاظت وہ عام بے كيونكه اس ميں جوعلت يائى جاتى بودة عام ہے لہذا آٹ کا ایسا کرناعین منشار البی کے مطابق ہے کہ اس کی اصل قرآن کرا موجودے ،اباس سلسلد کی جیندمتالیں ملاحظ فرمائے :-ا _ يَا أَيُّهَا الَّـذِينَ المَنْوَالُا أَكُلُوا | "الماريان والوا سودست السرّيا يه ا ورسورة بقره مين ارشاد فرمايا :-

له موطآ مالک، (ص:۳۳۳) مسنواحمد (۱:۳۳۳) و (۲:۲۱ و ۲۳۲ وغیره) د (۳ ۱ م و ۲۳۲ وغیره) و (۵:۳۳) مسنولیاسی (۳:۵۱) و (۹:۳۰ و ۴۰۳ و ۴۰۳) یی بخارا (۲:۵۸ و ۹۹۸ و ۱۰۲۰ و ۱۰۲۱ و ۱۰۲۱) وغیره-

"جولوگ شود کھاتے ہیں وہ نہیں آئیں کے قیامت کو گمراس طرح کے جس طرح وہ شخص اطھ تاہے جس کے حواس شیطان نے لبیٹ کر کھو دتے ہوں "

الذَّذِينَ يَأْكُنُّوْنَ السَرِبَا التَّكُوْمُونَ إِلَّاكَمَا لَيَعُومُ الدُّذِي يَتَحَبَّطُهُ الشَّيْطُنُ مِنَ الْمُن يَتَحَبَّطُهُ الشَّيْطُنُ

ان آیات کو نازل فرماکر انٹرتعالی نے رہا کوسود ، می حرمت کو بیان فرمایاورخ

كالصور تويه تفاكه :-

اسْدَا الْبَيْنَةُ مِيتُكُ السيِّرِيَا يِنْهِ | منفريد وفروفت دبا وسود كلاح دواييٌّ

المناجية المنظمة المن

ا برزے یہ ت رمان جاری کیا ، ۔ اِنْ تُنْهُمُّ فَلَکُمُ رُوُّرُوسُ اِنْ تُنْهُمُّ لَاتَظُلِمُوْنَ وَ اِلْمَالِكُمُ لَاتَظُلِمُوْنَ وَ اِلْمَالِكُمُ لَاتَظُلِمُوْنَ وَ اِلْمَالِكُمُ لَاتَظُلِمُوْنَ وَ اِلْمَالِكُمُ لَاتِكُمُ لَاتُطُلِمُوْنَ وَ اِلْمَالُونِ وَ الْمَالُونِ وَ الْمَالُونُ وَ الْمَالُونِ وَ الْمُنْفِي وَ الْمَالُونِ وَ الْمُنْفِقِ وَ الْمُنْفِي وَ الْمُنْفِقِ وَ الْمُنْفِقِ وَ الْمُنْفِقِ وَ الْمَالُونِ وَالْمَالُونِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمَالُونِ وَالْمَالُونِ وَالْمَالُونِ وَالْمَالُونِ وَالْمِنْفِي وَلَيْعُولُونِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِي وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ وَالْمُؤْمِنُ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ وَالْمُؤْمِلُونِ وَالْمُؤْمِقُونِ وَالْمُؤْمِنِ وَالِمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنُ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِي وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ والْمُؤْمِنِي وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُومِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِ وَالْمُؤْمِنِي وَالْمُؤْمِنِي وَالْمُؤْمِنُ وَالْمُؤْمِنِي وَالْمُؤْمِنِي وَالْمُؤْمِنُ وَالْمُؤْمِنِ وَا

النُّقْلَمُونَ وَيَّهُ

"اورتم اگرتوب کرتے ہوتو تہا ہے گئے متہا را اصل مال ہے مذتم کسی پڑھلم کروا ور ذتم برکوئی ظلم کرسے ہے

اس مانعت کی اصل وجریتی کہ اس میں زیادتی بغیر کسی عوض کے بائی جاری تھی اس میں زیادتی بغیر کسی عوض کے بائی جاری تھی اس پر قیاس کرتے ہوئے دسول الشرصلی الشرعلیہ وسلم نے نقدر قم کے ساتھ ال تا اس کے ساتھ ال تا اس کا ساتھ ال تا اس کے ساتھ ال تا اس کا ساتھ التا اللہ میں زیادتی بلاعوض بائی جاتی ہو، چنا نچ نی کریم علیہ العسلاة والسّلام

سرماتے ہیں ا

العتره : ۵۲۷

المعترة و ١٤٥

البشره : ٢٤٩

" سونا سو نے کے بدلے اور چاندی پائد کی بدلہ اور کی بدلہ اور گئی کے بدلہ اور کی بدلہ اور کی کے بدلہ اور کی کے بدلہ اور کیک کے بدلہ اور کیک کے بدلہ اور کیک خکے بدلہ اور کیک خکے بدلہ دان سب کی فریدو فرخ ت کا کہ بدلہ دان سب کی فریدو فرخ ت برا برسرا بریا ہم تھوں یا تقدیمونا چا جھے بیس میں نے زیادہ دیا یا فریا دی کا مطالہ کی تواس نے سودی کاروبار کیا ، ہاں جب میں تو میر جس طرح جا بروبی دافر تبا دا فرخ بیس کے بیس اور میر جس طرح جا بروبیج و بشرط کے باتھوں یا تھوں کا موارد میں اور تبا دا فرخ بیس کے بیس تو میر جس طرح جا بروبیج و بشرط کے باتھوں یا تھوں کا تھوں اور میں اور میں تھوں کا تھوں کیا تھوں کا تھوں کیا تھوں کا تھوں کیا تھوں کا تھوں کا

الذهب بالذهب والففة بالففة بالففة والبربالبروالتعير بالشعير والتمر بالتمر و المنح بثلاً ببشل الملح بالملح بثلاً ببشل سواء بسواء براء يداً بين فاز الختلفت هذه الأمنات فاز الختلفت هذه الأمنات فبيعواكيف شئتم إذ اكان فبيعواكيف شئتم إذ اكان عراء مراء و مراء

اب پہاں پردسول الشہملی الشہار وسلم نے ان جیجیزوں کے باہمی نقدلین دین میں سمبھی زیاد تی کوربا دسوو، میں شامل فرما دیاا س کے کہ ان میں بھی وہی علت دہی زیاد تی بلاعوض کے) موجودہ ہے۔
۲ — الشرتعالیٰ نے نساریخ تمات (وہ عور تمیں جن سے بھی حرام ہے ان) کو بیان فرسا ہوت یہ بھی وسنر مایا ہے ۔۔
وَانَ نَجْمَعُوْ آبَیْنَ الْالْخَتَیْنَ اِلْاَخْتَیْنَ اِلْاَخْتَیْنَ اِللَّهُ مَا یَا ہے ۔۔
اور بھی ان سر بھی مات کو ذکر کر کے فرما یا :۔۔
وَاجُولَ مَکْمُ مُاوَدُاعُ ذَلِ کُمْ ہُمَّ اِللَّهُ اِللَّهُ اِللَّهُ اِللَّهُ اللَّهُ اِللَّهُ اللَّهُ اِللَّهُ اللَّهُ اِللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ ا

له مندطیالسی (۱: ۹) و (۹: ۵۸۲ و ۲۸۸) منداحد (۱: ۲۳ و ۱۳ و ۱۳ و ۱۳۳ و ۱۳ و ۱۳۳ و ۱۳ و ۱۳۳ و ۱۳ و ۱۳۳ و ۱۳۳ و ۱۳۳ و ۱۳ و

ا من مراک المنظم فالك فق است من مراک ایسا کروگ توقعلی دستی است می می ایسا کروگ توقعلی دستی است می ایسا کروگ ی است قرآن کریم میں رضائی محرمات کا ذکر کرتے ہوئے ان دوز شتول کی تصریح کی گئی ہی۔

یے ہرسے ای دور وں میں ہو۔ "اور جن ماؤں نے تم کو دور صلایا ہوارر دور در شرکی سبنیں رمجی حرام میں)! مَ إِنْ مِنْ مِنْ اللَّالِيَّ الْفَعْنَكُمُ اللَّلْآنِيُ الْفَعْنَكُمُ وَاللَّمْ اللَّلْآنِيُ الْفَعْنَكُمُ وَ وَ الْخَوَاتُتُكُمُ مِنَ الرَّهُمَا عَلَمْ جَهِ

على بخارى (۱۳۲۱-۱۳) جيج ملم (۱۳۲۱-۱۳۵۱) سنن الي داود (۱۳۲۱) جا مع ترخرى (۱۳۲۱) سنن نسانی (۱۳۰۱-۱۳۸) سنن نسانی نبای نسان نبای نسان نی این نسان نی نسان نسانی نسانی نی نسان نی نسانی نی نسانی نی نسانی نی نسانی نی نسانی نی نسانی نسا

اور صنورانور سلی الشرعلیہ وسلم نے ان دونوں شِنتوں کے ساتھ ان تمام رضائی قرابو کو بھی حرام قرار دیدیا جونسب کی وجہسے حرام تھیں بشلار ضاعی بھولی اور رضاعی بہن کی اولاد ، حینانچرارشادی ۱۰ إن الله حمام سالم شاع ما « نسب کی دج ہے جور شتے حرام تھے دی شنے ماسنانسب له الترتعاليٰ نے دخاعت کی وجہ بچھی ترام کرد۔" مم _ الشِّر تعالىٰ نے قرآن ياك ميں جہاں مارطبور (ياك يانی) كا تذكره كياہے وہاں اس يانی كوتوذكر فرما ياب جوآسان سبرستام ،چنانچه ادر خاد ب :-وَإِنْ زِلْنَامِنَ النَّهَاءِمَاءُ ظَهُوْرَاتُ ا م اودیم فحا کاراآسمان سے یاک یانی و اورفسرمایا به دَ أَنْزَلْنَا مِنَ التَّمَاءِ مَاءً بِقَدَى م اورم في الأرائسان سيا نداز سيافياد اس كوشسياد يازسين بي " نَاسُكُنَّاهُ فِي الْأَرْضِ يَهِ لیکن سمندر کے یانی کاکوئی تذکر نوسٹرمایا ، سنٹ نبوی نے سمندر کے یانی کوہی مدمارطبور سميس داخل كيا ،ارست دنبوى ب :-صورالطهوين ساء لا على استديكاياني يك ب نبى كريم عليه الصلاة والسلام كى تبيين بطراتي قياس "كى يدحيند مثالين تصيى فيورس ديكما جائت توسعلوم بوگاكه در مقيقت خود قرآن كريم نے حدست شراعي كے لئے جگھيوالى له منداهد(۱: ۵۲۵ و ۲۹۹ و ۳۳۹ و ۲۱: ۲۱ و ۲ ، و ۱۰۲ و ۱۰۲)ستن دادی (ص ۲۹۰ و ۲۹۱) يح مجاري (۱: ۳۶۰ ۱ ۱۳ م ۱۳ م ۱ و (۲: ۳۲) من سلم (۱: ۲۲ و ۲۲ م) سنن الي دا و د (٢٨٠١١) عاس ترفري (١١٦١١ و١٣٤) وغيره -

ته الفضرن : ۲۸

ي المؤسون : ١٨

مع منواحد (۱۱ ۲۷۹) و (۲ ۳ ۲۲) وغيره وموطأ مالك (ص مروعهم) من دارى دص ۹۹ و ۲۵۲) وغيره -

ہے تاکہ سنت نبوی اس کو میرکرے مضانجیا مام مالک ایے بیخ ربیع ہونا قل ہیں ،۔ مد الشرتعالي في اسيفني ملى الشرعليرولم يراين كتاب نازل فرمائى اوراس ميں ا پنے بی صلی النتہ علیہ وسلم کی سنت کے لتے گئے اتش عیوردی ، اورحضوراکرم سلحالته عليهوكم فيستس جارى فرائي ا دران میں رائے اور قیاس کے لئے حگه جور دی -

أخزل اللهكتابه علىنبيه ملى الله عليه وسلم وتراث فيه وصفالسنة نبيه صلى الله عليه وسلموسن وسول الله صلى الله عليه و سلم سنتاوتماك فيها سومنعًاللرأى بله



مفتاع الجنة في الاحتجاج بالسنة (ص: ٢٩)-

سُنْتَ نَبُوي كااصِلُ مَأَخِرُتُ آن ہے

یربات بالکل می اورسلم ہے کہ جو کھی سنت و احادیث میں وار دہاس کی اگر قرآن کریم میں موجودہ کا گریوپر بطا ہراس کی وجہ ہماری مجھ میں نہ آئے ، جنانجہ امام شاخی رحمہ اللہ سکھتے ہیں :-

> جيع ما تقوله الأمة شرح للسنة وجبيع السنة شرح للقن الن، وقال أيضًا جبيع ماحكم الني ملى الله عليه وسلم فعن مما فعهمن القرآن.

قلت، ويؤيده مذا توله ملى الله عليه وسلم ، ملى الله عليه وسلم ، إلى الأحل الله المحل الله ولل المحل الله ولل أحم الله المحم الله المحمد الله المحمد الله المحمد الله المحمد الله المحمد الله المحمد المحمد الله المحمد المح

"اتمت جوکھیے ہی بودہ سب سنت کی شرح ہے اور تمام سنت قرآن کریم کی شرح ہے ، اور یہ بھی فرما یا کہ بحضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے جو بھی فیصلے اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے جو بھی فیصلے کئے ہیں وہ قرآن کریم ہی سی استنباط کے ہیں وہ قرآن کریم ہی سی استنباط کے ہیں وہ قرآن کریم ہی سی استنباط کے ہیں وہ قرآن کریم ہی سی استنباط

عیں نے کہاکہ اس کی نائید صنوراکرم صلی الشہ علیہ وہلم کے اس فول ہی ہوتی ہو رآئی نے فرمایا) عیں حلال نہیں کر آسوا اس چیز کے جس کوالٹ تعالی نے حلال کیا ہواور حرام نہیں کر تا گراسے جیے الٹہ لقائی نے اپنی کتاب میں حرام فرمایا ہو" امام شافعی نے اس حدیث کواپنی کتاب الام عیں ان الفاظ سے بی تحریج کیا ہے "

الأع (١١٢١)-

عه الاتقان في علوم القران (٢: ١٢٥).

ذیل میں ہم چند شالیں اس فسم کی بیش کرتے ہیں جہال حضورا قدیل سلی التُرعلیہ و الم فے خود واضح فرمایا ہے کہ ہیں نے بیم کم اس آیت کے خسن میں دیا ہے جنانج پرعسلامہ اوا حاق ابراہیم بن موٹ الشاطبی المتوفی مزامی کھتے ہیں :-

" ميح مديث مي بكر آنخفرت على الله عليدوكم فيفرماياكه منافق كي تمين نشائيال بي جب بات كي توجيوك بدل اورجب وعده كرے تولودانكرے اوروباس ياس المانت وكلى جامعة والثاني فياكم اس برحضرت ابن عبائ اورحفرت ابن عرضين كفتكوم وتى اوران دولول حفراً في صنور اكرم صلى الشرعلية ولم كم ياس جاكر اس تشولش كااظهاركيا جواس مديث كى بنارير لاحق بوئي تفى السيني كريم على الشعليرولم مسكواس ا ووفرما ياكرتمهادا ان یا توں سے کیا تعلق *میں نے* توان کو منافقول كى خصوصيت تبلايا بروابين يں نے جو يہ کہا کہ " منافق جب بات كرتا يرتوجبوك إولتابح وهاس لقكها كدانشتعالى فيمجعر ياكيت نازل فراتى ے "جب آپ کے پاس سنافق آتے ہیں

وفى الصبح أبية المنافق ثلاث إذاحدث كذب و إذا معدأ خلت وإذا أثتن خان له فقال ابن عباس وابن عس وذكرا لهول الله على الله عليه وسلم ما أهمهاس مذاالحديث ففحك عليه الصلاة والسلام فقال: لاما كم و لهن إنها خصصت بعن المنافقين أماقولى إناحد شكنب فَن لِكُ فِيهَا لَمْ لَا اللَّهُ عَلَى إِنَّا الْمَاعَكُ الْمَاعَكُ الْمُعَلَى الْمُعَامَدُ المَّاءَ المُنَا فِقُونَ قَالُوْانَتُهُ مَلُوالِنَّهُ مَلُوالِيَّا لِمَنْ الْكَالْمُونِ الله والله كَيْفَ لَمُ إِنَّكَ كُرُولُهُ - وَاللَّهُ لَشُّعَدُ اتَ الْنَافِقِينَ لَكُن كُونَ فَيْ أنأنتم كذلك ؟ " قلنا: لأ ،

لدسداعدد ۲: ۲۰۰۰ و ۲۹۷ و ۲۹۱ مع بخاری (۱:۱۱ و ۲۹۹ و ۱۹۸۳) و (۲: - ۹) یع مرداده م این تروندی داده)-

له المنافقون : ا

وكي بي كرم كوارى ديتي بي كاب الله ، کے رسول میں اور اسٹر تعالی جانتا ہے کہ للاعديديا بركسانين جوت بيراب سادى ي تباراتهي يي حال و ؟ م فيوش كيا كنبي أب ففرمايا ويرتهين وزي م تواس بات ع يرى يو .

اورمي نے جو يركباكه سنافق جيفي عد كرتاب تو وعده خلافى كرتاب يداك كدانشرتعانى في محيديرية آيت نازل فرمائى كهعض ان منافقين عي وه بي كمانبول في عبدكيا تفا النها كدائران في مرك کھوانے فضل سے (مال) دے دیاتوہم خرود قیرات کریں گے اور خرور ہوریں گےنیکی والول عی سے ، تعریب ویاان کوالٹرنے اپنے فضل سے (مال) تواس مرتخل كماالدانحراتك دالدوعده ويعر گئے اس حال میں کہ روگردانی کرنوالے تقے تواس کا نتیے یہ واکد دانشرنے ان کے وادرس نفاق اس دن (قیامت کے لے مکھ دیا کہ جب وہ التہ ہے ہیں گے اس وجرے كرانبوں في خلاف كيااس

قال: ولاعليكم، أنتمس ذلك بُه آء ، وأما قولى : إذ ا وعد أُخلف، فذلك فنها أنزل الله على ، لا وَمِنْهُمُ مَنْ عَاهَدَ اللَّهُ لَئِينُ أَثَانًا مِنْ فَضُلُهِ لَنَّصَّ لَّا ثَنَّ وَ لَنَكُونُنَّ مِنَ الصَّالِحِيْنَ فَلَا أتاج بم من نصله تجلوايه وَتَوَلَّوْا وَهُهُمُ مُّتَّعْمِهُونَ * نَاعْقَبَعُمُ نِفَاتًا فِي تَلْوَيْمِمُ إِلْ يَوُمِ تَلْقُلُ نَهُ حِمَا أَخُلَفُوْا الله مَا تَعَدُّدُهُ وَحِمَا كَانَيْ مِكِن بُرْنَ الله أَنْ أَنْهُ كَذَلِكُ ؟ ﴿ قَلْنَا : لَا ، قال، والاعليكم أنتمس ذلك بُهاء ـ رأماقول:إذاائتهن خان ؛ فذلك فيما أنن لإلى: إِنَّاعَامُ مُنَا الْآمَانَةَ عَلَى الشَّوْيَةِ وَالْأَدْضِ وَالْحَالِ فَآجَيْنَ آنُ يَحْمِلُنَهَا وَأَشْفَقَنَ مِنْهَا

وَحَمَلُهَا الْإِنْسَانُ مَكُلُ إِنسَان مُرْتِمِن فَ وينه فالمؤسن يغتسل من المعنابة في الني والعلانية ويعوم ويعيل ف السر والعلانية والمناق لايفعل ذلك، أنا أنم كذلك، تلتا ولا ، قال ورلامليم أنم من ذلك بُن آء مها

وعوسے کے جوانبول نے انشب کیا تعااورال وجہسے کہ تعبوت اولئے تھے۔ (بنا کہ) کیا تہارا بھی بہی حال ہر؟ ہم نے عرض کیا کہ جی بہیں ،آپ نے فرایا : پھر تہمیں ڈرنہیں تم اس سے بری ہو۔ اوریس نے جویہ کہا کہ جب سنا فق کے پال امانت رکھی جاسے تو وہ خیات کر تاہے یہ اس لے کہ الشرقعال نے محدیر ہے گیت یہ اس لے کہ الشرقعال نے محدیر ہے گیت

الله فرمانی کریم نے امانت کو آسمانوں اور زمینوں اور پہاڑوں پریٹین کیا آوانہوں نے
اس کے اٹھانے سے اپنے عجز کا اظہار کرکے انکار کر دیا اور اس سے ڈرگئے لیکن اسے
السمان نے اٹھا لیا ؟ اس لئے ہرانسان اپنے دین کا امین اور محافظ ہے چائچ ہوں
فسل جنا بت کرتا ہے ظاہراً بھی اور باطنا بھی اور روزہ نسسانوں کو دکھانے کے لئے پڑیا
میں اور باطنا بھی مگر منافق ایسانہیں کرتا (وہ توصرف مسلانوں کو دکھانے کے لئے پڑیا
آپ کو دوزہ وارظا ہرکرتا ہوئین حقیقت میں دوزہ دار نہیں ہوتا ہی حالت اس کی نماذی ہو)
گیاتم بھی ایسے می ہو ؟ ہم نے جواب دیا جی نہیں ، اس پر آنحضرت می الشرطیہ وظم نے
فرمایا کہ تم ہے دوئی سے بڑی ہو ؟

غورفرمائے کتنی مان اور واضح مثال ہے قرآن کریم سے ضورا قدی ملی النظیم النظیم النظیم کے استدباط کی جس میں خود آنحضرت کی الشرطیہ وسلم کی تصریح بھی موجود کرکھ آب نے جو میان فرمایا وہ در حقیقت ان بی آیات کی شرح ہے عظامہ شاطبی رحمالشرکھتے ہیں:۔

السندہ راجعہ فی معناها إلی است کے اعاظ سنت کا اصل مرجع

. الاصغراب : ۲۷ الوافقات للشاطبی (۲۰: ۱۲۷۳)-

کتاب اللہ ہی ہے کہ دیسنتہاں وكتأب النش كم مجلات كي تفصيل اورشكا ک ومنا وت اور کخفرات کی فرح بری کیونک منت كتاب الشكابيان بالداس ك دليل الشركا ييفران و مسأنن لناإليك النكام لتبين للناس ماننال إلىهم اب البناتم سنت مي كوني اليى بات من إذ كي حس كمعنى يرقر آن كريم مي والماست موجود ندم وخواه والالت اجالى بوياتفعيلى منزبروه وليلحاك بات كوبتاتي وكرقرآن شريعيث كاآصل اورمنع بروهاس بريعي دلل برك سنت كالعل مرجع قرآن بي بيايية الشرتعالى (نى كريم على الشعليه ولم سے) فرماتيميك "آپعظم اخلات كمالك بي " اورحفرت عاكشون في الكنفسر يكري كرآب كاخلق داخلاق قران و الاآب كے اخلاق كے إصاب محفرت عائشة فيمروزاتناي كينديراكتفامكيا حس سے يد علوم مواكر حضور دانور صلى الله عليه وسلم كے تمام اقوال وا معال اور

الكتاب فعي تفصيل مجمله وميان مشكله وبسطختص وذلك لأنعابيان لهوجو الذى دل عليه توله تعالى د وَ اَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكُلَاكُمُالِبَّيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُرِّي لَ إِلَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللّلَّ اللَّهُ مِنْ اللّ تحدث السنة أمرا إلاوالقلان ت دل على معنا ودلالية إجمالية أوتفصيلية وأيضا فكل سادل على أن المراث حوكلية الش يعة وينبوع لعانعورليل على ذلك لأن الله قال؛ لا دَ إِنَّكَ لَعَلَىٰ خُلُقِي عَظِيمٌ » ونس تعاكشة ذلك بأنخلقه القرأات، كالمقلف ف ترحتقال ذلك ندل على أن توله ونعله وإتمالة وأجع إلى القرأن لأن الخلق محصور ف هذه الأشياء ولأت المتعب القمأن تسيامًا

المعلى: المخل عل

بیان سکوتی کا اصل مرجع تران کریم بی جو اس کے کھٹائی ان بی جیزوں ہیں خصر ہے ، نیز النٹر تعالیٰ نے قرآن کریم کو پرجیز کے لئے تبیان دو مفاحت کرنے والا) بیا اس سے جی برلازم آگا پرکیسنت میں فالجداس میں وافعل ہواس کے کہ اوا مرونوا بی تو قرآن کریم کی بیاجیز میں داوا مرونوا بی تو قرآن کریم کی بیاجیز میں داور مطابرہ کراس کا بیان صفوار میں اندر صلی النہ علیہ وسسلم بی نے افتار صلی النہ علیہ وسسلم بی نے در مایا ہے ای کا طرح النہ تعالیٰ کا جو بی ارشاد ہے کہ صبم نے کہ اس کی کھڑو ہے ارشاد ہے کہ صبم نے کہ اس می کسی جرکود النہ تعالیٰ کا جو بی ارشاد ہے کہ صبم نے کہ اس می کسی جرکود النہ تعالیٰ کا جو بی ارشاد ہے کہ صبم نے کہ اس می کسی جرکود النہ تعالیٰ کا جو بی ارشاد ہے کہ صبم نے کہ اس میں کسی جرکود النہ تعالیٰ کا جو بی ارشاد ہے کہ صبم نے کہ اس میں کسی جرکود

الكران السنة عاصلة نيه أن تكرن السنة عاصلة نيه فى الجملة لأن الأسروالنى أرك المانى الكتاب، وبشله توله ، لا سَافَة المنافِ الكيّابِ مين عَنى م اله وتوله الأليّابِ مين عَنى م اله وتوله الأليّابِ الكيّابِ الكيّاب

نہیں چیوڑا" اور بیج فرمایا ؟ آج میں نے تہامادین کمل کردیا یونی قرآن کریم نازل کرکے مازل کرکے مازل کرکے مازل کرکے واس سے خلاصہ بیجواکہ منت قرآن کریم کا بیان ہے اور یوم عنی ہیں سنت کے کا ب الشرکی طرف واجع ہونے کے یہ

اب رئی وہ احادیث بن سے بظاہر معلوم ہوتا ہے کہ نی کریم ملی النہ علیہ وسلم فے قرآن کریم کے علاوہ بہت سی جیزوں کا حکم دیا اور بہت سی جیزوں سے دوکا ہے مثلاً دہ احادیث میں نمازے اور ذکوۃ وغیرہ کی تفصیل ہے تو بظاہران سے بین حلوم ہوتا ہر کیا جادیث میں قرآن کریم کے علاوہ بہت کچھ ہے لیکن اگر نظر غائمہ سے سیجیزوں کا مطالعہ کیا جائے تو بقیدًا ہی نتیجہ سیکے گاکہ ہو کچے سنت ہیں ہے اس کی اصل قرآن کریم میں ضرور دوجود

له الأنعام : M

٣ : ١٤٠١ م

ي الموافقات (۲:۲۱ د۱۲)-

ہے ، ال ،اس کی تفصیل سنت نے بیان کی ہے ،اس سے یہ الازم نہیں آتا کہ سنت کوئی الگ چیز مجو جاسے ،حیا شجیع سلامہ شاطبی اقسط سراز ہیں ،۔

" نيزيه كرجب كونى حكم قرآك في إجالا وكا مواورسنت مي تفصيلاتو يفصيل كو با قرآن ينبس ب جناني الترتفالي کے فرمان مستمازقائم کروسمیں نماز كے معنی بجل ركھے گئے اور دسول الترصلی الشرعليه وسلم نے ال كوبيان فرمايا الد اس بیان کے ذریعہ وہ چیزظام ہوگئ جوقراك سے ظاہر نہوكى تھى اگرجيبيا اصل عی کے لحاظ سے وی سین ہولیکن حكمين دونول مخلعت بي اس لتے ك مجل کے باہر میں بیان آنے سے قبل توقعت كياجا تاب سيكن حب اس ك ساخفرسان مل جاسے تواس کے مقتفی يرعل كرناهرورى يوجا تاسے توجب يربيان (درسين عنما مختلف يوكث توبيكوباستى يمخلف كى طرح بوكف

وأمضًا فإذاكان العكم ف القمأن إجماليًا وهوف الستة تفعيلى فكأنهلس إياه ؛ فقوله ، ورأَقيمُوا الصَّلوَّة ا أجمل فيهمعنى الصلؤة ودينه عليه الصلاة والسلام نظمى من البيان مالم يظهمن السبين رإنكان معنى البي هومعنى المبين ولكنهما في الحكم يختلفان الاترى أن الوجه في المجل تبل البيان التوقف وفى البيا العمل بمقتضاه ؛ فلالختلفا حكمامار كاختلافهمامعني فاعتبريت السنة اعتبار المفرون الكتاب ليه

اس وجه سے سنت کوکماب اللہ سے الگ خسیال کرلیاگیا ؟ اور وہ احاد میت جن میں ان لوگوں کی برائی بیان گئی ہے جنہوں نے احاد سٹ کو

له الموافقات (۲۰:۲)-

سوڈ کراپنی رائے اوراجہادے قرآن کو مجمدنا جا ہا ان کوکوں کا مقصد جونکہ اپن خواہشا انسانیہ کا تباع کرنا تھا توان کی فرمت میں جواحا دسنے وار دہوتی ہیں ان ہے اگر حیہ الما عربی معلوم ہوتا ہے کہ صریف قرآن کریم سے الگ ہے کسکین در حقیقت الگن ہیں بلکہ الما عربی معلوم ہوتا ہے کہ صریف قرآن کریم سے الگ ہے کسکین در حقیقت الگن ہیں بلکہ المبری یہ ان کوکوں کی مذرمت اس کے کی گئی کہ انہوں نے سنت کوچھوڈ کراپنی دائے کہ منا کہ بنا لیا عقا ، چنا نی خود علامہ شاطبی ہی تکھتے ہیں ۔

* ان لوگون میں سنت سے خروج عرف اس لتے واقع ہوا کہ انہوں نے اس الی بی راميك جلاكرسنت كونظرا خلاذكرو ياتقا ندكسى اور وجب الديداس لقركه سنت يونكرمجلات كى وضاحت ادرطلق كي تقييد اور عام كي تقيين كرتى بياس لتة اصل لعنت كما عتمان بهت م قرآنی صینے (کلمات) اینے ظاہری مفہوم ير باقى نبين رست ، ادراس سيروائع موجاتا ہے کہ سنت کا پریان می الثریعا كاان صينوں (كلات) سے مقصدہے، اس ليحب اس سنت كوهوالديامًا ا وراین خوام شات کی ښار برظاهری الفا اورمسنون كالتباع كياحات تواس نفرة كلما المضخف ابي إس روش كي نام ير محراه بوجائع كااوركتاب الشرياواتف

فانعاوتع الخاوج عن السنة ف أولئك لمكان إعمالهم الرأى واطراحهم السنن لأستجمة أخمى وذلك أن السنة توضح المجل وتقيل المطلق وتخصص العموم وتخرج كثيراً من العيغ القرااية عنظاصمفهرمعافيأصل اللغة وتعلم بذلك أك بيات السنة حومادالله تعالى عن تلك الصيغ ؛ فاذاطهت واتبعظاهرالميغ بعجرد العوىمارماحب هذا النظرامناألاف نظراه جاهلا بالكتابخابطافعمياءلأ بعدى إلى المواب نيما

له سنداحد (۱: ۲۲۹) و (۲: ۱۵۵۱) شنالی دا دُ (۲: ۱۵۲) ما نعتریزی (۲: ۱۱۹) -

ہوکر تادیکیوں میں تواس یا ختہ سرگردان عیمرے گا اور میسے راستہ کونہ باسے گا ، اس سے کہ عقل انسانی تصرفات دمیویہ منافع اور مقار کے کچیے سے کے ملاوہ اور کچیا دراک نہیں کرسکتی اور تصرفات اور کچیا دراک نہیں کرسکتی اور تصرفات

إذلس العقول سن إدراك المنافع والمفارف التعمقا الددنيوية إلا المنزراليدير وحى فى الأخروية أبعد على الجملة والتغميل به

اخرويهي تواجالا اورتفصيلا دونون اعتبارس عقل كاكسى بات كادراك كزايالكل

ای لبیدیے ہے

معلوم ہواکہ منت کا اصل مرجع قرآن کریم ہی ہے اگر چد بظا ھر الیا تھوں نہوتا ہو سکین غور وفکر اور تد مروا معان کے بعد بہ چیز بالکل محسوس اور مشاہر ہوجاتی ہواسی انتے علا مدابن مرجان فرماتے ہیں کہ حضور اقدس صلی الشرعلیہ وسلم کے فرامین مبارکہ کی اصل یا اس سے قریب قریب قرآن کریم ہیں موجود ہے جن کو خلاسی و دیتا ہے تہ علی لیمبیرہ اس کو سمجھتے ہیں ہیں۔

بها رستنج علامة العصرصرت مولانات ومير ليست صاحب بنورى واست كلم دمتعنى الشريطول حياته وسقانى من علومه وم كاتم) صيتيمة البيان مقدمة مشكلاً القرآن سين اين فينج امام العصرص رست مولانا محدانود شاه الكشميرى رحدالله تعالى

منقل فرماتے ہوے وقط رازیس ا-

" ہمار سے تینے امام انعصر رصد التا فرایا کرتے تھے کہ حب کوئی شخص روشن ہمیں سے حضور اقدس صلی الشرعلیہ والم کی احالا میار کہ کو بڑھے گا تو اسے مہدت سی

وكان يقول شيخنا إمام العم، إذا تأمل المرأ بالبمبيرة النافذة في حديث رسول الله ملى الله عليه وسلم

ا الموافقات (۲: ۲۰ و ۲۱) - الاتقال (۲: ۱۲۹) على السوس رساله کی طباعت کے دقت رجمالترون عند کے الفاظ تنفیر پڑتے ہیں۔

احادميث بي محسوس بوگا كدكويا قرآن كريم الكميوطن والاحتنب سيراقاد ميون بيوت كونكل دى بي اسى لية بيشاراحاديت سي قرآن كريم كى تعيركى جانب آکے لطیف اشارات میں گے ہ

كشت له ف كثيرين الأحادث المنافق المعين شرارة تنبع منعاصدًا الأعاديث حتى ترى ف كشير من ها إشاؤت الميفة إلى تمير القرأن له

وول اكرم صلى الشيطيروسلم ك اصحاب كرام كا ذوق يجي يتماكد حديث كا ماخذ

ا قرآن کریم ہی ہے جیا نچہ چے مسلمیں ایک مدیث ہے ،۔

وقم باس ذات كىس كے قبضي محد دصلی انشرعلیه وسلم) کی جان سیمکدمیری نیوت کاعلم ہونے کے بعداس است کا كوئى فردخواه يبودى بويانعراني أكراس حالت بي مرجا سے كرحس چيز (تتربعيت) کے ساتھ میں جیجاگیا ہوں اس پرایان لاتے تو وہ جنہوں میں سے ہوگا "

والسنى نفس محد ريمل الم بده لاسع بالعدمي مدة الأسة يعوري ولأ نمرانى شم يمورت ولىم يؤس بالذى أرسلت به الأكان من أصحاب الناريه * * * * *

ابوعبدالشرالحاكم النيسابورى المتوفى مصيكهم رواست كرتے مي :-

" حفرت ابن عباس رضى الشرعنيا سے مروى سے وہ فراتے ميں كدرسول التدهلي التعليه وسلم نے فرما ياكداس استكاكوتى فردخواه وهبيودى بو يانعرانى ايسابي كروميرى نوت كيار عيس اور عن ابن عياس رضي الله عنهما قال قال مهول الله صلى الله عليه وسلم ماس أحد يعباضمنهالأسة يعودى والانصماني والاتؤين

> مناللیان رص: ۱۲)-

ده محمديا يان زلا تركوده منم كي آك میں واخل ہوگا تیں سوچنے لگاکداس کی تصديق داصل مأخذ كآب التنهيكها ب بحی کمیں نے اس آیت کو یالیا کہ " جوجى جاعت اس دوي اكانكارك كى داسلام نەلايمىگى) تۇينىم اسكاھىكالمايكى

ب إلا وخل النارنجيلة أمتول أين تمديقهافكتاب ألله حتى وجدت حدة الآية: لا وَمَن تَكُفُّن مِهِ مِنَ الْأَخْرَاءُ فَالنَّارُ مُوْعِدُهُ أَوْسَال الأحناب الملل كلعائه

وسرماتي يكرداس آيت يس لفظ) احزات تام ملتي وخداب مرادي ؟ حضرت سعيدين جيررهمالشفرماتي بي ا-

مابلغنى حديثعن دسول " مجدتك حضوراكرم صلى الشرعليدوسلم ك التهصلى الته عليه وسلمعلى جوعدب يميي اين اصلى صالت مي بينجي ي وجهم الأرجي تممدا عي اس كامصداق كماب التدين ضرور فكتاب الله .

يالتيابون

حضرت عبدالترين مسعودين الترتعالي عندفرماتيمي الم

المتأنيات معومت فداغا مدجي يمي مين تهيين كوني حدميث ساؤل بتصديقه من كتاب الله توقرآن كريم سے اس كى تقديق بيش كر تعالى . سكتابول - ان دو نون (روايون) أخرجعاابن أبى حاسمته كتخريج ابن الى ماتم في ك ب "

علآمها لالالان سيطى حضرت ابن مسعود رضى الثرتعالي عشركا ايك اورقول نقل

کرتے ہیں :-

متديك ماكم (١١: ٢٧٢) إكفار الملحدين (ص٧)-

الاتقال : ٢ : ١٢٥)-

و قال ابن مسعود فيها أخهجه ابن أب حاتم بساس شئ الأبين لنافى القراب ولكن فهمنا يقص عن إدر أكب ه فل ذلك قال تعالى وليتيين للذلك قال تعالى وليتيين للنّاس مَا نَيِّ لَ إِلَيْهِمِمُ اللهِ

اس برعلامه موطی تکھتے ہیں ہ۔ فافظ الی صف الکلام سن ابن سعود أحد أجد لاء المحابة وأحد معمم إسلاميًا به

مع حفرت ابن مسعود درخی التدعد کواب کی حائم نے نقل کیا ہے وہ فراتے ہیں کہ تما چیزوں کا بیان قرآن کریم میں موجود ہے کسکین ہماری فیم اس کا اوراک کرنے سے قاصر ہے اسی لتے الشہ نے فرمایا استاکہ آپ کھول کھول کر بیان کویس اس چیز کوچ ان کی طرحت نازل کی گئی ہے

" دیجیوحفرت ابن مستود دخی النّرعن جز کسیارصحسی آییمی سے پی ادادی کا شمار قدیم ترین مسلمانوں بیں ہو وہ کسیا صفر ماتے ہمیں ہے

امام شافعي رحمه الشرتعالى فرماتي بي

" حق دميح بات كاعلم وات الترتمالي كيكسى الافدريع بن بيس بوسكما خوافية المسال المستروس بوسكما خوافية المسالة والمدالة السلام التركم المستروس من وحدث كواني كتاب الاجرائي بمن خصر كرديا ب الشرعي والمن وحدث كي كول تل معامل السابين المن وحدث كي كول تل معامل السابين المنابية ال

النحل: ١٢٦

سنتاح الجنة (ص١١)-

نصًا أوإجمالًا به

علارسيطى رحمانشرامام شافعى بصرالتُدكا قول نقل كرتيبي ا

" دین کے بارے میں کوئی بھی معاملے کسی شخص کومیش آتے قرآن کریم میں اس کے بالسيمي آيت ووديوتى باباكر كونى شخفى يداعتراض كري كرسنت ببت ساحكام ابدار أابت بوتي (ادروہ قرآن مجیدی نہیں ہوتے) اسکا جوابيم يدون ككرسنت دراصلك الشري سے ما فؤندہے اس لئے کدکٹا البٹر فيم بررسول الترصلي الترعلي وسلمكي اتباع لازمی کردی ہے اور آ کے قول يوعل كرف فرض قرار ديرياب. ا كيد مرتب سخة محرمه بي احام شافتي " نے اعلان كياكہ محد سجوميا بوزيھوس اس كاجوابكماب الشرعدول كا ، ان سے سوال کیا گیاکہ آپ اس محرم کے بارے میں کیا حکم دیتے ہی جوز نبور کوفنل م كرفال ،فرماياسم الترالين الرمم اورك جيس دول دي ال الديوان و الدين وروي

ليست تنزل بأحدان النين نازلة إلافكتاب الله اللحلي علىسبيل العلماك فيما ؛ فإن قيل: من الأحكامما يثبت ابتداع بالسنة ،قلنا فللت مأثغوذ من كتاب المثمالحقيقة لأنكتاب اللهأوجبعلينااتباع المهول صلى الله عليه وسلم وفهض علينا الأخذبقوليه وقالالشافعي سريًّا بمكة: سلونى عماشكتم أخبركم عنه فى كتاب الله ، فقيل له اساتقول في المحرم يقتل الزنبوي، فقال: بسمارته الجئن الرحم و وَمَا أَتَاكُمُ الْمَا كُلُولُ فَانْدُ وَمَانَهَاكُمُ عَنْهُ فَانْتَهُوْلِ لِلهِ

له الزسالة (ص ۲۰) الأم (۲۲۱:۷). كه الحشر: ۷ ابن سراقد کتاب الاعجاز پی ابو بحرین مجابد مے نقل کرتے ہیں کہ انہوں نے ایک دن یہ کہاکیا کم ہی جیزائیں نہیں جس کا تذکرہ کتاب الشرمیں موجود نہو ،ان سے کہا گیا کہ خانات (مسافرخانوں) کا تذکواس الشرتعالیٰ کے اس فرمان میں کہ میں الشرتعالیٰ کے اس فرمان میں کہ میں تم پرکوئی گذا ہ نہیں کہ تم ایسے غرسکوئی گود میں داخل ہوجن میں متہادا سامان ہوئ فرمایائیں یہ خانات کا تذکرہ سے یہ فرمایائیں یہ خانات کا تذکرہ سے یہ

حضوراکم صلی الشرعلید وسلم نے جو کی فرایا
وہ بعید نود یا اس کی اصل قرآن کریم می
ضر ورموجود ہو خواہ فہم کر قریب ہویا بعید
جوسمجھتا ہے وہ اس کوسمجھ لیتا ہے اور
سکتا ، اس کارے بی کریم صلی الشرعلی ہم کے
سکتا ، اس کارے بی کریم صلی الشرعلی ہم کے
سکتا ، اس کارے بی کریم صلی الشرعلی ہم کے
سکتا ، اس کارے بی کریم صلی الشرعلی ہم کے
سکتا ، اس کو اپنی محنت کوشش اور عقال ہے
انسان اس کو اپنی محنت کوشش اور عقال ہے
انسان اس کو اپنی محنت کوشش اور عقال ہے
انسان اس کو اپنی محنت کوشش اور عقال ہے
انسان اس کو اپنی محنت کوشش اور عقال ہے
انہم اور حبتی طاقت خریج کرتا ہے اس کے

النور: ۲۹

له الإتقال (۲: ۱۲۵ ر ۱۲۲)-

مطابق اس كوسلوم كرايتاب "

اورمحدّث نصرمقدی مضربت علی دخی استرعنہ سے دوایت کرتے ہیں ،۔

ورکوئی چیزالیی نہیں جس کا علم قرآن مجید میں نہ ہو البتہ آتا ہے کہ توگوں کی عقل فیم اس کے ادلاک کرنے سے قاصروعا جزیج " مامن شئ الأرعله ف القران دلكن رأى الهال يعجز عنه به

اورعلامه عبدالی کتانی مکھتے ہیں ١-قال عيدالرحس قال في من أدركنا من أهل العلم المتجهن فى العلوم ، الحدست المعيع اطلبوا لفظه أومعناه نى القلَّات تحددة مذاس دلك القبيل وذكرالإسام ابن مرزون عن بعض شيوخه أنه كان كتيراً ساليشيج مفهن الأحاديث من الآمات، و تال رحم الله مين ذعي ا "الصبرعندالمدة الأولى" الحديث: إن نظيري سالقال توله تعالى الاوَالْمُ يَرِيْنَ

مرابهاري شيخ) عبد الرحن فرمات بيك لعض اليمشجرعالم جن سے جارى القا يرنى يكت تع ك : مح صيت كالفاظ ياس كمعنى قرآن كريم بي تلاش كرواس مديث 25182 boldes امام ابن مرزوق افي بعض شيوخ ك متعلق للعقيميك وهاكتراحاديث مضون كالرح قراك كرم كاآيا كياكرتة تصريخانج انبول نفادالثر ال يروح كوسع جب كرحدث المعبر عندالصدمة الأدلى كاذكركيا وذلا الى نظرة رآن كريم مي آيت والصّبري فِ الْمَأْسَاءِ وَالْفَتْ اءِ وَفِيْنَ

ا مقاع الجنة (عن ١٧٤)-

ع مستراحدوا: ۲۰۵) و (۲: ۲۰ و ۱۲ و ۱۲ و ۱۲ و ۱۲ مع بخاری (۱: ۱۲ ما) و (۲: ۱۲ مع مع دا: ۱۳۱) وغیره

انباس ہے وسینی وہ لوگ جومبر کر نیوالے میں تنگی اور شدت اور جنگ الرائی کے وقت)

" بين دمصنّف اكتنابول كرمي طرلقيبارُ ذماذ كيميرن حراتس وفقيرالح مرابإ بركت علامه عارف موفى مستيري عبدالرطن فاحى حفظه الشركاب رجيج ان کے سامنے جب حضرت فاطریکی وہ مديث ذكركي كي جس من يراكب كانبو فيحضود اكرم صلى الترعليه وسلم سے اكيب خادم مانگا تھا توآبیطی الٹرعلیہ وسلم نے ان كواودحضرت على كوخرايا تعادكتم نماز كے بعد جان الله والحداثيد والتراكير مرحاليا كرو) يه وكرتمهاك لف خادم سي بيترب، تورعبالوض حفظه الشرف فرماياكماس كا مصداق آيت شريفي والباتيات العالخآ خيرعندرتك ثوابًا وخيراً ملًا ع. باريديروا واك نانا الوالفيض حمدون ب الى اج نے " نفخة المسك الدادئ مي

فِ التَّمَّاءِ وَ الفَّمَّاءِ وَحِيْنَ الْبَائِسِ لِلهِ اس كرب دكيتي ،-

قلت؛ تناسلك من الطلقية و خيارعم ناالفقيه المالح البركة العلامة العاري المعوفي سيدى عبدالحش الفاسى حفظه الله وذكس عنده حديث فاطمة فى طلب الخادم من النبي صلى انتهعليه وسلم وقولاني صلى الله عليه وسلم لعاد لعلى دفذالصخير لكما من خادمي قال حفظه الله: مصداق ذلك توله تعالى « وَالْبَاتِيَاتُ الصَّالِحَاتِ خَيُرُ عِنْدَرَ بِكَ ثَوَا بُالْهُ الْآية وفى نفحة المسك المؤسى لجدحدناس قبل الأم

البقرة المقاد

که مین نجاری (۱۰۲۱-۱۰) و (۲۰۱۲-۸۰ و ۱۸۰۸ و ۹۳۵) یک کم (۱۰:۵۱۹) منداهد (۱۰:۲۱ و ۱۲۳ اما ۱۳۵۱) تی که سورهٔ کبف ۱ ۲۰۹

أبى الفيض حسدون بن الحاج على قوله فى نظمه لقتة ابن حى :

جی میں ابن تجرکے مقدمہ کونظم کیاہے ان دوشعروں کی شرح کرتے ہوئے

> لأنكتاب الله منوج سندس ولفظ دسول الله طرز مسلم كأن كتاب الله من قوم عسجه ولفظ دسول الله عنج متسم ولفظ دسول الله عنج متسم

فكتب على شاحها بقله عن نفسه أنه كان بيل بال المعيم ويبين في كل باب أصله ت الكتاب.

وفى رياض الوردلول و خاتمة المحتقين المطلبين خاتمة المحتقين المطلبين بفاس أبي عبدالله محد الطالب ابن حمد ون بن المحاج الذى ألفة في تحقة والده المذكور أنه كان كثيراً ما لين حمفهن ألمايي المحيح من الآية ويبين في المحتج من الآية ويبين في المكتاب، قال؛ وحد ذه طريقة أصل العلم

انخ الم الكهام كرده جب بخارى برهات تع توبر اب ك اصل كوكماب الشرع نكال كرست لايا كرية تهد

ادران کے صاحبزا دسے ابوعبوالتہ میں الطالب بن حدون بن الحاج جن پر فاس میں رہبرے اور تحقیق ختم تھی ، ابنی نصنیعت ریاض الورد سیم جس میں انہوں نے اپنے والد خدکور کے حالات بیان کتے ہیں ، کھھاہے کہ وہ اکٹر صحیح بیان کتے ہیں ، کھھاہے کہ وہ اکٹر صحیح بیان کیا ہما تھے اور ہر ترجہ بیان کیا کہ تے تھے اور ہر ترجہ سیمن کی اس کی اصل کتاب النہ ہے الباب میں اس کی اصل کتاب النہ ہے ہے ، اور یہی ان الباب میں اس کی اصل کتاب النہ ہے ہے ، اور یہی ان علم ارکر ام کا طنعیم ردا ہے علم ارکر ام کا طنعیم ردا ہے علم ارکر ام کا طنعیم ردا ہے علم ارکر ام کا طنعیم ردا ہے

السنبودين في العدادم بله المستوديق الشيخة في يم متبري يه السيطرح حضرت عبدالشرب سبوديقى الشيخة كا واقعه بين بحود في اورگدواني الشيخة كا واقعه بين بحود في اورگدواني من منتعلق ب اور جيم " رسول الشري الشيخة كا وامري انباع كاهم "كي ضمن مان كريكهي ي واضح فرما يا شما كه اليي عورتول برلعندت ماكريم بين بي واضح فرما يا شما كه اليي عورتول برلعندت ماكريم بين بي واضح فرما يا شما كه اليي شورتول برلعندت ماكريم بين بي وادر دب اور دليل بين آيت" وَمَا الْ تَاكُتُهُمُ النَّنَ سُولُ فَي فَيْ كُنْ وَهُ " بيشي

طافظ ابن جرالمتوفى تلصي ماك مريث كوفوا تدكيضن مي لكصة بي ا

سحضرت كعب بن عجرورضى الشرعندك مديث من گذرے محدث فوا مكم علاوہ الك يديم ہے كہ سنت دصريث كتاب الشرك جملات كو بيان كرنے والى ہے اس لئے كہ قرآن كريم ميں فدير كاؤكر والدا من الفوائد غيرمانقدم المنافع المعمل المنافع المعمل الكتاب الإطلاق الفدية فالقران وتقييد هابالينة

کیاگیا ہے سیکن سنت نے اے مضید کردیا ؟ علامہ مبردالدین عینی المتوفی صفی ہے ہے ہیں کی کھا ہے کہ سنت کتاب اللہ کے مجالات بان کرنے والی ہے کیے

امام شافعی رجم الترتعالی نے اس کے لئے ایک منتقل باب قائم کیا ہے جب کاعنوا

" باب ما أبان الله لخلقه من فها منه على رسوله اتباع ما

التراتيب الإوارية (٢: ٢٠٠ و٢٠١) -

الحضر ؛ ٤

فنتح الباري (۱۲: ۱۲)-

عرة القارى ده ١٥٦٠)-

أرحى إليه دماشعدله به من التباع ما اسر به ومن هداله و أخده ما السربه ومن هذا هذا و أخده ما السربه ومن هذا و أخده ما السربه ومن هذا و أخده ما السربه ومن هذا و المن المناجعة على المناجعة ع

التُرْجِلِ شَانَهُ فِي الْمِينِي وَصَلَيْنَاتُهُ صِحْسَرِما يا الله

" اے بی ڈرائٹرے اور شکروں اور منکروں اور منا نقول کا کہنا نہ مان بے تنک الترب کچھ جاننے والاحکم توں والاہے - اور حلی اس برج حکم آئے تجھ کو ترب رب کی طرف سے بے شک انڈر تہا دے کام کی خبرد کھتا ہے "

يَاآيُهَا النَّبِيَ اتَّقِ اللّهُ وَلَا اللّهِ اللّهُ وَلَا اللّهِ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ وَاللّهُ اللّهُ الللّمُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

" توجل اس برج تھے کو حکم آئے تیرے رب کا کوئی معبود اس کے سوانہیں اور منہ مجھیر نے مشرکوں سے ج اورت رمایا ،-راتیخ سکا کرچی الکیک مرث تُتَلِفَ لَا اِلْمَهَ إِلَّاهُ وَالْمُورَدَ أَغْمِثُ عَنِ الْمُتْشِ كِينَ يِهِهِ عَنِ الْمُتْشِ كِينَ يِهِهِ اورت رمایا ،-

أَهْوَاءُ اللَّذِينَ لَانَعِنْ أَلَانَعِنْ أَوْنَ لَا

مسمیر بہے تجدکور کھا ایک داستہ پر دین کے کام کے سوتو اس پرطی ا وُرست جل خواہنتوں پر نادا نوں کی " تُحَمَّ جَعَلْنَاقَ عَلَىٰ شَمِوْمِ عَهُ مِتِنَ الْلَهُ مِنْ فَاتَّبِعُهَا وَلَاتَنَّيْعُ

له الاحسراب و ادم

الانعام : ١٠٦

يه الجاثيه ١٨١

میرالشدتعال نے اپنے رول علی الشرعلیہ وسلم کو اس احسان سے آگاہ کیا جو اس کے عسلم ابق میں تفاکہ وہ آپ کو لوگوں کی گزندسے مفوظ رکھے گاچنا نجے فرمایا ،۔

" اے دمول پہونجا دے جو تھ پرا تراتیرے دب کی طرف سے اور اگرالیہا نہ کیا تو تھے کچے نہ پہونچا یا اس کا پیغام اور النہ تھے کو بچالے گا لوگوں ہے ؟ يَاأَيُّكَ النَّهُ وَلَى بَلِغُ مَا أَنْهِ لَكَ الْلِكُ مِن تَبِكَ دَان لَّهُ الْلُكُ مِن تَبِكَ دَان لَكَ مِن اللَّهُ عَلَى مَا بَلِّنْت رِسَالَت هُ دَا مِنْهُ يَعْمِرُكَ مِن الناس لِهِ دَا مِنْهُ يَعْمِرُكَ مِن الناس لِهِ

اس کے بعد امام شافعی رحمداللہ نے ان آیات کومیٹی کیاجن سے بہ ثابت ہوتاہے کہ مسور اقد س سے بنابت ہوتاہے کہ مسور اقد س سے بنائے ملے اللہ وسلم نے اللہ تعالیہ وسلم نے اللہ وسرول کوصیحے راسند بتلایا ، جینانچہ ارشاد باری ہے ،۔

" اورای طرح بعیجام نے تیری طرف ایک فرشترا پنے کم تو ندجا تا تعالکیاہے کتاب اور ندا یان لیکن ہم نے دکھی جربرونی ای توراہ مجا دیتے ہیں جس کوچا ہیں اپنے بندوں ہیں سے اور بے شک تو بچا یا ہے سیرحی داہ " وَكَذَالِكَ أَنْ حَيْنَا إِلَيْكُ فَعُمَّا الْيَكُونُ فَعُمَّا مِنْ أَسْرِنَا مَا لُنْتَ تَدْمِى فَي مِنْ أَسْرِنَا مَا لُنْتَ تَدْمِى مِنْ أَلَا لِمُ الْكُونُ وَكَالُونُ مَا لَا لِيُمَالُ لُكِنِ مَا الْمُكِنِّ وَلَا الْمِي مَا لَا يُمَالُونُ وَلَا لَكُونُ الْمُعْدِي فِي اللّهِ مِنْ عِبَادٍ مَا وَاللّهُ مِنْ عِبَادٍ مَا وَاللّهُ مِنْ الْمِي مِنْ عِبَادٍ مَا وَاللّهُ مِنْ الْمِي مِنْ عِبَادٍ مَا وَاللّهُ مِنْ الْمِي مِنْ الْمُعْدِي إِلّى مِنَ الْمِي مِنْ الْمِي مِنْ الْمِي مِنْ الْمُعْمِينِ إلى مِن الْمِي مُنْ الْمُعْمِينِ اللّهُ مِن الْمِي مُنْ اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهُ مِن اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مِن اللّهُ مِنْ اللّهُ مِن

الطاگر خرج تاتیجه برانشرکا فضل اهاس کی رحمت توقعب کر حکی شخص ان میں کی ایک جاعت کرتیجه کوبه کا دمی اور وه به بکانه میں سکتے مگر اپنے آپ کواور تیم ا

44: KUSLU

الشومك: ٢٥

كيس كالسطة والارالشية ألدى تحدير كما الدحكت (منت) اورتجير سکھائیں وہ باتیں جو تو بنجانتا تھا اور الشركاففل تجهرست برايء

مِنْ شَيْءٍ وَٱلْزَلْ اللَّهُ عَلَيْكَ أَلْكَتَابَ وَالْحَكَةَ وَ عَلَّمَكُ مَا لَمْ تَكُنُّ تَعْلَمُ وَ كَانَ فَضُلُ اللَّهِ عَلَلْكَ عَظَيًّا ا

ال آیات کے ذریعہ التّہ نعانی نے اس بات کو واضح فرمایا کہ نبی کریم علیہ الصلاۃ والا يريدلازم سے كه خدا كے حكول كى انتباع كري اور الشرتعانی نے خوداس بات كى گوا ہى بھى دم آپ نے اپنے اس فرض منصبی کو بطرائتی احسن پوراکردیا اورخود حضور اکرم صلی الشرعلیدی

نے متنبہ کردیا ،ونسرمایا ،۔

م مرا نے ترون کا تہیں حکم دیا ہے یں نے ان میں ہے کوئی جر نہیں چھوڑی ان تام چرول کا تمبي کم دے ديااور چیزوں سے خوانے تہیں روکا تھاان

ماتكت تستأميا أسركم المتميه إلارتدأمرتكميه ولأتهكت شيئًا ممانعاكم اللهعنه إلأوت نهتكم عنه

یں ہے بھی کوئی چیز نہیں چیوڑی تمام چیزوں سے میں نے تب ین منع کردیا " اس كربعدامام شافعي فرماتي ب

التُدنعاليُ نے اپنے ازنی علم اور تا قابل ترد میجتی فیصلہ سے اپنے ان احسانات ن اس نے دسول الندصلی الندعلیروسلم مرکے بین آگا ہ فرادیاکدان میں ایک احسان بیجی سے کا كواس معضوظ ركعاكدوه آب كوراستدس بالاسكيس الدالشدة عالى فيدسول الشصلى الشاعل وسلم كوريهي بتلاونياكه وه آب كوكي نقصان نهبي بيبوشيا سكتة اوزهيرالتُدتعالى في شهادت وا كهآب خلاكامقرد كرده سيرها واسترتلاني واليهي اورآب ني رسالت كاحتي اداك ا ورالتُدتعالي كاوامركا يورا يورا اتباع كياب ا ورحوآ بات مي يملي ذكركرويكا بول جن ميا تعالى نے رسول الشرصلى الشيعليہ و كم كى اطاعت كوفرض قرارد إ اوراس كى تاكىد فرمال

ان آیات مبارک پی انٹر تعالی نے اپنی خلوق پر دسول انٹرصلی انٹرعلیہ وسلم کی بات ماننے اوران کے اوامر کے اتباع کولازم کیاہے۔

امام شافعي لكھتے ہي كرحضورا قدى صلى الشطيرة الم نے جوامور سنت قرار وت بي جن كے بارے ميں كوئى صريحي حكم مذہو تو در حقيقت رسول السُّر صلى السُّرعليه وسلم نے السَّر كے عكم ي سے ان كوسنت قرار ديا ہے ، يې النزتعالی نے يى اپنے اس قول كے دريد بتلايا:

وَإِنَّكَ لَهُ يُوكُ إِلَّى صِرَاطٍ مِنْ سَرَاطٍ مِنْ اللَّهِ الْمُعْدِدِةِ مُستَقِيمً وصِدَ اطارتُهِ وَ النَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ

اسى لتة رسول الشّرصلى الشّرعليدوسلم نعجبان كناب الشّدي نص بوول يعي اورجها بعینه نص نه برویا سعبی دو تون جگر سنت قرار دی بر بهرصورت جس چیز کورسول اکرم علی الته عليه وسلم سنت قراردي الترتعالى فيم بهاس كه اتباع كولازم كرديا ب اورآب كى اتباعي بى ابنى اطاعت كومنحصر ركها ب اورآب كى اطاعت سے اعراض كومن سيت قرار ویا ہے اور اس سلسلہ میں کھی کوئی عذر قبول بہیں کیا اور نبی کریم صلی التہ علیہ وسلم کے فرامین مبارکہ كى اتباع سے بچنے كاكوئى راسته باقى نہىں رہنے دیا جیساكہم نے بیان كيا اوراس وج سے بھى

ك حضور اكرم صلى الشرعليدوسلم في فرسايا و

لأألفين أحدكم ستكثاعل أديكته يأتيه الأمرس أسرى معاأسرت بهأو تعيت عنه فيقول الأدمى ما محدناه فى كتاب الله

و ين تم يل م كن تحف كوا معطرة : بإؤن كدوه دينة تخت يرشيك لكاس بيطابواسكياس ميراكوني عكم ياميرى طروت سے کسی چیز کے بار سے میں کا آئے اور وہ یہ کنے لگے کمیں تو کھے نہیں ما تاجوم کتاب الندس پاتیں گے ای ک انباع کویں گے "

اس کے بعدامام شافعی رحدالشفرماتے ہیں ،۔

اور دسول الترصلی الترعلی دست کی سنت کتاب الترکے ساتھ دوصور تول ہیں ہوگی ۔ ۔ ۔ ۔ ایک پیرکس الترعلیہ وسلم نے اس کا اتباع ۔ ۔ ۔ ایک پیرکس الترعلیہ وسلم نے اس کا اتباع اسی طرح کی ہون ازل ہوا ۔ اور دومری صورت بیہ کہ دسول تعبول صلی التر علیہ وسلم نے اس مجبل سے جوالت تعالیٰ کی مراد ہے اس کے معنی کو سجھا یا ہوا در دیر بتلا یا ہو کہ اس کے معنی کو سجھا یا ہوا در دیر بتلا یا ہو کہ اس کی فرضیت عام ہے یا خاص ، اور یہ کہ بند ہے اس کو کس طرح ادا کریں ، اور ان دونول ہو تا کہ میں دسول الترصلی الترعلیہ وسلم نے التر تعالیٰ کی کتا ہے کا اتباع کیا ہے ۔

اور مراحق بن

متام المعلم اس بيتفق مي كسنت نبوى كي مين صورتي مي جن مي سدويراتفاق ہے اور دونوں مجی لی جاتی ہیں اور ان کی فروعات رونما ہوتی ہیں ۔ ال میں سے ایک یہ كد التد تعالى في اس كے بار مين فعي قرآني نازل كى بوا وروسول اكرم على الله عليه ولم في اس نص کے مطابق اس کو بیان کیا ہو ، اور دوسرے برکہ النہ تعالیٰ نے اس کے با سے بی میں حكم نازل كياموا دررسول اقدس ملى الشرعليه وسلم في اس كيوه معنى بيان كروسيمول جو الشرتعانى كامقصدته واوران دونول صورتول مي كسي كاختلات نهي واورميري صور یہ ہے کہ رسول انورصلی الشرعلیہ وسلم نے کوئی سنت الیبی قرار دی ہوجی میں کتاب الشرک نص نازل نہوئی ہو ، اس کے ما بر میں بعض علار تو یہ کہتے ہیں کہ الشر تعالیٰ نے چونکرآپ کی اطاعت فرض كى سے اور اللہ تعالیٰ كو يہلے سے يعلم تفاكرآب السے كام كري محجو خداكي فن كيموا فق بول كي تواس الت الشرتعالى في آب كويت ديا ب كد آب السياموري سنت جارى فرماتيں جہاں بركتاب الله كامنصوص محم ندمو - اورتبعن يركيتے بي كرآپ نے كوئى سنت ایی جانب سے جاری بہیں فرمانی اور جو جاری فرمائی ان کی اصل کتاب الشمیں موجود ہے ، جیسے کہ آپ نے سنت (احادیث) کے دربعہ درکعات نمازی تعدادی تعدین ک اوراس طرح اس کے تمام لوازمات کی ، اور اس کی اصل قرآن کریم میں ہے اور وہ ؟

طرفيت صلاة كاسكم اوراس الرساورو يكرمعا ملات بوع وغيره بي كرآب احاديث كوريدان كاحكم شرعى بيال كياس لي كدالته جل شانه فرمات بي المسلط المنتر المسكم أن يستركم أن يستركم

" الشرخ بيع اخرير وفروخت كوحسلال كيا التدييا (سود) كوحرام فسنسرمايا " ميروترمايا بر وَأَحَلُّ اللهُ الْبِيْعُ رَحَمَّامَ السرِيلِيل يِنه السرِيلِيل يِنه

اس مے حضوراکرم صلی التُدعلیہ وسلم نے جوکسی تیزکو حلال یا حرام فریما یا ان سب ہیں اللہ تعالیٰ کی طریب سے میں ال اللہ تعالیٰ کی طریف سے تبدین کی خدیمت اسنجام دی ہے بعینہ اسی طرح جس طرح کہ نماز کی ہے۔ بین دیول! قدیں صلی التُرعلیہ وسلم نے فرمائی ۔

اوران میں سے تعیف پر کہتے ہیں کہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کے باس اللہ کا ہیدنام با ور اس فرض الہی کی بنام پر رسول اقدس صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کو سنت قرار دیا ۔ اور ان میں سے بعض پر کہتے ہیں کہ تمام وہ اشیار جنہیں آپ نے سنت قرار دیا وہ آپ کے قلب میارک ہیں الفار کر دی گئی تھیں اور آپ کی سنت وہی حکمت ہے جو اللہ

مال کی جانب سے آپ کے دل میں ڈال دی گئی تھی اس لئے جو کھیے آپ کے دل میں ڈالا

ا ب وه آپ کی سنست ہوگئی ۔

بہرصورت کیجیمی ہوالٹہ تعالیٰ نے اس بات کو واضح فرما ویاکہ لوگوں بررول الٹہ کی الٹہ علیہ وسلم سے کی الٹہ علیہ وسلم سے اور حب کوئی چیز دسول اکرم صلی الٹہ علیہ وسلم سے موجا سے تواس کی مخالفت کرناکسی کے لئے درست نہیں اور الٹہ تعالیٰ نے تمام کوگوں کے بائے درست نہیں اور الٹہ تعالیٰ نے تمام کوگوں کے بائے درست نہیں اور الٹہ تعالیٰ نے تمام کوگوں کے بائے جہائے میں معنورا قدس میں الٹہ علیہ وسلم کامخاج بنایا ہے اور حضور انور میں الٹہ علیہ وسلم کامخاج بنایا ہے اور حضور انور میں الٹہ علیہ وسلم

المعشرة والمما

المحادث والمحادث

نے اللہ تعالیٰ کے احکامات کی توضیح فرمائی ہے۔

سجب رسول الشرسل الشرعليدوسلم كى سنت الشريع الشرعاء في الشرعاء السريح فرض كيا منها والسريح معنى ومرادكوبيا المريخ والى بوكنى اوراس مي معنى ومرادكوبيا مريخ والى بوكنى اوراس مي معنى كرمي مريخ والى بوكنى اوراس مي معنى كرمي من كتاب المشرك كوئى تص موجود ندمو والمدروي مستسبى رسيم كى خواه كوئى صورت بو مالتر تعالى اوراس كي خول صفى الشرعلية ولم كاحكم كسى صالت مي شيل منه من الشرعلية ولم كاحكم كسى صالت مي شيل منه من الشرعلية ولم كاحكم كسى صالت مي شيل منه منه منه المنه والمناسكة مي المنه والمنه منه المنه والمنه منه المنه والمنه منه المنه والمنه المنه والمنه المنه والمنه المنه والمنه المنه والمنه والمنه

علامة حلال الدين سيوطي «مفتاح المجنة "مين رقط ازمي ،-

"اور دولوگ یہ کہتے ہیں کہ آپ نے کوئی سندت صدا کے حکم کے بغیر مقرز مہیں کی سخواہ وہ حکم اس وجی کے ذریعہ کما ہوج آپ پر نازل ہوتی تھی اور لوگوں کے سنے راجھی حیاتی تھی خواہ اس بیغام کے ذریعہ میں ایس بیغام کے ذریعہ کا دری سے حصور اکرم صلی الشر علیہ وسلم کو بھیجا جا تا تحقا کہ یہ کام کریں میے حضور ات محصور انور یہ نے کریں میصور اتور علامرهال الدي عين المقا واحتج من ذهب إلى أنه لم سن إلاباً مى الله إلما بوحى ينزله عليه نتيلي على الناس أوبرسالة ثابتة عن الله أن أفعل ثابتة عن الله أن أفعل كرن القوله على الله عليه وسلم فيها دواه الشيخان فى فقمة الرزاني الأفقين

له الرسالة للشافعي رص هد تا ۱۰ ۱۱)

صلی انٹرعلیہ وسلم کے اس فرمان سبادک ساسترلال كرتيس ي امام يخارى ومنم نے زانی کے اس تصری روایت كيا بي سي آب ففرمايا تفاكس تهادا فيصلهكتاب الشري كروك اور معرآب نے کوڑے اورشیربد کرنے کا فيعلدكيا حالانكتنهريدركماني كاحكم قرآت كريم مينسي ب العطرح يحفرات الادوايت سيعى استدلال كرتي مشينين حفرت ييلى بن الميدوى الشرطة ے دوایت کرتے ہیں کہ نی کریم علی اللہ عليه والمحبوان مي تصركه كيشخص عطر لگا ہواجہ سے ہوسے آیا اصاص نے عره كے لئے احرام باندھا ہوا تعالى فعرض كياكدا الشرك ويول آب استحف کے باریس کیافرماتے ہیں حيل فيعرو كاحرام جيدي فوشيو لكانے كے بعديا ندھا ہو جفوراكم

مث المأاب الله المزيد تضى بالجلد والتغريب وليس التغريب فى القالن وبما أخرجه الشيخا عن لعلىن أمية فرى الله عنه أن النيم على لتعطيد والالمح عليه عندا نحاءهل علمحية متضيخ بطيب وتدأحم بعماة نقال: يارسولالله كين ترى نى دجل أحرم بعماة نى حية بعد سا تضمخ لطيب وفنظر إليه النبىملى الله عليه وسلم ماعة نم سكت نحامه الوحى فأنزل الله ، ووأتيوا الْحَجَّىٰ الْحُمَّةُ لِلْهِ الْمُ سىعنەنقال:لاأىپ

له می خاری (۱:۸۰۱ و ۲۰۸) می سلم (۱:۲۱ مر۳۷) منن الی داود (۱:۲۵۳) وغیره -

البعتره: ١٩٧ <u>.</u>

الدى سألنى عن العمرة آنفاً ، أسا الطيب الدنى بك فاغسله تلاث مأس دأما الحية فانن عماشم اصنع فى عمرتك ما تصنع ف حيرك يله

صلی الشرعلید وسلم نے اس کی الروٹ مولی دمیرد پیکما اور میر خاص موش ہو گئے اس آنا ا میں آب بروحی نازل ہوئی اور الشرئے حکم دیا کہ میں تھے اور عمرہ کو الشرکے اند پورا کرو " مجرآب سے وہ کیفیت (جودی کرو " مجرآب سے وہ کیفیت (جودی

گئی توآپ نے فرمایا کہ وہ تحف کہاں ہے جس نے بچہ سے بھی عمرہ کے بارے میں پوجھا تھا اود بھر آپ نے اکٹ غف سے فرمایا کہ جونوشہو تہما دے لگی ہے اسے تین مرتب دھولوا ور جبر کو اپنے جسم سے علیمدہ کردوا ور بھراس کے بعد عمرہ میں وہ تمام افعال بجالا و جرچے میں کرتے تھے یہ

اكب اود أثبت بى الشرتعالى نے ذكر كے بجائے كتاب كالفظ استعال فرمايا ہے

ادمشادیے ،۔

قى مَا اَنْ تَلْنَاعَلَيْكَ الْكِيْبَ الْلِينُهُ بَيْنَ لَهُ مُ الّذِي الْخُتَلَقُولُ وَيُهِ دَهُ مَى قَ الْخُتَلَقُولُ وَيُهِ دَهُ مَى قَ رَحْمَةُ يَقَوْمٍ يُكُومِنُونَ ﴿ وَمُعَمَّةً يَقَوْمٍ يُكُومِنُونَ ﴿

اکیدادیمقام بهادشادید بر وَسَااَدُسَلْنَاسِنَّ تُتُولِ إِلَّا مِسَانِ قَدُ مِهِ لِيُبَيِّنَ لَقُمْ جَّهِ مِلِسَانِ قَدُ مِهِ لِيُبَيِّنَ لَقُمْ جَّهِ

"اورہم نےآپ پرکتاب اس لئے اٹادی ہے کہ آپ ان کو وہ چیز کھول کرشنائ حیں یں وہ حیکڑ ہر ہے ہیں اودر بھی راہ سجھا نے کوا ور رحمت ان لوگوں کے لئے جوا بیان لامنے یہ

" الدكونى دسول نهيس بسيجام في مثر بولى يولنے والا اپئ قوم كه تاكدة كو تحقيقات

ل منتاح الجنة رص وورا). كم النفل ١٢٠

يه انجميا ي

مندر حبربالا أيت كريمين الشرعل فنانزن انبياركرام عليج اسلام كم منصب بان فرمایا ہے کہ انہیں دنیایں جیجای اس لئے ماتاہے کہ وہ خدا کے احکام لوگوں کے الصيكول كعول كربيان كري يعنى الترجل شائد كم نازل فرموده احكام كواين الفاظ ب بيان كرس اوريم منصب حضور اقدس صلى الشيطيرة لم كوي عطاكيا كياآب فياس المعيركونها يت وي بص اسلوب معتت وجانفشانى كے سأتعدا دا فرما يا اور خدات ا وامرو نوابی اوراحکامات و قوانین کواتنت کے سامنے اپنے الفاظ مراضح سا یااور اسی توضیح کا نام سنت و صریت ہے۔ الك اورآيت كريمي ارشاد بارىك :-خُمُّ إِنَّ عَلَيْنَا سَيَا شَهُ لِهِ ﴿ ﴿ ﴿ مِهِوْسَ كَا بِيانَ كُمَّ الْمِي يَا لِمُعَالِمُ وَمِيرٍ لین قرآن کریم کی ساری تشریح اور توضیح بھی ہمآب کی زبان سے کرائیں گے آپ نے بى يى آيات كى ترح كى ال كے مقامد اور جمل كومتعين كيا ورمقصودى معنى كى تعيين كى وسب كجدال وى فى كودرايد منها ، اسى بيان كے تحت صفور انورصلى الشرعليدوسلى كام منصل داخل ہے جو آپ نے قرآن کریم کی روشنی میں کی واحکام شریعیت اور شعائراسلام التفعيل بى كريم صلى الشيعليه وسلم نے وحی كے ذريعيم كى اور بيبيان بعينہ النيوس سنانہ ا بیان تفااورای کوایک درسری آیت کریمین ان الفاظی واضح فرایا ب د وَمَا اَسْفِلْتُ عَنِ الْهَوى إِنْ الدوه بين بولة كي بي ان وَالْ عُرَ الْا دَحْيُ يَوْحِي يِنْهُ وه تروى مِي يَجِي بوتى يَد كوياص طرح آب بروى على (قرآن كى) نازل بوتى هى اى طرح وى خفى رسنت وحديث كى) بى ازل موتى هى وقرآن شراف كالمين ا وراحكام كے الت تفصيل كاكام دياكرتي في اوراك كالم رنااوراس کی اتباع کرنا تیخص برالازم براس منے کرنی کریم ویسٹنگٹ اس بین برینجانب الشرامور تھے الد مناوق اس كے تبول كرنے يرحكم البي تحيوري ،آب مطاع بي النتہ نے سندوں برآپ كى اظا ادم كردى سے جيابداري فصيل سے ذكر كر حكي بي . رسول الشرق المسترة المحتيب المالي الشريارك وتعالى في قرآن كريم مين المسترة المسترة المحتيب المرى تصريح المسترة والتلام بي المت كر حاكم اعلى بي في المرك قرائ كريم عليه الصلاة والتلام بي المت كر حاكم اعلى بي في المرك قرائ المرك تحرف المرك ال

اس آیت میں اللہ تعالی ارشاد فرمارہے ہیں " نتھ کم " تاکہ آپ فیصلہ کریں اس منصب باہمی نزاعات میں فیصلہ کرنا ہی ہے اور لوگوں پر لازم ہے کہ آپ کے فیصلوں کو تسلیم کریں اور تھی ہے واقع منسرمادیا کہ آپ یے بیفیطانی جانب ہے نہیں ہوا کرتے بلکہ منداکی طرف سے ہلا سے ہوئے ہے بیفی فرمایا " جہ الڈلاٹ المدّد " اللہ جَوَاکِ ہِمائیں اس کے موافق ، توجب یہ فیصلے اللہ تعالی مانب سے ہوئے تو لاز مائی براہ ہو کہ مائی مان وی فیصلوں کو تسلیم کرنا ضروری اور لازم کا دیکن وی فیرمتلوسے) اس لئے لوگوں پر آپ کے فیصلوں کو تسلیم کرنا ضروری اور لازم کا ایک اور آپ کے فیصلوں کو تسلیم کرنا ضروری اور لازم کا میں منصب نبی (وی سیم کی ان الفاظ میں بیان فرمایا اور سائٹ ایک اور آپ کے فیصلوں کو تسلیم کرنا ضروری اور اللہ میں منصب نبی (وی سیم کی ان الفاظ میں بیان فرمایا اور سائٹ کو میں منصب نبی (وی سیم کی ان الفاظ میں بیان فرمایا اور سائٹ

مى مسلمانون كوان كى اتباع برمامور فرايا ادر شادى در

"ایان والول کی بات توہی ہوتی ہے کہ حب بلا ہے ان کو انشرا وردسول کی طرف ان کو انشرا وردسول کی طرف ان کے درمیان فیصل کرنے کو توکہیں ہے نے مسئن لیا اور دمی اوگ مان لیا اور دمی اوگ میں جن کا مصلا ہے ؟

إِنَّمَاكَانَ ثُولَ الْمُثُونِينِ إِذَا دُعُوْ إِلَى اللهِ وَمَهَ وَلَهِ اِنْهُ كُلُمُ بَيْنَهُ مُ اللهِ وَمَهَ وَلَهِ اِنْهُ كُلُمُ بَيْنَهُ مُ اللهِ وَمَهَ وَلَوْ المَعْنَا وَ اَطْمُنَا وَ الرَافِلِ فَي عُلَمَ مَا الْمُفَلِحُونَ فِي الْمُفَلِحُونَ فِي اللهِ اللهِ عَلَيْهِ مَا اللهِ اللهِ عَلَيْهِ مَا اللهِ اللهِ عَلَيْهِ مَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَيْهِ مَا اللهِ اللهُ عَلَيْهُ مَا اللهِ اللهُ عَلَيْهِ مَا اللهِ اللهُ عَلَيْهِ مَا اللهِ اللهِ اللهُ عَلَيْهِ مَا اللهِ اللهُ عَلَيْهِ مَا اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ

له النساء :١٠٥

له النود : ١٥

مومنول کی شان ہی ہے کہ وہ ہی کے فیصلہ کونسر وعیْم قبول کیا کہتے ہیں ، ایک اور آیت

مى تسرمايا ب

نَكْرَدَتِهِ فَالْاَيُنُ فَيْرُنَ عَتَى يُحَكِّبُولُ فَيْ فِيهُ شَجَرَ بَيْنَهُمْ مُثَمَّلًا يَجِدُ وَلِي آنَفُسِعِمُ حُرَّجُ المِنْمَ المَّهِ مُنْ الْفُسِعِمُ حَرَّجُ المِنْمَ المَّهِ المَّنَّ المَّنْ المُنْكَ وَكُنِي لِمُثَوْل مَنْ لِيمًا إِنْهُ مَنْ لِيمًا إِنْهِ

م سوتسم ہے آپ کے رب کی کہ وہ وہ انہیں میوں گئے بہاں تک کہ آپ کوئی منصف جانیں اس جبگڑے میں جو الن میں اٹھے ہیر نہ پائیں اپنے جی میں تنگی آپ کے فیصل ہو اور قبول کریں خرشی سے یہ

" اورکام بین کسی ایان دارمرد کالم در در ایر در کالم در در ایران دارعودت کا جب که مقرد کرے انڈا ور اس کا دسول کوئی کام کدر سے ان کو اختیا را بنے کام کا اور س نے نا فرمانی کی انڈرک اور اس کے دسول کی سو دہ وہ میں میں وال سروی می کے دسول کی سو دہ وہ کی میں وال سروی می کے دسول کی سو دہ وہ کی میں وال سروی می کے دسول کی سو دہ وہ کے کہ دسول کی سو دہ وہ کی کر ہیں

مندرجربالاآیات واضح بوگیاکہ نی کریم سلی النترعلیہ وسلم خداکی طرف سے مقرد کردہ ماکم اعلیٰ بیں مسلمانوں کو ان کے فیصلے تبول کرناضروری ہے اوراسی برمدارا بمان ہے۔

ارشادرآبانی ہے در دہ لوگ جربردی کرتے ہیں اس دسول کرچونی اُتی ہے جس کو پاتے ہیں لکھا ہوا ورول الشري الشري المنارع

ٱڷۜ؞ۣ۬؈ؘؠۜۧۼؚٷؘؽٵڵ؆ؖٷڵڵۺؚؖ ٵڵؙٲؿؖٵڷؖ؞۫ؽؽڿڰڎٮٞۿ

الشاء: ٥٧

له الأحمال ٢٧٠

الين ياس توريت اورانجيل مي ، وهم كرتا بان كونك كام كا اور يخ كرتا بر برُے کامے الدحدال کرتا ہالاک القسب باكر جييزي ا ورحرام كرابر ان پرنا پاکٹےپیزس اور اثارتا ہے ان يرسان كالجواوروه تيدي جان يتصير بس بولوگ اس پرايمان لائيں اوراس كارفاقت كري اوراس كامرا كرسيا ورتابع بون المد نور كيجاس کے ساتھ اتراہے دی لوگ مج نیے این راد کو

مَكُنُّوُبُاعِنُكَهُمُ فِي التَّورَاةِ وَ ٱلْإِنْجِيْلِ يَأْمُنُوهُمُ بِالْعَنَّوْنِ وَيَنْعَاهُمُ عَنِ الْمُثَكِّرِينَ عِلَّ لَعُمُ الطِّيّاتِ وَيُعَرِّمُ عَنْهُمُ الْخَيَاثِثَ رَبِضَعُ عَنْهُمُ أَنْثُمُ مَالُكُ عُلَالَ الْتِي كَانَتُ عَلَيْهِمُ فَالَّـٰذِيْنَ السُّنُوابِهِ وَعَنَّادُوْوَ وَنَصَمُ وَكُوالنَّبُعُوا النَّورَ اللينى أنزل مته أنكلك هُمُ الْمُفْلِيُونَ إِنَّهُ

حس طرح مندروج بالاآيت كريميدي المترحل شانة في دسول الشصلي الشرعليدة لم ك تشريعي منصب كوبيان فرمايا باس طرح اس أيت بي وسول اكرم صلى الشرعليه وسلم ك احكامات كے افذكر فكا بحى فردى ہے جيائي " امر بالمعروف" ميں تمام امورفيرا م اورمفيد كامول كے كرنے كاحكم آگيا خواه وه عبادات بول خواه معاملات ، خواہ خفى بول خواه احتماعي

«نهى المنكر» بين تمام قابل اكار نايسنديده اودخراب كامول سينع كرنا واخل مي خواه ال كا تعلق عبادات م موخواه معاملات سے -

وتحليل طيبات " مين وه تمام باكيزواشيار جوعمه واور مفيد سون ان كاحلال كرناآك. خواه ان کاتعلق آگولات سے ہو یامشرو بات سے ، منکوحات سے ہو یا لمبوسات سے سب اسىلى داخلى ـ

" تحريم خبائث" ميں تمام گذرى مضرت رسال اور ذوق سليم اور فطرت صحيح كے

الاعرات : ١٥٤

ا عتبارے نالپندسی اشیارے منع کرناا درمان کوحرام کرتا آگیا خواہ وہ ماکولات ہوں یا شروبات سباسي شاملي

" وضع اصر " مين ا ن يخت احكام كا دوركر نا أكياج مبلي المتول بران كى نافرمانيون

ل بناديرعا تدكة كنة تع.

غرض اس تشريع كے لئے مضورا قدس صلى الشرعليہ ولم كومبوث كياكيا ہے اورلوكوں با بى اتباع لازم كردى كى ب اس أيت كى روتى بى آپ فى بهت ى چيزى طلال رمائين اوربيت ي چزون كوحرام قرار دياجن كتفصيل م بيلي بيان كريكي . آیت کریمیربالایں ان لوگوں کی تعربیت کی گئی ہے جونبی کریم صلی انٹرعلیہ وسلم کی اتباع رتيب، اب اتباع ص طرح وحى جلى يين قرأن كريم كے احكام كىلازى ہے اسى طرح ی فقی کی بھی صروری ہے کرجس میں سارے احکام کی عصیل ہے

سورة فرقان مي ارشادي .-وَمَا أَدُسَلُنْكَ إِلَّامُنْشِلُ وَّنَانِينًا ﴿ " اورَتِه كُومِ نَصِيابِي وَتَحْرِي اور 222113 3 5 5 5 5

اس آیت مبارک می حضور اقد ترصلی الشرعلیروسلم کامنصب اغذار و مبشیر بیان کیاگیا ماود فوتخبرى سنانا اور دراناكبى قرآن كريم كے ذريد موتا ہے اور سی احادیث طبيد كے ذوليد

سورة أور في ادم ادر ادب ا-مستحيو المنادسول كالميض اغدد برابر لَا تَهْ تُعَلِّوُا دُعَاءُ التَّاسُول ال كيج المائي في الكدوم ال مَيْنَكُمُ لَنُ عَاءِ تَغْضُمُ بَعْضًا لِهِ اس آیت کریمیس رسول کے بلانے اور پکارنے کوالیں میں ایک دوسرے کوبلانے اور كارف كح برابرقرار دين عن كياكيا بيني ديول كى حيثيت است كعمام افراد

ہے بہت بالاترہے ، اورحب بی کی پکار کی بیحیثیت ہے تو بھرامادیث سبار کہ کی احتیات موكى ؟ فوداندا زولكاليجة - ارشادات بى توتهام چيزول سے بالاتربي اس ليے كرمراسى ا غلطى بوسكتى بيدىكين نبى ايني قول وفعل ميس خطاع محفوظ موتاب وراكر مبى اجتهادى غلطی بوجاتی ب توفورًا وحی البی آگراس کی صبح کردیتی ب

سورة نساري ادرخاد فرماتي ال

* اورجب ان کوکے کہ او الشریح کم کی خرف جراس في الاراا ورول كان الْمُنَا نِقِيْنَ لَيْصُدُّدُ لَنَ عَنْكَ لَوَ مَنْ لَكُومِنَا فَقُول كُومِنْ عِينَ فِيهِ

رَازَاتِيْلَ لَعُمْ مَنَالَوْالِي مَا آئزل الله والى الكوليالية مُلُوْدًا لِهِ مَلُودًا لِهِ مَا مَا مُلَادًا لِهِ مَا مُلَادًا لِهِ مِنْ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعَالِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلَمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمِ الْمُعِلِمُ الْمُعِلِمُ ال

خكوره آيت مباركي الترتعالية "مااكنك الله "اور" إلى المهول" يني كتاب الشراور رسول الشرصلى الشرعليه وسلم كى جانب رجوع كالحكم دياب آب كى حيات میں آپ کی ذات گرامی مرجع ہوگی اور آپ کے دنیا سے تشریف لے جانے کے بعداً ب كى سنت واحاديث - نيزاس آيت سے يہ بي ظاہر يوگيا كرسنت نيوى بى كتاب الله كارن محفوظب كيونكم أكرسنت واحاديث موجود ومفوظ نبول توبيراس آيت مي الشريعال كس بات كا مكم دے رہے ہي ، جو بير موجودي نہوا كى طرف رجوع كرنے كا حكم ال تعالى مركزنهي دے سكتے - لبذاان تمام آيات كريمياورنموص قرآنيے ياتاب با كرسول الشملى الشرعليه وسلم كى سنت وحديث كى اتباع ضرورى باوروه الترمل شا کے وعرف کے بوجے او جود و کھوط تھی سے اور دے گی۔

ے الیامی کرتے دہے ہیں ۔

ا سُنَّهُ اللهِ فِي الَّذِيْنَ خَلُولِمِنَ مَّبُلُ وَكَانَ اَسُرُالِلهِ قَدَنَهُ مَّقُدُ وُكَانَ اَسُرُالِلهِ قَدَنَهُ

در جیے دستورر الم الشرکاان لوگولی جوگذرے پہلے ا وربے حکم الشرکا مقرد طعیر حکا ؟

له الإسساء ـ >> له الأحمال ـ ٣٨

" وستورير اب الشركاان لوگو مين جو يهل بوسكي بن "

"اورآپ ندد کھیں گے الشرکی جال برلتی "

"سوآپ، پاتیں گےالٹرکادستورمبلاً"

" اورند پاسے گاالٹ کا دستور شلتا "

" رسم بیری ہوتی ہے النٹری جوچلی آئی ہو اس کے بندول میں اور خراب ہوئے انگا منکرہ ٣- سُنَّةَ اللهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ تَبُلُ بِهِ

٣- وَلَنْ تَحِدَكِ اللَّهِ اللهِ مَنْ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ اللهِ مَنْ اللَّهِ اللَّهِ مَنْ اللَّهِ اللهِ

٥- فَكَنْ تَحِدَ لِيُسَنَّةِ اللَّهِ مَنْ لِيُلَّا

٧- وَلَنُ تَحِنَ لِيُنَّةِ اللهُ تَحُونُ لِلَّ

٤٠ سُنّة اللهِ الّقِي تَنْ خَلَتُ فِي مَا دِهُ وَخُسِرَا هُمَا اللهُ الكُوْرُونَ وَ اللهِ اللهُ الكُوْرُونَ وَ

الشّحِل شانۂ نے ان آیات ہیں یہ بیان فرمایا ہے کہ شردع سے ہماراً یہ دستورر ہاہے کہ حب ہماراً یہ دستورر ہاہے کہ حب ہم کسی توم یاکسی بنتی والوں پر عذاب ناذل کر دیتے ہیں تواس کے بعدان کے ایسان لانے کا کوئی اعتبار نہیں ہوتا ، قرآن کریم میں آتا ہے کہ فرعون نے جب عذاب کا مشاہرہ کرلیا

توان الفاظ مي اين ايمان كا اظباركيا ،

امَنْتُ اَنَّهُ لَا إِلَهُ إِلَّالَكُ يَاثُى امَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْمَ الْثِيْلُ رَأَنَا مِنَ الْمُسْلِينَ فِيهِ

سِنَ الْمُسَلِّمِينَ عَلَى عَلَى السَّرِدِ الروارول مِن السَّرِدِ السَّرِدِ الروارول مِن السَّرِدِ الروارول مِن السَّرِدِ الروارول مِن السَّرِدِ الروارول مِن السَّرِدِ السَّرِدِ السَّرِدِ الروارول مِن السَّرِدِ الروارول مِن السَّرِدِ الروارول مِن السَّرِدِ السَّرِي السَّرِدِ السَّرِدِي السَّرِدِ السَّرِدِ السَّرِدِي السَّرِدِ السَّرِدِ السَّرِدِ السَّرِدِ السَّرِدِ السَّرِدِ

"اب بركبتا ہے اور تو نا فرمانی كرتاريا

دينين كراياس في كركوني معبود نهور

حِي برايمان لاتے بني اسراتيل اور ميں

ٱلْآنَ دَقَدُ عَصَيتَ تَبُلُ دَ

له الاصراب - ۱۲

يه الاحسزاب - ۲۲

که فاطسر - ۱۲

سے فاطسہ ۔ ۳

ه المؤمن - ٥٨

لا يولس . ٩٠

كُنْتُ مِنَ الْمُعْنِيدِ مِنْ الْمُعْنِيدِ مِنْ الْمُعْنِيدِ مِنْ الْمُعْنِيدِ اللهِ المِلْ المِ لعنى اب ايمان لا في كاكونى اعتبارنهي اس لية كرجب ايمان لاف كا وقت شاس وقت تو یکبرو انکادکرتار با مرص به بلکه خدای کادعوی کرتار با ورمیرے رسول کی نافرانی

توكوياالترتعالى يربيان فرمار بي كربارا شروع يهم طراقي كارراب كعذاب كے مشاہرہ كے بعد كركى كے ايمان كا عتبار نہيں ہوتا -

٨- سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْخَلَتُ الرَّم يُرِى بِوَى السُّرى جِعِل آنى ب

مندرج بالانوشقامات بر" سنة الله " كمعنى الترتعالى كطريق ووتوركي .

" شل ا قرآن مجيدي لفظ سنت ايك مقام پر رسولوں كى سنت كے لئے بيت عل سنت الرك مواہے حیانجداد شادیاری ب

١٠- سُنَّةُ مَنْ تَدُ آرْسَلْنَافَيْلَكُ | موتورطِلاً المعان رسولون كالموتجير

تَخْونُـاً لا مِنْهِ

من رسلنا ولا تحد لسنتنا بها بعيم في النا بين الدنيات الو مايے رستورس تفاوت

اس آیت شریفیم لفظ سنت، سنت رسول کے لتے ستعمل ہوا ہے بینی ال کے اقوال وافعال ، اخلاق واعمال كامجوعه جه انبياركي سنت وحديث "كتين -

يوس - ١١

العنج - ٢٢

العنتج - ٢٢

الاسل. ١

سنت چەمقامات پراستىمال بولىپىنىن ايك مگرمطلقالفظ "سىنى "كسىطرىپ اضافت کے بخیر تعل ہواہے اور ایک عجم طبعین د فرمانر داروں) کی شال میں اورجا رجگہ ان لوگون كى منن كا تذكره فرما يا ہے جوعاصى و نافرمان تھے ، بالترتبيب ملاحظ فرمائے ، ارشادباری تعالی ہے :-اا- تَدْخَلَتُ مِنْ تَبْكِكُمُ مُسْنَى " ہو چکے ہی تم سے پہلے وا تعات سوعرو مَسِيُرُوْا فِي الْأَرْضِ لِهِ . تعنى تم سے سید مقررہ نتائج گذر سے بی شکو کارول کے بھی اور گنه گاروں و برکاروں کے سى اس سے ان سے نصیحت حاصل کر کے اپنی اصلاح کی مبائب توجہ دو۔ ١١٠ كُرِيُكُ النَّهُ لِيُبَيِّنَ مَـكُمُ وَ م الشرياحت بي كربيان كري تباي يَعُ رِبِيكُمُ سُنَى الَّـ زِيْنَ واسط اور ملائے تم کو يبلوں كى داه؟ خكوامين تنبل به 1 1 1 1 1 اس آیت شرافیدی لفظ سنن سے مراد انبیار وصلحاری سنت اور روش سے بعنی ال يرجابها بكرتم كوصالحين اورانبيا كاطريقه اوران كى روش بتلاس تاكرتم اس برهل كرضا كى رضافه ل كرسكو "سنن من قبلنا " من افرمانوں کی سنت (روش) کے لئے لفظ سنت مندر م ذي مقامات يروارد بواي : " ادراگر میرسی دی کری کے قور کی ہے ١٠٠ وَإِنْ تُعُونُوْ أَنْقَالُمَ مَنْتُ سُنَّةُ الْأَرْكِيْنَ بِهِ راه اگلوں کی 🛫 الران : ١٣٤ و النار : ۲۷ -ته الانفال ع

مندرجہ بالا آیت ای الشرتعالی نے کا فروں کو تبید یوفرمانی ہے کہ تم اگر سرکتی و نافرمائی سے باز آجا وَاور تو برلوتو تہا ہے گناہ معاون کر دئے جائیں گے لیکن اگر باز بذا سے اورنافوانی میں شغول دہے تو سمجھ لوکہ ہم کا فروں کے ساتھ الساہی کرتے رہے ہیں کہ جب کوئی قوم نافرانی اور سرکتی میں حدے سے اور کرجاتی ہے تو ہم اس کو سخت سے سخت عذاب ہیں مبتدا کر دیتے اور سرکتی میں حدے سے اور کرجاتی ہے تو ہم اس کو سخت سے سخت عذاب ہیں مبتدا کر دیتے

بي جس مين وه بهشر بهيشة ترثيت ربي گے۔ ۱۲ لائو مينون به و دَدَن خَلَتُ سُنَّةُ الْأَولِينَ اللهِ

٥١- وَمَامَنَعُ النَّاسَ اَنْ كُوْمُوْلَا اِنْجَاءَ مُسَمُّ الْمُدَى كَ اِنْجَاءَ مُسَمُّ الْمُدَى كَ الْمُنَافَظِيمُ وَارَتَبِهُ مُوالِكُونَ مَا مُنِيَعُمْمُ سُنَةُ الْأَرْلِينَ * مَا مُنِيعُمْمُ سُنَةُ الْأَرْلِينَ *

۱۱۔ نَعَالُ مُنْتَظِرُ رُنَ إِلَّا سُنَّةَ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ

مرور قرآن برایان نہیں لاتے اور بر دستور میلوں سے ہوتا آیا ہے ہے اور لوگوں کو بعد اس کے کہ ان کو جائیت بہونے جائے کے ان کو جائیت بہونے جائے کے ان کو جائیت بہونے جائے کی ایمان لانے سے اور کوئی میں معتقرت مانگنے سے اور کوئی مانے اور کوئی میں آئے۔ مان کو ان کا ان کو ان کو

الشراب شان فراس آبت سے قبل یہ بیان فرمایا ہے کہ پرقراش و ولی بعثت سے پہلے تو اہل کتاب بیج د و نصاری کو دیچھ کر ترص کرتے تھے اور تسمیں کھاتے اور کہتے تھے کہ اگر ہائے ہی کوئی بی آجا ہے کہ اور والوارات میں کوئی بی آجا ہے کہ اور والوارات و فرما ں بر داری ضرور کریں گے اور والوارت برا تھا تھی گے کہ اور اور الفرائی شروع کہ آجا تیں گے کہ کہ بھی اتو انہوں نے اس کی مخالفت اور نافر مانی شروع کہ دی کہ بان کومعلوم نہیں ہے کہ بم نے ان سے پہلے کتنی قوموں کو دسول کی ای مخالفت کی بنا کہ دی کہاان کومعلوم نہیں ہے کہ بم نے ان سے پہلے کتنی قوموں کو دسول کی اس مخالفت کی بنا کہ دی کہا ان کومعلوم نہیں ہے کہ بم نے ان سے پہلے کتنی قوموں کو دسول کی اس مخالفت کی بنا کہ دی کہا ان کومعلوم نہیں ہے کہ بم نے ان سے پہلے کتنی قوموں کو دسول کی اس مخالفت کی بنا کہ دی کہا

له الحد ۱۳:

له الكبت : ٥٥

My 2 John I

777

پر ہلاک اور نبیت و نابود کر دیا ،ہم ہمیشہ سے بی کرتے رہے ہیں کہ رسول کے نخالفین کو ہلاک کمردیتے ہیں ۔

مندرج بالاآیات کے ذکر کرنے کا مقصد یہ تھاکہ اس بات کو واضح کیا جائے کہ لفا ا سنت کے اصل منی طریقہ اور روش کے آتے ہیں لیکن جب اس کی اضافت کسی اور کی طرف ہو تو مضاف الیہ کے اعتبار سے اس کے معنی بدلتے رہیں گے ، جیسے کہ مسندہ اسلامی تعلیہ سنن من قبلنا " کے معنی ایعبی ہم نے بیان کئے ، لیکن اگر بدلفظ سنت اسلامی تعلیہ میں بلاکسی اضافت یاکسی صفت وغیرہ کے متعمل ہو تو اس کے معنی صرف سنۃ رسول اسلامی الشرعلیہ وسلم کے ہم ہوں گے جس طرح کتا ب کا لفظ حب بغیری اضافت کے بولا جائے قو اس سے کتاب الشری مراد ہوتی ہے اسی طرح سنت سے بھی سنت رسول الشرصلی الشرصلی علیہ وسلم می مراد ہوتی ہے لینی سنت کے حتی اصطلاح شرادیت ہیں سنت رسول الشرصلی الشرعلیہ وسلم کے ہیں ۔

آیتے آب سنت کی تحقیق ازروے اعنت کریں اور اصطلاح میں سنت کس چنے

كانام ب اس پردوشن واليس.

ا دل توہم ازر وسے لغت سنت کے علی بیان کریں گے اس کے بعد سنت کے

سنت كي عقق أزروك لذت

اصطب للح معنی بیان کئے جاتیں گے۔

اب دريدالتوني المسلم الني كتاب والجبهة " بي رقط رازيس به

" سنت کے معنی (روش ، طرافق العرود پی (کہاجا تاہے) فلال شخص نے ایجی بابری سنت رطرافقہ) جاری کی صلاح سین اور مصدر سنا آتاہے یہ

والسنه معروقة ، وسرق فلان سنة حسنة أدقيعة يسنها سنًا بله عروع عروع عرو

(90-0°) d

اسماعیل بن مراد و بری المتوفی سامیم الفظ سنت کے دیل میں لکھتے ہیں :- والسنة السیرة قال المعذلی: است کے معن بی سیرت (روش سیال

" سنت کے معن بی سیرت (روش ، میال طرز) کے ، ھذلی شاعرکہ تاہے : حیں جال برتم خود بھے اس سے ست

نلانجنئن من سيرة أنت س تعا فأول راض سنة من سيرها

گعبراؤ اس لئے کرچ تحفی عیال کورائے کرتاہے دہی اس کو پبلاپ ندکرنے والاہوتاہی ۔ - ابوالحسین احدین فارس بن ذکر ما المتوفی مصفی ج تحریر مینسر ماتے میں ،۔

> السنة رحى السيرة ، وسنة رسول الله صلى الله عليه يهم سيريته قال الهذى: فلانجرى و إنم ، وإنما سميت ذلك لأنعا تجمى جي يأومن ذلك قولهم ، امض على سنتدى به قولهم ، امض على سنتدى به

> " امف على سنتك" دكرتم الينطريق ربي على ربع) " - امام راغب الاصفهاني التوفي ست عدم وقمط رازس ،-

" اور" بنی کی سنت "کے معنی بھی آپ کا وہ طریقے جو آپ اپنیا تے تھے اور" النہ تعا کی سنت "کے معنی تہجی النہ کے طریق حکمت ا ورطریتہ طاعت کے ہوتے ہی مثلًا ارشا دہے :" الٹہ کا وہ طریقے دعبادت وسنة النبى طريقته التى كان مجراها وسنة الله تدتقال لطريقة حكمته وطريقة طاعته نحو: رسنة الله التى تدخلت من قبل ولن تجد لسنة الله تحويلي

له الصحاح (۵- ۱۳۹) له محبم مقائش اللغة (۳- ۲۱)-

دطاعت) بوپیے ہے چلا آر اہہے اورتم الشد کے طسریقی میں کوئی تغیرو تبدل نہاؤ۔ داس آیت کرمین) الشرتعالیٰ نے متنہ فرماد یاک و تلف جیوں کی) شریعیوں کے احکام اگر جہ بنظام رمختلف میں لسکین ان سب کی غرض وغایت میں کوئی اختلات

فنبه أن نهوع الشهائعران اختلف صورها فالغهض المقصود منها الايختلف ولايتب دل وهو تطهير النفوس وته شيمها الومول إلى ثواب الله تعالى به

اورتغیرد تبدل نہیں اوروہ غرض وغایت ہے نفوس انسانی کو (تنام آکودگیوں ہے) پاک
کرنا اور الٹرتعالیٰ کے ٹواب اور مقام قرب تک پیرو نینے کی تربیت کرنا ہ علامہ زمخشری المتوفی موسے جربرون مرماتے ہیں ،۔

د فلان خف نے سنت صندجاری کی بینی ا طریقہ تجویز کیا اور فلان خف کی سنت کی بیروی کی بینی اس کے طریقہ پریمل کیا اور سنسنة حسنة طى قطريقية حسنة واستن بسنة وفلان متسنى عامل بالسنة كم

" صربیت می سنت اوراس کے مشتقات کا بار بار ذکر آیا ہے ،اصل نغت میں نت کے معنی طریقہ اورسیرت کے ہیں کئی جب شریعیت میں مطلقاً سنت کا لفظ آئے گا تو اس سے آنحفرت صلی الشعلیہ وسسلم کے وہ اوامرو نوامی اور وہ امورین کی تده كل في المحديث وكالسنة ومانص ف منها والأمسل نيه الطريقة والسيرة وإزا أطلقت في الشرع فإنها براد بعاما أمريد النبي على الله عليه وسلم ونهى عنه وين

له معنردات (ص- ۱۲۲۵)-

ی اساس البلاغة (ص-۲۲۱)-

قراً یا نعالاً پ نے ترغیب دی مگرہ فرآن حکیم میں صراحہ مذکور نہیں وہ مراد ہوگئے اود اسی لئے شرعی ولائل کے سلسلہ میں جب کتاب وسنت کا ذکرا گاہے ، تو اس سے مراد قرآن وحدیث ہوتے ہیں اور اس معنی میں وہ حدیث ہوتے میں آتا ہے کہ آپ نے فرما یا کہ ہمجھ اس کے نسیان میں مبتلاکیا جاتا ہے تاکہ ہمیان ک کاطراحہ قائم کروں مینی مجھے نسیان کی اس لئے مبتلاکیا جاتا ہے تاکہ ہول ک راہ داست کی جانب راہنمائی گرکوں راہ داست کی جانب راہنمائی گرکوں

إليه تولاً ونعلاً مماليم النيات العناين و يطال به الكتاب العناين و المعتاب والمنة أى القالى الكتاب والمنة أى القالى والمنة أى القالى والمنة أى القالى ومنه الحديث ، ومنه المحديث ، ومنه المحديث ، ومنه المحديث المناسى الأسن بالعمالية إلى النيال بالعمالية إلى النيال بالعمالية إلى المنتقيم وأبين لهم المنتقيم وأبين لهم ما يحتاجون أن يفعلوا إذا عن العمالة عن العمالة النيان أو

اوران کے لئے اُس بات کو واضح کردوں کہ اگران کونسیان بیش آجا سے تودہ اس وقت کیا کریں ؟

مذکورہ بالاتشریج اور لغوین کے اقوال سے یہ بات واضح برگئ کر لغت میں سنت کے معنی " السطرانية قالمسلوكية م کيميں ۔

سنت کی مطلاح بی الفظ سنت کی مطلاح بی الفظ الم الشرایات کی اصطلاح بی الفظ است کی می رسول الشرای الشرایات علیروسلم کی سنت ، اورجی طرح شرایدی کی اصطلاح میں جب مطلقاً " کتاب "کالفظ ابوالاجا تا ہے تواس سے کتاب الشری مراوی و تی ہے ماک طرح جب مطلقاً الفظ سنت ابوالا جاسے تواس سے رسول الشری صفورا کرم مسلی الشریک میں اور اس افظ سنت میں صفورا کرم ملی الشریک میں اور اس افظ سنت میں صفورا کرم ملی الشریک میں اور اس افظ سنت میں صفورا کرم ملی الشریک میں اور اس افظ سنت میں صفورا کرم ملی الشریک میں اور اس کے گویا حاصل مین کلا کہ ملی الشریک میں اور اس کے گویا حاصل مین کلا کہ

الم المارية الم

رسول النندسلى الشرعليدوسلم كى سيرت طيته سنت كامصداف ي

مرسدت کے اصطلاح معنی فقی الت کے اغراض ومقاصد اور

موضوع بحث الگ الگ بی اس لئے علوم شرعیر کی اصطلاحات میں سنت کی تعراف ا

ایت موضوع کے لحاظ سے الگ الگ کی گئی ہے۔

محدثمین کرام دسول الشیمسلی الشرعلیہ وسلم کے اقوال وا فعال و احوال کی روایت غرض رکھتے ہیں اور ان ہی کی صحت وضعف سے ، اس لئے انہوں نے تمام وہ چیز ہیں جائے سے متعلق ہیں سیرت واخلاق وشھائل اور آپ کے تمام اقوال وا فعال اور اخبار خواہ ال سے کوئی حکم شرعی ثابت ہویا نہیں ان سب کو نقل کیا ہے ۔

ے کوئی حکم شرعی ثابت ہویا تہیں ان سب کونقل کیا ہے۔
علے اصول نے دسول النہ صلی النہ علیہ وسلم کی تعلیم سے اس اعتبار سے ہوئے
کی کہ آپ شراعیت کے بیان کرنے والے ہمیں اور بعب دمیں آنے والے مجتبدین کے دیے تواعد
مقرد کرتے ہیں اور لوگوں کے لئے زندگی کے دستور اور طرز کو بتاتے ہیں اس لئے آپ کے
ان اقوال وافعال اور تقریمہ (بیان سکوتی) سے بحث کی جوا حکام کو ثابت کرنے والے
اور ان کو مقرد کرنے والے ہیں۔

فقہارعظام رسول الشرصلی الشرعلی رسلم کے احکام سے اس حیثیت سے بحث کرتے بیں کدا ہے کے اتوال وافعال حکم شرعی پردلیل ہوتے ہیں ، وہ بندوں کے بارے میں (احادیث کی روشنی میں) شریعیت کا حکم شعبی کرتے ہیں کہ واجب ہے یا سنت، مندوب سے یا میاح ، حلال ہے یاحہ وام لیہ

بر تفااغراف دمقاصدا ورموضوع بحث ادر طبح نظر کااختلات اس اختلا کی وجہ سے سنت کی تعرافیت میں فرق ہو الازی بات ہے چنانچ ہرا کیے جاءت کے نت کی جو تعرافیت کی ہے اسے ملاحظ فرمائے۔

الع المنظرو السنة قبل التدوين " لمحد عياج الخطيب (ص- ١٦)-

مختین کرام اورار باب بیر من کامقصدرسول التی التی علیه وسلم کی کمل حت معیر کومحفوظ کرنام وه سنت کی حسب ذیل تعین کرتے میں بد

"سنت رسول الشرصى الشرعليه وسلم كے تمام اقوال وافعال وتقریرات اورصفات خلقيه وخلقيه محاسن و خاتل اورصفات خلقيه وخلقيه محاسن و خاتل اورسيرت سب كے مجبوع كا الم بخواه يہ بعث سے قبل ہو جيے كا آيا فار حرام ميں عبادت كرنا يا اس كے بعد اس معمد المس المقار واللہ معمد المس المقار واللہ اللہ المارية متراد وقع معمد المارية المارية متراد وقع معمد المارية متراد وقع معمد المارية ا

كلىماأشرعناللبىمىلىلة عليه وسلم من قول أو نعل أوتقهر أو صفة خلقية أو خلقية أوسيرة سواء كان دلك قبل البعثة سواء كان دلك قبل البعثة كتحنثه فى غارجى اء أم بعدها طلسنة بهذا المعنى مل ونة للحد بيث النبوى به

ائم پجتہدین جن کا مطبح نظرر سول النہ صلی اللہ علیہ وسلم کی تشریعی زندگی کو مدوّن و پ کرنا اور اس سے احکام متر عیہ کا استخراج واستنباط کرنا ہے وہ سنت کی حسب

ل تعراليت كرتے ہيں ،۔

" قرآن کریم کے علادہ وہ تمام اقوال اورافعال وتقرمہ دسیان سکوتی)جو نبی کریم صلی الشرعلیہ وسلم سے صادرہ کے اور وہ احکام شرعیہ کا مائٹ بن سکتے بو سب سنت سے (اسی عنی اصطابی کل ماصدی عن النبی صلی الله علیه وسلم غیرالقران الکه یم من قول ار نعل او تقریر مها بصلح آن یکون دلید کل احکم شرعی به

كة تحت كتاب الترك بعدد وسرا مصدرتشريع بعنى مأخذ اسكام بشرعير سنت نبويرة ؟ فقرت المست كاموضوع بحث جونك سعين أخذ النفس سالعا دماعليها بم

السنة قبل الستدوين (ص - ١٦) -

سینی فعل اور نزک فعل کے اعتبارے بندہ کے افعال سے بحث کرنا ۱۱س لیے وہ سنت کی حسب ذلی تعربین کرتے ہیں شیخ محسد عجاج لکھتے ہیں ا۔

منقباری اصطباع میں سنت ہراں چیز کا نام ہے جونی کریم سلی الشعلیہ وسلم سے ٹابت ہوا در فرض و واجب کے قبیل سے نہوسی یہ وہ طلقیر ہوجس کی دین میں اتسباع کی جاسے گی لیکن نہ وہ مسنرض کہ لاسے گا نہ واجب سے دأماالسنةفامطلاحالفقهاء
نعى كلماشت عن النب
ملى الله عليه وسلم ولم
يكن من باب الفض و لا
الواجب ؛ فعى الطريقة
المتبعة فى الدين من
غيرا ف تراض و لا وجوب
اس كي بعد المحتربين ، و

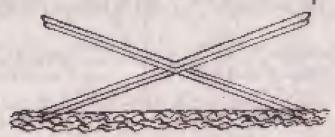
وقى تطلق المسنة عن الفقهاء فى مقايلة البرعة البرعة لغة الأمم المستغلّ والبرعة لغة الأمم المستغلّ ما أطلقت فى النبخ على كل ما أحد ثنه الدين و شعائم المنه عليه وسلم وعن أصحابه وقد قال وسول المنه عليه وسلم وعن أصحابه المنه عليه وسلم وعن أمخ هذا مائيس أمخ هذا مائيس منه فهو ردي أذكما قال

سرسی نقباری اصطداده یی افغیاری اصطداده یی افغ سنت برعت کے مقابلہ یی بولا مبات ایس برعت نشرائی براس کام پر کرتے ہیں بھرشرائیت ہیں براس کام پر برعت کا اطلاق ہونے لکا جے لوگوں نے دین اور شعائر دین ہیں نیاایجادکیا ہونواہ قولاً ہو یا عملاً اور وہ نبی کریم صحاب موخواہ قولاً ہو یا عملاً اور وہ نبی کریم صحاب مصلی الشرعلیہ وسلم اور آپ کے صحاب مصنور اکرم میل الشرعلیہ وسلم نے فرمایا محضور اکرم میل الشرعلیہ وسلم نے فرمایا کر : " جس نے ہا دیے دین ہیں ایسی جیز میرائی جو اس میں نہیں تھی تو وہ کردود میرائی جو اس میں نہیں تھی تو وہ کردود

بوگی - أدكما قال عليه المهلاة والسلاً الدائ تبيل سے بهان كايركېناكد فلا شخص سنت برعاس به مينی جب كه اس كه مطابق عمل كرتا بوجونبى كريم صلى الترعليه وسلم اور آب كه صحاب كرا رضى الترعليه وسلم اور آب كه صحاب كرا به خواه يرقرآن باك مين معوص به ويا درسو -

اورکیتے ہیں کہ فلان تی خص بریست پرعامل ہے حب کہ وہ اس کے خلاف کرسے جس پرصفور افدس حلی الشرعلیہ وسلم اورجی ہ وسن دالا المحاطى فت على سنة إذا عمل على فت ما عمل اللهي ملى الله عليه وسلم وأصحابه سواء أكان ذلك مماض عليه في الكتاب أم لم يكن على در وتولهم و نلان على ما عملوة أو أحداث في ما عملوة أو أحداث في الدين ما لم يكن عليه الم يكن عليه الدين ما لم يكن عليه الدين ما يكن عليه الم يكن عليه الدين ما يكن عليه الم يكن عليه الدين ما يكن عليه الم يكن عليه ال

كرام رضى الشرعنيم في عمل كياتها يادين مي اليي نتي چيز كالے جوسلعت مذكرتے بوك.



له طاحظهو" السنة قبل التدوين" للينغ محديماج الخطيب (ص - ١٥ تا ١٨) نيربيضون فما كلططف سبائى كم كذب السنة ومكانتها فى التشريع الاسلامى ميں (ص - ١٠ و ١١) پريمې د كيما جاسكتا ہے -

مُنكرين حَرَيْثِ كے ادلّہ اوراُن كے جوایا

منكرين مديث نيجن آيات كاغلطسها واليكراحاديث وسول الترصلي البيعلي وسلم كور دكرنا حاج ب اب بم اس عنوان كے تحت انہيں بيش كركے ان كے جوابات ديكے اور برواضح کریں گے کمنکرین حدیث س قدرمہل بے بنیاداور بلادلیل یاتیں بناتے است بي اور احاديث كوشعل راه بنانے كے بجات اپنى عقل اور خواس تفسانى كواينادائما بناتے ہیں اور میرگھ۔ اسبول کے تاریک گڑھوں میں گرجاتے ہیں لیکن اے گرائی ہیں تھے ،

وَسَيَعُكُمُ الْكَيْنَ ظَلَمُوْ الْحَقّ المورابعلوم كرلس كَظم كرف وال

مُنْقَلَبِ تَنْقَلِبُونَ لَهِ مُنْقَلِبُونَ لَهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ مِن اللَّهِ مِن اللَّهِ مِن

سب سے میلےمنکرین مدیث اینے استدلال میں یہ آیات کریمیٹین کرتے ہیں!-مع نے كتاب يل كى چيز كونياں چوراء" مَا فَنَّ مُلِنَا فِي الْكِتَابِينَ

" ا ور اتاری ہم نے تحدیر کتاب کھ لا بان برحية كا"

رَنَزُ لُنَاعَكُنُكُ أَلْكِتَابَ تنيانًا لَكُلُّ شَيْءٍ عِنْهُ

مندرجه بالا دونول آتيساس بات برولالت كرتى بي كرتر آن كرتم دين كي تما امور بمفصيلات اوراحكامات ، لوازمات وضروريات پرحاوى ہے اورقرآن كريم نے دین کے تمام اجزار کی تبیین اور تفصیل اس طرح کردی ہے کہ اب اس کے بعد می اور خیز كى ضرورت ياتى نهيں رہتى ور نداگراس كے بيان كے بعد معى كنى يركى صرورت بوتوكيم

> الانسام - ۲۸ النحسل - ١٩

کتاب النّد" تبیاناً مکل شیخ » نهوتی اور بیکهااس آیت کے خلاف ہے اس لئے علیم مواکد سنت کی ضرورت تہیں ۔

اس کا بواب یہ ہے کہ بات بالکن سلم ہے کہ دین کے اصول اور احکام شرع یہ کے قاعد وکلیات پرقرآن کریم حادی ہے ، ان ہیں سے بعض پر قوص احدة قرآن مجید میں نصر موجود مج اور بعض کو اللہ تعالی نے بنی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے سپر دکر دیا تاکہ آپ اس کی بسین و تشریح کریں اس نے کہ اللہ تعالی نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کو دین کے احکام کا تاج بناکر سے اس لئے آپ کا اپنی زبان مبارک بناکر سے احکام آبھ کو بیان کرنا بھی قرآن کریم کے احکام کو بیان کرنے کی طرح ہوگا اس سے شریعیت کے وہ احکام جو سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے تابت ہوں گے وہ اللہ تعربیت کے وہ احکام جو سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے تابت ہوں گے وہ اللہ تعربی حالت کی طرح ہوں گے کہ یا تو ان کے بارے میں صاحبہ تعربی بنائی کی کتاب میں نازل شدہ احکامات کی طرح ہوں گے کہ یا تو ان کے بارے میں صاحبہ تعربی بان کی طرف اشارہ ہوگا اس لئے سنت کے جت ہوئے اور قرآن مجید کے ہر بھی ہوں گے کہ یا تو ان کے بارے میں صاحبہ جیز کا تبیان ہونے میں کوئی سنا فات نہیں ، جینا نچرامام شافعی رصہ اللہ کھتے ہیں ؛ حین آبی کے سعاملہ میں کھٹے تھی ہر کوئی البی شکل در پیش نہیں آتی جس کو حین کا در اس اللہ کا کا داستہ قرآن کریم میں فرکور نہ ہو ، ارمث ادباری ہے ؛۔

"یکتاب کے ہم نے اتاری تیری طرف کر تونکا لے لوگوں کو اندھیروں سے اجا ہے کی طرف ان کے دیجے حکم سے کہ ت میاسی ذہر دست نویوں والے کے "

مردد الدى م في تجدير بيا دداشت كرتو كعول دے توگوں كے سامنے وہ چيز جو اترى كِتَابُ آنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِخَيْرَةِ النَّاسَ مِنَ النَّلُلَاتِ إِلَى النَّلُولِ بِإِذْنِ رَتِّهِ مُ إِلَى مِلَاطِ الْعَرِيْدِ بِإِذْنِ رَتِّهِ مُ إِلَى مِلَاطِ الْعَرِيْدِ الْعَمِيسُ وَلَهُ الْعَمِيسُ وَلَهُ مُن ذِفرها يا ، دَ اَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الدِّيْكَ الدِّيْكُمُ الْجُبَيِّنَ

لِلنَّاسِمَائَزَّ لَ إِلْيَهِيمُ و

له اجراهیده ۱۰

ان كروا عط تاكروه فوركري ي

لَعَلَّهُ مُ مَيْتَ لَكُمَّا وُكَ يَهُ

اورفيشريمايا ،-

"اوراتارى بم فى تجمير كتاب كعسلا بيان برجيز كا" وَخَرِّ لُنَاعَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا بِكُلِّ شَيْءٍ بِهِ

اور بیان ایک ایسالفظ ہے جوجا مع ہے ایے معانی کوجن کے اصول مجتمع برائر فروع مختلف ، ذات باری تعالی نے بندوں کے لیے جوبیان نازل فرومایا ہے اور حس کا انہیں مکلف بنا یا ہے وہ مختلف انداز کا ہوتا ہے ، بعض اوقات النزنو کی نے اپنی مخلوق کے لئے کوئی منصوص حکم نازل فرما یا مشلاً مجسل فرائض کا تذکو کو الے ان کی مناز روزہ ، زکاۃ وچ فرض ہے ، فواحش اور بری یا توں کو مطلقا حرام کردیا اور زنا بشراب ، خنزیر ، مرداد کے کھائے کو منصوص کر کے صراحة بیان کردیا، ای طرح یہ بتلاد یا کہ وضور کس طرح فرض کیاگیا ہے ، اور دیگروہ اشیا رجواس طرے میان کی گئی ہیں یعنی دومری استیار ایسی ہیں کوجن کی فرضیت توکتا ب الشراب کے عالم وصورت ، طریقہ و تعداد نی کریم صلی الشرعلیہ سام سے بیان کراتی مثلاً نماز کی تعداد ، زکاۃ کی مقدار اور وقت اور اس کے علاوہ اس طرح کے دیگر اور فرائن وعباد است ۔

بعض اشیار السی میں جن کے بارکی صراحۃ کناب اللہ میں کوئی منصوص کم شہیں ہے الارصنور اقدی منصوص کم شہیں ہے الارصنور اقدیں صلی اللہ علیہ وسلم نے انہیں سنت قرار دیا الارمینی ب اللہ تقالی نے ہی ہی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کوعطا فرما یا ہے جنانچہ آپ کی اطاعت کو فرض قرار دیا اور آپ کی بات تسلیم کرنے پر تومن ہونے کا عدار رکھا لہذا آپ کی بات تسلیم کرنے پر تومن ہونے کا عدار رکھا لہذا آپ کی بات قبول کرنا ہے جانچہ

19 - الخيل - 19 ملا

له النحل - ۲۲

ی الرسالة (ص-۲۲۲۲)-

آ کے حل کر لکتے ہیں ا۔

م اس نے بوشخص میں الشرتعانی کے احکام اس کی کتاب سے قبول کرے گا تودہ صرور دسول الشرصلى الشرعليدوسلم كى سنت كويجى قبول كرساكاس يت كداديثر تعالی نے اپنے دسول کی اطاعت اور آپ کی بات مانتے اور فیصلوں کے قبول كرف كواترت برفرض كردياب ، اس كيسس نے دسول انته صلى الترعليدى الم سے سی چیز کو قبول کیا توگویا اس نے اللہ کے حکم کو قبول کیا اس سے کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے رسول صلی الشرعليہ وسلم كى اطاعت كو فرض كرديا بے جنائج كماب الشر اورسنت رسول التريمل كرناكو بالك دوسر يعل كرناب لبذابراك کا قبول کرنا لازمی سے میے

حاصل یہ ہے کہ دین کے بنیا دی اصول اور شراعیت کے اساسی احکام کولوری وضا ے بیان کر دیاگیاہے ، رہا یہ کہناکہ لفظ "کل" استغراق صفیقی ربعین الساعوم جرتما افاد لوشامل بو) جامبتائے یہ غلط ہے اس لئے کالفظ "کل " بیہاں براستغراق حقیقی کے لئے میں ہے بلکہ اسی طرح سے جس طرح کہ آیت مندرجہ ذیل میں ،-

 أَذِّنُ فِي النَّاسِ بِالْعَجِّيْ الْكُ ا "اور بکاردے لوگوں کو چے کے واسط رِجَالًا وَعَلَى كُلِّ مَنَامِي كَأْرِيْنَ كدأتين تيرى طرف بيرون عل كماور سواليوكرويلي ويليا ونثول برطيا اتنب

مِنْ كُلِّ فَجِ عَينِي يَه 8 8 8 4 8 8 را روں دورے ؟

آیت بالایں اونٹوں کے تمام افراد کے استغراق کے لئے لفظ مکل "ستعمل نہیں ہوا ے ، اسی طرح مکرسیاکے بارے میں فرمایا :-وَأَكْ تِينَتُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ لِلهِ «اوراس کوبرا کے جیے زلی ہے ؟

الرسالة وص-٢٣)

ین طارب کورتیم کی بیری دی گئتسی تواس کا مقصد بنهی کدنیا بعری سب
جیزی اس کے باس موجو تعین اوروں کے پاس وہ چیزی نہیں ہوناچا ہتے اس لئے کا
اس کے مقالم پر چضرت سلیمان علیمالت لام کے پاس زیادہ سامان تھا ، مقصد بینماکال
ملک کے پاس امور سلطنت سے متعلق تمام بنیادی لواز مات موجود تھے اور لفظ کل میہا
استخراق کے لئے نہیں ہے ، اسی طرح « تبدیا نا المکل شی ، وغیرہ آیات بن بی لفظ
ملک ، استخراق حقیق کے لئے نہیں ہے ملکہ مقصد یہ ہے کہ بنیادی اصول اور شریعیت
کے اہم احکام اسی بین موجود میں تفصیل سنت و حد میث میں موجود ہے ۔

رہ سما فراطنا فی السکتاب من شیء " والااعتراض تواس کا جواب بیہ کہ یہاں کتاب سے مراد لورح محفوظ ہے قرآن مجید نہیں ،سیات وسیاق سے میں معلوم ہوتا ہے

اس لنے کہ پوری آمیت اس طرح ہے :-

" اورنبی ہے کوئی چلنے والازمین میں اور نہ کوئی پرندہ کداڑ تاہے اپنے دونوں بازوڈں سے گرم راکب امست ہے تہار طرح ہم نے نہیں چھوٹری لکھنے ہیں کوئی چیز بھی بھرسب اپنے دیکے ساتھے ہوگے "

اسى طرح آبك اورآيت بي ادمشاو فرمايا ، ـ

اوروہ جا شاہیج کچھنگل اورور یا میں ہے اور نہیں حجو ٹاکوئی پتہ گردہ انا ہے اس اور نہیں گر تاکوئی دانا زمین کے امریم وں میں اور نہ کوئی ہری جیزاور دیم کی جیز گروہ سب کا اس مین میں ہے ؟ وَتَعَيْدُمُ مَا فِ الْكَرِّ وَالْكَوْرُومَا تَسْقَطُ مِنْ وَرَفَدَةً الْالْعَلَٰدُهُ الْكَالِّ وَلَكُمُ الْعَالَمُ الْمَا وَالْاحَدِّيْةِ فِي ظُلْمُا الْبِي الْرَاضِ وَالْاحَابُ وَلَا يَابِي اللَّافِ كِتَابِ مِنْ مِنْهُ كِتَابِ مِنْ مِنْهُ كِتَابِ مِنْ مِنْهُ

ته الانعام : ٥٩

ن الانعام : ١٨٠

اوراس كتاب سے اگر قرآن كريم بي مراد لے لياجا سے تب سبى اس سے سنت كا الكارلام نبين أنَّاس ليَّ كداس كامطلب وي بوكاج " تبياناً لكل مثىء "اور " تفعيل كل شيء" منكرين حديث اين استدلال مندرجه ذيل آيت جي بيش كرتے بي :-إِنَّا يُحْنُ بَرَّ لُمُنَا الْكِيْكُو وَإِنَّا ﴿ مِهِ فَالْهِيمِ الْأَرْى مِ يَلْعِيدًا لِل لَهُ لَحَا فِظُوْتَ مِهِ صَلِي اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّالِي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّ اس آیت سےمعلوم ہواکہ اللہ تعالی نے قرآن کریم کی حفاظت کی ذمہ داری لی ہے حدث کی نہیں اور اسی بنار پر مدیث جمت نہیں قرآن جبت ہے اور اصل مصدرتشریع قرآن ہی، اوراكر بالفرض مدميث بعى مصدرتشريع موا ورجبت موتوالترتعال قراك كريم كى طرح اسك حفاظت کاہمی وعدہ فرماتے۔ ال كاجواب يب كرالتُرتع الخف ذكر كى حفاظت كا وعده كياب، يه وعده صرف قرآن كريم كے لئے نہيں بلكه اس سے الشرتعالی كنرلون اوروين مرادب جے حضوراكرم لى اللہ عليه وسلم كے كرتشرىيت لائے اوروه دين قرآن ا ور صدميث دونوں كوشامل ہے اوراس كى

ولیل التُرتعالیٰ کا پرفسندمان ہے ،۔
فَاسْتُلُو الصَّلِ السَّلِ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمِنْ الْمُنْ الْمُنْ

كُنْتُمُ لِاتَّعُكُمُونَ إِنَّ

م سوپوھیو یا در کھنے والوں سے اگرتم کو معلوم نہیں یہ

بعنی ان لوگوں سے پوچوجہیں اللہ تعالیٰ کی شریعیت اور اس کے دین کاعلم دیاگیا ہے۔
افعاس میں کوئی دی شعور شک ہمیں کرسکتا کہ جس طرح اللہ تعالیٰ نے قرآن کریم کی حفاظت حفاظ مربیت اور می شین کے قدیدی ہے۔ کرائی ای طرح سنت نبوی کی حفاظ ت حفاظ مدبیت اور می شین کے قدیدی ہے۔ جنہوں نے اس کوسینوں میں یا در کھا اور سفینوں میں محفوظ کیا ، اور عمل میں کسس پر

له الحبر ۱۹

الخال: ٢٣

مداومت اختیاری ، اس کودوسرون تک بهبونجایا اور می وخیری اور حق و باطل می فرق کردیا ، ابنی عربی اس کی حفاظت وصیانت کے بقة صرف کردی ، مال و جان اس میں کھیادی جس کالازمی نتیجہ بینکلاکہ رسول النہ صلی النہ علیہ وسلم کی سنت بالکل محفوظ ہوگئی ، اور اس میں کوئی شک نہمیں کہ دین کے اصول اور بنیاد نسانہ ، روزہ سے ، نزگوۃ ، معاملات اور فرائف وغیرہ سے تعلق رکھنے والی کوئی حدیث ضائح نہمیں ہوئی ، سب کی سب کتا بول می مرقان وموجود میں اگر جیہت ندا ورطرق روایت میں فرق ہوگا ، درجات میں تفاوت ہوگا اسی لئے علامہ ابن حزم رجم اللہ کھتے ہیں ہے۔

"اهل لعنت الداهل شراعیت بین سے
کسی کا اس بار سے بین اختلاف مہیں کا رحمی جوالشری طرف سے نازل کر دہ جووہ ذکر مُنٹر ک ہے ، اس لئے دی النٹرتیا کی حفاظت کی وجہ سے تمام کی نتام کی فیات کی وجہ سے تمام کی نتام کی وجہ سے کہ ذرقواس میں النٹر تعالیٰ لے اس بات کی خمانت ہے کہ ذرقواس میں النٹری النٹری النٹری النٹری کو النٹری النٹری کو النٹری کا اور نتاس میں النٹری کو النٹری کردی گئی ہو ہے النظام ہوئے کی تردید ووضاً میں کے باطل ہوئے کی تردید ووضاً میرو کئی مو ہو ہو کہ کردی گئی ہو ہو

ولاخلاف بين أحدون أمان اللغة في المناطقة والشايعة في المنافقة والشايعة في المنافقة في الم

اس کے بعدعلا مدابن حسرم ان اوگوں کے خلاف جو کہتے ہیں کہ ذکرسے مراد صرف قرآن کریم ہی ہے یہ منکھتے ہیں و۔

ه نه و و کا د به خیر ده عن الم

یے جبوٹا بلادلیل دیوی ہے اور ذکر کوبلا کسی دلیل کے خاص کرتاہے ، ذکرنام ہ

براس جيركا جوالترتعالى فيرسول التر صلى الترعليه وسلم برنازل فرمائئ خواه قرآن ہو یاسنت ،سنت ہی وی ہے ص عقرآن كريم كوبيان كياجاتا بح اس کے علاوہ اسٹر تعالیٰ یہ بھی فراتے ئي كه : مم نے آپ پرذكر نازل كيا تاك آپ کھول کھول کربیان کر دیاس كوجوان يرنازل كياكيا يواس لتي بات ورست بوكئ كرحضورعليدالصلاً والسلام لوگوں کے نتے قرآن کریم بان كرنے پرسامور میں اور قرآن كريم ميں بهت محل جيزي بي جيے كرنماز زكاة الج وغيرجن مي سم ينبي عليم كرسكتة كدان ترتعالى ان الفاظ يحم كيك چاہتے ہیں سواسے اس کے کمنی کریم علی الشرعليروسلم اس بيان كرس تواكرحفور عليه الصلاة والتلام كاليجل وبيان كرا محفوظ نبرواور تراس كى حفاظت كى معانت لگئ بوتو بينف قرانى ب انتفاع مشكل ونامكن بوجائے گاه وراس نبار براکنروه فرانف جوم بر

بلادليل والتكراسم واقعطى كلماأنزل الله على نبيده على الله عليه والم س قرأن أوسنة وجي بيبين بعا القرأن ؛ وأليمًّا نا نالله يقول الاو اَخْزَلْنَا إِلَيْكُ النَّهُ كُنَّ لِلنَّيْنَ لِلنَّاسِ مَأْنَيِّلَ إِلْيُعِيمُ اللَّهُ مَعْمَ أتنمغليه الصلاة والسلام مأموربييان القمأات للناس وفى القرآن مجمل كتير كالصلوة والنكاة والج وغيرذلكممالانعلمما ألنامنا الله تعالى فيه بلفظه فكن ببيان النبى صلى الله عليه وسلم فإذاكات بياته عليه الصلوة والسلام لذلك المجمل غيريحفوظ ولامفتن سلامتهمماليس منهفقال بطل الأنتفاع بنص القراك فيطلت أكثر الشائع المفترضة

المن لغنا عا

گویا ڈرانے کا اصل سرمایصرف اورصرف قرآن کریم ہی ہے اوراس ہی کولوگوں کو گاگا کرانے کے لئے وی کیا گیا ہے اسی لئے حضورا قدی صلی الشرعلیہ وہم نے اسے تکھوا یا اور یا دلا اور اور اس کا جواب یہ ہے کہ اس اعتراض کے ذریعہ لوگوں کو دھوکا دینے کی کوشش کی گئی ہے اور مذکورہ بالا دونوں آتیوں کو خلط ملط کر کے اپنے زینے کا ثبوت فرام کیا گیا ،اس لئے کہا آتیت میں بغیری حصر کے یہ کہا گیا ہا ہی کے کمیری طرف یہ قرآن اس لئے وی کیا گیا تاکریں اس کے ذریعہ سے کم کو اور جن کو یہ ہو نیچے ڈوا ڈول ، اس آیت میں کہیں اس بات کی تصریح نہیں کی گئی کے قرآن میں ہوئی ۔ البتہ دومری آتیت میں حصر کا لفظ وی آپ برکوئی دومری دھی نازل نہیں ہوئی ۔ البتہ دومری آتیت میں حصر کا لفظ وی آپ موجود ہے لیکن اس میں قرآن کے بجا ہے " وحی "کا لفظ استمال کی گیا ہے ۔ ودی (جیسے کہ ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں) با جماع احمت قرآن دستنت دھ دین دور فی اس میں قرآن کے بجا ہے " ودی (جیسے کہ ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں) با جماع احمت قرآن دستنت دھ دین دور فی اس میں قرآن کے بجا ہے " ودی (جیسے کہ ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں) با جماع احمت قرآن دوستنت دھ دین دور فی اس میں قرآن کے تباہے اور وی (جیسے کہ ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں) با جماع احمت قرآن دوستنت دھ دور فی اور دی (جیسے کہ ہم پہلے ذکر کر چکے ہیں) با جماع احمت قرآن دوستنت دھ دور ہیں) دور اصل ہے ۔

منكرين مديث ايك اعتراض يهى كرتي مي كدا كرسنت بوى حجت بوتى توحضوراتدى

له الإحكام (۱-۱۲۱ و۱۲۲)-

له الانسام: ١٩

كه الانسيار: ٥٥

صلی الشعلیہ بسلم اس کے پیکھنے کا بھی حکم دیتے اور صحابہ کرام رضی الشعنبم اجعین حدیث کی کتا ۔
و تدوین کی خدمت انجام دیتے تاکہ سندت نبوی تبدیل و تحریف سے مفوظ ہوجاتی اور تعجر و ہ بھی قطعی النبوت بن کر امّرت سلم کو بہونی اور امّرت کے لئے اس پرعمل کر ناخروری اور لائی ہوتا لئیکن سندت نبوی کی به خدمت نہوئی اس لئے کہ اس کو قرآن شریف کی طرح لکھا نہیں گیا ۔
بلکہ حضور اکرم صلی الشرعلیہ وسلم نے اس کے لکھنے سے منع فرما دیا اور جو لکھا گیا تھا اسے مثل کے لئے کہ درول النہ مسلی الدُعلیہ وسلم نے اس کے لکھنے سے منع فرما دیا اور جو لکھا گیا تھا اسے مثل کا مسلم نے فرما دیا اور جو لکھا گیا تھا اسے مثل کا مسلم نے فرما دیا ۔

لانتكتبواعنى ومن كتب عنى المعجد سے ذاتكمواور من فرآن كے علاق علاق علاق علاق الله على الله عل

یہی طرز آپ کے خلفار راشدین رضی الشعنہم اصعین نے اختیار کیا بینا سی خضرت الوکر صدیق رضی الشرعنہ نے یا نیج سواحا دیث تکھی تھیں انہیں جلا دیا اور وسنہ مایا ،۔

خشیت أن أمرت ها عندی فیکون فیعا أحادیث عن مهبل قدائمنته و دانشت به دلم یکن کماحد شی فاکون قد نقلت ذالث به

توكويابس اس ساس كانعل كرف والابرجاون كا ؟

اسی طرح حضرت عمر فاروق دخی النترعند نے ایک مرتب احا دیث جے کرنے کا ادادہ کیا لیکن میراس خیال کو دل سے نکال دیا اور فرمایا ،۔

له مسنداهد (۳-۱۱ و ۱۱ و ۱۹ و ۱۹ ه) سنن داری رص - ۱۲ صحیح سلم د۱ -۱۲۳) واللفظ له - وغنیره.

ك يَمُرة الحفاظ للذين (١٠٥) والعافظ عاد الدين بن كشير في مند الصديق كنزره- ١١٠) و

میرااراده تعاکمی امادیث کمعوں الکین مجھے تم سے پہلے گذری ہوئی الیسی قوم یادآگئی جس نے کتابی کمھیں اور الشرقعالی کاب کوچھوڑ دیا ۔ خداکی قسم میں کتاب الشرک

إنى كنت اربيدات اكتباس وإنى ذكرت قومًا كانوا تبكم كشواكتبًا فاكبوا عديها وتكول كتاب الله وإنى والله ولأشوب كتاب الله وإنى والله ولأشوب كتاب الله بشمع أحداً 4

اسی طرح حضرت علی رضی النتری بی می استیکی ادر برگرخطط ططانید کردنگا.

اسی طرح حضرت علی رضی النتری بی محضرت عبدالت بن مسعود رضی النتری بی محضرت عبدی و حضرت عبدی و محضرت المنتری می محضرت عبدی و محضرت المنتری و محضرت المنتری می النترو غیره نے کتابت صدیت کونا مناسب مجمدا ان تمام وجویات کی بنام پر سنست بوی مدول نه بوئی اور بهت بعد نیس مدول موئی جس می النترو کی مدول نه بوئی اور بهت بعد نیس مدول موئی جس می استرا می بات کی بنام پر سنست بوی کا احتمال ہے اس لئے الی ظنی النتروت سے احکام شرعیہ کا استدباط کیون کر میوسکتا ہے خصوصاً جب کہ النتر عمل شان فرنما تے ہیں ہو۔

استدباط کیون کر میوسکتا ہے خصوصاً جب کہ النتر عمل شان فرنما تے ہیں ہو۔

وکلا تقفی میا کیش کلگ بدہ عجم اللہ میں اس کے الی کا بی کو فرنمین اس کے وکل تقفی میا کئیس کلگ بدہ عجم اللہ میں اس کے استدبات کی آپ کو فرنمین اس کے وکل تقفی میا کئیس کلگ بدہ عجم اللہ میا کہ استدبات کی آپ کو فرنمین اس کے استدبات کی آپ کو فرنمین استحداد کی کار کا کھور کی کو فرنمین کی کشتری کی کار کھور کی کردند کی کی کی کور کی کور کی کور کور کی کور کور کی کور کی کور کی کور کور کی کور کی کار کور کی کور کی کور کور کردند کی کور کور کور کی کور کی کور کی کور کردند کی کرد کردند کی کور کردند کردند کی کور کور کور کی کور کرد کردند کردند کردند کرد کردند کردند کردند کی کردند کی کردند کردند کردند کردند کردند کرد کردند کر

له جامع بيان العلم (١- ١٣) طبقات ابن سعد (٣- ٢٨١) الترانيب للوارير (٢- ٢٥٨) والوضيَّد كما في الكرّره-١٣٩)

-(イアノイアーリン・・・ と

ته ، ، ، (۱- ۱۵ و ۲۲) مندوادی (ص - ۱۵) -

-(44-1) . . . 2

هے مندوادی (ص - ۱۵) جا نع بیان العلم (۱ - ۲۷) -

يه جا بع بيان العلم (١- ١٧)-

عه مستدوارمی (ص - ١٤) جاسع بیان العلم (١ - ٦٧) -

ه جا مح بیان العلم (۱-۲۷ و۲۷) -

في الإسمار: ٢٦

ا__ بعض حضرات نے حدیث ابی سعید کومعلول قرار دیا ہے ، اور اسے حضرت ابوسعید برموقوف بتلایا ہے ، امام بخاری نے اس صدیث کو اپنی سیح س معلول ہونے کی وجہی سے ذکر نہیں کیا ہے تیہ

۲ — کتابت حدیث کی مماندت ابتدار اسلام میں تھی تاکہ احادیث قرآن کریم ہے فلط ملط نہ ہو ہماندی جب یہ خطرہ ٹل گیا تو یہ مماندت بھی ختم ہوگئی اور کتابت کی اجازت ہو تی فلط ملط نہ ہو ہماندت اس کی اجازت ہو تی خلط ملط نہ ہو ہماندت اس کی اجازت ہو تھی جب کہ کتاب الشراور حدیث رپول الشرصل الشرعلیہ ویلم کو ایک ساتھ لکھا جا سے جس کی وجہ سے خلط ملط ہونے کا خوف ہو گیہ کو ایک ساتھ لکھا جا سے جس کی وجہ سے خلط ملط ہونے کا خوف ہو گیہ

له الانعام : ۱۲۸

له امام بخاری دغیره علماراس حدیث کے موقوت بونے کے قائل بی ملاحظ بوفتے الباری (۱ - ۱۲۸) فتح المغیث للسنحاوی (۲ - ۱۳۵) تدریب الراوی للسیوطی (ص - ۱۳۲) الباعث الحثیث (ص - ۱۳۳) توضیح الآفکار (۲ - ۳۵۳) وغیره -

ته مفدیدابن صلاح (ص-۱۲۱) فتح الباری (۱- ۱۲۸) فتح المغیث (۲ -۱۳۵۵) تدرید لِزُادی (ص-۱۲۸۱) فتح الافکار که الباعث الحثیث (ص-۱۳۲) فتح الباری (۱- ۱۲۸) منتح المنیث (۲-۱۲۵) تدریبالراوی (ص-۲۸۷) توضیح (۲-۲۹۵) وغیره -

۳ — ممانعت صرف استخف کے لئے ہے جس کا ما فظر توی ہوا ور اسے پیو لئے اور اخت لاط کا نوف نہ ہو لیہ

ے۔۔۔ مانعت استین کے تق میں ہے جس کے با رہیں یہ خوف ہوکہ وہ لکھ کریا د کرنا چیوڑ دے گاا ور لکھنے پر کلی اعتماد کر میٹھے گا کیھ

ری سبے۔ عے۔مطلقاً کتابت کی مانعت بہتی بلکاس کو قرآن کریم کاطے مروّن کرنے کی ممانعت بہتی بلکاس کو قرآن کریم کاطے مروّن کرنے کی ممانعت بتی کیے

9 — صحابہ کرام رضی التُرعنبم آجھین عام طورے چونکہ اُتی تھے اس لئے آہیں لکھنے کی اجازت سے سنع فرمایا تھا تاکہ لکھنے بی غلطی نہ کریں اور جوصیح ککھ سکتے تھے انہیں لکھنے کی اجازت دی گئی تھی لیہ عام حالات میں آگرکوئی شخص اپنے لئے لکھنا جیلیے تو لکھ سکتا تھا چنانچ صحابہ کرام رضی التُرعنبم آجین نے صدیثیں لکھیں تھیں جیسے کہ صفرت عبدالتُرین عمروین العباص رضی التُرعنبم آجین نے صدیثیں لکھیں تھیں جیسے کہ صفرت عبدالتُرین عضرات نے ان ہے کہ وہ احادیث لکھ لیا کرتے تھے ۔ بعض حضرات نے ان ہے

ئه مقدمه ابن صلاح رص - ۱۲۱) الباعث رص -۱۳۳) فتح الباری (۱ - ۱۲۸) فتح المغیث (۲ - ۱۲۵) تربیب (ص - ۲۸۲) توضیح (۲ - ۲۵۳) وغیره -

ت جاسع بیان العلم (۱- ۹۸) وحوالهجات بالا-

ك جائع بيان العلم (١-١١٨) فتح المعنيث (٢- ١٢٥)-

کے است و مکانتہا فی التشریع الاسلامی وص - ۷۷) -

ه النتقبل التروين (ص ١٠٠٠)-

ته عان قينه كا قول كم الحديث من كما ذكره صاحب التراتيب الادارية (٢- ٢٥٠).

کماکہ آپ جو کچید سنتے ہیں سب تکھ ڈالتے ہیں ، رسول الشیصلی الشہ علیہ وسلم البترمیں ، آپ بھی غصہ میں ہوتے ہیں اور کہ بی خورت عبد الشین عمرورضی الشرعنہ نے یہ واقعہ حضورا قلال میں ہوتے ہیں اور کہ بی خوشی ہیں ۔ حضرت عبد الشین عمرورضی الشرعنہ نے یہ واقعہ حضورا قلال صلی الشرعلیہ قیلم سے ذکر کر دیا ، آپ نے اپنی انگشت مبارک سے اپنے دہن سبارک کی طرف است ارہ کر کے وضربایا ،۔

م تم اکھواس لئے کہ قسم ہے اس ذات کے جس کے قبضہ قدرت میں میری جان ہ میری اس زبان سے تن ہی کلٹ ہے "

اگتب فوالذى نسى بىيده ماخىج منه إلاحق به ن ب ب ب ب ب ب ب

ایک دوابیت پی آتا ہے کہ انہوں نے دریافت فرمایا ، یا دسول الٹری آپ ی بہت سی باتیں سنٹا ہوں کیا میں ان کولکھ لیا کروں ؟ آپ نے امبازت عطافر مادی کیے ایک اور دوایت ہیں ہے کہ انہوں نے عرض کیا کہ اے الٹر کے دسول بم آپ کی بہت سی احادیث سنتے ہیں لیکن یا زہیں کر یا تے کیا ہم ان کولکھ لیا کریں آپ نے فرمایا ، باں ضرود لکھ لیا کرویکھ

ا مک روایت میں بہے کہ انہوں نے وض کیا کہیں آپ کی صرفیں روایت کواہوں اورچا ہتا ہوں کہ حفظ کے ساتھ ساتھ یا تھ کے لکھے ہوتے سے بھی مددلوں اگر آپ اس کی اجاز

ئے مسنددارٹی (ص - ۲۷) مشراحد (۲-۱۹۲ و ۱۹۲ و ۲۰۷ و ۱۳۵) شن الی داود (۲-۱۱۵ و ۱۵۵)-مستدرک حاکم (۱-۲۰۱ و ۱۰۵) جا نع بیان العلم (۱ - ۲۱)۔

- (Y- C - Y) - 1 - Y) -

-(YIQ--Y) . . e

ل م د (۲-۱-۱۰ و ۱۵) متدرك ماكم (۱- ۱۵) جان بيان العلم (۱- ۱۵).

مرجت فرمادی ؛ توآپ نے ارمث اوفرمایا کہ (السری صفیدیں ہوں ، میرتم اپنے دل کے ساتھ اپنے ٹا تھے سے مدلو (مینی لکھ لیاکرو) کیہ

ایک صریف میں ہے کہ حضرت عبدائٹ بن عمروفرماتے ہیں کہم رسول اکرم صلی التُعلیہ وسلم کے اردگرد بیٹے تکھ کہ کسی نے پوجھا پیلے کونسا شیرفتے ہوگا قسطنطنی باروم ا توآپ نے فرمایا: بیلے حرقل کا شہرفتے ہوگا ربعنی قسطنطنی ایکھ

حضرت عبدالسّر بن عمرونے احادیث سبار کولکھ کمرا کی مجبوعہ تیارکیا تھا ہو اُن کو نہایت عزیز تھا اور فرما یا کرتے تھے کہ مجھے زندگی کی دوجیزوں کی وجہ سے دغبت ہے ایک مصادقہ ، اور دومرے « وصط» ، صادقہ وہ صحیفہ ہے جس کومی نے دسول اللّہ صلی اللّہ علیہ وسلم کی احادیث لکھ کر تیا رکیا ہے اور وصط میرے والد عمروبن العاص کی زمین ہے جس کو انہوں نے وقف کیا تھا اور وہ اس کے نگران تھے تیہ کی زمین ہے جس کو انہوں نے وقف کیا تھا اور وہ اس کے نگران تھے تیہ

مضرت ابوم رمیه وضی الشرعند سے مروی ہے کہ جمعہ سے زیادہ عدشیں عبدالشرب عمر و کے سواکسی کے پاس نرحیس اس لئے کہ وہ لکھ لیا کرتے تھے اور میں لکھتا نہتا ہے ایک روایت میں ان سے یہ الفاظ مروی میں کدرسول الشرصلی الشرعلی وسلم کے حدیث کا مجھ سے زیادہ جاننے والا غبدالشری کا موری سواا ورکوئی نہ تھا اس سے کہ وہ ہاتھ سے لکھتے ، اور دل سے یاد کر لیا کرتے تھے اور میں ہاتھ سے لکھتا نہتھا ، انہوں نے دسول الشرصلی الشرصی کے دس میں اجازت مرحمت فرادی تھی ہے۔

لے مندالی اص - ۲۲ طبقات ابن - (۲۲ - ۲۲) -

الله من الارا- ۱۷۱)-

ته . . (ص- ١١) طبقات ابن سور (٧ -٢٩٢) جا بي بيان العلم (١-٢١) -

کلے منداحد(۲-۲۴۸ و ۲۴۴) منددادی (ص - ۱۲) میچے بخاری (۱-۲۲) جانا تریزی (۱-۱۹۱ ۲۲۲) متدرک حاکم (۱-۱۰۵) جا سے پیان العلم (۱-۰۰) -

^{· (4.4-4).}

كيا مائے تو اے اختيار ہے يا ديت ہے يا قصاص ہے ۔ بيخطب س كرا كي بي شخص

" اے اللہ کے دسول دسلی اللہ علیہ وہم) آل کومیرے نئے تکھ دیجئے تو آپ نے فروا یا کہ اكتبكى يارسول الله ؟ فقال: اكتبوالأبى فلان يه

أكر برط مع اور عرض كيا:

ابو مثلاں (مراد ابوشاہ ہیں) کے لئے لکھ دوی

حضرت الوہرمیہ وضی الشریخنہ سے مروی ہے کہ ایک افصادی دسول الشرصلی الشرعلیہ و
سلم کے پاس بیٹھا کرتے تھے آپ کی احادیث مبارکہ سنتے اور محظوظ وظ بیتے کئی بڑنہ کر باتے ،
دسول اکرم صلی انشرعلیہ وسلم سے شکابیت کی کہ: اے التُرکے دسول (صلی الشرعلیہ وسلم) میں
لے صبحے بخاری (۱ - ۲۱ و ۲۷۸) و (۲ - ۲۱۰۱) ابن ماجہ (ص - ۱۹۱) جاسے ترفی (۱ - ۲۱۱) من نسائی (۲ - ۱۹۱) با می میں اس کی دوسری دوایت
لے م (۱ - ۲۲) روایت میں فرکوری صحابی کا نام (بوشاہ ہے جیسا کہ بخاری کی دوسری دوایت
میں اس کی تصریح ہے طاحظ ہو (۱ - ۲۷ سام ۲۹۹) و (۲ - ۲۱۱) جاسے ترفی (۲ - ۲۱۱) جاسے بیان العلم (۱ - ۲۰) ۔

در اس کی تصریح ہے طاحظ ہو (۱ - ۲۷ سام ۲ سام ۲ و ۲ سام ۲ سام کی ایک الم را اسلام دوایت الم الم الم المین المین المین دارے ۲ سام ۲ سا

آپ کی احادیث میارکدسنتا بهوں اور محظوظ ہوتا ہوں لیکن یا ذہبیں کرسکتا دکیا کروں ؟) آب نے ارتادفرمایا ،-

" این دائی اته سے مداد اور این وست سارك فكين كعطرف اشاروزيا" استعن بيمينك وأوسأ سدة الخط له

حضرت عبدالته بن عمرو من العاص رضى التذعنها سے مروى ہے فرساتے ہي كدرسول

اقدس صلى الشعليه وسلم فارشاد فرمايا :-

القيد واالعلم القلت: وسا المسعم كومقير كومي في عض كياس كو تقییدی ؟ قال: لاکتابته استه کیے مقید کیاجاتے ، فرمایا: لکد ک

حضرت رافع بن فدي وضى الترعند سے مردى ہے كہ جارے ياس رسول اكرم صالات عليه وسلم تشريف لات اورفرمايا :- " حديث بيان كروا ورجوميرى طرف حيوتى نسبت كرے وہ ا ينا طفكانا حينم كوبنالے يو ميں نے عرض كيا: اے الله كے رسول رصلى الشعلير ولم ہم آپ سے بہت می بائیں سنتے ہیں اورا سے لکھ لیتے ہیں ،آپ نے ادرث وفرمایا ،-اكتبوا ولاحد ج به ا مدمي كروكوني حرج نبين ي

حضرت عبدالت عمرون التزعنها فرمات بي كرسول الترصلى الشرعليدوسلم كيس آب كے معبض صحاركرام رضى الله عنهم اجعين ميھے تھے ميں بھى ويس موجود تصااور مي مافرن له جا مع ترمذی (۲- ۹۱ مندبزار کمافی المجمع (۱-۱۵۲) برالفاظ مضرت ابن عباس سے فوادر می حکیم ترف

نے اور حضرت جابر سے نت سعیدین منصور میں ہی منقول ہیں کما فی الکتر (۵ - ۲۲۹) -

ته متدرک حاکم (۱-۱-۱۱) طرونی کبیراورا وسطی اس طرح سے محص منقول ہے کہ : میں نے عرض کیا اے اللہ كرسول دصلى الشعليدوسلم) كيامين علم كومقيدكرلون ؟ آپ نے فرمايا : إلى ، ميں نے عرض كيااس كامقديرة كيا ؟ آب في والي الكعنا ، المنظم في التروائد (١-١٥٢) إبن عساكركما في الكنز (٥-٢٣٣) جان بيان الم (١-٢٠)-ت طبرانى كبيركما فى المحت (١- ١٥١) والحسكم وسموير والخطيب فى تقييدالعلم كما فى الكرزه-٢٢٢)

والراميرمزى كمانى التدريب رص- ٢٨٧)-

Ala T

یں سب سے چیوٹا شانی کریم ملی اللہ علیہ وسلم نے فرما یا کہ جوبحد پرجان ہو مجد کر جوٹ ہوئے وہ ابنا طبیکا نا آگ کو بنائے ، جب عام لوگ چلے گئے تو میں نے پوجھا کہ آپ لوگ اس حدیث کو سننے کے بعد بھی کسی طرح رسول اقدس صلی اللہ علیہ وسلم سے بحثرت حدث میں دوایت کرتے ہیں تواس پر وہ حضرات مبنسنے لگے اور کہنے لگے ؛ اسے براور زدا دسے ہم نے دسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے جو کھی سناہے وہ ہمارے پاس کتاب میں لکھا ہواہے ہے

حضرت انس بن مالک رضی النترعند فرماتے میں کدایک صفی الشرعلیہ وسلم سے صافظ کے خراب ہونے کی شکایت کی توآب نے فرمایا ،۔ حافظ کے خراب ہونے کی شکایت کی توآب نے فرمایا ،۔

استعین بیمیندگ بیمیندگ بیمیندگ این ایندائی اتھ سے مدد لوئ ایک دوایت میں آتاہے کہ حب تم حدیث لکھو توسند کے ساتھ لکھا کر و،اگروہ تیج ہوگی تواجر میں تم سب شریک ہوگے اور اگر حجوث ہوگی تواس کا گنا واس خض پر مؤگا آبہ حضرت انس دضی النہ عند سے مروی ہے کہ نبی کریم صلی النہ علیہ وسلم نے ونسرمایا :۔

قید و (العسلم بالسکتاب یک استام کوکتاب کے ذریعے سے مقید کروں ہے مقید کروں سے مقید العساؤہ والتسلیم کے پاس ایک صحیف مطاحب میں کیچے احکاماً کھے ہوئے تھے اسی طرح حضورا قدس صلی الشرعلیہ وسلم نے صدقات ا ورفرائض وسنن پڑشتہ ل صحیفے لکھ کرمختا خاصرات کوعنا بہت و نسرما سے یہ

ابتداری حضرت ابوہر مرہ وضی اللہ عنداحادیث لکھا نہ کرتے تھے کی بعدی ابو نے بھی لکھنا شروع کردیا تھا اور صحیفے تیار کرنے تھے چنانچ نضیل بن صن بن عمروبن اُمیہ

له طبرانی نے استعم الکبرس روایت کیا ہے کمانی ہمیع (۱- ۱۵۲)-

ل معبم اوسط للطبران كما في المجع (١-١٥١)-

كه منتدرك حاكم والنعيم وابن عساكرعن على كمانى الكنزره- ٢٢١) وطبي كمانى التدريب رص- ٢٨٦)-

لله حكيم وسمويد كما في الكنز (٥-٢٢١) جاس بيان العلم (١- ٢١)-

ع جامع بيان العلم (١-١١) . له جامع بيان العلم (١-١١) .

الضری اپنے والدے روایت کرتے ہیں کہ ہیں نے صفرت الوہر ہرہ وضی الشری ہے تنی ذکر کی تو انہیں اس میں کچھ تردو ہوا ، میں نے عرض کیا کہ یہ حدیث تیں نے آپ ہی ہے تنی ہوگی تو وہ میرے پاس تکھی ہوئی ضرور ہوگ ہے تا ہو جہ بانہوں نے فرما یا کہ اگرتم نے مجھ سے سنی ہوگی تو وہ میرے پاس تکھی ہوئی ضرور ہوگ جینا نچی میرانا تھ پچھ کو کھر لے گئے اور یہیں بہت سی کتابیں وکھ التیں جو انہوں نے حضوراکرم صلی الشری علیہ وسلم کی اصادیث سے مرتب کی تعین النہیں وہ حدیث بھی ال می جو میں نے ذکر کی تی تو فر مانے لگے کہ میں نے تم سے کہا نہیں تھا کہ اگریں نے بیان کی ہوگی تو وہ میر سے یاس صرور تھی ہوگی ہو

من حضرت عبدالٹربن عمرُ فرماتے ہیں کہیں نے دسول الٹرصلی الٹرعلیہ وسلم سے عرض کیا کہ میں آپ سے بے شاراحا دیٹ سنتا ہوں کیا آپ ان کے بھنے کی اجازت دیں گئے ؟ توآپ نے فرما یا ، کا ل ، جینا نے بہلی کتاب جو میں نے اپنے اتھوں سے بھی وہ نبی کریم صلی الٹرعلیہ وسلم کا اہل کمہ کے نام خط تھا ہیں ۔

ریم می دسترسید و می در با برسید و می است و استران می الته علیه و استران بن مالک فنی الته عند جود سول اکرم صلی الته علیه و سلم کے ساتھ استے استوں کی والدہ نے ان کونی اکرم صلی الته علیہ و کم کی خوست میں خادم سے جوز پیش کردیا تھا ہی و احادیث لکھا کرتے تھے ، یزید الرقاشی بیان کرتے ہیں کہ جب ہم حضرت انس دفنی الته عند سے مہت زیادہ اصرار کرتے تو وہ اپنا لکھا ہوا تھیے ہیں کہ جب ہم حضرت انس دفنی الته عند سے مہت زیادہ اصرار کرتے تو وہ اپنا لکھا ہوا تھیے ہیں جنہیں میں نے دسول اکرم صلی الته علیہ ہمارے یاس لاتے اور فرماتے کہ ہیں وہ احادیث ہیں جنہیں میں نے دسول اکرم صلی الته علیہ

وسلم سے سٹالکھا اور میٹ کیا ہے تیہ کتابت صدیث کے جواز اور نبی کریم صلی انٹہ علیہ وسلم کے اس احبازت وینے اور دکم رینے سے تعلق احادیث کا برا کی سرسری جائزہ ہے تفصیل کا نہیہ مقام ہے اور مذاسس مختصر سے دسالہ میں اس کی گنجائش ہے ۔

اله عامع بيان العلم (١-١٧) . ته الجنيم كما في التراتي الله وارير (٢-١٢٧) -

ته معم بنوی کمانی التراتیب (۲-۲۴۷) .

ان احادیث کے علاوہ نبی کریم صلی النہ علیہ وسلم نے بہت سے صدقات اور احکام ہر مشتل خطوط لكعوا سيمين جن كا تدكره كتب صريث ميس موجود بمثلاثي كريم صلى الشعلية سلم كاصدقات كے باسے ميں كمتوب جوحضرت الو كررضى الشرعند كے باس تعاا ورانهوں كے حضرت انس كوحب بحرين مجيجا تواس ويديا اس صحيف يركريم صلى الشرعليه والم كى مرحي كان المائين كوفرائض وسنن و ديات پرشتمل انك خطاك نے تحزير كروا يا اور عمرو

ابن حرم على التدارسال فرمايا ليه

صدقات کے بارے میں بی کریم صلی النہ علیہ وسلم نے ایک صحیفہ کھوا یا جوآپ کی حیات میں آپ کے پاس رہا ، آپ کے بعد حضرت ابو بجروشی النہ عند کے پاس رہا اوران کے بعد حضرت عمرضی الترعذکے باس ع

حضرت زياد بن لبيد رضى الشرعنه كوجب حضرموت كاعامل مقرركيا توابين سي

احكام لكھواكر دے يا

ان تمام آثار وروایات کے ہوتے ہوے یہ کہنا کہ چانکھروع میں احادیث کھی کھیں نام نہیں گئیں ماصرت پر بلکہ اس سے روک دیاگیا اس نے حجت نہیں بن سکتیں ،غور فرمائے کواس دعویٰ کی کیا حقیقت رہ جاتی ہے ، اور کیا ابھی کوئی شخص بر کہر کر انكار مدبيث كى جرآت كرسكما ب كم حديث كالكيمنا تشروع بي جنوع تقااس لئ عدست نهيل لكهي كي

له بخاری نے اس کی تخریج جید محکد کماب الزکوٰۃ میں (ا - ۱۹ و ۱۹۱) وغیرہ میں اور اس تحادی سے اور سکے ولیاس وترک حیل عیں کی بر ابودا ورتے اس کاپوراکا پوراحصہ ذکرکیا ہے ملاحظ ہو (۱-۱۱۸) نن نساتی لا- ۳۴۰) متدرک حاکم دا- ۳۹۰ و ۳۹۱) وغیره -

تے سنن ف ای (۲- ۱۵۲ و۲۵۲) و عجم كبيلطراني كمافي المجمع (۲-۱) و۲)-

ت سن ابی واقد (۱ - ۲۱۹ و ۲۲۰) جا سع ترینری (۱ - ۲۹) سنن ابن ماجروس-۱۲۹ رو۲۱) مسنداحد (۲ -۱۲۹ و۱۹۰).

كه رواه الواقدى كما في كمّاب الروة كذا في نصب الراير ١٠٠- ٢٥٠) -

علاوه ازی کسی چیز کا جحت بونا صرف اس کی کتابت پر مو توف نہیں ہوا کرتا ، اگر كتابت بى برموقوف بوتا تونى كريم في المان المحصيث كالتابت كامعى ضرورهم ويتاود قرآن كريم كى طرح احاد بيث نبويه على صاحبها الصلاة والتسليم كى يبى كتابت كرات ليكن إ السانهي بكدس طرح كتابت ضبط كالك وربيه ب اسى طرح حفظ بعى حفاظت اكي مبترین درید ہے خصوصاً وہ عرب جواعلیٰ قسم کے خداداد حافظ کے مالک تھے ، تاریخ شابد ہے كد نيامي عرب جيسے مافظ كى مالك كوئى قوم بيدانہيں ہوئى ان كے مافظ خارق عادت طور برقوى تصعف او قات ايكشخص ايك بم مجلس ميں پورا كاپورا قصيده ايك تر س كريادكرلياكرتاتها ، چنانچ حضرت ابن عباس وى الشعنها كے متعلق علامد ابوعر بن عيدالبرنقل كرتيمي كدا-

أنبول عمرب رسيهكا يورا تصيده دجوسترشر كاب احسى كابتداراس مرعدى وتيرو أس آل نعم أنت غادميك ایک ہی مرتبہین کریاڈ کرلیا تھالیکن آج كوتى اس صافظ كامالك فيس ب حفظ تصيدة عمين أبي سعة: أمن آل بعم أنت غادميكى ، فسمعة واحدة على ماذكرا وليس أحداليوم على صذائه 7 7 7 7 7

صحابه كرام رضى الشعنهم اجعين حفظ برزيا ده اعتماد كياكرت تنص اور مكيف سال لئے گریز کرتے تھے تاکہ حفظ کا ملکہ کمزور نہ پڑجائے کیونکد لکھنے کے بعد آدمی حافظ ہر اوجہ ڈالناچور دیتاہے اور لکھے ہوئے برحروسکر بیٹھتاہے ۔جنانچہ علامدابن عبدالبرنے جہاں بعض ان صحابہ کرام وضی الشرعنہ ما ور تابعین رحمہم الشركے نام شار كراسے ہيں جو كتابت كوا جهانهي محيقة تص تواس كے بعدى يهى لكھا ہے كه :-

ا ماس بابي م في صفرات كاقوال

س ذكها توله في مذا الباب فإنسادهب فى ذلك مدهب بين كي بي و وحضرات در الله الابار

له مباع بيان العلم (١- ٢٩ و ١٠) -

العرب لأنعم كانوامطيون على الحفظ مخصوصين بذلك والناين كهوا الكتاب كابن عباس والشعبى وابن شها والنحى وقتادة ومن زهب منصبهم رجبل جيلتهمكانوا تنطيعوا على المفظفكان أحمام مجتزئ بالسعة ألاتهى ماجاءعن ابن شعاب أنه كان يقول: إلى لأسر بالبتيع فأسدآذانى مخانة أن يدخل فيهاشئ من الخنافوالله مادخل أذنى شئ تطنسيته، وهذا مشهوين أن العرب مت خست بالحفظ له

عیں الم عرب کے سلک کے موافق فراتے بي اس لة كرحفظان كى طبيعت على داخل تفااوراسيس انهين خصوت ماصل تعي اورجن حضرات في كذابت كواجيانهين مجعاجي كرحض فيناس شعبی ، این شباب بخعی رقناده اوروه حفرات حن كايى فرسيد اورجوان ہی جسے حافظ کے مالک بیں کہ ان کی مرشت مي حفظ موجود تما چنانج ال ے کوفی صرف ایک مرتبہ کے من لینے واکٹا كياكرتا يخا ،كياآب كومعلوم نبي كدابن شهاب فراتي كس حب بقيع ساكرة بون توكانون بس التكليان شوس ليبتا بوب تاكدان ميركونى غنطان دگندى بات ذکفس جا شعاس لنے کہ والٹریس كانول مين آج مك كوئى اليي بانتداخل

نہیں ہوئی کرجے بیں جول گیا ہوں ۔ اور پر بات تو با اسکل شہور ہے کہ اہل کو بھانظ کے معاطر میں خصوصیت رکھتے ہیں ہے راحضرت ابو بجررضی الشرعنہ کے متعلق صحیفہ جلامینے کا سوال تعدہ ایجے انہا آجائی کا

که جا بن بیان العلم (۱- ۲۹)-که است و مکانتها فی التشریع الاسلای (ص-۱۷۲) ای ورع اورامتیاط کی بنا دیر مفتر عرفتی کیمین کرنیکیاتها.

فسسالدين ذبي اس واقعدكونقل كرفے كے بعد الكھتے ہيں:-

فصدالا بیسے واللہ اُعلم اُ سیقصدرست نہیں ہے والترانام ۔ حافظ ابن کشرنے اس واقعہ کومسند صدیق میں نقل کرنے کے بعد اکھاہے اِ۔

" یه واقعه اس اعتبادے بہت زیاده عجیب ساہے اور علی بن صالح (اس واقع) رادی اغیر معروف ہے (معلوم نہیں کون جو؟) حذا غايب سن حذا الوجه حداً ، وعلى بن صالح لابعين في عرب عبر مراكم

و اكر مصطفيساى المتوفى والثلام اليى كماب مي تحقيمي و

"عظامرزی نے اس واقعہ کے بایسے میں کہار کرے قصر درست نہیں ہے اور کا کاٹ دل کو مگتی سے 2 قال عنها الذهبى ؛ إنها لاتقح وهوالذى تطمئن إلى النفس بخه

اور بعض صحابہ کوام رضی اللہ عنم ایجین ہوا حادیث بیان کرنے سے ڈرتے تھے تو کھن استیاط کے خیال سے کہ کھی غلط بات کی نسبت رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کی طرف نہ ہو جا سے لیکن جوحف رات قوی الحافظ تھے وہ خوب احادیث بیان کیا کرتے تھے جیے کہ حضرت الوم بریرة ،حضرت ابن عباس ،حضرت عائشہ وغیرہ رضی اللہ عنم اجمین مضرت الوم بریرة ،حضرت ابن عباس ،حضرت عائشہ وغیرہ رضی اللہ عنم الم عند سے دکتے عرض بعض صحابہ کوام رضی اللہ عنم جواحادیث کے لکھنے یا بیان کرنے سے دکتے تھے وہ صرف احتیاط کی بنا ربیرتھا ، اور حس طرح بعض صحابہ و تابعین رضی اللہ عنم سے حدیثیں لکھنے کی کواست تابت ہے ای طرح اور بہت سے صحابہ و تابعین رضی اللہ عنم می حدیثیں کے اسما مگرای حدیثیں کا ایمی تذکرہ کر جگے میں اور بعض صحابہ و تابعین کے اسما مگرای حدیثی اللہ عنہ کا ایمی تذکرہ کر جگے میں اور بعض صحابہ و تابعین کے اسما مگرای سے تذکرہ الحق اللہ عنہ کا ایمی تذکرہ کر جگے میں اور بعض صحابہ و تابعین کے اسما مگرای عنہ تذکرہ الحق اللہ عنہ کا ایمی تذکرہ کر جگے میں اور بعض صحابہ و تابعین کے اسما مگرای عنہ تذکرہ الحق اللہ عنہ کا ایمی تذکرہ کر جگے میں اور بعض صحابہ و تابعین کے اسما مگرای عنہ تذکرہ الحق اللہ عنہ کا ایمی تذکرہ کر جگے میں اور بعض صحابہ و تابعین کے اسما مگرای عنہ تذکرہ الحق اللہ عنہ کر اللہ عنہ تذکرہ کر حکے میں اور بعض صحابہ و تابعین کے اسما مگرای

له حافظ عساوالدين بن كشرفي مندالصديق كما في الكسند (۵ – ۲۳۷)-ك السنة ومكانتها في التشريع الاسلامي (ص - ۱۷۲)-

سبذيلي ار

مصرت عمرين الخطاب ، انس بن مالك ، ابوامامه ، عبدالتُرين عمر ، جابرين عالمتُه عبدالترين سعود ، ___عبدالترب عباس ، صن بصرى ، ابوالمليح ، معاويين فرة ، ا بان ، سعید بن جبیر ،سفیان ، الضحاک ، نشیر بن نھیک ، ابو قلا بر ، سعیر بن المسیب ، ابن شهاب زبرى ، ابوالزناد ، شعبى ، ابن شيرمه ، صالح بن كيسان وغسيرة وضى الترعنيم المدين -رم يركبناكه صديث كاذخيره بعدمي مرون موااس منة اس مي قطعيت نردي بكلظن پیدا ہوگیا اور دین کےمعاملہ می فلن برعمل کرنا درست نہیں ہے یہ بڑی جہل بات ہے اور یہ بات وہی شخص کہ سکتا ہے جس نے وضع حدیث کے قلع قبع کرنے والی انتھک کوششوں کا عبائزه ندلیا مو ، علاوه ازی کتابت حدیث صحابه رضی التُرعنم کے زیمانیس موجودتھی اور اس میں صحابے اخیر دورتک انقطاع بیدائمبیں ہوا تھر دوسری صدی کے انکل شروع مي خلية را شرحضرت عربن عبدالعزيز وهدالتذك حكم علما راسمار في سنت كومرو كردياس لغ اس كاسل كتابت ين كيون كرشك كيا جاسكتاب ربايه دعوى كرناكه دين اوراحكام البي مي ظن يعمل كرناورست نهبي اس كالعلق اصول دین اورعقائے ہے جن کامنکریا اس میں شک کرتے والا کافر ہوتا ہے جیے کہ الشرتعالى كى وحدانيت ، رسول الشوسلى الشرعليه وسلم كابرحق بونا اور قرآن كريم كى خدائے يك كى طرف نسبت وغيره اسى طرح اركان اسلام نمازروزه يج وغيره كادين مي داخل بونا برابة معليم بي سكن فروع احكام من يواصول معتبر بي اس كفك فروع كوظنى النتوت ولائل سے تابت كياجا سكتا ہے بنائج قاضى تمام قصايا كا فيصله جن ميں اجرار مدود و فقاص ،تقیم وراثت وغیره واخل بی ظنی شہاد تول کی بنار بری کرتاہے۔ له تغصیل کے لئے ملاحظ ہومسنددادمی (ص - ۱۸ و ۲۹) عاسے سیان العلم (۱-۲۰ تا ۱۷) التراتيب الادارير (١-١٣٣ وما بعده)-

ك تنصيل كے لية طاحظ بوڈاكٹرمطيف سائى كىكتاب" الستدومكانتها فى التشريع الاسلامى (ص- ٢٠١٤٥)-

حاصل یہ ہے کہ جیت صدیث سے انکار کرنا اور یہ دعوی کرناکہ اسلام صرف قرآن بى مي منصرب يكى الية فف سنهي بوسكما بوخداك دين اورشرىعيت كاحكام ب مخوبي واقف مربع وشرييت كاكثر احكام سنت رسول الشطل صاحبها الصلاة واللام سيئ ابت من ، قرآن مجيد من تواكثراحكام محبل من مثلاً نجيكا نه نماز ، زكوة ، روزه بشعائر ج وغیرہ ان کی تفصیل اور جملہ معاملات وغیادات کے احکام وغیرہ بیسب احادیث

ہی سے تابت ہیں ۔ اسی لئے علامدا بن حسنرم لکھتے ہیں ؛۔

" اورم اس فاسد قول کے قائل سے يوجية بن كركون عقران مي مكها ے کظر کی جار رکعتیں اور عفرب ک تين ركيس بي - اوريد كدكوع اس طرح يوكا اورى واسطح يوكا الاقرارة اسطرح بوكى اورسلام اس طرح بجيرامات كااوردوزهي كن كن حيرون ع بجاجات كاالا ذكوة كى كيفيت كابيان كرسونے جانك بحرى ، اونظ ، گائے يى كما واحب ب اوركتنى معتدادم ذكاة لى جائد كى اودكيا ذكوة لى جائد كى ؟ اور ع كاعسال كابيان كوف عي كب وقوف يوكا اورويل شازكيے يراحى جاسے كى ؟ الا مز ولغه مي كس طسرح اور رحي

ونسأل قائل حذاالقول الفاسدف أتح ترآن وجد أن الظهر أربع ركعات و أن المعمب ثلاث ركعات وأن الكوع على صفة كذا والسجورعلى صفة كمذاو صفة القراءة فيعسا و السلام وبيان مايجتنب فى العوم دبيان كيفية ثكاة الذهب والفضة والغنم والإسل واثبته ومقلا الأعداد المأخوذة منها النكاة ومقدد ارالنكوة المآخوذة ءوبيان أعمال العج من وتتألوتوت ىبانة ومنةالملاةيعا

جمارکی کیاصورت موگی اور احرامکس طرح باندهاجا سے گا اور اس میں کن جيروب سيجيا حاسة اورجوركا التف كالثنااوروه دضاع جوباعث تحريم يتنابح اس کی کیا صورت ب اورکانی ترین کھانا مسمام بي اورد يحكى طرح كياجات گااور قربانی کس طرح میدگی اور حدود کے احکام اورطلاق کے واقع ہونے ک كيفيت اورسوع كحاحكام اوردباكا بيان اورقضارا وردعاوى كحفيصله كابيان إ ورقسهول كاطريقي اوروقف اوار عمرى اورصدقات كى تفصيل اورفقه کے دگریمام انواع کا بیان کونسے قرآن میں ہے ، قرآن کرم میں توصرف اجمالاً تذکرہ ہے اگریم اس کواسی حالت پھٹے دیں توہم یہ نہمان سکیں گے کداس میکیے عمل کیا مائے یہ سب کھیملوم کرنے کے لئے توصفور اقدس صلی الشرعليہ ولم كىسنىت بى كى طرف زبوع كياجام كا ، اسى طرح اجاع بعى چندىساك يرب الى لي ببرصورت حديث كى طوفازي ويع كرنايرك كااوراكركوني

وببنادلغة ويعى الجسال وصفة الإحمام ومايجتنب فيه وقطع السارق وصفة الماضاع ومايحام سألكك وصفة الذبائح والضمايا وأحكام الحدودمفة وقوع الطلات وأحكام البيع وببيان الربا والأقضية والتداعى والأبيات و الأحباس والعمى والعنقا وسائه أنواع الفته وإنعا فى القران جمل لوتركناه وإياحالم ندى كين فعل فيعا وإنعاالسجوع إليه فى كل ذلك النقل عن النبي صلى الله عليه وسلم وكذلك الإجماع إنماهوعلى سأل بسيرة فلأسهن الهوع إلى الحديث ضرورة ، ولو أن اسوأ قال : لأناً خذ إلا ساوحدثا فىالقرآن لكان كافترا باحساع الأسة ولكان

شخف یہ کے کہ بم صرف اسی رعمل کریے جوقرآن كريمين بحرتووه باتفاق اتمت كافر بوجائے كا اوراس كومرت ليك دکعت مورج کے ڈھلنے سے لیکردات ک تاری جیانے کے درمیان اور دومری صیح کے وقت بڑھٹا ہوگی اس لے کریم ے کم وہ مقدارے سی سرافظ صلاہ کا اطلا ہو تا ہے اور اس وزیادہ کی کوئی مزین بحاور ابساكيني والاكافرسشرك اورساح الدم باس كے قائر بيض وہ غالى روافض بي جن كے كافر سوفيراتت كا اجساع ہے 1

لبذا برکہنا کہ حدیث جمت نہیں اور اسلام قرآن ہی بچسل کرنے کا نام ہے اپنی جہالت اور علی بے مائیگی اور انباع خواہش نفنسانی اور نریغ کا نبوت دینا ہوگا ۔ آخر میں ہم الٹر تعالی سے دعاکرتے ہیں کہ اس حقیر سی خدمت کو قبول فرماکر فلاح وارین

كاسبب بنائد - آمين وبيرجم الله عبداً قال آمينا . اللهم اغفى لى ولوالدى ولمشائيني وللسلين والمسااللوياء منعم والأمولت وصلى الله تعالى على خير خلقه محد وآله وصحبه إبعين.

محد حبیلی مختار ۱۲ ربیب الرحب همتارچ

ل ألاحكام في أصول الأحكام (٢ - ٥١ و ٨٠)-

مراجع ومآخذ

| ىنروفات | نام مصنف | عدد نام تناب |
|-----------|--------------------------------------|---|
| 11900 | عبلال الدين عبالطن بن الي بالسيطى | ا ۔ الإِتقال في علوم القرآن |
| prota | على بن احذبن سعيد بن حسنرم الالذي | ٢ - الإعكام في أصول الأحكام |
| PTTI | ا بوانحسن على بن على الآمىدى | ٣ _ الإحكام في آصول الآحكام |
| POTA | محود بن عمر الزمخشري | ۲ - آساس السبلاغة |
| | على حسب الشرالمصري | ٥ - آصول التشريع الإسلامي |
| 7.4 | محدين الي ترب الوب العرود: بابن | ٢ - إعلام الموقعين |
| 2601 | القيم الجوزيتيا للمشقى الحنسباني | AND STREET OF THE PARTY OF THE |
| piror | محدانورشاه الكشهيري | ے - اِکفارالملحدین |
| 24.6x | محد بن إدريس الشافعي | ٨ - الأم |
| | احدمحدث كر | 9 - الماعث الحثيث |
| PLYC | ابوحيان محدين يوسعت الاندسى | ١٠ - البحيط |
| 2498 | محدب عبدالشرالزركتى | اا ۔ ابرحان فی علوم القرآن |
| ١١٩ م | بالال الدين عبدالرطن بن الي كرالسيطى | ۱۲ - تدریب الراوی |
| DETA | الوعبدالششس الدين الذهبي | ١٣ - تذكرة الحفاظ |
| | عبدالي بن عبدالكبيرالكتاني الفاسي | ١٢ - التراتيب الادارية |
| PLLY | أبوالفدار إساعيل بنكثيرالدشقى | 10 - تفسيراب كثير |
| John John | الوالخيرعبالشرب عمرالشيرازى البيضادى | ١١ - م بيضادي |
| 271. | محدبن جريرالطبري | ١٤ ۽ طبيري |
| -741 | آبوعبدالشرمحدين آحدالانصارى القطي | ۱۸ - ۵ مسرطي |

| سنروفات | تام مصنعت | عدد نام کتاب |
|--|-------------------------------------|--|
| ٣٠-٢ م | فحنسرا لدين محسدالراذى | ١٩ - تقسيركبير |
| DOTA | الوالقاسم محمودين عرالزمخشري | ۲۰ ء کثاب |
| | أحرمصطفئ مراغى | ۲۱ - مراغی |
| ۱۱۸۲ هر | محدبن إسماعيل الصنعاني | ٢٢ - توضيح الأفكار |
| ٦٢٧٥ | أبوعر بوسعن ب عبدالنترن عاليرالقطي | ٢٣- جائع بيان العلم |
| po 729 | محدين عبيى بن سورة الترمذى | ۲۲ - ۱ الترمذي |
| | محرمحد أبوزه | ٢٥ - الحديث والمحدثون |
| 911 ص | حلال الدين عبدالرحن بن آبي كرالسيطى | ٢٦ - الدرا لنشور |
| pror | الوالطيب آحدين حسين الجعفى المتنتى | ٢٧ - ديوان ألى الطيب النبي |
| ₽ Y.P | محدبن ادرنسين الشافعي | オールートハ |
| | موفق بن احمد | ٢٩ - روضة الناظروجية المناظر |
| 4 | محدعباح الخطيب | ٣٠ - السنة قبل التدوين |
| 11 - 1 | الدكتورمصطفى السياعي | ٣١ - السنة ومكانتها في التشريع الإسلامي |
| a ter | محدبن يزيدابن ماجر | ۲۲ - سنن این ماج |
| x 100 | سليمان بن الأشعث السجسّاني | ٣٣- ۽ آبي طاور |
| 2004 | احدين الحسين السيقى | ۰ - ۳۸ میرقی |
| p 100 | الدمحد عبدالشربن عبدالين الداي | 600 40 |
| Pri | احربن شعيب السنائي | والم والمالي المالي |
| ١٥٥٠ | الومحمرالحين بن مستودالبغوى | ٢٠ - شرح الستر |
| וזזמ | الوحيفرا حربن محمدالطعادى | ٣٨- ، معالى الآثار |
| 2744 | اسمايل بن حمادالجوبرى | ٣٩- العجاح |
| The state of the s | | |

| خه وفات | نام معنفت | عدد نام کتاب | |
|---------|----------------------------------|------------------------------------|----|
| POY | محدين إسمعيل البخارى | . ۲۰ صحیح البخناری | ı |
| 147 a | مسلم بن الحجاج القشيرى | ١٧١ صيح سلم | в |
| # YY- | مح بن سعد | ٢٧ - طبقات ابن سعد | п |
| 2777 | آبوعمرعتمان بن عبدالرحمان | ٣٣ - علوم الحديث (مقديدابن الصلاح) | П |
| PA00 | بررالدين محودبن أحدالعيني | ٣٣ - عدة القارى | u |
| PAOT | احرب على بن محد ب فجر العسقلاني | ۲۵- منتج البارى | ı |
| 29-1 | شمس الدين محدبن عبدالرحن المخاوى | ٢٦ فنتج المغيث | |
| P1.71 | محدالمذعوبعيدالرة مثالناوى | ٧٠- فيض القديريشرح الجامع الصغير | u |
| 子子 | شس الدين الوعبدالشرمحدالشير | ۲۸ - کتاب الروح | |
| 2401 | بابن ستم الجونية | mira. Seit | |
| דרקם | احرب على الخطيب البغدادي | ٣٩- الكفاية في علم الرواية | п |
| 1940 | على المتقى بن حسام الدين البندى | ۵۰ - كنزالعسال | и |
| 2944 | محدطاهسرالقتنى | ا٥ - مجمع البحار | |
| BA-6. | نورالدين على بن ابى جرالهيتيي | ۵۲ - مجمع الزوائد | ۰ |
| 0140 | سليمان بن الاشعث السجستاني | ۵۳ - مراسيل الي داود | П |
| pr.0 (| ابوعبدالتهمحرين عبدالترالنسابودى | ۵۷ - مشددک ماکم | п |
| PO-0 | محدب محدالغسنرالي | ٥٥ - المستصفى | |
| 7.7 | سليمان بن دا و دالطيالى | ۵۲ - مسندآیی دا و دالطیاسی | |
| ואזם | آحربن ضبل الشيبانى | ٥٥- مندآجد | |
| الا هر | عبدالرزاقدن عالمالصنعاني | ٥٨ - مصنعت عبدالرزاق | |
| 2790 | ابوالحسين احدبن فارس | ٥٩ - معجم مقاتس اللغة | ľ |
| | | Toobaa-elibi | ra |

| سنروفات | نام معنف | عدو نام کتاب |
|-----------|--|--|
| p1.0 | الوعبد يحدث عبدالشرالنسالورى | ٠١٠ معرفة علوم الحديث |
| 911 ص | مبلال الدين السيوطي | ١١- مفتاح الجنة |
| P 0.7 | داغب الأصفي ال | ٩٢ معشروات |
| p < 9. | ابواسحاق الشاطسبى | ٩٣- الموافعتات |
| 0169 | مالک بن انس | ۹۲- موطأمالك |
| 47.JY5 | جال الدين الومحد عبدالشرب يوسعن | ٥٧- نصب الراي |
| P244 | من الراعيي | |
| P4.4 | مبارك بن محدابن الأشرالحزرى | ١٩٠ النباير |
| 17 - Digh | كلات السيرمحديوست بن محد ذكريا | ٩٠ يتية البيان مقديمت |
| 1892 | | العشرآن ۔ |
| | STATE OF THE STATE | and the state of t |

الم معدون الكراث المعالية المعالية المعالمة المعالمة المعالمة المعالمة المعالمة المعالمة المعالمة المعالمة الم

ور ١١٠٠ و الله المال الم

المستخلف المستحل المستحل المستحل المستحدد المستح

م المراك المالية والمراكن المالية والمالية والمراكن المالية والمالية والمراكن المالية والمراكن المالية والمراكن المالية والمراكن المالية والمراكن المالية والمالية وا

no expressibilities with the supplication of the contraction of the co

The belles to the Brain of the

Company to the first of a re-

0-3514

شاعالات و

Julian or